तमिल कम्बरामायण

संस्कृतानुवाद का

हिन्दी रूपान्तरण

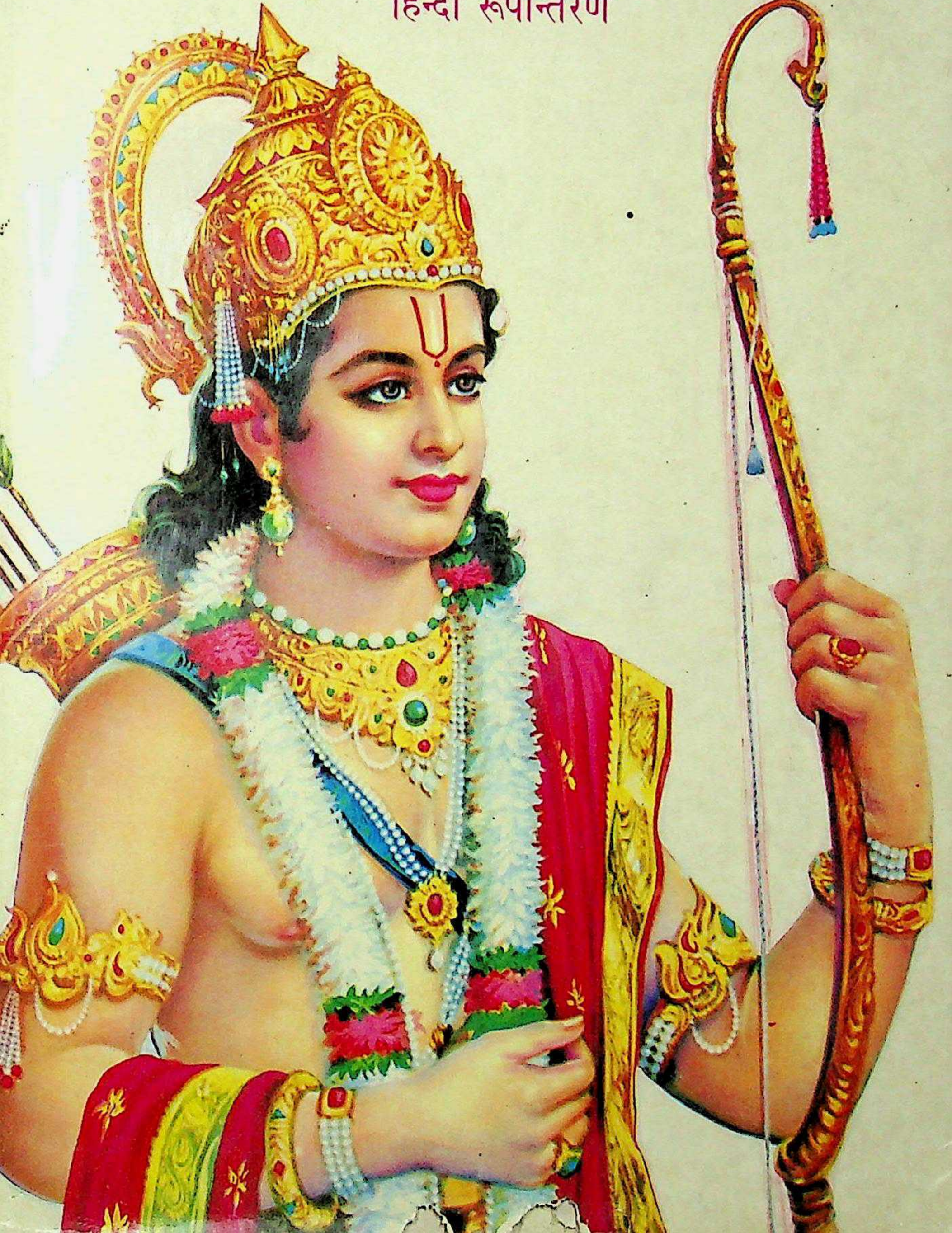

तमिल

कम्बरामायण

के

संस्कृत गद्यानुवाद का हिन्दी रूपान्तरण

मूल एवं रूपान्तरणकर्त्ता

राष्ट्रपति सम्मानित

आचार्य पण्डित आद्याचरण झा

प्रकाशक : श्री सुशील कुमार झा

एम. ए.

प्राप्ति स्थान :

(क) आशियाना रोड, पटना–800 014

(ख) ग्राम-पोस्ट–मंगरौली, जिला– मधुबनी (बिहार), पिन–847213

मुद्रक : तपन प्रेस, मछुआटोली, पटना–800 004

प्रथम संस्करण : 1000 (एक हजार)

सर्वाधिकार : लेखकाधीन

प्रकाशन तिथि : 24.11.1993

कार्तिक शुक्ल देवोत्थान एकादशी बुध

मूल्य : 125/- (एक सौ पचीस रुपये मात्र)

: 300/- राज संस्करण

TAMIL KAMBRAMAYAN

(Hindi version of Transcripted Sanskrit Prose form)
Original Sanskrit and Hindi version

By
Acharya Pandit Adya Charan Jha
(Recipient of "Certificate of Honour" by The President of India)

Published by : SUSHIL JHA

M.A.

Available at :

(a) Ashiyana Road, Patna–800 014

(b) Village-Post–Mangrauni, Distt.–Madhubani (Bihar), Pin–847211

Printed by : Tapan Press, Machua Toli, Patna–800 004

First edition : 1000 (One Thousand)

Publication year : 24.11.1993

Price : Rs. 125/- (Rs. One Hundred and Twentifive only)

: Rs. 300/- Delux Edition

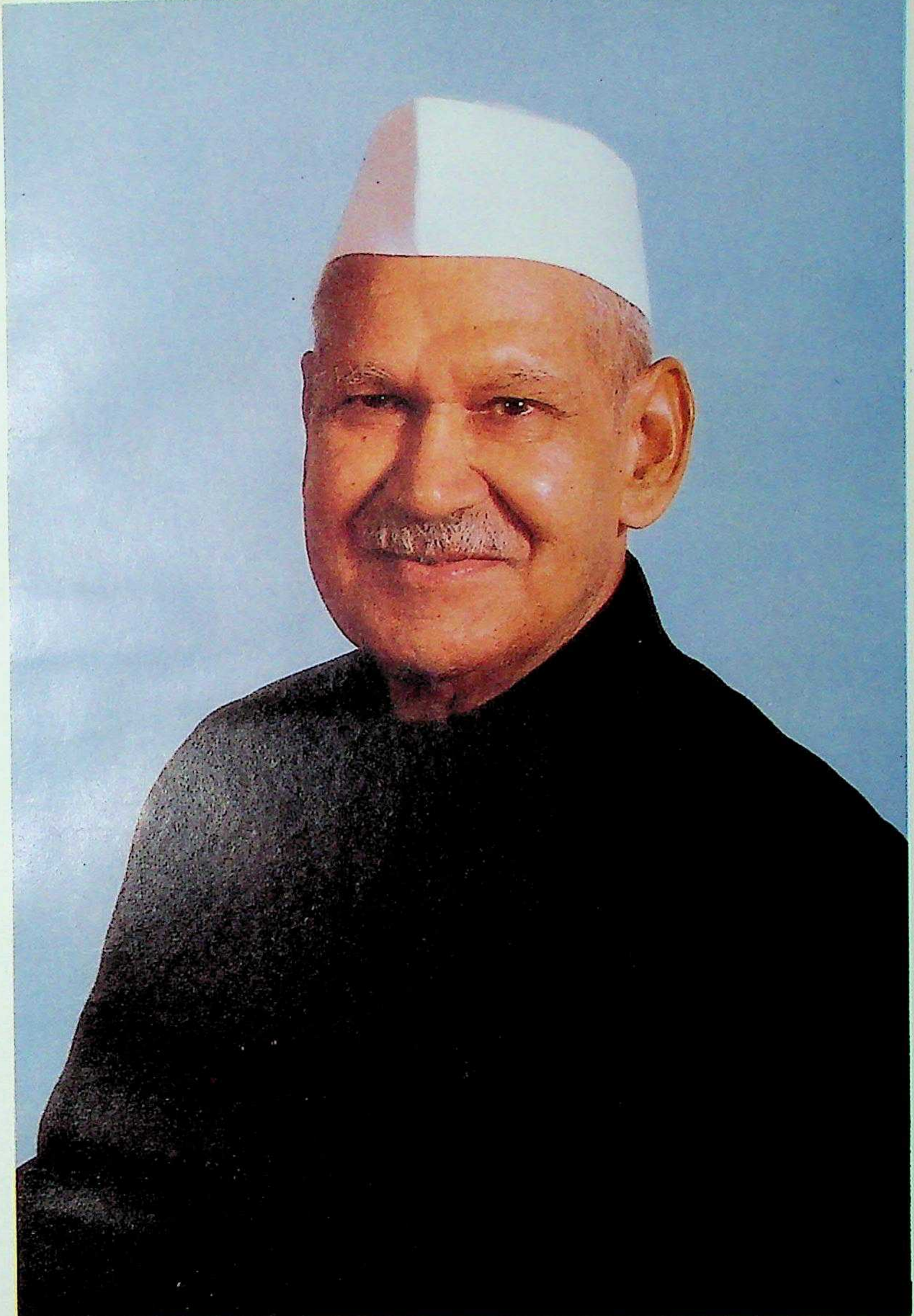

विद्यावाचस्पति

डॉ०. शंकर दयाल शर्मा

त्वदीयं वस्तु हे शंकर दयालो ते समर्पितम्

श्रीः

'समर्पण'

शील सौजन्य शालीनता तथा विद्या-वैदुष्य के समन्वित रूप

भारत के महामहिम राष्ट्रपति

डॉ० शंकर दयाल शर्मा

को

अत्यन्त आदर एवं श्रद्धा के साथ

आद्याचरण झा

उप-राष्ट्रपति
भारत गणतंत्र

VICE-PRESIDENT
REPUBLIC OF INDIA

दिनांक 8 अप्रैल, 1992

तत्रभवता पण्डितप्रवरेण श्रीमता आद्याचरण-झामहाशयेन तमिलभाषानिबद्धस्य कम्बरामायणाख्यस्य महाकाव्यस्य समस्तमपि कथावस्तु सरलेन भावपूर्णेन च संस्कृतगद्येन प्रस्तुतमिति विज्ञायाहं भृशं प्रसीदामि ।

अस्माकं भारतराष्ट्रं कामपि विलक्षणां वर्णनातीतां च साहित्यसम्पदं बिभर्ति । अस्य विभिन्नेषु भागेषु भाषाणां, वेषाणां, लोकाचाराणां च विभिन्नता विलोक्यते तथाप्यस्य राष्ट्रस्येदमस्ति वैशिष्ट्यं यदत्रत्ये विशाले वाङमये सर्वत्रैव सत्यस्य शिवस्य सुन्दरस्य च प्रतिष्ठा समानरूपेण परिलक्ष्यते, तेन चैतद्राष्ट्रं भावनात्मकमैक्यं धारयतीति सम्यक् सिद्ध्यति । यद्यपि बहवो भारतीयाः साहित्यकाराः मातृभाषातिरिक्तानां भारतीयभाषाणां साहित्येन सर्वथाऽपरिचिता अवर्तन्त, तथापि तैः प्रस्तुतानां काव्यानामध्ययनेनेदं सुस्पष्टं विज्ञायते - यत् तेषु काव्येष्वपि भारतीयभाषान्तरसाहित्येन सह महत् साम्यमस्ति । यदि विभिन्नानां भाषाणां साहित्यस्य तदितरासु भाषास्वनुवादाः विहिताः स्युस्तर्हि भारतराष्ट्रस्य भावनात्मकं सांस्कृतिकं चैक्यं सुप्रकाशितं स्यात् । प्रस्तुतोऽयं प्रयास एतद्दृष्ट्या प्रशंसनीयो विद्यते ।

श्रीझामहानुभावेनेतः प्राग् "भारतीयवाङमये रामकथावर्णनम्" इति शीर्षकवत्याः परियोजनायाः प्रथमखण्डरूपेण महत्वपूर्णं साहित्यं प्रकाशितम् । तमिलमहाकाव्यस्य कम्बरामायणस्य संस्कृतगद्यानुवादेन रामकथासाहित्यभाण्डागारस्यानुपमा शोभावृद्धिः समपद्यत । तमिलभाषा साहित्यिकदृशा सविशेषं समृद्धिशालिनी विद्यते । तस्यां लिखितं कम्बरामायणं रामकथाकाव्येषु सुप्रतिष्ठितमस्ति । तमिलनाडु-प्रदेशस्य ग्रामे ग्रामेऽस्य महाकाव्यस्य कथा गीयन्ते । एतावतो महत्वपूर्णस्य काव्यस्य संस्कृतभाषायामनुवादाः संस्कृतसाहित्यस्य विशिष्टश्रीवृद्धये नूनं कल्पिष्यन्ते ।

मया समये समये संस्कृतविद्वांसो निवेदिता यद्धि संस्कृतभाषा-साहित्यस्य प्रादेशिकभाषासु प्रादेशिकभाषासाहित्यस्य च संस्कृतभाषायामनुवादाः कर्तव्या इति । परामर्शमिमं स्वीकृत्य तमिलभाषालिखितं कम्बरामायणं संस्कृतभाषायां समुपस्थापयता रामकथाकोविदेन श्रीमता आद्याचरणझा-महाशयेन संस्कृतसाहित्यस्य श्रीवृद्धये तथा च भारतराष्ट्रस्य भावनात्मकैक्य प्रकाशनार्थं महदवदानं विहितम् । एतदर्थं तस्मै भूयांसि वर्धापनानि समर्पयामि ।

शंकर दयाल शर्मा
(शंकर दयाल शर्मा)

भारत गणतंत्र के महामहिम उपराष्ट्रपति की प्रस्तावना का हिन्दी रूपान्तरण

दिनांक : ८ अप्रैल १९९२

मान्य पण्डितप्रवर श्री आद्याचरण झा ने तमिल भाषा में रचित कम्ब रामायण-महाकाव्य की सभी कथा वस्तुओं को सरल भावपूर्ण संस्कृति गद्य में प्रस्तुत किया है, यह जानकर मैं अत्यंत प्रसन्न हूँ।

हमारा भारतवर्ष किसी विलक्षण वर्णन से परे साहित्य सम्पदा को धारण किये हुए है। इसके विभिन्न भागों में भाषाओं, वेषों एवं लोकाचारों की विभिन्नता देखी जाती है; तथापि इस राष्ट्र की यह दिशिष्टता है कि यहाँ के विशाल वाङ्मय में सर्वत्र सत्य की, शिव की एवं सुन्दरता की प्रतिष्ठा समान रूप से देखी जाती है जिससे यह राष्ट्र भावनात्मक एकता को धारण करता है। यह अच्छी तरह सिद्ध होता है।

यद्यपि बहुत से भारतीय साहित्यकार मातृभाषा से अतिरिक्त भारतीय भाषाओं के साहित्य से सर्वथा अपरिचित रहे; तथापि उनके द्वारा प्रस्तुत काव्यों के अध्ययन से यह सर्वथा स्पष्ट ज्ञात होता है कि उनके काव्यों में भी अन्य भारतीय भाषाओं के साहित्य के साथ बहुत समानता है। यदि विभिन्न भाषाओं के साहित्य का उनसे भिन्न भाषाओं में अनुवाद हो तो भारत की भावनात्मक एवं सांस्कृतिक एकता स्पष्ट प्रकाशित होगी। प्रस्तुत प्रयास इस दृष्टि से प्रशंसनीय है।

श्री झा ने इससे पहले ''भारतीय वाङ्मयेषु रामकथावर्णनम्'' इस शीर्षक वाली परियोजना के प्रथम खण्ड रूप में महत्वपूर्ण साहित्य का प्रकाशन किया है। तमिल भाषा महाकाव्य कम्बरामायण के संस्कृत गद्यानुवाद से रामकथा साहित्य भण्डार की अनुपम शोभावृद्धि हुई है। तमिल भाषा साहित्यिक दिशा में विशेष रूप से समृद्धिशालिनी है। उस भाषा में लिखित कम्बरामायण काव्य में अत्यन्त प्रतिष्ठित है। तमिलनाडु प्रदेश के गांव-गांव में इस महाकाव्य की कथा गायी जाती है। ऐसे महत्वपूर्ण काव्य का संस्कृत भाषा में अनुवाद निश्चित ही संस्कृत साहित्य की विशिष्ट श्रीवृद्धिकारक होगा।

मैंने समय-समय पर संस्कृत विद्वानों से निवेदन किया है कि संस्कृत भाषा साहित्य का प्रादेशिक भाषाओं में और प्रादेशिक भाषा साहित्य का संस्कृत भाषा में अनुवाद किया जाना चाहिए। इस परामर्श को स्वीकार कर रामकथा के विद्वान् श्री आद्याचरण झा ने तमिल भाषा में लिखित कम्बरामायण को संस्कृत भाषा में उपस्थापित करके संस्कृत साहित्य की श्रीवृद्धि के लिए तथा भारत राष्ट्र की भावनात्मक एकता प्रकाशन के लिए बहुत बड़ा योगदान किया है। इसके लिए इन्हें बहुत-बहुत वर्धापन देता हूँ।

शंकरदयाल शर्मा

ENGLISH VERSION OF THE PREFACE WRITTEN BY HIS EXCELLENCY THE VICE PRESIDENT OF INDIA

Dated April, 8, 1992

I am extremely happy to learn that the renowned scholar Pt. Adya Charan Jha has presented the Sanskrit prose form of the entire great-Kamb-Ramayan in a very lucid and heart-touching style.

Our India retainsaunique treasure of literateurs which is beyond any extraordinary description. Although adiversity of languages, dresses and customs is witnesed in different parts of the country, the speciality of this Nation has been that in the vast realm of literatures, the principles of **"Truth, Bliss and Beauty"** have been propounded with equal emphasis everywhere and that has enabled this Nation to maintain emotional integrity. This has been well established.

Though many of our Indian litterateurs have remained out of touch with the literatures of Indian languages other than that of their own mother-toungue, yet the study of their works clearly reveal that there is much similarity between their own writings and those of other Indian languages. If the literatures of different Indian languages are translated into other Indian languages, the cultural unity and emotional integrity will get sharply focussed. With this viewpoint, the present effort (of Sri Jha) is highly commendable.

Sri Jha has, already, to his credit a valuable literary contribution in the first part of the scheme "BHARTIYA VANGMAYESHU RAMKATHA VARNANAM". The Sanskrit translation of great Tamil epic KAMB-RAMAYANA in prose form has incomparably added to the glamour and has enormously enriched the literary treasure of Ramkatha. From literary point of view, Tamil language is extremely rich KAMB RAMAYANA written in Tamil verse is a masterpiece of literature and has a special place of honour in the field of learning. The stories of this Tamil epic is sung in each and every village of Tamil Nadu.Sanskrit translation of such a valuable piece of literature will definitely add to the glamour of Sanskrit literature.

From time to time, I· have requested the learned Sanskrit scholars that literary works appearing in Sanskrit should be translated

into regional languages and vice-versa. Acting upon my advice, Sri Adya Charan Jha, so well versed in Ramkatha has contributed to the great extent for the enrichment of Sanskrit literary treasure and for the emotional integrity of the Nation by translating and presenting the Tamil KAMB-RAMAYANA in Sanskrit prose for which I offer him many many congratulations.

(Shankar Dayal Sharma)

श्रीः

''तमिल-कम्बरामायण'' के संस्कृत गद्यानुवाद का 28.5.93 को विमोचन करते हुए भारत के वर्तमान महामहिम राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा के विस्तृत भाषण के **ध्वन्यंकन (टेप-कैसेट) से लिये मात्र कुछ अंश ।**

—●—

'कम्बरामायण' की संस्कृत में संक्षिप्त व्याख्या जो आचार्य झा ने की वह **मैंने ही उनसे कहा था** कि ''कम्बरामायण'' का सरल संक्षिप्त रूपान्तरण यदि कर दें तो बहुत अच्छा होगा।'' क्योंकि '' तमिल कम्ब रामायण'' बहुत बड़ा है पूरा अनुवाद तो कठिन है । सबसे रोचक बात तो यह हुई कि इसके अनुवाद से **संस्कृत माध्यम द्वारा दक्षिण और उत्तर-भारत की भव्य भावनाओं का समन्वय होगा ।** संपूर्ण दक्षिण भारत में कम्ब रामायण का घर-घर में सादर पाठ-गायन होता है ।

अभी-अभी **'थाई रामायण' का संस्कृत में अनुवाद हुआ है ।** इसके द्वारा थाई देश के चिन्तन से भारतीय परिचित होंगे ।

भारत 'राम' नाम के साथ जुड़ा हुआ है । 'भारत'-'राम' ये दोनों शब्द अभिन्न जैसे हो गये हैं । 'कम्ब रामायण' में बहुत अधिक उच्च भावनाओं का, विभिन्न रसों का एवं नूतन घटनाओं का समन्वय है, जो पठनीय एवं मननीय है ।

'कम्बरामायण' का संस्कृत में अनुवाद करके झा ने ऐसा महान् कार्य किया है कि जिससे ये संपूर्ण समाज के लिए आदरणीय होंगे । **मैं आचार्य आद्याचरणजी का सम्मान करता हूँ और उन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ ।**

—●—

विशेष : (क) इसी भाषण के क्रम में महामहिम डॉ० शर्मा ने कहा कि **कम्बरामायण के इस संस्कृत गद्यानुवाद का आचार्य झाजी स्वयं हिन्दी में रूपान्तरण कर दें यह मैं चाहूँगा ।** इसी उदात्त भावना के परिणामस्वरूप **यह हिन्दी अनुवाद आपके समक्ष हैं ।**

(ख) ज्ञातव्य है कि दिल्ली दूरदर्शन ने दिनांक 10.6.92 को प्रातः 8.20 से 8.40 तक अपने राष्ट्रीय प्रसारण में डॉ० रमाकान्त शुक्ल, नई दिल्ली द्वारा लेखक से वार्त्तालाप करा कर राष्ट्र को इस विलक्षण कृति के सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी दी ।

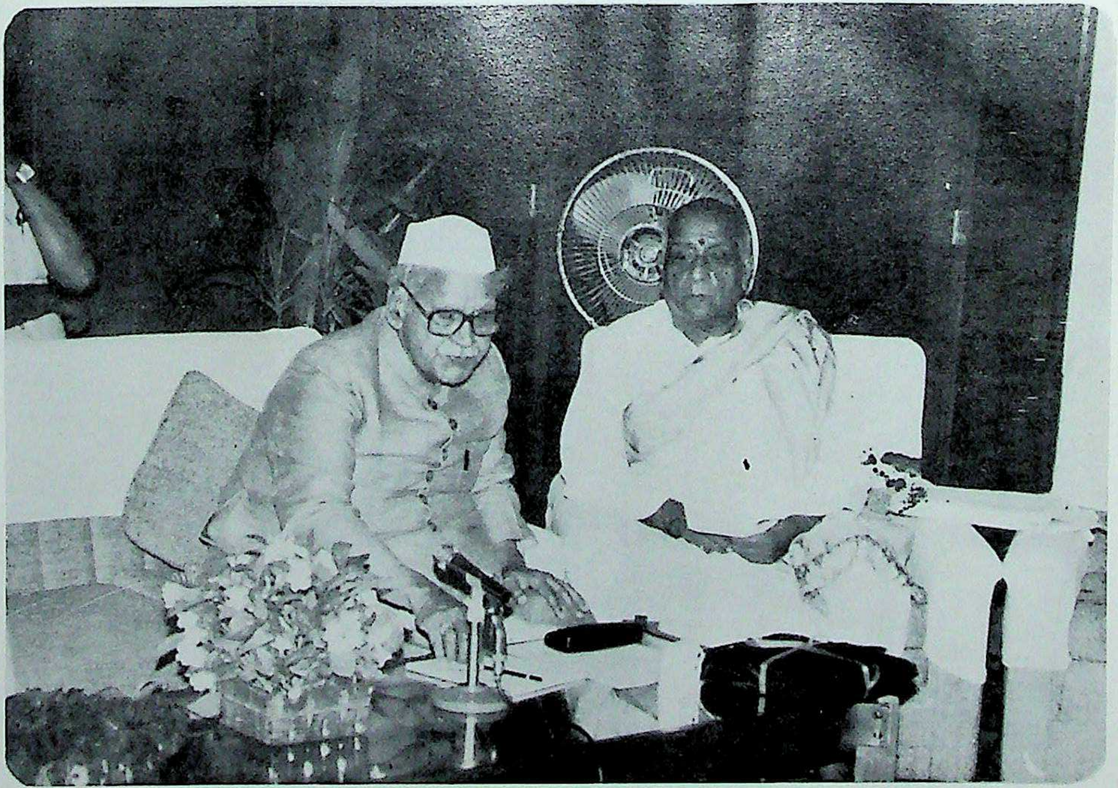

महामहिम डॉ. शकर दयाल शर्मा, आचार्य आद्याचरण झा

श्रीः

'दो शब्द'

'तमिल कम्बरामायण' के प्रसंग अग्रिम पृष्ठों में 'अद्‌भुत रामकृपा' 'प्राक्कथन' एवं 'पूर्वपीठिका' में संक्षिप्त रूप से संस्कृत गद्यानुवाद तथा पुनः उसके हिन्दी रूपान्तरण सम्बन्धी विवरणों से इस ग्रन्थ के लेखन के **घटनाचक्र** से सभी अवगत हो जायेंगे ।

यहाँ मुझे स्पष्ट रूप में कहना है कि इस समग्र हिन्दी रूपान्तरण की **श्रुतिलिपि** लगभग ६ सौ पृष्ठों की तथा मेरे द्वारा शुद्ध किये गये की पुनः ६ सौ पृष्ठों की **स्वच्छ प्रति** कल्याण भाजन मेरे प्रिय छात्र **श्री नागेन्द्र झा ने की** । इस तरह लगभग **१२ सौ पृष्ठों के लेखन कार्य** एवं मछुआटोली पटना के **तपन प्रेस से मुद्रण सम्बन्धी विविध कार्यों से आवागमनादि इसी एक मात्र बालक नागेन्द्र ने किया ।**

मैं एक शब्द में **सर्वमङ्गलमय रामचन्द्र इसका सकल-कल्याण करें यही प्रार्थना करता हूँ।**

मैं इस मंगलमय पावन **सारस्वत यज्ञ की पूर्णाहुति** के समय अपने **समस्त पारिवारिक सदस्य अनुज-पुत्र-पौत्रादि प्रभृतियों के** लिये अशेष अमंगल हारी-मंगलकारी मर्यादा पुरुषोत्तम परात्पर परब्रह्म स्वरूप **'राम' से अखण्ड कल्याण-कामना करता हूँ ।**

मैं इस पुनीत अवसर पर अपनी **गोलोक वासिनी धर्मपत्नी इन्द्रकला झा** का सस्नेह स्मरण करता हूँ, जिनकी प्रेरणा ही **'रामकथा वर्णनम्'' विशाल परियोजना का मूल स्रोत है ।**

अन्त में पूर्ण सतर्कता रखने पर भी अपनी अज्ञानता तथा मुद्रणजन्य किसी भी त्रुटि के लिए मैं **विनीत सादर क्षमा चाहूँगा'** साथ ही तपन प्रेस, मछुआटोली, पटना-४ के सर्वाधिकारी **श्री निशीथ कुमार बोस महाशय के** प्रति आभार व्यक्त करते हुए कृतज्ञता ज्ञापन करता हूँ जिनके सौजन्य से इतनी शीघ्रता में यह पुस्तक निकल सकी ।

पटना

दीपावली–1993 **आद्या चरण झा**

श्री :

''अद्भुत रामकृपा''

भारत के महामहिम वर्तमान राष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने २८.५.९२ को मेरी कृति ''भारतीय वाङ्मयेषु राम कथा वर्णनम्--द्वितीय खण्डम ''**तमिल कम्बरामायणम्**'' का संक्षिप्त संस्कृत गद्य-रूपान्तरण के लोकार्पण / विमोचन के अवसर पर अपने भाषण क्रम में मुझसे कहा कि ''आप इस पुस्तक का हिन्दी रूपान्तरण स्वयं कर दें तो अच्छा होगा।''

मैंने उत्तर में तुरत कहा कि ''बारह महीने के भीतर इस आदेश का पालन होगा''।

इस वार्धक्य में मैं समझता था कि महामहिम के हाथों दूसरी बार मेरी कृति का विमोचन मेरे रचना-यज्ञ की ''**पूर्णाहुति**'' है। परन्तु रामकृपा-अनन्त-असीम है। इस पर कोई कल्पना संभव नहीं है।

उपराष्ट्रपति भवन सभागार में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। विद्वानों से खचाखच भरे हुए वह सरस्वती सदन ''साधु-साधु'' शब्दों से गूँज उठा ?

आज श्रावणी-पूर्णिमा वृहस्पति ''**भारतीय संस्कृत-दिवस**'' १३.८.९२ के पावन पर्व पर इस महत्त्वपूर्ण यज्ञ का मैं पुनः तृतीय बार शुभारम्भ कर रहा हूँ।

इस सारस्वत-यज्ञ का समापन कैसे कब होगा, इत्यादि तो सर्वतोभद्रमय ''**रामचन्द्र**'' ही जानें। और विद्या-वैदुष्य, शील शालीनता के प्रतिरूप दयालु शंकर तुल्य **महामहिम शंकर दयाल शर्मा–भारत के राष्ट्रपति, ही समझें।**

मैं तो विनीत भाव से निष्ठा पूर्वक इस यज्ञ कार्य में आज से जुट गया। हाँ, जो कुछ प्रमुख घटनायें संस्कृत के संक्षिप्तीकरण में छूट गयी थी इसमें उन्हें भी दे दी जायेगी। जिनका संकेत उन स्थानों पर कर दिया जायेगा।

''शुभास्ते-मे-सन्तु पन्थानः''।

आद्या चरण झा

१३.८.९२

पुनश्च

''राम कृपा असीम है'' । इस पुस्तक की पाण्डुलिपि ३१.३.९३ से पूर्व ही तैयार हो गई । अब यह पुस्तक **सर्वतोभद्र-रामभद्र** की अनुकम्पा से पटना के एक प्रेस में मुद्रित हो रही है ।

आद्या चरण झा

२१. ७. ९३

''प्राक् कथन''

''भारतीय वाङ्मयेषु राम कथा वर्णनम्-प्रथम खण्डम्'' मेरी कल्पित विशाल-परियोजना के परिणाम स्वरूप ५.६.८९ को मुद्रणालय से प्रकाशित हुआ।

अशेष करुणा पारावार **भगवती सीता सहित भगवान रामचंद्र की** अनुकम्पा से न केवल **प्रथम खण्ड प्रकाशित ही हुआ, अपितु भारत गणतंत्र के महामहिम उपराष्ट्रपति डॉ० शंकर दयाल शर्मा ने उपराष्ट्रपति भवन सभागार में इस पुस्तक का एक बड़े भव्य समारोह में ९.८.८९ बुधवार को विमोचन / लोकार्पण किया।**

अनेकानेक विघ्न-बाधाओं से युक्त इस वार्धक्य में ''द्वितीय खण्ड'' के लेखनादि का कोई विचार मन में नहीं रह गया था। किन्तु पुस्तक विमोचन के समय महा-महिम उपराष्ट्रपति ने द्वितीय-खण्ड के रूप में विशाल **''तमिल कम्बरामायण''** का संक्षिप्त सरल-संस्कृत गद्यानुवाद करने की अपनी इच्छा प्रगट की और मेरी ओर संकेत किया। मैंने उक्त संकेत को भारत-राष्ट्र के प्रतीक का आदेश के रूप में ग्रहण किया। तदनुसार **श्रीकृष्ण जन्माष्टमी १९८९** के शुभ दिन–शुभ नक्षत्र में उस कठिनतम यज्ञ में लग गया।

इस **द्वितीय खण्ड में ''तमिल कम्बरामायण''** का **संक्षिप्त सरलतम संस्कृत गद्य** में यथा स्थान उद्धरणों के साथ रूपान्तरण प्रथम-भाग के रूप में रहेगा। उसी पुस्तक में 'द्वितीय-भाग के रूप में महाकवि कालिदास के रघुवंश' से लेकर बारहवीं शताब्दी तक प्रकाशित कतिपय-रामकथामय संस्कृत काव्य-नाटकों का भी सरल संस्कृत गद्यानुवाद उद्धरण-समीक्षा के साथ रहेगा।

नूतन बात– इस **'द्वितीय खण्ड'–द्वितीय भाग** में केवल पाँच काव्य-नाटक के संस्कृतानुवाद दिये जा सके। ''कालिदास'' के रघुवंश का रामकथा-अंश, ''भवभूति'' के महावीर चरित तथा, उत्तर रामचरित, मुरारि, कवि के 'अनर्ध राघव तथा दिङ्नागाचार्य के 'कुन्दमाला नाटक' के संस्कृतनुवाद दिये जा सके। पुस्तक के विस्तृत होने के भय से अन्य काव्य-नाटक भविष्य में भगवत् कृपा पर छोड़ दिये गये।

वैसे भी यह 'द्वितीय खण्ड' बड़ा हो जायेगा। यह कब कैसे छपेगा, कैसे पुस्तक लेखन समाप्त होगा ये बातें **भगवत्कृपा** के अधीन है तथा महामहिम **राष्ट्रपति की शुभेच्छा के अधीन** है। इन बातों को मन में रखकर तुरंत इस पवित्र यज्ञ में संलग्न हो गया।

आद्या चरण झा

पूर्व पीठिका

''कम्ब रामायण का संक्षिप्त परिचय''

सबसे पहले ''कम्ब रामायण'' के विषय में पूर्व पीठिका के रूप में थोड़ा ज्ञान आवश्यक है। कवि का नाम **''कम्बर'' ''कम्बन्''** इन दोनों शब्दों से प्रचलित है। इनमें 'कम्बन्' शब्द विशेषरूप से प्रचलित है।

'भुवन-वाणी न्यास' लखनऊ द्वारा आचार्य ति० शेषाद्रि कृत हिन्दी टीका (हिन्दी में अनूदित) के प्रथम पृष्ठ में लिखा है, रचयिता 'महर्षि कम्बर' / स्वामी चिन्मयानन्द ने भी 'कम्बर'' शब्द लिखा है। वहीं जस्टिस एस. महाजन, जस्टिस इस्माइल, 'आद्रिद-पौण्डि-सा० गणेशन्' प्रभृति विद्वानों ने कम्बर शब्द के स्थान पर **''कम्बन्** शब्द का व्यवहार किया है। किन्तु पुस्तक के नाम में सबों ने कम्बन् नाम का ही अधिक व्यवहार किया है।

भारत के तमिल-भाषा विशेषज्ञ एवं गंभीर गवेषक विद्वानों ने 'कम्बन' के समय से ही उन्हें 'महर्षि' शब्द से सम्बोधित किया है। उन्हें विश्वास है कि ये भी ''वाल्मीकि'' की तरह ही कवि के साथ **''महर्षि'' भी हैं।**

विशेष–इस महाकाव्य के पढ़ने के बाद व्यक्तिगत मेरा मन्तव्य है कि काव्य मर्मज्ञ सरस कवि 'कम्बन्' महान् भक्त शिरोमणि भी हैं। फलतः ''महर्षि'' शब्द इनके लिए प्रयुक्त होना ही चाहिए। महाकवि कालिदास प्रभृति की तरह भारत के महान कवियों, लेखकों की परंपरा के अनुसार ''कम्बन'' ने भी अपने जन्मस्थान एवं जन्म काल का कोई भी उल्लेख नहीं किया है **''कालिदास' प्रभृति की तरह**। अतएव ये कब कहाँ थे इसका निश्चित रूप में कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। केवल उनकी काव्य समीक्षा से अधिकांश विद्वानों के तथा आचार्य ति० शेषाद्रि के अनुसार कम्बन् का क़ाल नवम शताब्दी माना गया है। उसी समय से इस ''रामायण'' की लोकप्रियता एवं व्यापकता क्रमशः बढ़ती गयी।

विद्वानों के मतानुसार ''तिरुबमुन् दूर'' नामक स्थान में ब्राह्मण परिवार में इनका जन्म हुआ। ये भगवती वाग्देवी सरस्वती के महान कृपा-पात्र थे। अतएव इन्हें ''कवि चक्रवर्ती'' शब्द से भी सम्बोधित किया गया।

ये केवल "कवि सम्राट" ही नहीं थे अपितु "विद्यासागर" भी थे। जिन्होंने वेदसागर में प्रवेश करके सकल ज्ञान विज्ञान रत्न की प्राप्ति की।

"कम्बरामायण" मूल पद्यों के साथ (६०) साठ वर्ष पूर्व (अब लगभग ७५ वर्ष पूर्व) श्री गोपाल कृष्णामाचारी की सर्वथा प्रामाणिक टीका के साथ उपलब्ध है जो उपादेय है। दूसरी टीका महामहोपाध्याय "उ–वै–स्वामी नाथैयर" की है। जहाँ प्रथम टीका भक्ति दृष्टि से ज्ञान कोश है तो दूसरी टीका साहित्यिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है।

मैंने १९८० ई० में आचार्य ति० शेषाद्रि लिखित "भुवन वाणी ट्रस्ट, लखनऊ द्वारा मूल पद्य सहित हिन्दी अन्वय-टीका युक्त कम्बरामायण" प्राप्त कर प्रधानतः उसी के आधार पर संस्कृत गद्यमय संक्षिप्त रूपान्तरण किया है। अन्य टीकाएँ तथा अँग्रेजी में प्राप्त टिप्पणी आदि से भी सहायता ली गयी है।

इस रामायण में १०४१८ दस हजार चार सौ अठारह पद्य हैं। इसके अतिरिक्त भी बहुत से प्रक्षिप्त पद्य हैं ।

पद्यों की संख्या इस तरह है–यथा–**बालकाण्ड में** १३८९, **अयोध्या काण्ड में** १२१०, **अरण्यकाण्ड में** ११९६, **'किष्किन्धा काण्ड'** में १००४, **सुन्दर काण्ड** में १०९६ तथा **युद्ध काण्ड (पूर्वार्ध तथा उत्तराधं) में** १३२३ पद्य हैं। **इस रामायण में 'उत्तर काण्ड' नहीं है।**

इस तरह बाल्मीकि रामायण और आनन्द रामायण के बाद कम्बरामायण सर्वाधिक पद्यमय रामकाव्य उपलब्ध है। इस रामायण के प्रत्येक काण्ड में अनेक "पटल" हैं। प्रत्येक 'पटल' में विषय विभाजन के अनुसार पद्य दिये गये हैं।

इसके पढ़ने के बाद यह निश्चित रूप में ज्ञात होता है कि कवि कम्बन् महान् भक्त एवं महान् कवि थे। यह रामायण प्रधान रूप से "वाल्मीकि रामायण" का अनुसरण करता है। महर्षि व्यास के अध्यात्म रामायण का भी जहाँ-तहाँ प्रभाव है। स्वयं कवि के अनुसार महाकवि कालिदास से भी ये प्रभावित हैं।

यह रामायण 'शृंगार रस' वर्णन में आनन्द रामायण का अधिकतः अनुकरण करता है। यहाँ मैंने विषय वस्तु के वर्णन के साथ यथास्थान उद्धरण के रूप में कुछ पद्य भी दिये हैं।

विशेष–यद्यपि उद्धरण के रूप में अधिक पद्य देना आवश्यक था किन्तु ग्रन्थ के विशाल होने के भय से ऐसा नहीं कर सका। किन्तु कुछ मूल पद्यों के साथ उनके अर्थ तो सरलतम सरस-रूप में दिये ही गये हैं।

●

सूचीपत्र

संख्या		पृष्ठ
1.	संस्कृत में प्रस्तावना	I
2.	हिन्दी में रूपान्तरण	II
3.	अंग्रेजी में रूपान्तरण	III–IV
4.	ध्वयंकन का अंश	V
5.	दो शब्द	VI
6.	अद्‌भुत रामकृपा	VII
7.	पुनश्च	VIII
8.	प्राक् कथन	5
9.	पूर्व पीठिका	7–8
10.	बालकाण्ड	11–44
11.	अयोध्या काण्ड	45–68
12.	अरण्य काण्ड	69–91
13.	किष्किन्धा काण्ड	92–115
14.	सुन्दरकाण्ड	116–136
15.	युद्धकाण्ड पूर्वार्ध	137–161
16.	युद्धकाण्ड उत्तरार्ध	162–217
17.	विशिष्ट वर्णनों की सूची	218–222
18.	सीता-परित्याग-समीक्षा	223–228
19.	Submission	229
20.	Introduction	230–232
21.	Proceedings	233–236

□ □ □

"कम्ब रामायण"

"बाल काण्ड"

विषय प्रवेश

इस काण्ड में **२२ बाइस पटल** हैं (अध्याय हैं) । उनमें पहला तीन पटल नदी पटल, देश पटल तथा नगर पटल नाम से वर्णित है। इससे ज्ञात होता है कि कवि कम्बन् नदी, वन, पर्वत, क्षेत्र, उद्यान आदि प्राकृतिक सौन्दर्य के दृश्य का महत्त्व सबसे पहले दे रहे हैं। ये वर्णन इस देश की विशेषता को प्रगट करते हैं।

सबसे पहले **१४ चौदह पद्यों में** भगवान् के विविध रूप के–उनकी सर्वशक्तिमत्ता एवं सुंदरता के मधुमय वर्णन से मङ्गलाचरण किये गये हैं। इन मङ्गलाचरणों में सर्वशक्तिमान ब्रह्म की अनेकरूपता में एकरूपता, एकरूपता में अनेकरूपता के गंभीर वर्णन हैं। जिनसे कम्बन् कवि का **"विशाल" पाण्डित्य** परिलक्षित होते हैं ।

(क) 'मङ्गलाचरण'

यहाँ मूल दो तमिल-पद्य का संस्कृत पद्यों में ही अनुवाद किया गया है। जिनके ये निम्नांकित अर्थ हैं।

१. परब्रह्म परमेश्वर ही सत्त्व, रज, एवं तमोगुणमय विभूति हैं । प्रकृत पुरुष रूपी उनके ही दो प्रका``पान रूप हैं। उसी परब्रह्म की यह पञ्चतत्त्वत्मिका (क्षिति जल पावक गगन एवं समीर) सृष्टि व्याप्त है। यही परमेश्वर ब्रह्माण्ड के भीतर और बाहर प्राण स्वरूप विराजमान हैं। ऐसे ही सर्वव्यापी परब्रह्मस्वरूप विष्णु को मैं हृदय में धारण करता हूँ। उनके आगे नतमस्तक हूँ। उनका नमन करता हूँ।

टिप्पणी–यह पद्य व्यापक परब्रह्म की प्रमुखता प्रतिपादन करता है। साथ ही यह पद्य महाकवि कालिदास के अभिज्ञान शाकुन्तल नाटक के मङ्गलाचरण पद्य का स्मरण दिला रहा है। कवि ने स्वयं आगे कहा है कि मैं कालिदास से भी प्रभावित हूँ।

२. मङ्गलाचरण के दूसरे पद्य का अर्थ निम्नांकित है।

जो व्यापक विष्णु सगुण निर्गुण भाव अभाव एक अनेक त्रिगुणात्मक एवं त्रिगुणरहित हैं, जो केवल ज्ञान से ही जानने योग्य हैं (ज्ञानगम्य हैं), उसी ब्रह्मस्वरूप

राम के शाश्वत–अविनाशी चरणकमल का नित्य सिरपर–मस्तकपर हमें धारण करना चाहिए। उसी पाद पद्म में मस्तक को लगाते रहना चाहिए।

इस प्रकार इस कवि ने शेषशायी भगवान विष्णु के अनेकानेक रूप सौन्दर्य का वर्णन करते हुए पञ्च तत्त्व के निर्माणकर्त्ता के स्वरूप का वर्णन किया है। यह भी कहा है कि जहाँ-जहाँ रघुनाथ 'रामचन्द्र' का कीर्तन होता है वहाँ-वहाँ हाथजोड़ अञ्जलिबद्ध हनुमान् उपस्थित रहते हैं।

उसी तरह भगवती सरस्वती की भी वन्दना करते हैं। इनकी सरस्वती वन्दना ''शुक्लां ब्रह्म विचार सार परमां'' तथा ''या कुन्देन्दु तुषार हारधवला'' की तरह ही है। यह मूल मङ्गलाचरण का (१२) बारहवाँ पद्य है।

इसके बाद प्राणियों के कल्याणकारी भगवान् शिव तथा शिवतनय विघ्न-विनाशक गणेश की वन्दना यहाँ 'बालकाण्ड' के एक ही १६ सोलहवें पद्य में संपूर्ण रामायण का वर्णन कवि ने किया है। यथा–प्रशंसनीय श्रीराम-सीता-लक्ष्मण के साथ वन गये, वहाँ विराध, खरदूषण, मायामृग-मारीच, कबन्ध आदि राक्षसों को मारकर सात ताल वृक्षों का छेदन कर, बालि का बध कर, समुद्र में सेतु-पुल-बँधवाकर–संपूर्ण कुल सहित रावण का नाश करके पुनः अयोध्या लौट गए।

यहाँ मालूम पड़ता है कि **'तमिल रामायण'** के उक्त पद्य से **प्रभावित तुलसीदास ने भी एक ही पद्य** में समग्र रामायण का वर्णन किया है। यथा :

''आदौरामतपोवनाधिगमनं–एतद्धि रामायणम्।''

''प्रशस्ति पद''

इस प्रशस्ति पटल में महाकवि कम्बन् भगवान् नारायण के ऐश्वर्य एवं प्रभाव का वर्णन कर रहे हैं।

महर्षि नारद के मुख से निर्गत परब्रह्म विष्णु की सभी लीलाओं का वर्णन वाल्मीकि के मुख से सुनकर वेदतुल्य रामायण की रचना की। जैसे वाल्मीकि रामायण प्रसिद्ध है वैसे ही 'तमिल भाषा' में कम्बन् कवि रचित यह 'कंम्ब रामायण' अति प्रसिद्ध है।

कहा जाता है कि ये कम्बन् (चोल देश के 'तिरुअलुम् ग्राम बासी' परम ज्ञानी-दानी थे। उन्हीं का **'कम्बरामायण' विश्व में विख्यात है।**

कहा जाता है कि जैसे मन्थराचल पर्वत से देवताओं ने समुद्र मन्थन कर अमृत पान किया और कराया वैसे ही तमिल भाषासागर में मज्जन करके अपने तमिल पद्यों के द्वारा अमृतमय मधुरसपान कम्बन् ने कराया। यह तो चिर दिनों से सर्वविदित एवं

प्रसिद्ध है कि **''राम-कथा शिव-पार्वती का संवाद'' है।** भगवान् शिव ने भगवती–उमा को उनके कान में जो नाम मन्त्र कहा था वह **''राम'' नाम** ही था। उसी सीतापति राम के चरण कमलों को प्रणाम कर कवि कम्बन् काव्य **प्रारम्भ** कर रहे हैं।

महर्षि नारद ने 'राम चरित्र' रूपी अमृत लोगों को पान कराने के लिए जो ईख के रसों का रसपान किया, अर्थात् रामचरित्र रूपी अमृतमय इक्षु-रस को पेर कर लोगों को पिलाया, जिसकी **चासनी को गुड़** रूप में महकवि **कालिदास ने** बदला। उसी **गुड़ से मधुरपायस का निर्माण कम्बन् ने किया।**

तात्पर्य यह कि ब्रह्मा से जिस **''रामकथा''** को प्राप्त कर नारद ने कहा, उसी कथा को सुनकर भगवान् **'वाल्मीकि'** ने अति विस्तृत रामायण का निर्माण किया और जिस विस्तृत ''रामकथा'' सागर में प्रवेश कर कालिदास ने रत्न प्राप्त किया उन्हीं रत्नों के प्रकाश से तथा उन्हीं के रस माधुर्य से **तमिल-भाषा में महाकवि कम्बन्** ने रामकथा का विस्तार किया।

कम्बन् के इन कथनों से यह स्पष्ट होता है कि कम्बन् महर्षि **वाल्मीकि** तथा महाकवि **कालिदास** से सर्वथा प्रभावित हैं।

महाकवि कम्बन् कहते हैं कि प्रति दिन **''रामनाम''** के उच्चारण से **धन** बढ़ता है, **कल्याण** होता है। पाप और अकल्याण का नाश होता है। एवं जन्म मरण से परे **''मोक्ष''** प्राप्त होता है। **''राम''** इस एक शब्द के उच्चारण से ही सहस्त्र यज्ञ का फल होता है। राजाओं के धन और यश बढ़ते हैं, तथा पाप निर्मूल हो जाता है। **''राम''** नाम उच्चारण करनेवालों को नित्य स्वर्ग निश्चित है।

''रामचरित्र'' सुनने वालों को भी **वैकुंठवास** निश्चित है। इस तरह जो ''रामचरित्र'' को नहीं भूलते हैं, वे अन्नदान, भूदान, कन्यादान, गोदान और स्वर्णदान का फल निश्चित रूप से प्राप्त करते हैं।

(पद २९ से ३४ तक)

कवि पुनः कहते हैं कि ''रामचरित्र'' के लेखक, गायक एवं प्रशंसक के वर्णन को सुनकर कोई भी राज्य प्राप्त कर सकता है और कर्म-बन्धन को काटकर **मोक्ष** प्राप्त कर सकता है। **(पद–२९)**

''तमिल'' भाषा में **''सिरप पुप् पायरम्''** का अर्थ होता है। **विशेष-भूमिका, प्रस्तावना, और प्राक्कथन।** ये बातें केवल लेखक का ही नहीं लेखक के प्रशंसक को भी प्राप्त हैं। ये बातें ति० शेषाद्रि महोदय ने अपनी टीका की टिप्पणी में लिखी है।

इस प्रकरण के अन्तिम भाग में 'कम्बन्' कवि ने अपनी विनम्रता का इतना भव्य

एवम् आकर्षक वर्णन किया है जो सर्वथा मानव-भावना को आप्यायित और अलोडित करते हैं। यहीं अपने पूर्व कवि **'कालिदास'** प्रभृति कवि के प्रति विनम्रता दिखाई है।

कवि कहते हैं–उत्ताल-तरंग से युक्त **क्षीर सागर** (दूध का समुद्र) के समीप जाकर कोई **विडाली** समुद्र के सभी दूध को पीना चाहती है। (जो सर्वथा असम्भव है।) वैसे ही यह अल्पज्ञ कवि–'कम्बन्' **'रामकथा'** रूपी **क्षीर सागर** के संपूर्ण दूध पीने को तैयार हैं। जहाँ महर्षि वाल्मीकि की दिव्य वाणी देश में, राष्ट्र में व्याप्त हो वहाँ मेरी यह रचना क्या मूर्खता पूर्ण नहीं है ? क्या संसार मेरी भर्त्सना नहीं करेगा कि क्या तुम करते हो जब नित्य वेद-ज्ञानी वाल्मीकि का **''राम चरित्र''** समाने में हैं।

ऐसी स्थिति में भी पागलों का प्रलाप, अज्ञ का कथन, और भक्त की भक्ति क्या आलोच्य है ? क्या उनकी आलोचना हो सकती है ? नहीं।

यदि कोई बच्चा भूमि पर या दीवाल पर रेखा खींचता है तो उसे देखकर चित्रकार हँसते हैं। उसी तरह मेरी **''रामकथा''** को सुनकर और पढ़कर लोग हँसेंगे और निन्दा करेंगे। फिर भी संस्कृत में वाल्मीकि, वशिष्ठ, बोधायन और उनके अनुसरण करनेवाले कालिदास आदि हुए। उन्हीं के कथनों का अनुसरण करने का मेरा यह प्रयास है।

कवि कहते हैं कि अन्त में मेरा यह कहना है कि विशाल राक्षस समूह को नाश करनेवाले **धनुर्धर ''रामचन्द्र''** की स्तुति करने वाले इच्छित फल ज्ञान एवं कीर्ति प्राप्त करते हैं। मेरी यह स्तुति भी मोक्ष मार्ग को दर्शाने वाली है। भगवती-लक्ष्मी उन पर अवश्य प्रसन्न होगी। इस तरह उपर्युक्त रूप में कम्बन् ने **१२ बारह** पद्यों में अपनी विनम्रता और **''रामकथा'' की महत्ता** का वर्णन किया है।

''नदी पटल''

''आइ्-रूप् पडलम्'' अर्थात् ''नदी पटल'' नाम के उस सर्ग में कवि कम्बन् पवित्र सरयू नदी का वर्णन करते हैं। इस नदी में किसी भी पुरुष के पाँचों इन्द्रियों में कोई भी इन्द्रिय कुमार्ग में नहीं जाता है और किसी स्त्री का कटाक्ष नहीं चलता है। ऐसी महिमामयी भगवती सरयू नदी इस नगर को अलंकृत करती है। (पद्य १३) देखें, यहाँ चारों वेद के ज्ञाता ब्राह्मण को दान देकर शुभ-फल को बढ़ाते हैं। जैसे सभी शास्त्रों में विशारद धार्मिक व्यक्तियों का यश फैलता है, उसी तरह यह सरयू-विस्तृत रूप में बढ़ रही है।

इसके प्रवाह में फूल तैर रहे हैं, फूल के पराग बह रहे हैं। परागों से मधु बह रहे हैं। पुष्पों के विविध रंगों के मिलने से इन्द्रधनुष की तरह इसकी धारा दीख रही है।

इसका प्रवाह पर्वत खण्डों को और वृक्षों को उखाड़ कर ला रहा है। मालूम पड़ता है कि भगवान् ''रामचन्द्र'' की वानरी सेना ने समुद्र में सेतु बन्धन किया हो।

इसके प्रवाह के वेग में हाथी, घोड़े एवम् अन्य जीव जन्तु शब्द करते हुए बह रहे हैं। इनसे यह प्रवाह ऐसा दिखाई देता है कि जैसे सरयू नदी की सेना समुद्र के साथ युद्ध करने के लिए हाथी घोड़ों के साथ ध्वजायुक्त रथ से प्रस्थान करते हों। इस सरयू नदी की निरन्तर बहती हुई पवित्र धारा सूर्यकुल में उत्पन्न राजाओं के सदाचार से तुलना करती है तथा सामाजिक जनों के लिए माता के स्तन के समान जीवनदायिनी है, (पद्य–२४)। इसके प्रवाह कस्तूरी, केशर, चन्दन आदि की सुगन्धियों से व्याप्त है।

यह पवित्र नदी पर्वत से निकलती है। विभिन्न नदियों के साथ भिन्न-भिन्न रूपों को प्राप्त करती हुई समुद्र में विलीन हो जाती है।

विशेष–कवि कल्पना करता है कि ईश्वर से निकले हुए विभिन्न देवतागण अनेक रूप में कार्य करते हुए अन्त में पुनः उसी ईश्वर-तत्त्व में विलीन हो जाते हैं, वैसे ही यह सरयू नदी अन्त में समुद्र में विलीन होकर आदि शक्ति भगवती का रूप धारण करती है। (पद्य ३१)। **यहाँ का उपमान उपमेय चमत्कार जनक है।**

''नाट्‌ टुप्‌ पडलम्–देश पटल''

इस पटल में महाकवि कम्बन् कोशल देश का वर्णन करते हैं। सबसे पहले अपनी शालीनता, शिष्टता और विनयशीलता का परिचय देते हुए कहते हैं कि ब्रह्मा के मुख से **''रामकथा''** सुनकर वाल्मीकि ने चार चरणों वाले चौबीस हजार श्लोकों का निर्माण किया। जो ''राम-काव्य'' देवताओं के लिए भी श्रवणीय एवम् आदरणीय हुआ। महर्षि वाल्मीकि द्वारा वर्णित प्रशंसित कोशल देश का वर्णन मेरे लिए वैसा ही है जैसे कोई गूँगा अपने भाव को दूसरों को सुनाना चाहता हो। लेकिन मैंने 'राम-प्रेम'' का मदिरा-पान कर लिया है। और मदिरापान के प्रभाव से यह ''पागल-कम्बन्'' कुछ भी करने के लिए तैयार है। मेरा यह कोशल देश का वर्णन प्रेम-मद्य-पान से पूर्ण है।'' (पद्य ३३)

कोशल प्रदेश का क्षेत्र शस्य परिपूर्ण है। ''सुजलां सुफलां शस्य श्यामलां मलयज शीतलां।'' है। इसे मैं प्रणाम करता हूँ। यहाँ ईख के रस बह रहे हैं, नदी तटपर शंखों के समूह हैं, सभी जगह मयूर नाच रहे हैं। कमल खिले हुए हैं। मेघ गरज रहे हैं और भौंरे गूँज रहे हैं। यहाँ साक्षात् महालक्ष्मी विद्यमान हैं। जिनका वासस्थान कमल के फूल हैं। और यहाँ असंख्य कमल के फूल हैं।

यहाँ के लोग शास्त्र की ही चर्चा करते हैं। सत्य ही बोलते हैं। यहाँ की भूमि सोना

उगलती है। तात्पर्य यह है कि यह क्षेत्र धन, धान्य, ईख, मत्स्य, शंख, मोती, और विविध रत्नों को देनेवाला है। इसी कारण यह भूमि सोना उगलती है, इसकी कल्पना की गई है।

नदी पटल

शृंगार रस वर्णन–सरयू नदी में यहाँ की नारियाँ स्नान और क्रीड़ा करती हैं। उनके **लम्बे केशों** से निकले हुए और शरीर में लेपे हुए कस्तूरी-केशर के सुगन्ध सरयू नदी के जल को सुगन्धित करते हुए समुद्र तरंग को भी सुवासित करते हैं।

कृपया रसिकजन देखें। वृक्ष की शाखा पर मयूर नाच रहे हैं, कोयल दम्पति संभोग कर रहे हैं। कमल की शाखा पर राजहंस सुशोभित हैं, भौंरे उन्हें अपने मधुर गुंजार से जगा रहे हैं। इस तरह यहाँ साहित्य और संगीत का एक साथ ही आनन्द लाभ होता है।

यहाँ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र इन चारों वर्णों के लिए विशेष भोजन की व्यवस्था है। मुख्यतः आम, केला, और कटहल के फल खाते हैं। नाना व्यञ्जनों से युक्त भात, दाल, दही, तक्र, आदि बन्धु-बान्धव सहित मिलकर खाते हैं, न कि केवल स्वयं ही खाते हैं। इस कोशल प्रदेश में भ्रमर नित्य निवास कर रहे हैं क्योंकि वे भौंरे यहाँ की नारियों के मुख को कमल मान रहे हैं। और उनके काजल युक्त नेत्र को भ्रमरी समझते हैं। इस कृषि योग्य देश में नारियों की आँखें इतनी आकर्षक हैं कि जहाँ युवक खुद आकृष्ट हो जाते हैं। और उनके कठोर स्तन के आगे झुक जाते हैं। यहाँ नारिकेल वृक्ष से बहती हुई रस-धारा को पीकर मछलियाँ मोटी होती हैं।

इस नगर में कोई भी वस्तु क्षीण एवं स्वल्प नहीं है। केवल कामिनियों की कटि (कमर) क्षीण पतली होती है। उनके **सुगन्ध युक्त केशों को** देखकर लोग पागल हो जाते हैं। यद्यपि यहाँ के लोग मद्यपान नहीं करते हैं। और न पागल होते हैं। लेकिन केवल नारियों के **सुगन्ध युक्त लम्बे-लम्बे केशों को** देखकर मदिरापन करनेवालों की तरह विक्षिप्त और उन्मत्त हो जाते हैं।

इस कोशल नगर में रसोई के घर से धुएँ निकलते हैं जहाँ गुड़ बनाये जाते हैं। पूजा के धूप के धुएँ और सबसे अधिक नारियों के केशों को सुगन्धित करने के लिए दिये गये धूपों के धुएँ आकाश में जाकर मेघ की तरह फैल जाते हैं। तात्पर्य यह है कि आकाश में इन सुगन्धित धुएँ से निर्मित मेघ भी सुगन्धित होकर व्याप्त हैं।

इस कोशल देश की **विशाल केशवाली एवं स्तनों पर आवरण से भूषित नारियाँ** फूल चुनने के लिए जब उद्यान में जाती हैं तो वहाँ के युवक इनकी सुंदरता देखकर

उनके पीछे लग जाते हैं। मयूरों को उनके लम्बे केशों को देखकर अपनी मयूरी की लम्बी पूछों का भ्रम होता है। और वे भी इन दीर्घ केश वाली नारियों के पीछे-पीछे दौड़ते हैं। इससे यह स्पष्ट है कि **यहाँ की नारियों के केश बड़े लम्बे होते हैं।**

यहाँ कवि 'कम्बन्' **तमिल क्षेत्र में रहनेवाली नारियों के लम्बे बालों को देखकर** ही कोशल देश की नारियों का ऐसा वर्णन किया है। **तमिल क्षेत्र की कामिनियों के पास विशाल केश आज भी वैसे ही देखे जाते हैं।** इस तरह सर्वथा धनं-धान्य नित्य-ज्ञान, शीलं-सौजन्य, रहित विशाल सौन्दर्य युक्त कोशल देश प्रकाशमान है यही कवि का आशय है।

कवि चूड़ामणि 'कम्बन्' ने **नदी पटल** में कोशल देश में नदियों का वर्णन किया है। नगर पटल में अयोध्या नगरी का वर्णन किया है, और देश पटल में कोशल देश का वर्णन किया है। ज्ञात होता है कि कवि इस क्षेत्र से इतने प्रभावित हैं कि पुनः पुनः कवि की भव्य भावना अयोध्या की चारो ओर घूम रही है।

(ख) कोशल देश पटल की अयोध्या नगरी

संस्कृत वाङ्मय से लेकर समस्त भारतीय वाङ्मय के राम काव्यों के कवियों ने और ऋषि मुनियों ने अयोध्या की प्रशंसा की है। वैसी यह अयोध्या है। बैकुण्ठ बास करने वाले इस भूमि पर जन्म लेने की कामना करते हैं। (पद्य ९४) इसकी विवेचना करना कठिन है कि यह अयोध्या भू-देवी का मुख, तिलक, आँख हृदय का मुक्ताहार या भगवान् नारायण का जीवन स्थान है। प्रायः अयोध्या भगवती लक्ष्मी के कमलासन हैं। विष्णु के हृदय पर विराजमान कौस्तुभमणि की स्वर्ण मंजूषा (सोने का पिटारा) है।

अथवा प्रलय काल में जैसे सभी जीव भगवान विष्णु के उदर में समा जाते हैं। वैसे ही यह महिमामयी अयोध्या स्वर्ग से भी श्रेष्ठ वैकुण्ठ लोक गो लोक के समान हैं।

धन्य है वन्दनीया, पूजनीया और अतुलनीया यह अयोध्या। सभी इन्द्रियों को वश में कर तत्त्व ज्ञान से जिस भगवान नारायण के चरणारविन्द को प्राप्त करने के लिए मुनि गण यत्न करते हैं। उसी नारायण के साक्षात् अवतार शरणागत वत्सल श्री **''रामचन्द्र''** ने स्वयं महालक्ष्मी **''सीता''** के साथ आकर यहाँ चिर दिनों तक निवास किया।

अयोध्या की प्राचीन किला कवि कल्पना से बाहर है। क्योंकि देवलोक भी अयोध्या की तुलना में असमर्थ हैं। यहाँ सर्वांग सौन्दर्य युक्त नारियाँ स्वर्गीय सुन्दरियों से अधिक

विशिष्ट हैं। **''मनु''** नाम के एक देवशिल्पी ने अयोध्या के **'दुर्ग'** का निर्माण किया था और 'मनु-धर्मशास्त्र, के अनुसार यहाँ के राजा राज्य संचालन करते हैं।

विशेष : यहाँ यह तात्पर्य है, कि 'मनु' नाम के शिल्पी से निर्मित अयोध्या मनु-निर्मित शास्त्र से संचालित हैं। अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र और आयुधों से युक्त किए गए हैं। किला के नजदीक एक रहस्यमय यन्त्र है। राजा के पास श्रेष्ठ गुण हैं, और किला के भीतर गुप्त द्वार हैं। राजा अपने आज्ञा-चक्र को चलाता है, और किला अपने चक्र रूपी आयुध को चलाती है। इस तरह राजा और राजा की यह किला दोनों अजेय हैं। **यह कवि की नूतन कल्पना है।** जैसे भूमंडल के चारो ओर महासागर हैं और उन महासागरों से पृथ्वी घिरी हुई है। उसी तरह अयोध्या की चारो ओर गंभीर जलस्रोत (नहर) हैं। जब मेघ आते हैं तब मालूम होता है कि यह स्रोत समुद्र हैं। वहीं पर जब जल उछलता है, और किला की उच्चता को देखता है तो किला को पर्वत समझ कर शेष जल को निकाल देता है। यहाँ अयोध्या के दुर्ग की उच्चता और स्रोत नहर की गंभीरता का विशेष रूप से वर्णन किया गया है।

अति विशिष्ट भावनामय रुपक–अयोध्या की किला के चारो ओर चार गोपुर–चार नगर-द्वार हैं। ये चारों द्वार **''चारों वेद''** के समान हैं। (ऋग्वेद, युजर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद)। इन चारों द्वारों के कपाट सन्मार्ग रूपी हैं। कवि का आशय है कि अयोध्या के चारों द्वार 'चारों वेद, के समान और उनके चारों विशाल कपाट चारो सन्मार्ग के प्रदर्शक हैं। जो किला चारो ओर से उपनिषद् के समान स्रोतों से घिरे हुए हैं। इस तरह यह अयोध्यापुरी **'वेद' के समान अति पवित्र हैं।**

यहाँ के भवनों की अट्टालिकाओं पर अवर्णनीय-शोभा वाली सुन्दरियों के चित्र अंकित हैं। अन्य नर्त्तकी-नारियों के कटाक्ष विक्षेप से दर्शकगण काम से आहत होते हैं। मलयानिल से कामिनियाँ काम वेदना से पीड़ित होती हैं। जिससे उनके स्तन तप्त हो जाते हैं। फूलों से मधु चूते हैं। फलतः यह अयोध्या **'अलकापुरी'** तथा स्वर्ग लोक की **'अमरावती'** से अधिक समृद्धशालिनी एवं मनोरम हैं जो स्वर्ग को भी तिरस्कार करती हैं।

यहाँ शंख-ध्वनि, वीणा-वादन, और वंशी के नाद से अनेक ध्वनियाँ निरन्तर निकलती हैं। यहाँ की स्त्रियों का संपूर्ण समय स्नान में, केश विन्यास में, पुष्पालंकार में, मधुरगान में, सम्भोग में बीतते हैं। यहाँ का कोई भी व्यक्ति न निर्धन हैं, न अशिक्षित हैं। इस तरह यह अयोध्या मधुमय दर्शनीय एवं प्रातःस्मरणीय है।

विशेष–इस रामायण में सर्व प्रथम नदी पटल, देश पटल, नगर पटल, ऐसे विस्तृत महत्त्वपूर्ण सुन्दर वर्णन हैं जो वर्णन किसी भी प्रसिद्ध रामायणों में उपलब्ध नहीं हैं।

अतएव 'कम्बन्' कवि की यह शैली सर्वथा नूतन कही जाएगी।

'अर्-सियर् पडलम्'-राज्य शासन पटल

इस पटल में महाराज दशरथ का राज्य शासन कैसा था और दशरथ कितने पराक्रमी थे इसका विवरण है। कोशल देश के राजा दशरथ महिमाशाली योग्य एवं भाग्यवान थे। जिनके अधीनस्थ सात-द्वीप वाली पृथ्वी थी। जिनके पुत्र रूप में 'रामचन्द्र' का जन्म होने वाला था।

दशरथ बुद्धि, दया, वीरता, दानशीलता, नीति निपुणता आदि अनेक गुणों से विभूषित सर्वथा परिपूर्ण देदीप्यमान थे। राजा दशरथ ''याचकों के समुद्र को दान रूपी नौका से, ज्ञान रूपी समुद्र को शास्त्राध्ययन रूपी नाव से, शत्रु रूपी समुद्र को तलवार रूपी सेतु से तथा ऐश्वर्य सुख-रूपी सागर को भोग विलासमय-सेतु से पार करते थे'' (पद्य १७३)।

अति उत्कृष्ट इस पद्य में कवि ने **अति विशिष्ट शैली द्वारा विभिन्न प्रकार के सागरों को तैरने का वर्णन करके अपने काव्य चमत्कार को दिखाया है।**

इस राजाधिराज दशरथ के श्वेत छत्र के सामने चन्द्रमा हीन प्रतीत होता है। क्योंकि चन्द्रमा तो कृष्ण और शुक्ल पक्षों में घटता बढ़ता रहता है। किन्तु दशरथ का छत्र निरन्तर दोनों पक्षों में अन्धकार को दूर करता है। इसलिए यह दशरथ रूपी 'राजचन्द्र' हमेशा प्रजा के दुख रूपी अन्धकार को दूर करता है। फलतः दशरथ के साथ चन्द्रमा की तुलना हो ही नहीं सकती।

अत्यन्त मनोहर एवं चमत्कार पूर्ण शब्दों में कवि 'कम्बन्' ने कहा कि सोना–हीरा मोती आदि रत्नों के आभूषण से युक्त दशरथ शरीर के समान हैं, और उनके राज्य के सभी चराचर जीव दशरथ के प्राणतुल्य हैं। तात्पर्य यह है कि **दशरथ की प्रजा ही उनके प्राण हैं।** यहाँ कवि के रूपकालंकार की छटा मनन करने योग्य है।

''तीरु-अवदार्-पडलम्''–श्री रामावतार पटल

इस महत्त्वपूर्ण प्रमुख पटल में पुत्र न रहने के कारण दशरथ की तथा उनके प्रजाजनों की चिन्ता का वर्णन, गुरु वशिष्ठ के समीप उस चिन्ता का निवेदन, पुत्रेष्टि यज्ञ का परामर्श, इसके लिए महर्षि ऋष्यशृंग का अयोध्या में लाना, पुत्रेष्टि यज्ञ का विस्तृत वर्णन और 'रामावतार' का अत्यंत मनोहर कोमल कान्त पदावली में वर्णित है। जिनका संक्षिप्त में यहाँ वर्णन किया जा रहा है।

एक समय राजा दशरथ ने ब्रह्म पुत्र गुरु वशिष्ठ के समीप जाकर निवेदन किया कि आप ही मेरे रक्षक हैं, सुख-दुःख में माता-पिता की तरह ईश्वर तुल्य हैं, आपकी कृपा से ही मेरे सूर्यवंशी पूर्वजों ने सूर्य के समान तेजस्विता से राज्य का शासन किया। मेरे शासन काल के भी (६०,०००) साठ हजार वर्ष बीत गए।

विशेष–यहाँ सभी जगह रामायणों में सहस्त्र वर्षों की गणना वर्तमान सहस्त्र संख्या के सामने यह कैसी सहस्त्र संख्या है। यह विद्वानों के लिए, समीक्षकों के लिए मेरी दृष्टि से अनुसंधान का विषय है।

दशरथ ने कहा कि मेरे देहावसान के बाद प्रजा कैसे सुरक्षित रहेगी। यह चिन्ता मुझे सता रही है। वे कष्ट सहेंगे, कैसे उनके कष्ट दूर होंगे। और कैसे सुखी रहेंगे इसकी कल्पना मुझे सताती रही है।

राजा का यह निवेदन सुनकर ब्रह्म-तुल्य वसिष्ठ ने चिन्ता की, ध्यान किया। इसी ध्यान के क्रम में शंख, चक्र, गदा, पद्म धारण करनेवाले क्षीर-समुद्र में शेषनाग पर शयन करनेवाले भगवान् का स्मरण हुआ। इसी सन्दर्भ में वसिष्ठ को स्मरण हुआ कि भगवान विष्णु ने कभी कहा था, मैं पीड़ित देवताओं का उद्धार करूँगा। इस समय देवतागण और ऋषिगण रावण आदि राक्षसों के उपद्रव से सर्वथा संत्रस्त एवं पीड़ित हैं। वसिष्ठ ने अपने तपोवल से जान लिया कि इन्द्र आदि देवतागण कैसे विष्णु के पास गये और कैसे क्या वरदान प्राप्त किया।

संक्षेप में वे इस तरह हैं। सबसे पहले देवतागण शिव के पास गये उसके बाद मेरु पर्वत के उत्तर शिखर पर रहनेवाले ब्रह्मा के आगे जाकर राक्षसों के उपद्रव का वर्णन किया। ब्रह्मा इन्द्रादि देवताओं की कष्ट-कथा को सुनकर अर्ध-नारीश्वर–शिव के साथ सभी मिलकर क्षीरसागर में योग-निद्रा लीन श्यामल वर्ण भगवान् विष्णु का ध्यान किया। भगवान् विष्णु लक्ष्मी के साथ प्रगट हुए। सभी देवताओं ने उठकर बारंबार प्रणाम किया और उन्हें पुष्पाञ्जलि समर्पित की।

भगवान विष्णु वहाँ सिंहासन पर बैठ गये तब देवताओं ने अपने कष्टों के समूह का निवेदन किया। इसको सुनकर भगवान् विष्णु बोले, आपलोग कृपया सुनें। ये सभी आकाशचारीगण वानर होकर वन के पर्वतीय क्षेत्र में निवास करेंगे और मैं राजा दशरथ के पुत्र के रूप में अवतार लूँगा और राक्षसों का नाश करुँगा। यह मेरा शेषनाग मेरे अनुज के रूप में मेरी सेवा करेगा। यह कहकर विष्णु गरुड़ पर चढ़कर चले गये।

इसके बाद ब्रह्मा बोले। मैं स्वयं रीछ के राजा जाम्बवान् के रूप में अवतार लूँगा। आपलोग (देवतागण) वानर के रूप में अवतार लें। इन्द्र ने कहा शत्रु को नाश करने वाले अंगद मेरे अंश के रूप में जन्म लेगा। सूर्य ने कहा कि वाली और सुग्रीव मेरे

अंश के रूप में जन्म लेंगे। अग्नि ने कहा नल, नील मेरे अंश के रूप में जन्म लेगा। वायु बोले ''हनुमान्'' मेरे पुत्र के रूप में अवतार लेगा।

इस तरह सुस्पष्ट रूप में भालू वानर आदि के जन्म का विवरण किसी 'राम' काव्य में उपलब्ध नहीं है। यह तो कवि 'कम्बन्' के विशिष्ट घटना चक्र का अत्यन्त उपयुक्त विवरण है।

इस तरह अपने योगबल से त्रिकालज्ञ महर्षि भगवान् वशिष्ठ **'रामावतार'** की पूर्व पीठिका.जानकर बोले। हे राजन् चिन्ता नहीं करें। पुत्र प्रदायक एक यज्ञ करें, उसी से आपकी चिन्ता दूर होगी। यह सुनकर अत्यन्त आनन्दित दशरथ बोले। बड़ी अनुकम्पा के साथ कहें कि वह यज्ञ कैसे संपन्न करना होगा, मुझे क्या-क्या करना पड़ेगा। इसका कृपया सविस्तार निर्देश और आदेश दें।

वसिष्ठ बोले। सर्वथा वन्दनीय कश्यप प्रजापति के पुत्र विभाण्डक नाम के ऋषि थे। उनकी कृपा से सभी विद्या में पारंगत सभी वेद शास्त्र के मर्मज्ञ साक्षात् चतुर्मुख ब्रह्मा की तरह **'ऋष्यशृंग'** हैं। उनके लाने की व्यवस्था करनी होगी। वे ही यहाँ आकर यज्ञ का विधान बतायेंगे और यज्ञ करायेंगे। उसी **'पुत्रेष्टि-यज्ञ'** से आप पुत्रवान् होंगे।

राजा दशरथ बोले–कैसे किए गये उपाय से महर्षि ऋष्यशृंग यहाँ आयेंगे इसका भी कृपया निर्देश दें। तब वसिष्ठ ने एक पुराना आख्यांन कहा। स्वायभुव वंश में उत्तानपाद नाम के राजा हुए। उनके पुत्र गुणवान् रोमपाद राज्य शासन कर रहे थे। उस राज्य में अनावृष्टि केकारण दुर्भिक्ष हो गया। राजा ने मंत्रियों एवं ब्राह्मणों के साथ विचार विमर्श किया। वे विद्वान मंत्रीगण बोले, यदि महर्षि ऋष्यशृंग यहाँ आयेंगे इसका भी कृपया निर्देहा दें। तब वसिष्ठ ने एक पुराना आख्यान कहा। स्वायंभुव वंश में उत्तानपाद-नाम के राजा हुए। उनके पुत्र गुणवान् रोमपाद राज्य शासन कर रहे थे। उस राज्य में अनावृष्टि के कारण दुर्भिक्ष हो गया। राजा ने मंत्रियों एवं ब्राह्मणों के साथ विचार विमर्श किया। वे विद्वान् मंत्रीगण बोले, यदि महर्षि ऋष्यशृंग को यहाँ लाया जाय तो वर्षा होगी। राजा चिन्तित होकर बोले। वे महान् ऋषि कैसे यहाँ आयेंगे, कैसे यहाँ आमंत्रित किया जाए ?

राजा रोमपाद की राज्य परिषद में कुछ परम रूपवती वनितायें (वेश्यायें) थीं। वे बोलीं, हमलोग उस ऋषि को यहाँ लायेंगे, यह सुनकर प्रशंसा करते हुए पूर्ण सम्मान के साथ पूरा धन देकर ऋषि को.लाने की आज्ञा दी ? वे सुन्दरियाँ ऋषि को लाने के लिए प्रस्थान कर गयीं।

एक दिन रोम-पाद की अनुपस्थिति में वे नारियाँ ऋष्यशृंग के आश्रम पर पहुँची। ऋषि ने उन्हें तपस्विनी समझकर सत्कार किया। उन सुन्दरियों ने उनको मधुर फल

दिये। इस तरह क्रमशः परिचय बढ़ाती हुई उन्हें अपने आश्रम में चलने की प्रार्थना की। ऋषि ने उन्हें तपस्विनी समझकर स्वीकार कर लिया। वे सुन्दरियां ऋषि को बहुत दूर ले आयीं।

रोमपाद के उस राज्य में उनके आते ही बहुत जोरों से वर्षा हुई। सभी जलाशय भर गये, राजा ने निश्चित समझा कि वे सुन्दर केशवाली, कमल मुखवाली मृग-नयनियाँ जिस किसी उपाय से ऋषि को यहाँ ले आयीं। राजा रोमपाद ब्राह्मण और मंत्रियों के साथ महर्षि के समीप आकर सविनय पुनः पुनः प्रणाम किया। प्रसन्न होकर ऋषि ने आशीर्वाद दिया। राजा ने उन्हें अपनी राजधानी में लाकर उच्च सिंहासन पर राजभवन में बैठाया और अर्ध्यपाद्य आदि से प्रसन्न किया तथा वेद मंत्रोच्चारणों के साथ विधिवत् उस ऋष्यशृंग नाम के ऋषि को अपनी परम सुन्दरी कन्या **'शान्ता'** को दे दिया। इस तरह शान्ता देवी की सेवा से संतुष्ट ऋष्यशृंग वहाँ ठहर गये। यह सूचना वसिष्ठ ने दशरथ को दी। दशरथ अपने सुमन्त आदि मंत्रियों के साथ रोम पाद के नगर में आकर ऋषि की स्तुति और प्रार्थना की। रोम पाद ने भी दशरथ का स्वागत किया। दशरथ की प्रार्थना सुनकर रोम पाद ने ऋष्यशृंग के साथ अयोध्या आने का निश्चय किया।

वे ऋषि अति सुन्दरी शान्ता तथा राजा रोमपाद के साथ अयोध्या चले। अयोध्या में राजा दशरथ ने विद्या और ज्ञान के स्वरूप ऋष्यशृंग के लिए तथा देवी शान्ता के लिए यथा-योग्य आवास आदि की व्यवस्था की और सेवा सत्कार आदि की व्यवस्था की और सेवा सत्कार आदि किये।

विशेष–यहाँ कवि 'कम्बन्' कहते हैं कि 'शान्ता' दशरथ की ही पुत्री थी जिसे राजा दशरथ के मित्र रोमपाद ने दत्तक पुत्री के रूप में ग्रहण किया था। इसलिए वह 'शान्ता' अपने पति ऋष्यशृंग के स्वागतादि को देखकर परम आनन्दित हुई।

कुछ समय के बाद दशरथ ने मुनि के समीप जाकर अपनी इच्छा निवेदित की। मुनि ने प्रसन्न होकर कहा चिन्ता मत करें। केवल इसी भुवन को नहीं बल्कि चौदहों भुवनों की रक्षा करने में समर्थ आपको पुत्र होगा। इसलिए पुत्रेष्टि नामक यज्ञ करें। दशरथ मनोवांछित वरदान को प्राप्त कर तुरंत तत्पर हो गये। राजा की आज्ञा से यज्ञशाला का निर्माण और यज्ञ के सभी उपकरण शीघ्र ही प्रस्तुत हो गये। राजा पवित्र सरयू नदी में स्नान कर यज्ञ शाला में उपस्थित हो गये। हवन सामग्रियों के साथ बारह महीने निरन्तर चलने वाला यह यज्ञ प्रारंभ हुआ।

आकाश मार्ग से देवताओं ने फूल की वर्षा की और दुन्दुभि बजायी। यज्ञशाला में बैठे हुए सभी ऋषिगण खडे हो गये। उसी समय ऋष्यशृंग पुत्रेष्टि-यज्ञ की पूर्णाहुति

आग में समर्पित की। उसी समय अग्नि मुख से एक चमकते हुए सूर्य के समान देवता निर्गत हुए। उनके हाथ में एक स्वर्ण पात्र में अमृत तुल्य पायस था। वह चमकता हुआ पुरुष थाली को वहीं रखकर पुनः अग्नि में प्रवेश कर गये। तब महर्षि ऋष्यशृंग की आज्ञा से दशरथ ने उस पायस का एक अंश कौशल्या को दिया दूसरा भाग कैकेयी को दिया और तीसरा भांग सुमित्रा को दिया। थाली में बचे हुए शेष भाग फिर सुमित्रा को दे दिया।

इस तरह **पुत्रेष्टि-यज्ञ सम्पन्न हुआ**। आगत सभी ऋषियों और ब्राह्मणओं को यथा योग्य स्वर्ण दान, रत्न दान, भू-दान, गोदान, आदि देकर दशरथ ने विदा किया। वसिष्ठ की आज्ञा से दशरथ ने ऋष्यशंग को प्रशस्ति वचनों से नमस्कार किया। ऋषि प्रसन्न होकर पत्नी शान्ता के साथ रथ पर बैठ कर अपने स्थान चले गये।

इस तरह अयोध्या में दशरथ की पत्नियों ने गर्भ धारण किया। पूर्ण समय आ गया। सभी देवता प्रसन्न हुए। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को शुभलग्न नक्षत्र में कौशल्या ने तेजोमय पुत्र का जन्म दिया।

विशेष—जो परब्रह्मस्वरूप भगवान् विष्णु अपने उदर में संपूर्ण विश्व को लीन किये हुए हैं, वेद जिसके अन्त नहीं पा सके, उसी भगवान् विष्णु को दश मास पर्यन्त कौशल्या ने गर्भ में धारण किया, यह हर्ष, आनन्द और चमत्कार जनक घटना प्रिय एवं कल्याणदायिनी है।

इसके बाद पुष्य-नक्षत्र मीन राशि में कैकेयी ने एक पुत्र का जन्म दिया और सिंह राशि मधा नक्षत्र में सुमित्रा ने एक पुत्र को तथा अश्लेषा नक्षत्र कर्क राशि में दूसरे पुत्र का जन्म दिया। इनके नाम क्रमशः **राम, भरत, लक्ष्मण,** और **शत्रुघ्न** दशरथ ने रखे।

राम का जन्म मेष-राशि नवमी तिथि पुनर्वसु नक्षत्र एवं **मकर लग्न में हुआ**। चारों ग्रह उच्च स्थान में थे। "**तमिल भाषा**" में क्रमशः मेष, वृष आदि बारहों लग्नों को क्रमशः चैत्र, वैशाख आदि मास के स्थान पर कहा जाता है। इसलिए (२४४) दो सौ चौवालीस पद्यों में **मेष राशि का नाम कवि 'कम्बन्' ने लिखा है। यह वर्णन इस रामायण की विशेषता** है। इस तरह अयोध्या में तीन मास तक पुत्र जन्मोत्सव बड़े समारोह के साथ मंगल विधान से होता रहा। परब्रह्म स्वरूप 'रामचन्द्र' सुख से अपनी बाल्यावस्था अयोध्या में व्यतीत कर रहे थे। वहाँ हर्ष का सागर उमड़ रहा था। यह तो स्वाभाविक ही था।

"कैयडैप पडलमू–हस्त धारण पटल"

इस पटल में महर्षि विश्वामित्र का दशरथ के पास आना, यज्ञ की रक्षा के लिए राम को वन ले जाने के लिए याचना, और विश्वामित्र के साथ राम के वन जाने की कथा मुख्य रूप से हैं। इस पटल की कथा लगभग वाल्मीकि रामायण की तरह ही है।

परम शक्तिशाली दशरथ का राज्य शासन आनन्द के साथ चल रहा था। पुत्रों को बढ़ते हुए देखकर राजा अत्यन्त प्रसन्न हो रहे थे। इसी समय तपोमूर्ति नवीन सृष्टि करने वाले महर्षि विश्वामित्र दशरथ की राज्यसभा में उपस्थित हुए। उनके आगमन को जानते ही नतमस्तक होकर महर्षि को प्रणाम करके उन्हें सोने के सिंहासन पर बैठाया और फूल चन्दन, अर्घ्य पाद्य आदि से उनकी पूजा की। पूजा के बाद राजा ने कहा यह मेरे और मेरे पूर्वजों के पुण्य का फल प्राप्त किया। कृपया आप मुझे आदेश दें। मेरा सौभगय है कि आपके चरण यहाँ आये। अपने शासन का फल मैंने आज ही पाया।

यह सुनकर विश्वामित्र ने कहा। सिद्धवन में मैं एक यज्ञ करने जा रहा हूँ। वहाँ राक्षस आकर यज्ञ में, तपस्या में, विघ्न करेंगे। इसलिए अपने पुत्र 'रामचन्द्र' को मेरे साथ जाने की आज्ञा दीजिए, वे यज्ञ की रक्षा करेंगे। मुनि का वचन सुनकर दशरथ सन्न हो गये। उन्होंने अनुभव किया ऋषि मेरे प्राणों को ही माँग रहे हैं।

मर्म को बेधनेवाली ऋषि की वाणी सुनकर राजा बोले–राम तो अवस्था और बल से छोटा है। अस्त्र-शस्त्र का अभ्यास भी बहुत कम है। इसलिए स्वयम् आपके साथ जाकर यज्ञ की रक्षा करुँगा। और सभी राक्षसों का नाश कर निर्विघ्न यज्ञ सम्पन्न कराऊँगा।

राजा की बातें सुनते ही विश्वामित्र की दोनों आँखें चढ़ गयीं और भौहें टेढ़ी हो गयीं। वे क्रोध से उठकर चलने लगे। यह देखकर देवतागण चिन्तित हो गये कि प्रलय काल आ गया और सभी लोग डर गये ऐसे क्रोधी विश्वामित्र को देखकर। महर्षि बसिष्ठ बोले, हे महर्षि कुछ प्रतीक्षा करें। और दशरथ से कहा चिन्ता छोड़िये। प्रसन्नता से पुत्र को भेजें क्योंकि कठिनता से प्राप्त पुत्र का शुभ समय आ गया है।

यह सुनकर दशरथ ने राम को बुलाने की आज्ञा दी। राम लक्ष्मण के साथ वहाँ उपस्थित हुए। महाराज ने लक्ष्मण के साथ 'रामचन्द्र' को विश्वामित्र की सेवा में समर्पित कर दिया। और विश्वामित्र से कहा कि आप ही इन दोनों के माता-पिता हैं। जैसा उचित समझें वैसा ही करेंगे।

शान्त विश्वामित्र राम-लक्ष्मण के साथ दशरथ को आशीर्वाद देकर यज्ञ के लिए

चल दिए। भगवान् राम ने एक आश्रम को यज्ञ को धुएँ से भरा हुआ देखा और पूछा कि यह कौन-सा स्थान है, विश्वामित्र बोले।

एक समय कामदेव ने चन्द्र मौलीश्वर महादेव के ऊपर अपने फूल के वाणों को फेंका। क्रुद्ध होकर महादेव ने कामदेव को अपने तृतीय नेत्र से भस्म कर दिये। तब से कामदेव अंग रहित होकर **''अनंग''** कहा जाता है। यह वही स्थान है। जहाँ भगवान शिव ने स्वयं तपस्या की। इस आश्रम की पवित्रता अवर्णनीय है। वहाँ आकर दोनों भाइयों ने दर्शन किये।

इसके बाद दूसरे दिन भयंकर गर्मी वाले बालू से तप्त प्रदेश में दोनों भाई आये। जहाँ ऋतुएँ नहीं जाती हैं। अग्नि देव भी डरते हैं, और सभी वस्तुएँ जल जाती हैं। वहाँ की गर्मी से सभी जीवजन्तु एवं हाथी भागते हैं, और जलते हैं।

वहाँ गर्मी से उद्विग्न देखकर विश्वामित्र ने राम लक्ष्मण को **'बला'** और **'अतिबला'** नाम की मंत्रवि का उपदेश दिया। उस विद्या को राम लक्ष्मण ने मन से चिन्ता की। उस मन्त्र के प्रसाद से वह तपता हुआ स्थान शीतल हो गया। तब राम ने महर्षि से पूछा। यह स्थान क्यों तप्त है, महर्षि बोले।

यहाँ एक हजार हाथी के समान बलवाली यमराज के समान एक नारी रहती थी। 'सुकेतु' नाम के आग के समान बलवान चर्चर के पुत्र से उसका विवाह हुआ। सुकेतु को कोई संतान नहीं हुई। इसलिए ब्रह्मा की उपासना की। ब्रह्मा ने प्रसत्र होकर वरदान दिया। वरदान के अनुसार सुकेतु को एक सुंदर पुत्री हुई। उसका विवाह अपनी जाति के सुन्द नाम के दक्ष से कराया। **सुन्द के सुबाहु और मारीच नाम के दो पुत्र हुए।** वे दोनों चतुर और मायावी थे।

महा प्रतापशाली अगस्त्य महर्षि के आश्रम में आकर सुन्द उपद्रव करने लगा। वह वृक्षों को उखाड फेंकता था और पशु-पक्षियों को मार डालता था। महर्षि अगस्त्य ने शाप देकर भस्म कर दिया। यह जानकर सुन्द की पत्नी अपने दोनों पुत्रों के साथ आश्रम में आयी। अगस्त्य ने शाप दिया कि तुमलोग राक्षस हो जाओ। वे राक्षस होकर पाताल चले गये।

विशेष—तमिल-भाषा में अगस्त्य शब्द का अर्थ **'दाता'** होता है। किन्तु यह शाब्दिक अर्थ है। अगस्त्य ने तमिल भाषा में 'व्याकरण' की रचना की और पाणिनि ने संस्कृत भाषा में रचना की। दोनों को भगवान् महादेव ने **'पाणिनि'** को **संस्कृत** में और **'अगस्त्य'** को **तमिल** में व्याकरण निर्माण का आदेश दिया। **यह तमिल भाषा के पारंपरिक इतिहास में है।**

सुवाहु और मारीच तथा उसकी माता ने पाताल जाकर सुमाली नाम के राक्षस

के साथ सम्बन्ध स्थापना की। सुमाली रावण का नाना रावण की माता 'केकशी' का बाप था। वह ताड़का रावण के पास लंका गयी, वह त्रिशूल धारिणी थी। यदि वह नहीं मरेगी तो सभी जीवों को खा जायेगी।

विश्वामित्र से यह कथा सुनकर राम ने कहा। वह राक्षसी कहाँ है। मुनि ने कहा वह अभी इसी पहाड़ पर है। राम वहाँ गये। राम को देखकर ताड़का बोली–अहा, हा, बहुत दिनों से मनुष्य का माँस नहीं मिला है। आज मेरे भाग्य से यहाँ आ गये हो। राम ने हँस दिया।

राम मन में सोचते हैं कि 'स्त्री हत्या' की जाय या नहीं। विश्वामित्र ने कहा कि क्या तुम ऐसी पापिनी को **'स्त्री'** मानते हो ? 'स्त्री' तो वह कहलाती है जो स्त्री सुलभ शील संकोच से युक्त हो। यह सुनकर राम ताड़का को मारने के लिए तैयार हुए। ताड़का ने राम के ऊपर भयंकर त्रिशूल चलाया। राम ने अपने वाणों से त्रिशूल को खण्डित कर दिया।

राम ने एक तीक्ष्ण (तेज) वाण चलाकर उसे भूमि पर गिरा दिया। उसके शरीर से रक्त धारा बहने लगी। वह मर गयी। यह देखकर सभी देवता एवं ऋषिगण संतुष्ट होकर राम की वन्दना की और अपने यज्ञ कार्य में लग गये।

''वेडलिप पडलम–यज्ञ पटल''

इस पटल में विश्वामित्र के यज्ञ का वर्णन, वहाँ राक्षसों का उपद्रव का वर्णन और श्रीरामचन्द्र के द्वारा राक्षसों के बध का वर्णन प्रमुख है।

ताड़का बध के बाद देवताओं की पुष्प वर्षा से वह वन क्षेत्र ठंडा-शीतल हो गया था। देवता लोग अपने-अपने स्थान लौट गये। महान् तपोवल वाले विश्वामित्र ने राम को अनेक अमोघ अस्त्र दिये। वे अस्त्र कवि 'कम्बन्' के अभिभावक 'सैड्यपूपन्'' महा भाग के ''अमोघ'' शब्द के समान थे।

विशेष–कवि 'कम्बन्' के एक रक्षक अभिभावक के तुल्य ''शैडयप्पन्'' थे। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए इस रामायण में अनेक जगहों में उनकी महिमा का वर्णन उनके नाम को लेकर किया है। जिस नाम का अर्थ अमोघ-अव्यर्थ–(सफल) होता है। (४१२)

विश्वामित्र ने उन अस्त्रों के संचालन प्रक्षेपण (फेंकना) और उनके लौटाने के लिए उपाय की भी विशेष शिक्षा 'रामचन्द्र' को दी। साथही ऋषि बोले कि ये अस्त्र आप के अनुज के समान हमेशा साथ रहेंगे। इस तरह बातें करते हुए, विश्वामित्र और राम

लक्ष्मण वहाँ से चले। इसी बीच उन लोगों ने कुछ आवाजें सुनीं। राम ने पूछा, हे भगवन्, यह किसकी आवाज है ? विश्वामित्र ने कहा।

मान सरोवर से निकलकर पवित्र 'सरयू' नदी इस **'गोमती'** में मिलती है। उन दोनों के संगम की यह ध्वनि है, इसके बाद ये तीनों भगवती **'कौशिकी'** नदी के समीप आ गये। इसी क्रम में विश्वामित्र ने अपने जन्म की कथा का वर्णन किया।

विश्वामित्र ने कहा ब्रह्मा के पुत्र राजाधिराज **''कुश''** हुए। 'कुश' को **'वैदर्भी'** नाम की पत्नी थी। उस पत्नी से चार पुत्र हुए। और परम सुन्दरी एक सौ कन्यायें हुईं। वे कन्यायें जब उद्यान में घूम रही थीं तब वायु ने उन्हें देखा और कहा मेरे साथ विवाह करके विहार करो। वे कन्यायें बोलीं, यदि पिता की आज्ञा हो तो हमलोग आपके साथ विवाह कर सकते हैं। यह सुनकर क्रुद्ध वायु (पवन) ने उन लोगों के ऊपर प्रहार किया। वे कन्यायें पिता के पास जाकर वायु के साथ हुई घटनायें कहीं।

पिता उन कन्याओं का विवाह ब्रह्मदत्त नाम के एक व्यक्ति से करा दिया। ब्रह्मदत्त के हाथ के स्पर्श से ही वे कन्यायें फिर पहले की तरह स्वस्थ और सुन्दर हो गयीं। ब्रह्मदत्त ने पुत्र की प्राप्ति के लिए एक यज्ञ किया। उस यज्ञ की महिमा से **''गाधि''** नाम के एक तेजस्वी पुत्र हुए। ''गाधि'' को दो संतानें हुईं। एक **''कौशिकी''** नाम की पुत्री और दूसरा पुत्र के रूप में मैं 'विश्वामित्र' हुए। मेरी बहन 'कौशिकी' नाम से महानदी के रूप में पृथ्वी पर बह रही है। मैं तो आपके सामने ही हूँ। इस तरह विश्वामित्र ने संक्षेप में अपने पूर्वजों के वर्णन के साथ अपने जन्म की कथा कही।

विशेष—वर्तमान समय में **'कौशिकी' (कोशी)** नदी उत्तर बिहार में नेपाल और भारत के बीच विनाश लीला करती हुई बह रही है।

विस्मय करनेवाली इस कथा को सुनकर राम लक्ष्मण चकित हो गये। इसके बाद वृक्षों से आच्छादित एक उपवन को देखकर राम ने पूछा। यह किसका आश्रम है ? वे बोले महर्षि गौतम और उनकी पत्नी अहल्या का है। यहीं वराह अवतार भगवान् विष्णु ने हिरण्याक्ष का बध किया था। इसी क्रम में राजा बलि और वामनावतार का वर्णन किया। और कहा कि इन वर्णनों से अवश्य आपको ज्ञात होगा कि यह स्थान पवित्र है। जहाँ मैं शास्त्रानुसार यज्ञ करना चाहता हूँ। इस प्रकार वार्तालाप करते हुए विश्वामित्र यज्ञ में संलग्न हो गये और राम लक्ष्मण दोनों को यज्ञ की रक्षा के लिए तत्पर कर दिये।

यज्ञ होते हुए देखकर राक्षस गण बज्रपात के भयंकर गर्जन से भी अधिक भीषण आवाज करते हुए वहाँ विघ्न बाधा करने के लिए पहुँच गये। माँस और रक्त से युक्त अस्त्र भी फेंकने लगे। यद्यपि मन्त्र के बल से वे अस्त्र पृथ्वी पर नहीं आए किन्तु आकाश

के साथ सम्बन्ध स्थापना की। सुमाली रावण का नाना रावण की माता 'केकशी' का बाप था। वह ताड़का रावण के पास लंका गयी, वह त्रिशूल धारिणी थी। यदि वह नहीं मरेगी तो सभी जीवों को खा जायेगी।

विश्वामित्र से यह कथा सुनकर राम ने कहा। वह राक्षसी कहाँ है। मुनि ने कहा वह अभी इसी पहाड़ पर है। राम वहाँ गये। राम को देखकर ताड़का बोली–अहा, हा, बहुत दिनों से मनुष्य का माँस नहीं मिला है। आज मेरे भाग्य से यहाँ आ गये हो। राम ने हँस दिया।

राम मन में सोचते हैं कि 'स्त्री हत्या' की जाय या नहीं। विश्वामित्र ने कहा कि क्या तुम ऐसी पापिनी को '**स्त्री**' मानते हो ? 'स्त्री' तो वह कहलाती है जो स्त्री सुलभ शील संकोच से युक्त हो। यह सुनकर राम ताड़का को मारने के लिए तैयार हुए। ताड़का ने राम के ऊपर भयंकर त्रिशूल चलाया। राम ने अपने वाणों से त्रिशूल को खण्डित कर दिया।

राम ने एक तीक्ष्ण (तेज) वाण चलाकर उसे भूमि पर गिरा दिया। उसके शरीर से रक्त धारा बहने लगी। वह मर गयी। यह देखकर सभी देवता एवं ऋषिगण संतुष्ट होकर राम की वन्दना की और अपने यज्ञ कार्य में लग गये।

''वेडलिप पडलम–यज्ञ पटल''

इस पटल में विश्वामित्र के यज्ञ का वर्णन, वहाँ राक्षसों का उपद्रव का वर्णन और श्रीरामचन्द्र के द्वारा राक्षसों के बध का वर्णन प्रमुख है।

ताड़का बध के बाद देवताओं की पुष्प वर्षा से वह वन क्षेत्र ठंडा-शीतल हो गया था। देवता लोग अपने-अपने स्थान लौट गये। महान् तपोवल वाले विश्वामित्र ने राम को अनेक अमोघ अस्त्र दिये। वे अस्त्र कवि 'कम्बन्' के अभिभावक 'सैड्यप्पन्'' महा भाग के ''अमोघ'' शब्द के समान थे।

विशेष–कवि 'कम्बन्' के एक रक्षक अभिभावक के तुल्य ''शैडयप्पन्'' थे। उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करने के लिए इस रामायण में अनेक जगहों में उनकी महिमा का वर्णन उनके नाम को लेकर किया है। जिस नाम का अर्थ अमोघ-अव्यर्थ–(सफल) होता है। (४१२)

विश्वामित्र ने उन अस्त्रों के संचालन प्रक्षेपण (फेंकना) और उनके लौटाने के लिए उपाय की भी विशेष शिक्षा 'रामचन्द्र' को दी। साथही ऋषि बोले कि ये अस्त्र आप के अनुज के समान हमेशा साथ रहेंगे। इस तरह बातें करते हुए, विश्वामित्र और राम

लक्ष्मण वहाँ से चले। इसी बीच उन लोगों ने कुछ आवाजें सुनीं। राम ने पूछा, हे भगवन्, यह किसकी आवाज है ? विश्वामित्र ने कहा।

मान सरोवर से निकलकर पवित्र 'सरयू' नदी इस **'गोमती'** में मिलती है। उन दोनों के संगम की यह ध्वनि है, इसके बाद ये तीनों भगवती **'कौशिकी'** नदी के समीप आ गये। इसी क्रम में विश्वामित्र ने अपने जन्म की कथा का वर्णन किया।

विश्वामित्र ने कहा ब्रह्मा के पुत्र राजाधिराज **''कुश''** हुए। 'कुश' को **'वैदर्भी'** नाम की पत्नी थी। उस पत्नी से चार पुत्र हुए। और परम सुन्दरी एक सौ कन्यायें हुईं। वे कन्यायें जब उद्यान में घूम रही थीं तब वायु ने उन्हें देखा और कहा मेरे साथ विवाह करके विहार करो। वे कन्यायें बोलीं, यदि पिता की आज्ञा हो तो हमलोग आपके साथ विवाह कर सकते हैं। यह सुनकर क्रुद्ध वायु (पवन) ने उन लोगों के ऊपर प्रहार किया। वे कन्यायें पिता के पास जाकर वायु के साथ हुई घटनायें कहीं।

पिता उन कन्याओं का विवाह ब्रह्मदत्त नाम के एक व्यक्ति से करा दिया। ब्रह्मदत्त के हाथ के स्पर्श से ही वे कन्यायें फिर पहले की तरह स्वस्थ और सुन्दर हो गयीं। ब्रह्मदत्त ने पुत्र की प्राप्ति के लिए एक यज्ञ किया। उस यज्ञ की महिमा से **''गाधि''** नाम के एक तेजस्वी पुत्र हुए। ''गाधि'' को दो संतानें हुईं। एक **''कौशिकी''** नाम की पुत्री और दूसरा पुत्र के रूप में मैं 'विश्वामित्र' हुए। मेरी बहन 'कौशिकी' नाम से महानदी के रूप में पृथ्वी पर बह रही है। मैं तो आपके सामने ही हूँ। इस तरह विश्वामित्र ने संक्षेप में अपने पूर्वजों के वर्णन के साथ अपने जन्म की कथा कही।

विशेष–वर्तमान समय में **'कौशिकी' (कोशी)** नदी उत्तर बिहार में नेपाल और भारत के बीच विनाश लीला करती हुई बह रही है।

विस्मय करनेवाली इस कथा को सुनकर राम लक्ष्मण चकित हो गये। इसके बाद वृक्षों से आच्छादित एक उपवन को देखकर राम ने पूछा। यह किसका आश्रम है ? वे बोले महर्षि गौतम और उनकी पत्नी अहल्या का है। यहीं वराह अवतार भगवान् विष्णु ने हिरण्याक्ष का बध किया था। इसी क्रम में राजा बलि और वामनावतार का वर्णन किया। और कहा कि इन वर्णनों से अवश्य आपको ज्ञात होगा कि यह स्थान पवित्र है। जहाँ मैं शास्त्रानुसार यज्ञ करना चाहता हूँ। इस प्रकार वार्तालाप करते हुए विश्वामित्र यज्ञ में संलग्न हो गये और राम लक्ष्मण दोनों को यज्ञ की रक्षा के लिए तत्पर कर दिये।

यज्ञ होते हुए देखकर राक्षस गण बज्रपात के भयंकर गर्जन से भी अधिक भीषण आवाज करते हुए वहाँ विघ्न बाधा करने के लिए पहुँच गये। माँस और रक्त से युक्त अस्त्र भी फेंकने लगे। यद्यपि मन्त्र के बल से वे अस्त्र पृथ्वी पर नहीं आए किन्तु आकाश

में मछली अदि से युक्त सागर की तरंगों की तरह फैल गये। उन भयंकर स्वरूप वाले राक्षसों को देखकर राम की आज्ञा से लक्ष्मण ने वाण चलाए। लक्ष्मण के वाणों से यज्ञ-वेदी के ऊपर वित्तान (चन्दवा) की तरह आवरण हो गया।

इसके बाद श्री 'रामचन्द्र' ने एक वाण से **मारीच** को समुद्र में फेंक दिया और **'सुवाहु'** को यमलोक भेज दिया । इस तरह विश्वामित्र का यज्ञ निर्विघ्न सम्पन्न हो गया। 'रामचन्द्र' ने पूछा अब क्या करने की आज्ञा है ? महर्षि ने कहा अभी अनेक लोक कल्याणकारी कार्य सामने में हैं। वे तो बाद में होंगे। इस समय ''शस्य श्यामलाम्-पवित्र मिथिला भूमि'' की ओर चलें जहाँ महाराजाधिराज मिथिलेश जनक यज्ञ कर रहे हैं। पहले हमलोग उसे देखें। यह विचार कर वे तीनों विश्वामित्र, राम-लक्ष्मण मिथिला की ओर चले। पद्य (४७०)

विशेष–तमिल में मिथिला को **मिलयैर** तथा मिथिलाधिपति को **मिलयैर-कोमान''** कहते हैं।

''अहल्येवैप् पडलम् अहल्या पटल''

इस पटल में अहल्या के उद्धार का वर्णन, प्रमुख है। पहले कवि नदी का वर्णन करते हैं। विश्वामित्र ''रामचन्द्र'' और लक्ष्मण **'शोण'** नदी के किनारे आ गये। उस नदी की शोभा अपूर्व है। नदी के नीचे बालू हैं। वहाँ 'अगरुचन्दन' आदि का वृक्ष है। धारा में फूल बहते हैं। इस तरह यह नदी ''सुन्दरी नारी'' की तरह दीख रही है। वहीं एक रात इन लोगों ने निवास किया। राम ने पूछा यह उद्यान कैसा है। महर्षि विश्वामित्र बोले। यह वही पवित्र स्थान है, जहाँ भगवान् **'चंद्रशेखर'** को कार्तिकेय नाम के पुत्र हुए थे। इसके बाद प्रातःकाल वे लोग वहाँ से चलकर **'कावेरी'** नदी के तटपर आ गये। यह 'कावेरी' नदी दक्षिण भारत में गंगा के समान है। 'रामचन्द्र' ने गंगा का माहात्य पूछा–विश्वामित्र से भगीरथ द्वारा लायी गयी गंगा की महिमा सुनकर दोनों भाइयों ने गंगा की वन्दना की। इसके बाद विश्वामित्र के साथ गंगा पार कर गये। उस क्षेत्र के तालाब और नदियों की विचित्र शोभा है। यहाँ सुकोमल अंगवाली नारियों के स्नान का दृश्य अत्यन्त मनोहर है।

वहाँ अचानक एक पत्थर के खण्ड में 'रामचन्द्र' की **'चरण-धूलि'** किसी तरह लग गयी। सहसा वह पत्थर का खण्ड **'नारी'** के रूप में परिवर्तित हो गया, जो अहल्या के रूप में थी। यहाँ कवि अत्यन्त गंभीर चमत्कार पूर्ण शैली में वर्णन करते हुए कहते हैं कि वह नारी का रूप अविद्याजन्य मिथ्या रूप को छोड़कर विद्यारूप शरीर भगवान् के चरणारबिन्द प्राप्ति की तरह हुआ।

यह सब देखकर विश्वामित्र ने कहा हे 'रामचन्द्र' आपके सामने स्थित यह नारी अहल्या है। इस क्रम में अहल्या इन्द्र की कथा, गौतम के शाप की तथा क्रोध शान्ति के बाद गौतम द्वारा कहे गये विमोचन के उपाय का वर्णन किया। शाप से मुक्त यही वह अहल्या है। जिसे गौतम ने कहा था कि जब श्रीरामचन्द्र की **'चरण-धूलि'** तुम्हारे इस पत्थर के शरीर पर लगेगी तब पहले का रूप प्राप्त करोगी। ऐसा ही हुआ।

तब विश्वामित्र ने कहा हे महर्षि गौतम, यह सर्वथा पवित्र अहल्या है। आप इसको स्वीकार करें। गौतम ने ऐसा ही किया। श्री 'रामचन्द्र' ने भी उस आश्रम की परिक्रमा करके तपोधन विश्वामित्र के साथ **'महिमामयी मिथिला'** की ओर चलें। (पद्य ५५५) मिथलैय् कण्डार्''–अर्थात् मिथिला नगरी।

''नितलैक् काट्थिप् पडलम–मिथिला दृश्य वर्णन पटल''

इस पटल में 'रामचन्द्र' का मिथिला क्षेत्र में प्रवेश के बाद वहाँ की शोभा का विश्वामित्र की तपस्या का वर्णन और **'सीता-राम'** के परस्पर अनुराग का वर्णन अत्यन्त महत्वपूर्ण विश्लेषण से युक्त है।

यहाँ स्पष्ट है कि **'तमिल'** क्षेत्र के निवासी 'तमिल भाषा' के महाकवि कम्बन् का मिथिला के प्रति बड़ी श्रद्धा और महान् आदर है। यद्यपि यह भी सत्य है कि **मिथिला** मैथिली के वर्णन के बिना कोई भी 'रामकथा' पूर्ण नहीं हो सकती। साथ ही यह भी तथ्य है कि महाकवि 'कम्बन' के विशाल महाकाव्य में मिथिला के प्रति अनुराग अति विशिष्ट शैली में प्रदर्शित है।

मिथिला नगर के प्रासाद पर आकाश में फहराती हुई, ध्वजा हैं। जिनका कंपन देवांगनाओं, स्वर्गीय सुन्दरियों के प्रति नृत्य के समान दीख रहे हैं। मालूम पड़ता है कि धर्म स्वरूप वे देवांगनायें सीता राम के विवाह के लिए दूत का काम कर रही हैं। यहाँ कवि ने विवाह में साक्षात् **'धर्म'** को **'दूत'** रूप में नियोजित करने की बात कहकर दौत्य-कर्म की प्रधानता दिखायी है।

यहाँ की अट्टालिकाओं पर फहराती हुई पताकायें जैसे सूर्य को घेर रही हों। जिससे आकाश क्षीर सागर के समान हो गया है। मेघ के संपर्क से यद्यपि ये पताकायें गीली हो गयी हैं। किन्तु उन अट्टालिकाओं से निकलते हुए अगुरु-चन्दनों के धूपों से सूख जाती हैं। विश्वामित्र के साथ राम-लक्ष्मण इस विनोदमयी शोभा को देखकर विस्मय विमुग्ध हो गये।

इस मिथिला में अतुलनीय सर्वथा उत्कृष्ट सुन्दरी **'सीता'** विराजमान हैं। जिनके

सौन्दर्य का निर्माण स्वयं कामदेव भी अमृतमय तरंग तूलिका से चित्रित करने में समर्थ नहीं हैं। ऐसी सीता जहाँ है वह **'मिथिला' भगवती लक्ष्मी के साक्षात्-पीठ स्थान की तरह शोभित है।**

इस मिथिला में साफ, सुथरा, रत्न, मणि से युक्त चौड़ी गलियाँ समुद्र के समान हैं।

विशेष–यहाँ कवि कम्बन् कल्पना करते हैं कि **'तमिल'** व्याकरणशास्त्र के निर्माता अगस्त्य ने जब समुद्र को पी लिया और समुद्र सूख गया तब समुद्र के सभी रत्न अयोध्या की गलियों में फैल गये। इस प्रकार अनेक रमणियाँ विविध संगीत वाद्यों से युक्त होकर गलियों में विराजमान हैं। वहाँ रास्ते में अनेक नाट्यशालायें हैं। युवती रमणियाँ झूले पर झूल रही हैं। कहीं घोड़े दौड़ रहे हैं। कहीं सुन्दरियाँ गेन्द खेल रही हैं। कहीं छोटे-छोटे वापी–तडाग में नारियाँ स्नान कर रही हैं। उनके मुख, नेत्र, अधर, स्तन और केश इतने आकर्षक हैं कि जिन्हें देखने से कोई भी मुग्ध हो सकता है। विश्वामित्र के साथ राम लक्ष्मण ने ऐसी शोभा देखी। वहाँ नरियों के फूलों से अलंकृत **खुले हुए लम्बे केशों को देखकर** बार-बार देखते हुए संतुष्ट नहीं हो रहे हैं।

सीता के अंग प्रति अंग के वर्णन में कवि उनकी शोभा की उपमा देने में समर्थ नहीं हैं। आखिर कवि ने यह कहकर संतोष किया कि **'सीता'** लक्ष्मी के समान है।

इस गली से जाते हुए राम की नजर सीता पर पड़ी और सीता की राम पर। दोनों परस्पर आकृष्ट हुए।

विशेष–यहाँ कवि कहते हैं कि क्षीर सागर में अविनाशी ये दोनों लक्ष्मी नारायण के रूप में थे ही। लेकिन यहाँ अलग अलग जन्म लेकर ये दोनों फिर मिलने के लिए 'मिथिला' में उपस्थित हो गये हैं।

ऐसी स्थिति में विश्वामित्र के साथ राम चले। सीता चित्रलिखित मूर्ति की तरह हो गयीं। यहाँ राम ने उनके मन के संयम को लेकर चले गये। यह कवि की कल्पना अत्यन्त प्रिय कल्याणदायिनी है। इस तरह 'सीता' वियोग से मलिन हो सीता की पुष्पशय्या मनस्ताप से मलिन और शुष्क हो गयी। यहाँ इसका विस्तृत रूप में विप्रलंभ शृंगाररस का काव्य वर्णन कवि ने किया है।

महर्षि के साथ राम लक्ष्मण जनकपुरी पहुँच गये। वहाँ अहल्या के गर्भ से उत्पन्न महर्षि गौतम के पुत्र **'शतानन्द'** उपस्थित थे। उन्होंने विश्वामित्र के मुख से अपनी माता के उद्धार का वर्णन सुनकर अत्यन्त आनन्द और संतोष को प्राप्त किया। शतानन्द ने महर्षि विश्वामित्र की तपस्या का विस्तार से वर्णन वसिष्ठ की कामधेनु का वर्णन, राजा अम्बरीष का वर्णन और ब्राह्मण पुत्र पुनः शेष का की प्राण रक्षा का वर्णन किया है। जिनका विशेष वर्णन यहाँ विस्तार से नहीं दिया जा रहा है।

इसके बाद वहाँ ब्रह्मा, विष्णु और महादेव पहुँच गये। उन लोगों ने कहा, महर्षि विश्वामित्र आपके समान वेद का पारंगत कोई दूसरा ऋषि नहीं है। यद्यपि ब्रह्मा, विष्णु और महेश ने विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि के रूप में मान्यता प्रदान कर दी थी किन्तु विश्वामित्र की इच्छा थी कि **'ॐकार' वषठ्कार'** आदि वेद हमें स्वीकार करें। और **'वसिष्ठ' मुझे ब्रह्मर्षि मानें**। तब वहाँ ऐसा ही हुआ। वेदों ने विश्वामित्र का वर्णन किया और वसिष्ठ ने विश्वामित्र को ब्रह्मर्षि के रूप में मान लिया। इसलिए यहाँ (पद्य ६८९) छः सौ नवासी में विश्वामित्र के लिए **वेद-पारंगत** शब्द का प्रयोग किया गया। **''यह नूतन कथा शैली है''**।

इसके बाद ''रामचन्द्र'' ने विश्वामित्र के साथ मिथिला की राजधानी 'जनकपुरी' में बिरहावस्था में ही रात्रि विश्राम किया। प्रातःकाल होते ही 'राम' उठकर नित्य कृत्य आदि समाप्त कर विश्वामित्र को प्रणाम कर उनके साथ यज्ञशाला पर पहुँचे जहाँ विदेहजनक विद्यमान थे।

''करूमुरै किलत्तु पडलम्—वंशक्रम परिचय पटल

इस पटल में राजा दशरथ की वंश परंपरा का वर्णन सविस्तार किया गया है। 'मिथिला की परम्परा में यह अनिवार्य प्रक्रिया के भीतर है'। विवाह के पूर्व दोनों वर कन्या पक्षों का वंश परिचय दिया जाय। वाल्मीकि रामायण में अति विशद रूप में दोनों पक्षों की वंश परम्परा का वर्णन है। इस 'कम्ब'-रामायण में जनक वंश का वर्णन नहीं के जैसा है। इतना ही अन्तर है।

राजा जनक अपने नित्य यज्ञ की समाप्ति के बाद राजसभा में रत्नमय सिंहासन पर आकर बैठ गये। उनके समीप में ही तपो-मूर्ति विश्वामित्र और 'रामलक्ष्मण' बैठे थे। राजा जन ने इन दोनों कुमारों का परिचय पूछा। विश्वामित्र ने सूर्य-वंश की महिमा के साथ विस्तृत रूप में परिचय देना प्रारंभ किया।

सूर्य वंश के प्रथम पुत्र **''वैवस्वत मनु''** को कौन नहीं जानता है ? उनके वंश में प्रतापी राजा ''पृथु'' हुए। उसी वंश में महाप्रतापी राजा **'इक्ष्वाकु'** हुए। इसके बाद महान नीतिज्ञ परम प्रतापी **''मान्धाता''** हुए, जिन्हें सत्ययुग के अलंकार के रूप में संसार मानता है। इसी वंश में एक कबूतर की प्राण-रक्षा के लिए अपने शरीर के खण्ड को टुकड़े-टुकड़े कर तराजू पर चढ़ानेवाले महाराजा **''शिवि''** हुए। इसी सूर्य वंश में तपस्या करके महादेव की जटा-जूट से पृथ्वी पर गंगा लाने वाले राजा **'भगीरथ'** हुए जिनके द्वारा लाई गई गंगा भागीरथी है उसी वंश के परम प्रतापी **'रघु'** हुए। जिनके नाम से इस वंश का नाम **'रघुकुल'** हो गया। और उनके वंशज **'राघव'** शब्द से संवोधित होने लगे। उनके पुत्र **'अज'** हुए। और अज के पुत्र महान प्रतापशाली सर्व गुण युक्त **'दशरथ'** हुए।

विशेष–तमिल क्षेत्र में यह विश्वास है कि भगवान् श्री रंगनाथ का स्थान कावेरी नदी के तटपर 'त्रिचनापल्ली' नगर में है। **'इक्ष्वाकु'** वंश के कुल-पूज्य एवं वैष्णवों के परम धाम भगवान् श्री रंगनाथ ही हैं। यहाँ यह अनुसंधान का विषय हो जाता है कि उत्तर भारत की **'सरयू'** नदी के तटपर स्थित अयोध्या के राजाओं के कुल पूज्य श्री 'रंगनाथ' दक्षिण भारत की 'कावेरी' नदी के तटपर त्रिचनापल्ली में कैसे हैं ?

राजा दशरथ को कौशल्या, कैकेयी, तथा सुमित्रा नाम की तीन पत्नियाँ थीं। उन्हें दुर्भाग्य वश पुत्र नहीं हुआ। इसलिए चिन्तित दशरथ अपने कुल गुरु-वसिष्ठ के परामर्श के अनुसार प्रख्यात महर्षि **ऋष्यशृंग** के द्वारा **पुत्रेष्टि** नाम का यज्ञ कराया। उस यज्ञ के प्रभाव से यज्ञ पुरुष के द्वारा प्राप्त अमृतमय पायस के खाने से तीनों पत्नियों ने गर्भ धारण किया तथा कौशल्या के गर्भ से 'रामचन्द्र' कैकेयी के गर्भ से भरत, और सुमित्रा के गर्भ से लक्ष्मण, शत्रुघ्न, के जन्म हुए। यही बड़े छोटे, अग्रज-अनुज का क्रम था।

उनमें यह ज्येष्ठ 'रामचन्द्र' सामने विराजमान हैं। इसी रामचन्द्र ने ऋषियों के यज्ञ में विघ्न देनेवाले राक्षसी एवं राक्षसों के समूहों का नाश किया। जिनमें ताड़का, सुबहु, मारीच, प्रमुख हैं। इसी राम की चरणरूपी धूलि के स्पर्श से पत्थर के रूप में विद्यमान **अहल्या** पहले की तरह गौतम की पत्नी एवं शतानन्द की माता के रूप में हो गयी।

इस तरह इस विश्व विख्यात मूर्धन्य सूर्य वंश में उत्पन्न यह 'रामचन्द्र' भगवान् विष्णु के अवतार हैं। ऐसा भी संकेत विश्वामित्र ने जनक को दिया।

विशेष–वाल्मीकि रामायण में वंश परिचय धनुर्भंग के बाद दिया गया है और इस रामायण में धनुर्भंग के पहले। साथ ही जनक के वंश का वर्णन नहीं है। इतना ही अन्तर है।

''कर मुहँप् पडलम्–कार्मुक पटल''

इस पटल में 'रामचन्द्र' के द्वारा शिव धनुर्भंग की कथा और 'रामचन्द्र' के विवाह की पूर्व व्यवस्था का वर्णन है।

विश्वामित्र द्वारा 'रामचन्द्र' पर्यंत पवित्र 'सूर्य वंश' का वर्णन सुनकर जनक ने कहा। मैं क्या कहूँ मुझे अनुभव हो रहा है कि धनुर्भंग का संकल्प सफल होगा। क्योंकि जैसा आपने कहा है उससे यह सिद्ध है कि ''रामचन्द्र'' धनुष के उठाने में समर्थ हैं। और मेरे संकल्प को पूर्ण करेंगे तथा सीता का मनोरथ सफल होगा।

सभा में राजा की आज्ञा से मंत्रीगण ने सभा में घोषणा की ? जो इस शिव धनुष

को उठाएगा। उसी के साथ सीता का विवाह होगा। वहाँ सभा में जनक के महाबलशाली साठ हजार वीर (६०,०००) एक साथ मिलकर उस धनुष को उठाकर उस सभा में लाये। (यहाँ वाल्मीकि ने मात्र पाँच हजार (५,०००) वीरों का उल्लेख किया है। कम्बन् साठ हजार की बात कहते हैं।

धनुष को देखकर लोग परस्पर बोलने लगे कि सुदर्शन चक्रधारी विष्णु को छोड़कर इस धनुष को कोई नहीं उठा सकता है। कुछ लोग कहते हैं यह धनुष सुवर्णमय **'मेरु'** पर्वत है। कुछ कहते हैं **'मन्दराचल'** पर्वत है और कुछ कहते हैं कि आकाश से टूटकर यह **'इन्द्रधनुष'** है। कुछ लोग कहते हैं, ये राजा जनक जड़ बुद्धि वाले हैं–मन्द बुद्धि वाले हैं। जिन्होंने ऐसी प्रतिज्ञा कर ली। सीता विवाह का क्या होगा ? सीता क्या मन में सोचती होगी ? मालूम पड़ता है, विधि का यही विधान है।

राजा जनक एक तरफ धनुष को देखते हैं और दूसरी तरफ सीता को देखते हैं। और चिन्तित हो जाते हैं। यह देखकर शतानन्द ने कहा यह धनुष महादेव ने जनक के पूर्वजों को दिया था। यज्ञ करने के लिए स्वर्ण मणि युक्त हल से राजा जनक ने पृथ्वी का कर्षण किया–जोता। उसी हल के 'फाल' से यह कन्या प्रगट हुई। जो अत्यन्त सुन्दरी साक्षात् पृथ्वी स्वरूपा थीं। क्योंकि सीत–हल के अग्र भाग से उत्पन्न होने के कारण इसका नाम 'सीता' हुआ। (सीतेन हलस्य अग्रभागेन जाता या सा सीता।)

इस सभा में उपस्थित राजा गण भ्रमर से घिरे हुए विशाल केश पाश बाली सीता को देखकर पागल होते हुए सोचते हैं। यह सुन्दरी कैसे मिलेगी ? किन्तु धनुष उठाने में सभी राजागण विफल होकर लज्जित हो गये। तब महर्षि विश्वामित्र के संकेत से 'रामचन्द्र' वहाँ उपस्थित हुए। सभा में उपस्थित सभी लोग सोचते हैं कि यदि **'राम'** धनुष पर डोरी जोड़ देंगे तो सीता का विवाह संभव है। और उसका यौवन व्यर्थ नहीं जायगा। यदि ऐसा नहीं हुआ तो क्या होगा यह भगवान् जानें ? क्योंकि धनुष के उठाने के प्रयास करनेवालों में ये 'रामचन्द्र' अन्तिम व्यक्ति थे।

'रामचनद्र' ने सहसा बिना किसी प्रयास के उस धनुष को उठाकर तोड़ दिया। जबकि जनकपुर के कोठे पर बैठी हुई नारियाँ चिन्तित थीं यदि 'राम' सफल नहीं हुए तो **कस्तूरी कुमकुम से सुगन्धित इस विशाल सुदीर्घ केश वाली 'सीता'** अग्नि में प्रवेश कर जाएगी। जो महान् चिन्ता का विषय है। लेकिन राम ने इसी बीच धनुष उठाकर भंग कर दिया। सभी आनन्द के सागर में ऊब डूब करने लगे। वहाँ सभी सुन्दरियाँ, नारियाँ अपने पति को उत्साह और प्रसन्नता से आलिंगन करने लगीं। धनुष यज्ञ को देखने के लिए स्वर्ग से मिथिला में आई हुई देवांगनायें राम की प्रशंसा करते हुए लौट गयीं।

इस तरह धनुष-यज्ञ समाप्त हुआ। जनक ने विश्वामित्र से कहा आपके शिष्य का विवाह आज ही हो, यह मेरी इच्छा है। क्या करना चाहिए यह आदेश दें। विश्वामित्र ने कहा शीघ्र दूतों को अयोध्या भेज कर दशरथ को सूचित एवम् आमन्त्रित करें। राजा जनक ने ऐसा ही किया, और सर्वप्रथम दूतों को अयोध्या भेज दिया।

●

श्रीः

“ऐलच् ऐलुचिप पडलम् (प्रस्थान पटल)”

इस पटल में जनक के द्वारा दशरथ के पास दूतों को अयोध्या भेजना और राजा दशरथ का पुरजन, परिजन एवं गुरुजनों के साथ जनकपुर पहुँचने का वर्णन अति मनोहर रूप में है ।

जनक के दूत रथ पर बैठकर वायु वेग से अयोध्या पहुँचे । वहाँ नृत्य, गीत-वाद्य आदि पहले से ही हो रहे थे । राजदरबार में दशरथ के दर्शन के लिए आये हुए राजाओं की बहुत बड़ी पंक्ति प्रतीक्षा कर रही थी । वहाँ के द्वारपाल ने जनकपुर से आये हुए दूतों के प्रसंग में अन्तःपुर जाकर दशरथ की सूचना दी । तुरत उन्हें अन्तःपुर में भेज देने का आदेश हुआ । दूतों ने वहाँ आकर विधिवत् राजा दशरथ को प्रणाम कर स्तुति की ।

तब विश्वामित्र के साथ “**रामचन्द्र**” का अयोध्या से प्रस्थान से लेकर जनकपुर में **शिव धनुर्भंग** तक की सारी घटनायें निवेदित की । साथ ही जनक द्वारा प्रेषित विवाह का निमन्त्रण पत्र समर्पित किया । उस पत्र को पढ़कर दशरथ सहित सभी समुपस्थित सभासद् और राजा-गण आनन्द के सागर में डूब गये ।

राजा दशरथ बोले । उस दिन जो बहुत बड़ा भयंकर शब्द सुना गया वह क्या इसी धनुर्भंग का था ? ऐसी कल्पना मन में हुई । यह तो वही धनुष है । जिससे दक्ष प्रजापति के यज्ञ के अवसर पर रुद्र रूप महादेव ने उसीसे विजय प्राप्त की थी। इसके बाद महाराज ने आज्ञा दी कि मेरा सभी सैन्यगण, सभी मन्त्री-गण, और सभी राजा-गण ‘**मिथिला**’ चलें । इस आज्ञा को सुनते ही यथायोग्य सभी प्रस्थान करने के लिए तैयार हो गये ।

विशेष–इस रामायण में कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा ये तीनों मातायें और हजारों सुन्दरी–युवती–नारियाँ एवं किशोरियाँ मिथिला चलीं । **यह सर्वथा नवीन यात्रा वर्णन वाल्मीकि रामायण आदि किसी भी संस्कृत रामकाव्य में नहीं है। यह नूतन कथा शैली हैं।**

दशरथ के सभी सैनिक एवं मंत्रिमंडल के सदस्य चल चुके । जिनमें नारियों की संख्या अधिक थी । इसी वर्णन के क्रम में अयोध्या की नारियों के सौन्दर्य वर्णन एवं **शृंगार रस** वर्णन जिस तरह किया है । वह अद्भुत और अद्वितीय है । **देखें कुछ बानगी।**

(क) जाती हुई युवतियों के दोनों स्तनों में लेप किये गये कुम-कुम, केसर आदि साथ चलते हुए पुरुषों के भुजा-संघर्ष से जमीन पर गिर रहे थे ।

(ख) उन नारियों के फूलों से सुसज्ञित काले मेघ के समान विशाल केश राशि इस तरह सुशोभित हैं जैसे आकाश में अगणित विमानों के समूह हों ।

(ग) उनके मुख कमल के समान थे । उनके केश पाशों पर भौरें गूँज रहे थे । एक नारी का विशाल केश नदी प्रवाह के समान कुञ्चित-घुँघराले थे । उसके तीक्ष्ण नेत्र बहुत बडे थे । दोनों स्तन कठोर और पीन थे । कमर तो इतनी पतली थी कि अदृश्य थी ।

(घ) कुछ नारियाँ हाथी पर जा रही थीं । वे सुगन्धित और सुन्दर फूलों से अलंकृत विशाल लम्बे केश पाश के भार से झुक गयी थीं । कवि कल्पना करते हैं ।

उत्कृष्टकल्पना–"उन नारियों के लम्बे-केश **'माया'** रूप हैं जो लोगों को आकृष्ट कर अपने मायाजाल में घुमा रहे हैं ।" उनके वस्त्र इतने महीन और सूक्ष्म थे कि उनके अंग प्रति-अंग वैसे ही साफ-साफ दीख रहे थे ।

विशेष–कवि 'कम्बन' ने यहाँ उद्दाम शृंगार रस का तथा केशपाश का बड़ा ही आकर्षक किन्तु विचित्र वर्णन किया है ।

एक सुन्दर पालकी पर देवांगना तुल्य कैकेयी आगे जा रही थी । उसके बाद दूसरी पालकी पर सुमित्रा थी और सबसे पीछे चन्द्रमा के समान स्वच्छ एक वाहन पर कौशल्या थी । उनके पीछे हजारों सुन्दरियाँ चल रही थी ?

विशेष–यहाँ महाकवि 'कम्बन्' ने पहले कैकेयी तब सुमित्रा और बाद में कौशल्या के सबसे पीछे चलने का वर्णन करके **पारिवारिक सौजन्य सद्भाव एवं स्नेह** : का प्रदर्शन कराकर एक उत्कृष्ट उदाहरण का परिदर्शन कराया है । क्योंकि श्रेष्ठ का आगे चलना उचित एवं विहित है । जिस परम्परा को कौशल्या ने परित्याग कर सद्भाव का परिचय दिया है ।

इस यात्रा में राजा के साथ बहुत से वेदज्ञ ब्रह्मण आदि थे । उनके साथ दशरथ ने सायं-कालीन उपासना करके सभी परिजनों के साथ "चन्द्रशैल" नाम के पर्वतीय क्षेत्र में रात बितायी ।

विशेष–वाल्मीकि रामायण आदि संस्कृत राम काव्यों में **"चन्द्रशैल"** पर्वत का वर्णन नहीं है । यहाँ कवि ने क्रमशः शैल दर्शन पटल, पुष्प चयन पटल, जल क्रीड़ा पटल और पान क्रीड़ा पटल **इन चारों** पटलों में केवल सौन्दर्य शोभा और नारी-शृंगार का विचित्र वर्णन किया है । यह तो पहले से ही सिद्ध है कि कवि चक्रवर्ती 'कम्बन्'

सौन्दर्य-प्रिय और शृंगार-वर्णन में सिद्ध-हस्त हैं। यहाँ उक्त **चारों पटलों के अत्यन्त प्रमुख घटनाओं का संपेक्ष में दिग्दर्शन करा कर आगे का वर्णन किया जाएगा।**

केश-पाश वर्णन–अयोध्या से चले हुए हाथी, घोड़े आदि वाहनों की देखभाल के लिए नियत रक्षक थे। स्फटिक-शिला के समीप बहती हुई नदी में नारियाँ स्नान कर रहीं हैं। जिनके अंगों की विशिष्ट शोभा और लम्बे बाल अत्यन्त आकर्षक दीख रहे हैं। रात में ये नारियाँ मल्लिका पुष्प को छोड़कर चमेली फूल की माला धारण करती थीं जो फूल बहुत सुगन्धित होते है। प्रातःकाल राजा दशरथ नित्य-क्रिया करके मिथिला चलने के लिए तैयार होते हैं। तब उस उद्यान में नायिकायें नाना प्रकार के फूलों को देखती और चुनती हुई पीछे-पीछे मिथिला की ओर चल रही थीं।

वहीं एक अत्यन्त सुन्दर सरोवर में नारियाँ अपने पतियों के साथ विविध प्रकार से जलक्रीड़ा कर रही थीं जहाँ कुछ अर्ध वस्त्र वाली थी, और कुछ निर्वस्त्र वाली थी। सुगन्ध युक्त उनके केश-पाशों से फूल की मालायें बिखर रही हैं। जिसपर भौंरे गूँज रहे थे। उनके विशाल केश-पाश बरसने वाली मेघ-घटा की तरह दीख रहे थे।

इसके बाद सुगंधित विशाल लम्बे और चिकने केश वाली सुन्दरियाँ मदिरा पीकर फूल की शैय्या पर अपने पतियों के साथ रति-क्रीड़ा-सम्भोग में लीन हो गयी। इस तरह धीरे-धीरे वे नर-नारियाँ आनन्दोल्लास करते हुए मिथिला पहुँच गये। यह अति संक्षिप्त सरस कथायें उक्त **'चारो पटलों,** में है। ऐसे लौकिक वर्णन में निपुण कवि के पारलौकिक वर्णन की निपुणता का दिग्दर्शन इस ग्रन्थ के अन्त में कराया जाएगा।

''उलावियर् पडलम् (वीथी भ्रमण पटल)''

इस पटल में **''रामचन्द्र''** जब अयोध्या की गली में पहुँचे तो वहाँ की नारियों की विचित्र सुन्दरता और मनोदशा का चमत्कारपूर्ण मनोहारी वर्णन प्रमुख है। यहाँ 'कम्बन्' कवि ने यथार्थ : **सम्भोग-वियोग मय शृंगार-वर्णन के साथ-साथ आध्यात्मिक रहस्य का भी वर्णन किया है।**

अतिविशेष–''तमिल भाषा में'' आयु के अनुसार नारियों को सात भागों में बाँटकर सात तरह के नाम दिये गये हैं। यथा–

(१) सात वर्ष की–**पैते** (२) ग्यारह वर्ष की–**पदुमवै** (३) तेरह वर्ष की **मङ्गै** (४) इक्कीस वर्ष की **मडनडै** (५) पच्चीस वर्ष की–**अरिवै** (६) छब्बीस वर्ष से तैंतीस वर्ष तक की–**तरिबै** (७) चालीस वर्ष एवं ऊपर की–**पेरिलमङ** है।

मिथिला-नगरी में इन सभी अवस्थाओं की नारियाँ 'रामचन्द्र' की शोभा देख रही

थीं । ये नारियाँ मिथिला के शृंगार रूप में हैं । अपनी सुधबुध को भूलकर दौड़ती हुई वे वहाँ पहुँचीं । जिससे उनके केश पाश विकीर्ण हो गये । उन केशपाशों से सुगन्ध युक्त मधुमय फूल बिखर गये और उनकी मेखलाएँ (कमर धनी डँड़ाकस) गिर गयीं और अति महीन पारदर्शी रेशमी के वस्त्र भी शरीर से गिर गये । तात्पर्य यह है कि **''रामचन्द्र''** की शोभा को देखती हुई वहाँ की नारियाँ अपने शरीर का सभी ज्ञान खो बैठीं ?

विशेष—यहाँ कवि ने ''रामचन्द्र'' के दोनों हाथ-पैर अत्यन्त ही महनीय, वन्दनीय, एवं दर्शनीय कहा है । क्योंकि इन **पैरों ने अहल्या** का उद्धार किया और इन हाथों ने **शिव के धनुष को भंग** किया । उन नारियों का सुध-बुध खोकर देखने का **यही आध्यात्मिक रहस्य था** । यहाँ कवि ने जो **भक्ति और शृंगार का सुन्दर समन्वय किया** है वह **किसी 'राम-काव्य'' में देखने को नहीं मिला** ।

गली में जाते हुए ''रामचन्द्र'' को देखकर तन्मय हो गयीं, और उनकी आँखें अपलक हो गयीं । अर्थात् आँखों की पलकें नहीं गिर रही थीं । **अतिविशेषः**

यहाँ कवि ने तमिल भाषा के **'कण्णन'** शब्द का प्रयोग किया है । जिसके दो अर्थ होते हैं । (१) जो सबका नेत्र है, और जिसके सभी नेत्र हैं । यहाँ 'रामचन्द्र' सभी नारियों के नेत्र में प्रवेश कर गये इसलिए ''रामचन्द्र'' मिथिला की नारियों के नेत्र बन गये । (२) यहाँ की वे नारियाँ भी ''रामचन्द्र'' की आँखों में प्रवेश कर राम की आँखें हो गयीं ।

गली में वेग से जाते हुए 'रामचन्द्र' को क्षणमात्र देखकर सीता ने उन्हें आँखों में बन्द कर लिया । अर्थात् राम को देखकर सीता ने उन्हें आँखों में बन्द कर लिया । अर्थात् राम को देखकर सीता ने अपने पलक रूपी कपाट से (किबाड़ से) राम रूपी चोर को बन्द कर लिया । तात्पर्य यह कि जैसे किसी चोर को पकड़ कर कोई अपने घर में किवाड़ लगाकर बन्द कर देता है । उसी तरह सीता ने अपने मन को हरने वाले चोर ''राम'' को अपने हृदय रूपी घर में रखकर आँख रूपी किवाड़ को बन्द कर दिया । (पद्य ११४५-१९४६) जिससे राम उनके हृदयरूपी घर से नेत्र रूपी द्वार से भाग न जाय । कवि के वर्णन की यह शैली शैल शिखर पर चढ़ गयी है । कोई नारी 'रामचन्द्र'' के रथ को आगे जाते हुए देखकर उनके पीछे दौड़ी जिससे उसके वस्त्र अलंकार आदि गिर गये । उसका ज्ञान भी नहीं हुआ । कुछ नारियाँ उनके पीछे रहकर ''रामचन्द्र'' को देख नहीं सकी, क्योंकि आगे की नारियों के लम्बे केश, पीन स्तन, और मोटे नितम्ब देखने में बाधक थे । पीछे की नारियाँ आगे की नारियों की इन बाधाओं के कारण नहीं देख रही थीं और वहाँ नारियों के शरीर से गिर कर फैले हुए थे मेखला, कंकण, नूपुर आदि तथा केश-पाश से गिरी हुई फूल मालाएँ व्याप्त थीं ।

भक्ति भाव का सूक्ष्म विश्लेषण—इस संसार में प्रसिद्ध धर्म-चिन्तक अपने-अपने मतानुसार **'ब्रह्म'** की कल्पना करते हैं । यहाँ की नारियों में भी कोई उनका हाथ देखती थी, कोई पैर ही देखती थीं और कोई दूसरे ही अंग को । संपूर्ण रूप को कोई नहीं देख सकी । तात्पर्य यह कि राम का प्रत्येक अंग **ब्रह्म-स्वरूप था** । तथा जिसने जिस अंग को देखा उसी अंग रूपी **ब्रह्म में** लीन हो गयी (पद्य ११५८) ।

इस तरह अत्यधिक शोभा को धारण करने वाली नारियों में कोई अकेली जा रही थी, कोई सखी के साथ जा रही थी । इस प्रकार उस गली में स्थित थी, और चल रही थी। ऐसे जब नारियाँ व्याकुल थीं तभी ''रामचन्द्र'' जनक के सभा-मण्डप पर पहुँच गये । वहाँ त्रिकालज्ञ वसिष्ठ, वेद शास्त्र में पारंगत विश्वामित्र उपस्थित थे । धर्म की स्थापना के लिए और साधुओं की रक्षा के लिए अयोध्या में अवतरित राम ने वसिष्ठ और विश्वामित्र को साष्टांग प्रणाम किया और दोनों ने उन्हें आशीर्वाद दिया । वहाँ महिमा-मण्डित उपस्थित दशरथ ने भी मुनियों में श्रेष्ठ वसिष्ठ और तपोधन विश्वामित्र को प्रणाम किया । वहाँ वेदज्ञ ब्राह्मणों ने वेद मन्त्रों से आशीर्वाद दिया और फूल की वर्षा होने लगी ।

इस सभा में अंग, कोंग, कलिंग, तेलगू, चोल, अवन्ती, महाराष्ट्र, मागध, लाट, विदर्भ एवं सिन्ध प्रभृति देशों के राजा गण अपनी परम्परा के अनुसार सुसज्ज़ित थे। जहाँ एक-छात्र महाराज दशरथ विराजमान थे । राजा जनक ने बड़े उत्साह और विनय के साथ सबों का सत्कार किया ।

कौलङ्‌ गाङ्‌ पडलय (शृंगार-सज्ञा-पटल)

इस पटल में विवाह के लिए सीता के शृंगार का वर्णन है । इस शृंगार में **मिथिला की परम्परा** के साथ विशेषतः **तमिल-परम्परा से शृंगार प्रकार का** वर्णन देखा जा सकता है ?

सभा-मण्डप में बैठे हुए राजा जनक ने पुत्री सीता को यहाँ लाने को कहा । सीता की सखियाँ अन्तःपुर जाकर सीता के अंग-प्रत्यंग में यथा योग्य यथा स्थान पुष्प, चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों के विन्यास का वर्णन अत्यन्त विस्तृत रूप में है । उसका अति संक्षिप्त प्रमुख शृंगार की चर्चा की जा रही है ।

सबसे पहले **'केश-विन्यास'** वर्णन देखें । पाँच प्रकार से केश विन्यास किये जाते हैं ।

(१) मस्तक के पीछे भाग में **'जूटिका'** नाम का जूड़ा ? (२) **'कुण्डली'** नाम का जूटी बन्ध (३) **'वेणी'** नाम का एक लम्बी जूटी । (४) **''कुञ्चिता''** नाम का

एक घुंघराला जूड़ा (५) **''विकीर्ण''** केश-पाश नाम का खुले बाल और तीन तरह के **सीमन्त (माँग-सीथ)** मस्तक **के बीच** भाग, **बायें** भाग और **दायें** भाग में होते हैं। और मस्तक के अग्र भाग **''पट्टिका''** नाम की पाटी तथा **''पत्तिका''** नाम का पत्तीदार केश होते हैं। सीता के केशपाश बहुत विशाल हैं उनमें सभी प्रकार के केश-विन्यास हो सकते हैं। इसलिए वहाँ समयानुकूल सीता की सखियों ने सब प्रकार का केश विन्यास किया। **(पद्य १२०५)**।

नख-शिख वर्णन—आँखों में काजल, स्तन में मेखला, कानों में सोने का कर्णफूल, नांमक में रत्न-जटित नकबेसर, गले में मणिमय-मुक्ता हार, बाँह पर सोने का केयूर, पैर में किंकिणी और हाथ पैर के नखों में नख रंग (नेल पॉलिस) तथा पैरों में लाक्षारस (आलता) आदि से आकर्षक रूप में शृंगार-विशेषज्ञा दूतियों ने शृंगार किया। केश से लेकर पैर तक यथा योग्य सुगन्धिता पुष्प मालाएँ भी लगा दीं। इस तरह **स्वयंभूता शक्ति स्वरूपा सीता** को देखकर सभी नायिकाएँ आश्चर्य से मुग्ध हो गयीं। उस तरह सभा मण्डप में आई हुई सीता को देखकर राजा दशरथ अत्यन्त मुदित हुए। वहाँ उपस्थित सभी लोग चकित हो गये क्योंकि **''सीता'' वहाँ साक्षात् ''आद्या-भगवती'' के रूप में देखी गयी ?** इस तरह कन्या निरीक्षण हो गया।

दशरथ की जिज्ञासा के उत्तर में विश्वामित्र ने कहा। विवाह का शुभ दिन कल है। इस तरह सभी अपने-अपने वास-स्थान चले गये।

''कडिमणप् पडलम् (शुभ विवाह पटल)''

इस पटल में सीता के विवाह का लौकिक और अलौकिक वर्णन तथा सीता के विवाह में **मिथिला की परम्परा का वर्णन प्रमुख है।**

सीता के विवाहोत्सव में समागत राजाओं को ऐसा मालूम पड़ा कि वे सशरीर स्वर्ग में आ गये हैं। क्योंकि उस समय जनकपुर **सद्यः 'वैकुण्ठ'** और **'इन्द्र-लोक'** हो गया है। वह सीता और राम दोनों ने जागते हुए वह रात बिता दी और विभिन्न सरस-कल्पनायें उनके मन में चूमती रही तबतक 'अरुणोदय' हो गया।

मिथिला-वासी सभी मार्ग और गलियों में चन्दन-अगुर आदि सुगन्धित द्रव्य सहित जल सींच रहे थे और फूल बिखेर रहे थे। प्रासाद के अग्र भाग पर रत्नों से युक्त मालायें लगी हुई थीं। और चारण, भाट, वन्दी जन नाना-प्रकार के गीत वाद्य आदि गा बजा रहे थे।

वहाँ चौंसठ-कलाओं में निपुण विभिन्न देशों से आई हुई वेश्यायें विभिन्न प्रकार की कलायें दिखा रही थीं। और वहाँ के कुछ लोग नाच रहे थे। बाजे बजा रहे थे

और हँसते हुए युद्ध का कौशल दिखा रहे थे। राजा दशरथ सबसे पहले वहाँ आकर सोने के बने हुए विशेष सिंहासन पर बैठ गये और वन्धु-वान्धवों के साथ राजा जनक भी आकर आसन पर बैठ गये। वहाँ अयोध्या की नर-नारियों का समूह तो पहले से था ही। साथ ही देवलोक और स्वर्ग-लोक से नर-नारियाँ सीता राम के विवाह को देखने के लिए वहाँ उपस्थित हो गये ?

विवाह वेदी पर वेदोक्त गंगाजल, पवित्र नदियों का जल और शंख फूल आदि लाये गये। बड़े-बड़े वेदज्ञ विद्वान उपस्थित थे। राम ने वैवाहिक पवित्र मुकुट धारण किया और अपनी वंश-परंपरा के अनुसार परम-ज्योति स्वरूप भगवान् 'रंगनाथ' की पूजा की। यह तो पहले ही कहा जा चुका है कि **'तमिल क्षेत्र' में विष्णु के समान श्री रंगनाथ पूज्य** हैं। राम ने विवाह के समय तमिल-क्षेत्र का आवश्यक **''किं पुरी''** नाम का आभरण धारण किया।†

† सीता वहाँ लायी गयी।

गुरु वसिष्ठ ने **बालू से निर्मित हवन वेदी** पर कुश फैलाकर और फूलों को विखेर कर विधिवत् अग्नि-स्थापन करके वेद मन्त्र द्वारा हवन किया। **(यह परम्परा आज भी मिथिला में इसी तरह अनिवार्य रूप से विद्यमान है।**

राजा जनक ने 'रामचन्द्र' के समीप आकर उनके हाथ पर जल सिञ्चन करके सीता का हाथ रख दिया। सभी सुवासिनी नारियाँ मंगल वाद्य गीत गाने लगीं। पति युक्ता नारी (सधवा औरत) **''जीव''** नाम का गीत गाने लगी। सीता ने राम के साथ अग्नि वेदी की परिक्रमा की। **(ये उपर्युक्त दोनों परम्परायें–'बालुका' वेदी पर हवन और ''जीव'' नाम का गीत मिथिला में विवाह के समय आज भी अनिवार्य रूप से प्रचलित है।)** यहाँ लोगों ने अनुभव किया 'सीता-राम' का संयोग **'जीव'** और **'परमात्मा'** का मिलन स्वरूप है।

विवाह की अन्य विधियाँ सुसम्पन्न हुई। सीता के साथ राम सुसज्जित भवन में–'कोबर घर' में आ गये। वहाँ आकर तीनों माताओं को प्रणाम किया और सीता ने उसीका अनुसरण किया। माताएँ अभूतपूर्व लौकिक आनन्द में मग्न हो गयीं तथा अशेष आशीर्वचन दिये। चार दिनों तक विवाह की विधियाँ होती रहीं। **आज भी मिथिला में चौथे दिन चर्तुर्थी-कर्म पर्यन्त विवाह की विधियाँ चलती रही हैं। (यहाँ भी कवि ने मिथिला की रीति का वर्णन किया।)**

इसके बाद जनक को उर्मिला नाम की एक कन्या थी। उसके साथ लक्ष्मण का विवाह करा दिया। जनक के अनुज कुशध्वज को दो कन्यायें माण्डवी, एवं श्रुतिकीर्ति नाम की थीं। उन दोनों के साथ क्रमशः भरत-शत्रुघ्न का विधिवत् विवाह संपन्न हुआ।

ये सभी विवाह गुरु वसिष्ठ और महाराज दशरथ की आज्ञा से सुसंपन्न हुए ?

इस तरह चारों भाइयों को राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न का क्रमशः सीता, माण्डवी, उर्मिला और श्रुतिकीर्ति के साथ यहाँ जनकपुर में सम्पन्न हुआ। राजा दशरथ ने तथा राजा जनक ने बहुत दान दिये। विवाह संपूर्ण होने के कितने दिनों के बाद तक दशरथ मिथिला में ही रह गये और जनक के साथ प्रतिदिन धर्मशास्त्र, नीति शास्त्र और राजनीति शास्त्र आदि की चर्चा करते हुए आनन्दित होते रहे।

विशेष–मिथिला में विवाह के बाद जामाता कितने दिनों तक ससुराल में रहते हैं। चमत्कार की बात तो ये हैं कि **'तमिल'** क्षेत्र के कवि 'कम्बन्' ने यहाँ आरम्भ से ही सभी क्रियाकलापों का वर्णन **मिथिला** के अनुसार ही किया है। इस तरह निष्पक्ष तथ्य पूर्ण घटना का वर्णन करके कवि **'कम्बन्' मूर्धन्य-कवि चूड़ामणि हो गये।**

''परशुराम पडलम् (परशुराम पटल)''

इस पटल में विवाह के बाद विश्वामित्र का हिमालय गमन, पुत्र और पुत्र-बधुओं के साथ दशरथ का अयोध्या-प्रस्थान वर्णन, रास्ते में परशुराम के आगमन का वर्णन, राम द्वारा उनके पराजय का वर्णन, परशुराम के सौजन्य का वर्णन प्रमुख है।

मिथिला में राम सीता के साथ अनेक प्रकार के उपभोग करते हुए सानन्द थे। तपोधन विश्वामित्र अपने कार्य को सम्पन्न समझकर राम को अक्षय वेद-विहित नीति का उपदेश देकर और आशीर्वचन देकर उत्तर दिशा में हिमालय की ओर चले गये। राजा दशरथ भी विदा की आज्ञा लेकर रथ पर बैठ गये। सभी पुत्र एवं पुत्र-वधुओं के साथ दशरथ के प्रस्थान की बात सुनकर मिथिला बासी नर-नारी विदीर्ण हो गये। जनक तो पहले से ही विकल थे। जनक ने यथा योग्य अभूतपूर्व सत्कार करके समधी, समधिनों, पुत्रियों और राज-माताओं को विदा कराया ?

रास्ते में महान् प्रचण्ड क्रोध मूर्ति परशुराम मिल गये। उन्हें देखकर दशरथ काँपने लगे कि ये क्या कहेंगे और क्या करेंगे। सहज क्रोधी परशुराम के समीप आकर उनकी स्तुति की। लेकिन परशुराम का क्रोध शान्त नहीं हुआ। ये राम के समीप आकर बोले यदि शिव धनुष को तोड़ा है तो वह पहले से ही टूटा हुआ था। यह मैं जानता था। मेरी बाँह युद्ध के लिए खुजला रही हैं। इसलिए मैं यहाँ आया हूँ। यह सुनकर दशरथ व्याकुल हो गये और पुनः परशुराम के समीप आकर क्षमा दान की याचना की। लेकिन परशुराम ने स्वीकार नहीं किया। परशुराम ने राम को कहा। यह धनुष लो, इस पर (प्रत्यंचा) डोरी चढ़ाओ, यदि तुम यह कर सकोगे तो मैं युद्ध की चर्चा छोड़ दूँगा **(पद्य १३१०७)**। राम ने विहँसते हुए धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाकर वाण संधान किया और

कहा आप असंख्य राजाओं के बध के अपराधी हैं किन्तु आप महर्षि जमदग्नि के पुत्र तपस्वी हैं। इसलिए में अपने वाण से आपका प्राण हरण करना उचित नहीं समझता। किन्तु मेरा लक्ष्य अमोघ है, इसलिए आप ही बताये कि इस वाण का मैं क्या करुँ।

परशुराम ने कहा। हे नीति स्वरूप राम, मुझ पर क्रोध मत करो। मैंने जान लिया कि **आप पर-ब्रह्म-परमात्मा** के स्वरूप **वेदों के आधार इस संसार के अधीश्वर हैं।** शिव के धनुष का भंग होना तो उचित ही था। इसलिए आप अपने अमोघ वाण से मेरे तपोवल को लेकर वाण को लौटा लें। राम ने वैसा ही किया और अपने वाणों को लौटा लिया। परशुराम ने अपनी सर्वस्व-तपस्या को छोड़कर राम की स्तुति करते हुए चले गये। उनके चले जाने पर राम पिता के समीप आ गये और वहाँ से सभी अयोध्या पहुँच गये।

"इति बाल काण्डम्"

श्रीः
"अयोध्या काण्ड"

इस काण्ड में मङ्गलाचरणों के अतिरिक्त १३, पटल है। जैसे-जैसे इस विशाल रामायण सागर में गोते लगाते हैं वैसे-वैसे नवीन 'कथा-रत्न'' मिलते जाते हैं। काव्य रस सिद्धान्त के परिवार में **संस्कृत को छोड़कर** भारतीय वाङ्मयों में **'कम्बन' जैसा शायद ही कोई सिद्धहस्त कवि होगा**। इसमें कोई संदेह का स्थान नहीं है।

मङ्गलाचरणों के एक पद में कवि कहते हैं कि कैकेयी के कठोर निर्णय से 'रामचन्द्र' ने वन जाकर ऋषियों और देवताओं के संकटों को दूर किया, वे राम हमलोगों की रक्षा करें। जिनको ज्ञानी लोग **पञ्च-तत्त्वात्मक** इस शरीर में **शरीरी 'आत्मा'** कहते हैं। वे ही राम भीतर और बाहर रहते हुए **आत्म-स्वरूप हैं। अर्थात् मनुष्य रूप में स्थित वे "परमात्मा" हैं।**

"मण्दिरप् पडलम् (मन्त्रणा पटल)"

चारों भाइयों के विवाह के बाद मिथिला से आकर राजा दशरथ अपने पुत्र और पुत्रबधुओं के साथ आनन्द से राज्य शासन करने लगे। भरत के नाना 'केकय' के साथ भरत को ननिहाल जाने का आदेश दिया, जो विवाह के उत्सव में अयोध्या आये थे। यहाँ यह **'कथा-क्रम वाल्मीकि-रामायण से कुछ भिन्न है।**

एक समय राजा दशरथ दर्पण (आईना) में अपने कानों के पास कुछ पके बालों को देखा। उन्होंने सोचा, बुढ़ापा आ गया। पुत्र को राज्य देकर तपस्या के लिए वन जाने का समय उपस्थित है।

विशेष—यहाँ कवि की कल्पना यह है कि जो **रावण का पाप ही दशरथ के कानों के पास उजले बाल के रूप में आ गये। जिस कारण आगे की घटनायें हुई।**

दशरथ अपने 'मंत्रिमंडलों के विचार कक्ष में पहुँचे। यहाँ गुरु वसिष्ठ एवं सभी अमात्य-गण, सदस्यगण और शास्त्रज्ञ विद्वान भी आ पहुँचे। ये लोग ऐसे विशिष्ट व्यक्ति थे जो सदा राजाओं, शासकों एवं नायकों की कल्याणकारी बातें ही बोलते थे। यहाँ इनकी संख्या (८०००) आठ हजार थी। उनके सामने दशरथ बोले।

साठ हजार (६०,०००) वर्ष राज्य करने के बाद मेरा वार्धक्य (बुढ़ापा) आ गया। जैसे मेरे पूर्वज काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि को छोड़कर पुत्र को राज्य देकर वन

में तपस्या करते थे वैसे मैं भी करना चाहता हूँ । क्योंकि मनुष्य जीवन की अन्तिम गरिमा **मोक्ष-प्राप्ति** ही है । मेरा मन वहीं चला गया है । मैं बहुत दिनों तक अपुत्र रहने की चिन्ता करता रहा । जिसे राम ने अपने जन्म से चिन्ता दूर कर दी ।

उदात्त भावना—श्री राम तो साक्षात्-पुरुषोत्तम के अवतार हैं, और सीता लक्ष्मी-रूपा हैं । जिनके साथ विवाह से राम **''लक्ष्मी पति''** हो गये । अब उन्हें मैं **''भू-देवी-पति''** के रूप में देखना चाहता हूँ । क्योंकि भगवान् विष्णु को **'श्री देवी'** और **'भू-देवी'** दो पत्नियाँ हैं । 'राम' को एक पत्नी तो **'श्री देवी'** के रूप में आ ही गयी और **'भू देवी'** अपने योग्य पति राम को प्राप्त करें, यही मेरी बलवती इच्छा है । **(यहाँ कवि की कल्पना–'रुपक' अलंकार का चमत्कार देखने योग्य है ।)**

यह सुनकर सभी मन्त्रीगण प्रसन्न हुए और दशरथ के वियोग को भूलकर लोककल्याण और राष्ट्र कल्याण के लिए राम को राज्य पर बैठाना सर्वथा सुन्दर श्रेष्ठ विचार हैं, ऐसा उन लोगों ने कहा तब वसिष्ठ बोले । राम को पुत्र रूप में पाकर आप महिमाशाली हैं । आपका यह विचार लोककल्याणकारी श्रेय और प्रेययदायक है । अर्थात् श्रेष्ठ एवं प्रिय है । राम साक्षात् 'परात्पर-परमेश्वर, हैं । जिन कामों को ब्रह्मा, विष्णु और महेश मिलकर नहीं कर सकते उन कामों को अकेले राम करेंगे । **'श्रीदेवी'** और **'भू देवी'** तो राम को पति तो मानती ही हैं । इसलिए यह श्रेष्ठ विचार का कार्यान्वियन शीघ्र ही करना चाहिए ।

वसिष्ठ आदि की बातों को सुनकर राजा दशरथ को राम जन्म समय में शिव धनुष भंग की घटना से और परशुराम के अहंकार चूर होने से जितना हर्ष हुआ था उससे भी अधिक हर्ष और संतोष हुआ । दशरथ पुनः-पुनः वसिष्ठ को प्रणाम कर बोले कि आपके उपदेश से ही मेरे पूर्वज अनेकानेक यज्ञ करके बड़े यशस्वी और मोक्ष के अधिकारी हुए । महामंत्री सुमन्त ने हाथ जोड़कर कहा कि शीघ्र वैदिक विधान पूवर्क नीलमणि-वर्ण वाले श्रेष्ठ ज्ञानी पुत्र को **राज्य पर बैठायें । तब तपस्या करने के लिए वन-गमन पर विचार कीजियेगा । अभी वन-गमन की चर्चा न उचित है और न सामयिक है । राजा ने इस बात को स्वीकार किया ।**

इसके बाद सुमन्त राम के समीप जाकर नत-मस्तक होकर राजा का संदेश सुनाया । पिता की आज्ञा से राम शीघ्र ही रथ पर चढ़कर पिता के पास चले । राम के चलने के समय अयोध्या के मार्ग अत्यन्त सुशोभित हो गये । तथा 'रामचन्द्र' की शोभा देखने के लिए अयोध्या की नर-नारियाँ अपने घर से निकल पड़ीं । वे ऐसी दौड़ीं जैसे गायें अपने बछड़े को देखकर दौड़ती हैं । 'रामचन्द्र ने पिता के पास पहुँच कर पहले गुरु वसिष्ठ को प्रणाम करके पिता को प्रणाम किया ।

अशेष वात्सल्य पूर्ण दशरथ ने रामचन्द्र को कहा। मेरा बुढ़ापा आ गया, शरीर जर्जर हो गया। मेरी सहायता करो। मेरे पूर्वज काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह को छोड़कर अन्तिम समय में पुत्र को राज्य समर्पित कर वन चले गये। मैंने शुभ कर्मों के करते हुए बड़ी कठिनता से यज्ञ किया और उसके प्रभाव से तुम्हारे समान पुत्र प्राप्त हुआ। अब जीवन-यात्रा के अन्तिम समय में मेरी बलवती इच्छा है कि राज्य-शासन का कठिन भार तुम्हारे ऊपर देकर मैं मोक्षमार्ग में अग्रसर होऊँ।

प्रायः तुमको ज्ञात होगा कि मेरे कुल श्रेष्ठ राजा भगीरथ ने कठिन तपस्या करके अपने कुल देवता श्री रंगनाथ के चरणों से गंगा को पृथ्वी पर लाया था। जिस गंगा ने सागर के पुत्रों को वैकुण्ठ पहुँचा दिया। जहाँ से उनका पुनरागमन नहीं हुआ।

विशेष–वाल्मीकि व्यास आदि के द्वारा पृथ्वी पर गंगा के लाने की कथा भिन्न है। यहाँ तमिल-क्षेत्र में **भगवान् रंगनाथ** की महिमा के प्रति कवि की अखण्ड निष्ठा और आस्था है। जो अपनी मातृ-भूमि के लिए स्वाभाविक भी है।

यह सुनकर राम ने कहा। पिता की आज्ञा का पालन करना पुत्र का पहला कर्त्तव्य है। साथ ही चक्रवर्ती सम्राट् की आज्ञा भी तो शिरोधार्य ही है। इस तरह की आज्ञा लेकर 'रामचन्द्र' अपने निवास स्थान चले गये। दशरथ ने राज्य में इसकी घोषणा करा दी। इस समाचार को सुनकर राजागण, प्रजागण तथा नर-नारियाँ सभी अत्यन्त हर्षित हुए।

अयोध्या की हजारों नारियाँ आनन्द में इतना विभोर हो गयीं कि उनके दोनों स्तनों से कञ्चुकी (चोली) गिर गयी, केश पाश-विकीर्ण हो गये (छितरा गये) और वे निर्वस्त्र हो गयीं। (पद्य ८७)।

'रामचन्द्र' ने माता कौशल्या को सूचना दी। माता ने ब्राह्मणों को स्वर्ण, रत्न और भूमि दान देकर केले के पत्ते पर भोजन कराया और मन्दिर जाकर भगवान् की विधिवत् पूजा करके कल्याण के लिए प्रार्थना की।

"मनदरे शूऌचूचिप् पडलम (मन्थरा षड्यन्त्र पटल"

इस पटल में राम के राज्याभिषेक की पूर्व व्यवस्था तथा मन्थरा का कैकेयी को अपने षड्यंत्र में लाने की कथा प्रमुख है। संपूर्ण अयोध्यावासी राम राज्याभिषेक की पूर्व व्यवस्था में संलग्न हो गये। सम्राट् दशरथ विद्वानों और ज्योतिष विद्या-विशारदों से राज्याभिषेक के लिए शुभ दिन, शुभ नक्षत्र और शुभ समय की जिज्ञासा की। उन लोगों ने विचार कर कहा, कल ही शुभ दिन है। इसी बीच महर्षि वसिष्ठ ने आकर इसी दिन कां समर्थन किया। और कहा कि कल ही मङ्गलमय दिन है। आप शीघ्र

वैदिक-विधान सम्पन्न करें और राम को उपदेश दें।

उत्कृष्ट वर्णन—यह कहकर वसिष्ठ राम के पास पहुँचे। राम ने उन्हें प्रणाम कर पवित्र आसन पर बैठाया। वसिष्ठ ने राम को कल्याणकारी उपदेश दिया। उन्होंने कहा ब्रह्मा, विष्णु और शिव से भी अधिक पञ्च महाभूत है। और उनमें भी ब्राह्मण श्रेष्ठ और पूज्य हैं। उनके प्रति सम्मान दिखाना चाहिए। ब्राह्मण के कृपा-पात्र होकर असंख्य शासक गण कल्याण-भाजन हुए। हमेशा सभी जगह दया, क्षमा और कोमलता का प्रदर्शन करें। इसके बिना किसी ने कल्याण प्राप्त नहीं किया। विषय-भोग-वासना के भोगों में लगे हुए इन्द्रियों को वश में रखे यदि राजा प्रिय भाषण, दान शीलता, विवेक और नीति मार्ग को नहीं छोड़ता है तभी उसका कल्याण हो सकता है।

इस तरह राम को अनेक प्रकार के उपदेश देकर राम के साथ **''सहस्त्र शीर्षा-पुरुष-भगवान्—श्री रगंनाथ''** के मन्दिर गये। वहाँ वेद मन्त्रों से पवित्र किये हुए तीर्थ जल से स्नान कर राम कुश के आसन पर बैठे। वसिष्ठ ने राजा को सूचित किया कि वैदिकी प्रक्रिया पूर्ण हो गयी। दशरथ ने सम्पूर्ण नगर को सुसज्जित करने का आदेश दिया। सम्पूर्ण नगर आनन्दमग्न था। सभी लोग हर्ष में अपने आप को भूल चुके थे। सभी जगह तोरण द्वार ध्वजा आदि से अयोध्या सुसज्जित हो गयी थी।

इधर राक्षसी के समान कुब्जा मन्थरा उपस्थित हो गयी। कहा जाता है कि बचपन में ''रामचन्द्र'' **मिट्टी की गोलियाँ** बनाकर खेलते थे। एक दिन संयोग वश खेलने के समय एक गोली मन्थरा को लग गयी थी। उसी दिन से मन्थरा राम पर बिगड़ी हुई थी। यह भी एक कारण राम के विरोध में कैकेयी को उभाड़ने का था।

विशेष :– ''मिट्टी की गोली से खेलने और फेकने'' की कथा वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं है। लेकिन तमिल क्षेत्र के 'कम्बन्'' सहित अन्य वैष्णव भी ऐसा कहते हैं।

'कैकेयी' अपने महल में सुन्दर शय्या पर बैठी हुई थी। कुब्जा—मन्थरा वहाँ आकर विषवाण के समान कैकेयी को सम्बोधित कर बोली। हे रानी, क्या तुम जानती हो कौशल्या की कपट पूर्ण कामना-इच्छा सफल हो गयी। कल प्रातःकाल उसके बेटे 'रामचन्द्र'' का राज्याभिषेक होगा। तुम दासी हो जाओगी, और तुम्हारा पुत्र भरत 'दास' की तरह सिंहासन के पास खड़ा रहेगा।

मन्थरा की बात सुनकर कैकेयी ने उसकी भर्त्सना की और कहा कि राम तो मेरे प्राण के समान प्रिय हैं और यह समाचार तो बड़ा ही शुभ मङ्गल-कारी है। कैकेयी ने इस समाचार के लिए मन्थरा को सोने का आभूषण दिया। उस उपहार को फेंककर क्रोध से कांपती हुई और चीत्कार करती हुई मन्थरा बोली। कैकेयी, तुम मूर्ख हो, पगली हो, तुम्हारी सौतिन कौशल्या का बेटा राजा होगा, तुम दासी होगी और तुम्हारा बेटा

भरत दास होगा। मैं दासी की दासी होकर यहाँ रहने को तैयार नहीं हूँ। कौशल्या तो हमेशा सावधान होकर अपना काम बनाती रही। उसका पुत्र चक्रवर्ती सम्राट् होगा और तुम्हारा पुत्र दास के रूप में रहेगा। मैं तो यह मानती हूँ कि तुम्हारा पुत्र भरत मरे हुए की तरह दास बनकर रहेगा। तुम्हारे गर्भ से उत्पन्न होने के कारण भरत का जन्म व्यर्थ होगा।

यह सुनकर कैकेयी फिर बोली। सूर्य कुल में उत्पन्न राजागण वचन त्याग से पहले प्राण-त्याग स्वीकार करते हैं। मयूर पक्षी के कुल की तरह सूर्य कुल की व्यवस्था वैसी ही है। मयूर पक्षी को अनेक सन्तान होने पर भी प्रथम सन्तान ही अपनी पूँछ को फैलाती है। मेरे पिता 'केकय' के वंश में भी यही परम्परा है। अतएव राम का राज्याभिषेक सर्वथा उचित है।

विशेष :–'केकी' शब्द का अर्थ मयूर है। सम्भवतः इसी 'केक' शब्द से केकय शब्द बना। फलतः केकी–मयूर-कुल की तरह केकय वंश में भी ज्येष्ठ को ही राज्य देने की प्रक्रिया है। उसी तरह सूर्य कुल में भी राजा दशरथ ने राम को राज्य देने का निश्चय उचित ही किया है। (पद्य १६१)

यहाँ के उक्त वर्णन से कवि **"कम्बन् ने कैकेयी को दोष मुक्त दिखाया है** परन्तु विधि से प्रेरित मन्थरा पुनः ऐसा विष वमन करती है, जिससे कैकेयी का विचार और मन बदल जाता है।

यह सुनकर पुनः मन्थरा ने कहा मैं तुम्हारा हित चाहने वाली तुम्हारी नैहर से आई हुई दासी हूँ। तुम्हारे भविष्य के विषय में मैं जो अच्छा समझती हूँ। वही बोलती हूँ और बोलूँगी। तुम्हारी सौतिन राजमाता काहायगी, उसका पुत्र चक्रवर्ती काहायगा और तुम दासी और तुम्हारा पुत्र सेवक बनेगा। यह निश्चित है। यदि कुल का श्रेष्ठ ही राज्य का अधिकारी हो तो दशरथ के जीवित रहते हुए राम ज्येष्ठ नहीं हैं। और उनका राज्याभिषेक करना उचित नहीं है। **(यहाँ यह कल्पना "कम्बन्" की नवीन शैली में है।)"**

इस तरह मन्थरा ने कैकेयी के स्वच्छ मन और उच्च विचार को भी सहज में बदल दिया। वह बोली राजा के पास तुम्हारे दो वरदान सुरक्षित हैं जिन्हें वे पहले दे चुके हैं। उन दोनों वरदानों को तुम मांग लो। कैकेयी बोली तुम ठीक ही मेरी हितकारिणी विश्वसनीय सखी के समान दासी हो। तुम्हारे प्रति मेरा मन आकृष्ट है।

तब विषधर सर्पिणी की तरह मन्थरा ने कहा। पहला तुम भरत के लिए राज्य-प्रदान माँगो। और **दूसरा** राम सीता के साथ जटा वल्कल धारण कर चौदह वर्षों के लिए वन में चले जायें, यह माँगों। कैकेयी ने कहा, ऐसा ही करूँगी। यह कहकर कैकेयी कोप-भवन में चली गयी और मन्थरा खुशी से अपने आवास पर लौट गयी।

"कैकेयी शूल् वितैप् पडलम (कैकेयी दुष्कर्म पटल)

इस पटल में मन्थरा से प्रेरिता कैकेयी के कुकृत्यों का वर्णन मात्र है। जो **अत्यन्त मर्मान्तक पीड़ादायक है।**

मध्य रात्रि में महाराज दशरथ कैकेयी के प्रासाद-प्रकोष्ठ में पहुँचे। उन्होंने देखा कि उत्तम शय्या पर सोनेवाली सुन्दरी कोमलाङ्गी कैकेयी पृथ्वी पर सो रही है। इस स्थिति में अपनी प्राण-प्रिया के शरीर पर हाथ देना ही चाहते थे कि लम्बी सांस लेती हुई कैकेयी ने दशरथ के हाथों को झटक दिया–हटा दिया। दशरथ डर गये और गम्भीर स्थिति को देखकर बोले। सातों लोकों में कौन ऐसा है जो तुम्हें कष्ट दे सकता है। वह तुरत मेरे द्वारा मारा जायगा। नारी सुलभ माया दिखाती हुई आँसू भरी-आँखों से पूर्ण होकर कैकेयी बोली। यदि आप की कृपा है तो पहले से दिये हुए मेरे दो वरदान मुझे दें। राजा हँसकर बोले, तुम उठो, प्रसन्न हो जाओ मैं **'राम' की शपथ** लेकर कहता हूँ जो तुम चाहोगी–चाहती हो वही मैं करुँगा। कैकेयी कठोर होकर बोली अभी दोनों वरदान देने हैं। दशरथ ने कहा कहो, क्या इच्छा है। अभी दूँगा। इसके लिए क्या उत्कण्ठा और जल्दवाजी है।

कैकेयी बिना किसी तरह के घबराहट की बोली–(१) मेरे पुत्र भरत को राज्य दीजिए और (२) राम को चौदह (१४) वर्षों के लिए वनवास दीजिए। सर्पिणी के काटने के विष के समान कैकेयी के वचन रूपी विष से वेहोश होकर राजा दशरथ पृथ्वी पर गिर पड़े। उनके सभी इन्द्रिय निष्क्रिय हो गये जीभ सूख गयी और निश्चल हो गयी। कुछ देर के बाद होश आने पर दशरथ ने कहा, मेरी शपथ है, इसका कारण बताओ।

कठोर-रूपा कैकेयी निर्भय होकर बोली। पहले से प्रतिज्ञा की हुई दोनों वरदान दें, अन्यथा आप को अपयश-सागर में गिराकर मैं अपना प्राण त्याग दूँगी। राजा पुनः सान्त्वना देते हुए बोले। तुम्हारा पुत्र भरत राम के आगे राज्य स्वीकार नहीं करेगा। यदि करेगा तो **"मैंने दिया"**। किन्तु 'राम-वन गमन' का दूसरा वरदान छोड़कर कोई अन्य वर माँगो। यदि मेरे प्राण तुमको प्रिय हैं तो दूसरे वर को छोड़ दो, प्रसन्न होकर यह एक वरदान मुझे ही दो, यही मेरी याचना है।

कैकेयी बोली। वचन देकर नहीं दोगे तो सत्य की रक्षा कैसे होगी ? यहाँ बहुत लम्बे कथोपकथन के बाद राजा ने निश्चय किया कि ये नहीं मानेगी और बोले। ठीक है, मैंने दोनों वरदान दिये। राम वन जाकर तुम्हारी आज्ञा का पालन करेगा और मैं अपने प्राणों को त्याग कर स्वर्ग में सुख से रहूँगा। यह कहकर राजा मूर्छित हो गये।

इधर अयोध्या में कल प्रातःकाल राम राज्याभिषेक की सारी पूर्व-व्यवस्था हो चुकी

थी। सभी नगरबासी सबेरे ब्रह्ममुहूर्त में उठकर दैनिक कार्यों से निवृत हो गये। मनुष्यों का सागर-समूह वहाँ उमड़ पड़ा। सभी अपलक नेत्र से दशरथ की प्रतीक्षा में राजभवन की ओर देख रहे थे। ''रामचन्द्र'' भी सबेरे उठकर सभी दैनिक कृत्यों को करके विधिवत् पूजा आदि सम्पन्न कर तैयार थे।

सभी राजागण अभिषेक मण्डप पर उपस्थित हो गये। ऋषि, बेदज्ञ ब्राह्मण आये और राज्याभिषेक के लिए आवश्यक मंङ्गल सामग्री मुकुट के साथ गुरु वसिष्ठ वहाँ उपस्थित हो गये। गणितज्ञ लोगों ने कहा अभिषेक का मुहूर्त आ गया। इधर **श्री ''राम''** अपने कुलदेव **श्री रगंनाथ** की पूजा करके अपनी विमाता कैकेयी के घर की ओर चले। सभी मण्डप पर स्थित ऋषियों और राजाओं ने कहा पहले कैकेयी के घर पर जाना राम का व्यवहार उचित है। राम वहाँ पहुँच कर उस मर्मान्तिक दृश्य को देखते ही स्तब्ध हो गये जहाँ राजा भूमि पर मूर्छित पड़े थे।

कैकेयी ने बड़ी दृढ़ता से राजा के दोनों वरदानों की चर्चा की। राम प्रसन्न होकर बोले, यदि चक्रवर्ती सम्राट् की नहीं भी आज्ञा होती तो भी क्या मैं आप के आदेश को कभी छोड़ सकता था ? भाई का राज्य तो मेरा ही है। यह कहकर राम ने कैकेयी की आज्ञा और आर्शीवाद लेकर वहाँ से प्रस्थान किया। अयोध्या में हाहाकार मच गया। अयोध्या की शोक पूर्ण दशा का वर्णन करना सम्भव नहीं है। केवल आप ज्ञानी एवं विद्वान पाठक-गण वहाँ की दशा की कल्पना तथा भावना करें।

''नहर्नीङ्गु पडलय् (नगर निष्क्रमण पटलम्''

इस पटल में श्री ''रामचन्द्र की सीता और लक्ष्मण के साथ वन प्रस्थान वर्णन और राजा के प्राण त्याग का वर्णन प्रमुख है।

श्री ''रामचन्द्र'' मूर्छित पिता को प्रणाम करके और कैकेयी को प्रणाम करके माता कौशल्या के घर को प्रणाम करके माता कौशल्या के पास आये। वहाँ उपस्थित सभी देव-देवियाँ शोक में डूब गयीं। माता कौशल्या कुण्डल, किरीट आदि से रहित वन वेश-धारी राम को देखकर आश्चर्य से पूछा कि कैसे यह दशा है ? राम ने कहा कि आप का सर्वगुण सम्पन्न पुत्र मेरा अनुज भरत राजा होगा यह माहाराज की आज्ञा है यह सुनकर कौशल्या बोली भरत तो तुम से भी तीन गुणा अधिक गुण-वान, सुयोग्य एवं राज पद के योग्य है। यद्यपि ज्येष्ठ को छोड़कर कनिष्ठ को राज्य देना सूर्य वंश की परम्परा के प्रतिकूल है। फिर भी राजा की आज्ञा शिरोधार्य करके तुम भी भरत को राज्य देने की सम्मति देकर भरत के साथ दीर्घजीवी बनो। यह सुनकर राम प्रसन्न हो गये। इसके बाद राम ने तपस्वियों के साथ चौदह वर्षों तक वन में रहने का दूसरा समाचार सुनाया।

अत्यन्त तीखा और कठोर इस वचन को सुनकर कौशल्या माथा पीटने लगी, पागल की तरह हो गयी। विलाप करती हुई माता को अपने दोनों हाथों से उठाकर सान्त्वना देते हुए बोले। क्या सत्यबादी राजा को आप असत्य बादी-बना देंगी। क्षिति–पृथ्वी, जल,--पावक–अग्नि, गगन–आकाश, समीर–वायु, ये तत्व विलीन हो जायँ, विलुप्त हो जायँ लेकिन इस **दास "रामचन्द्र"** से राजा की आज्ञा कभी उपेक्षित नहीं हो सकती तमिल **भाषा में "अहम्–हलस्य अडियेन्"** इसका अर्थ होता है "दासोऽह्म" मैं दास हूँ। राम फिर बोले आप धैर्य धारण करें। मेरे वियोग में पिताजी प्राण त्याग करेंगे। उनको धैर्य और साहस करके बचायें। मुझको महर्षि विश्वामित्र के प्रसाद से विभिन्न प्रकार के अस्त्र-शस्त्र और विविध विद्यायों तथा अनेक उपलब्धियाँ प्राप्त हैं। एक बार फिर उनकी सेवा करना बड़ी लाभदायक होगी। इसके बाद माता "सुमित्रा" के पास जाकर सभी घटनाओं को सुनाकर पिता को सान्त्वना देने की प्रार्थना की। इधर कौशल्या कैकेयी के भवन जाकर राजा की दशा को देखती हुई बेहोश को गयी। फिर होश में आकर बोलीं, हे राजन यह क्या है ? बोलो हे पुत्र, आओ और चक्रवर्ती की दशा देखो।

इधर अभिषेक-मण्डप पर बैठे हुए ऋषि गणों ने वसिष्ठ से निवदेन किया कि आप राजभवन जाकर स्थिति का आकलन करें और हमें सूचित करें। वसिष्ठ राजभवन जाकर वहाँ की दशा देखकर विस्मित हो गये। उस तपोधन ऋषि ने भी यह नहीं समझा कि यह बात कैसे हुई ? कुछ देर के बाद ज्ञात हुआ कि क्षीर-सागर से निकले हुए विष के समान कैकेयी के वचन-विष के प्रभाव से राजा की यह दशा हो गयी है। राजा तो बीच-बीच में चेतना प्राप्त कर "राम-राम' यह बोलते-बोलते बेहोश हो जाते थे।

तब मुनि वसिष्ठ क्रोध युक्त कर्कशा कैकेयी से कहा। हे कैकेयी, तुम अपने पति को प्राण-दान करो। दूसरे प्रजागण को भी अभय दान दो। कैकेयी ने उत्तर दिया यदि राजा सत्य पालन से विमुख होंगे तो मैं प्राण-त्याग दूँगी यह मेरा दृढ़ निश्चय है। पुनः वसिष्ठ बोले क्या तुम नहीं देख रही हो कि यदि राजा मर जायेंगे तो संसार इसे सहन नहीं करेगा। क्या कोई पत्नी विधवा होना चाहती है ? क्या तुम नारी नहीं, माया-पिशाचनी है। ये बातें सुनकर भी कैकेयी जरा भी नहीं पिघली।

अतिविशेष घटना :– (क) इस बीच राजा को कुछ होश आये वे वसिष्ठ से बोले। यह मेरी पत्नी नहीं है इसे मैंने छोड़ दिया इसका पुत्र भरत मेरा पुत्र नहीं है। ऐसा मैं मानता हूँ इसलिए मेरा दाह-संस्कार–श्राद्ध आदि क्रिया कर्मों के अधिकार से भरत वंचित हो गया।

अतिविशेष :– (ख) यह कथा किसी भी संस्कृत **रामायण** या **राम काव्य** में नहीं

देखी गयी है और न किसी अन्य भारतीय भाषा के राम काव्यों में। **''कवि कम्बन्''** को इस कथा का क्या मूल है, वे ही जानें। और विद्वान् लोग इसका अनुसन्धान करें। **''कम्ब रामायण''** के आज तक के सभी व्याख्याता इस अंश पर मौन रहे हैं।

इसके बाद लगभग चेतना-शून्य कौशल्या थी, तथापि राजा से बोली महाराज, आप सत्य पालन से विमुख होंगे और पुत्र स्नेह से सत्य की रक्षा में कुछ भी शिथिलता करेंगे तो संसार के श्रेष्ठ जन उसको उचित नहीं मानेंगे। इसलिए आपकी आज्ञा का सभी तरह से पालन करना हम लोगों का अन्तिम और परम कर्त्तव्य है।

इसके बाद दशरथ बहुत पहले अपने वाण द्वारा श्रवन कुमार की मृत्यु कथा विस्तार पूर्वक सुनायी और श्रवण कुमार के पिता के द्वारा वियोग में मरने की शाप-कथा भी सुनाई।

वसिष्ठ ने सभा-मण्डप पर आकर सूचित किया कि सर्व-गुण सम्पन्न भरत राज्य सिंहासन प्राप्त करेंगे, और विशाल-बाहु-राम चौदह वर्ष पर्यन्त वन बास के लिए प्रस्थान करेंगे। इस प्रसंग में कैकेयी के सभी कुकृत्यों का विवरण वसिष्ठ ने विस्तार पूर्वक दिया। यह सुनकर सभी राजागणा, अयोध्यावासी और ऋषि-समूह हतप्रभ हो गये। अयोध्या-वासी शोक में निमग्न होकर चित्र की तरह निष्प्राण जैसे हो गये।

इस घटना को सुनते ही प्रलय काल की अग्नि के **समान 'लक्ष्मण; क्रोध** से प्रज्चलित हो गये और उन्मत्त-पागल-की तरह अनेक प्रकार के प्रलाप करने लगे। **''रामचन्द्र'** ने उन्हें अनेक प्रकार के नीति पूर्ण वचनों से सान्त्वना दी। सहसा वहाँ विलाप करती हुई अत्यन्त विह्वला सुमित्रा भी पहुँच गयी। रामचन्द्र ने उन्हें भी समझाया और सान्त्वाना दी। लक्ष्मण भी राम के साथ वन जाने को तैयार हो गये। सीता इस दारुण-घटना को सुनकर पागल की तरह वहाँ.आ गयी और राम के साथ वन जाने का आग्रह करने लगी। राम ने वनवास के कष्टों का विवरण शान्तिपूर्ण वचनों से देते हुए समझाया, किन्तु सीता ने अपने अकाट्य तर्क द्वारा राम की बातों का खण्डन कर दिया। अन्ततः राम ने सीता को भी वन चलने की अनुमति दे दी।

इस तरह वल्कल धारण कर सीता लक्ष्मण के साथ ''रामचन्द्र'' ने वहाँ उपस्थित कुल गुरु वसिष्ठ को और माता को प्रणाम करके सुमन्त द्वारा लाये गये रथ पर बैठकर वन की ओर प्रस्थान किया। जहाँ विलखते हुए अयोध्या वासियों को संतोष प्रदान किया। यहाँ के कारुणिक दृश्यों का अतिसंक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

''तैलमाट्ट् पडलम् (तैलनिमज्जन पटल)

इस पटल में ''रामचन्द्र'' के वन प्रवेश का वर्णन सुमन्त के अयोध्या लौटने का

वर्णन, राम के वियोग में दशरथ का प्राण त्याग-वर्णन, वसिष्ठ की आज्ञा से भारत के अयोध्या आने का वर्णन तथा दशरथ के 'शव' का तैलपात्र में रखने का वर्णन प्रमुख है जिनका अति संक्षिप्त वर्णन यहाँ दिया जा रहा है।

पिता की आज्ञा से राम सीता और लक्ष्मण के साथ वन चले गये। अयोध्या में केवल दशरथ की पत्नियाँ ही रह गयीं और निर्जीव चित्र की तरह अयोध्या साथ नहीं गयी, किन्तु शोकाकुल-पागल की तरह वस्त्र और आभरणों के गिर जाने के ज्ञान से भी रहित अयोध्या की आबालवृद्ध नर-नारियाँ राम के पीछे पीछे चलीं। उस दिन सूर्य भी शीघ्र अस्त हो गया।

विशेष :– यहाँ ''**कम्बन्**'' कवि की कल्पना है कि सूर्य-कुल-भूषण ''रामचन्द्र'' के वन गमन का करुण दृश्य सूर्य नहीं देख सके।

अयोध्या नगर की नारियों की आँखों से मधुमय–आँसू निकलने लगे अर्थात् उन स्त्रियों के लोचन से निकले हुए आँसू मधुमिश्रित जल के समान थे। यहाँ पर कवि ने तमिल-भाषा का ''**कणणीएब**'' शब्द का व्यवहार किया है। इस शब्द का ''**आँसू**'' और ''**मधु**'' दोनों अर्थ होते हैं। **इसलिए मधुमय आँसू–अश्रुपात का यहाँ वर्णन बड़ा ही आकर्षक है।**

इस तरह भूख प्यास को भूलकर सभी तमसा नदी के तटपर आ गये। वहाँ कुछ बालू पर, कुछ पत्थर के खण्ड पर और कुछ हरी-घास पर लेट गये और सो गये। यहाँ सोयी हुई मृग नयनी नारियों के लम्बे-लम्बे केशों से कस्तूरी, कुमकुम आदि की सुगन्धियाँ सब जगह फैल गयीं। वे नारियाँ अपने स्वच्छ वस्त्रों को फैलाकर सो गयीं। **(यहाँ करुण-रस में शृंगार-रस का मिश्रण अद्भुत है)।**

जब सभी सोये हुए थे, तब ''रामचन्द्र'' ने सारथी के रूप में आये हुए प्रधान मन्त्री सुमन्त्र को बुला कर कहा। आप की कृपा तो मुझ पर सब दिनों से है। इसलिए कृपया मेरी प्रार्थना को सुनकर आप रथ को लेकर अयोध्या लौट जायँ। यह मेरा कार्य कर दें। क्योंकि अयोध्या से आये हुए प्रजा-जन को उठने के बाद मैं उन्हें लौटा नहीं सकूँगा। उनके लौटने के बिना मेरा आगे जाना सम्भव नहीं है। आप के लौटने के बाद मैं सीता और लक्ष्मण के साथ शीघ्र ही आगे चला जाऊँगा।

विशेष :–'वाल्मीकि रामायण' में अयोध्या-वासियों को सोये हुए छोड़कर सुमन्त के रथ द्वारा गंगा तट पर्यन्त राम के पहुँचने की कथा है। ''राम चरित मानस'' में तुलसी दास ने भी ऐसा ही वर्णन किया है। यहाँ 'कम्बन्'' ने नवीन रूप में वर्णन किया है। रामचन्द्र और सुमन्त के बीच तर्क-बितर्क के बाद सुमन्त 'रामचन्द्र'' की

भावना के अनुकूल शोक संतप्त होते हुए भी अयोध्या लौट गये । "रामचन्द्र" भी अयोध्या-वासियों को सोये हुए छोड़कर आगे निकल गये सुमन्त ने मन में सोचा कि मनुष्य अपने कर्म-बन्धन में बँधा हुआ है । क्योंकि वैसी कोमलाङ्गी सीता और राम लक्ष्मण को पुनः-पुनः पीछे-पीछे घूमकर देखते हुए अयोध्या आ गये । सीता-राम वन-गमन का यह दारुण दृश्य अत्यन्त ही कठिन था, जहाँ पहुँच कर कवि अत्यन्त भावुक हो गया है ।

सुमन्त लौट कर विशाल अयोध्या नगरी में प्रवेश कर गये । "रामचन्द्र सुमन्त के साथ लौट गये" इस आशा भरी भावना से उत्कण्ठित अयोध्या वासी देखने लगे और पूछने लगे । सुमन्त ने कहा मेरे अशेष निवेदन को भी मर्यादापालक, सत्यधर्म–रक्षक "रामचन्द्र" ने मुझे समझाकर लौटा दिया । इसके बाद वसिष्ठ सुमन्त के साथ दशरथ के समीप आये । उन दोनों को देखते हुए "राम फिर आयेंगे" ऐसी भावना करते हुए दशरथ ने उठकर प्रसन्नता के साथ पूछा, "राम कहाँ है" ?

दशरथ ने उनकी मुखाकृति देखकर ही समझ गये कि राम नहीं आए और पुनः मूर्छित हो गये । क्योंकि **"राम नहीं लौटे" यह कठोर वचन कोई भी कहने के लिए साहस नहीं कर सके ।** पुनः मूर्छा छूटने पर राजा बोले । राम नजदीक में है या दूर में हैं । सुमत्रा साहस कर बोले **"मैथिली और लक्ष्मण के साथ राम सघन वन में चले गये ।** यह सुनते ही दशरथ के प्राणपखेरू उड़ गये । (दशरथ मर गये)

राजा के मरण-समाचार को सुनकर सभी स्त्रियाँ, पार्षद एवं सभी अन्तः-पुर-वासी नर-नारी एकत्र हो गये । संचार रहित दशरथ के मृत-शरीर को देखकर कौशल्या मूर्छित हो गयी । पुनः चेतना प्राप्त कर कौशल्या बोली । तुमने तो सैकड़ों यज्ञ करके यहाँ सब सुखों को प्राप्त किया, सब कुछ दिया । क्या यही यज्ञ का फल है ? इस प्रकार सुमित्रा भी आकर विलाप करने लगी ।

विशेष :– इस रामायण में राजा के मृत शरीर के पास **"कैकैयी" की कोई चर्चा नहीं है ।**

दशरथ को साठ हजार (६०,०००) स्त्रियाँ थीं । वे सभी पति के साथ ही चिता में प्रवेश करना चाहती थीं । वसिष्ठ ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया । **(यहाँ यह कथा अत्यन्त नवीन है । ऐसी चर्चा किसी भी भाषा के राम काव्यों में नहीं है ।)** स्त्रियों के विलाप के बीच में, वसिष्ठ ने कहा, तब तक तेल के पात्र में राजा का शव सुरक्षित रखा जाय जब तक अपने नाना के घर–केकय देश-से भरत–शत्रुघ्न नहीं आ जाते हैं ।

नूतन कथा :–"कम्बन् कवि" के अनुसार दशरथ को साठ हजार पत्नियाँ थीं वे

सभी प्राण देने को तैयार थीं । किन्तु वसिष्ठ ने उन्हें रोकते हुए कहा कि जब तक राजा का दाह कर्म नहीं हो जाता तब तक आपलोग प्राण त्याग नहीं करें । राजा के दाह कार्म के समय आप लोग चिता में प्रवेश कर जांय ।

वसिष्ठ ने कौशल्या, सुमित्रा को अपने भवन में जाने को कहा । इस तरह वसिष्ठ ने दशरथ के मृत शरीर को एक तेल-पात्र में सुरक्षित रखबाकर सभी सेवकों को, सदस्यों को उनके पास रहने का आदेश दिया । और वसिष्ठ के आदेशानुसार सभी नारियाँ अपने घर लौट गयीं । भरत को लाने के लिए दूत भेजे गये । दूत, 'केकय' नगर पहुँच कर भरत को तुरत अयोध्या चलने के आदेश को सुनाया । भरत ने पूछा क्या काम है । दूतों ने कहा हमलोग कुछ नहीं जानते हैं ।

भरत शीघ्र ही अयोध्या पहुँचते ही 'रामचन्द्र'' आदि के वन गमन और राजा के देहावसान का समाचार सुना । यह सुनकर भरत **'आत्महत्या'** करने के लिए तैयार हो गये । वसिष्ठ ने उससे भरत का निवारण किया और कहा कि ''आत्महत्या'' महान पाप है । ऐसा मत करो, धैर्य धारण करके आगे का कर्म करो । भरत मान गये ।

विशेष :-''आत्महत्या'' के लिए भरत को तैयार होने का वर्णन किसी भी रामायण में नहीं देखा गया है । इसलिए शोकोद्‌गार के पाराबार का विशद वर्णन भी सम्भव नहीं है । यह भी ''कम्बन्'' की नूतन कथा-शैली है ?

''गंग गैप पऽलम् (गंगा पटल)

इस पटल में राम के **गंगा पार** करने की कथा प्रमुख है ।

वन गमन के समय अति विशेष सौन्दर्य युक्त श्यामल शरीर वाले राम अपने तेज से सूर्य को तिरस्कृत कर रहे थे । क्योंकि राम की शीतल शान्ति-दायक-छाया में सूर्य की किरणों का तेज विलीन हो गया । सीता की कमर इतनी पतली थी जिससे वह है या नहीं यह मिथ्या माया की तरह प्रतीत होता है । **(कम्बन् की यह चतुरता अनेक वर्णनों में देखी जाती है, कि शृंगार रस और ज्ञान तत्व को एकत्र कर देते हैं ।**

राम भारत के उत्तर भाग कौशल देश से दक्षिण–चित्रकूट की ओर जा रहे थे। जहाँ का सौन्दर्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था । ''रामचन्द्र'' के साथ सुगन्धित पराग पूर्ण-मिश्रित विशाल केश-वाली सीता, मूंगे की लालिमा के समान अधर-ओष्ठ वाले-राम के साथ मेघ माला में छिटकती हुई विजली के समान दीख रही थी, जिनका ललाट–मस्तक–अर्ध चन्द्राकार के समान था ।

रास्ते में किसान अपने खेतों में अनेक प्रकार के अन्न उत्पादन के लिए कृषि-कार्य कर रहे थे । इस तरह उद्यान और पर्वतीय क्षेत्र को देखते हुए वे लोग गंगा तट पर

भावना के अनुकूल शोक संतप्त होते हुए भी अयोध्या लौट गये । ''रामचन्द्र'' भी अयोध्या-वासियों को सोये हुए छोड़कर आगे निकल गये सुमन्त ने मन में सोचा कि मनुष्य अपने कर्म-बन्धन में बँधा हुआ है । क्योंकि वैसी कोमलाङ्गी सीता और राम लक्ष्मण को पुनः-पुनः पीछे-पीछे घूमकर देखते हुए अयोध्या आ गये । सीता-राम वन-गमन का यह दारुण दृश्य अत्यन्त ही कठिन था, जहाँ पहुँच कर कवि अत्यन्त भावुक हो गया है ।

सुमन्त लौट कर विशाल अयोध्या नगरी में प्रवेश कर गये । ''रामचन्द्र सुमन्त के साथ लौट गये'' इस आशा भरी भावना से उत्कण्ठित अयोध्या वासी देखने लगे और पूछने लगे । सुमन्त ने कहा मेरे अशेष निवेदन को भी मर्यादापालक, सत्यधर्म–रक्षक ''रामचन्द्र'' ने मुझे समझाकर लौटा दिया । इसके बाद वसिष्ठ सुमन्त के साथ दशरथ के समीप आये । उन दोनों को देखते हुए ''राम फिर आयेंगे'' ऐसी भावना करते हुए दशरथ ने उठकर प्रसन्नता के साथ पूछा, ''राम कहाँ है'' ?

दशरथ ने उनकी मुखाकृति देखकर ही समझ गये कि राम नहीं आए और पुनः मूर्छित हो गये । क्योंकि **''राम नहीं लौटे'' यह कठोर वचन कोई भी कहने के लिए साहस नहीं कर सके ।** पुनः मूर्छा छूटने पर राजा बोले । राम नजदीक में है या दूर में हैं । सुमत्रा साहस कर बोले **''मैथिली और लक्ष्मण के साथ राम सघन वन में चले गये ।** यह सुनते ही दशरथ के प्राणपखेरू उड़ गये । (दशरथ मर गये)

राजा के मरण-समाचार को सुनकर सभी स्त्रियाँ, पार्षद एवं सभी अन्तः-पुर-वासी नर-नारी एकत्र हो गये । संचार रहित दशरथ के मृत-शरीर को देखकर कौशल्या मूर्छित हो गयी । पुनः चेतना प्राप्त कर कौशल्या बोली । तुमने तो सैकड़ों यज्ञ करके यहाँ सब सुखों को प्राप्त किया, सब कुछ दिया । क्या यही यज्ञ का फल है ? इस प्रकार सुमित्रा भी आकर विलाप करने लगी ।

विशेष :– इस रामायण में राजा के मृत शरीर के पास **''कैकैयी'' की कोई चर्चा नहीं है ।**

दशरथ को साठ हजार (६०,०००) स्त्रियाँ थीं । वे सभी पति के साथ ही चिता में प्रवेश करना चाहती थीं । वसिष्ठ ने उन्हें ऐसा करने का आदेश दिया । **(यहाँ यह कथा अत्यन्त नवीन है । ऐसी चर्चा किसी भी भाषा के राम काव्यों में नहीं है ।)** स्त्रियों के विलाप के बीच में, वसिष्ठ ने कहा, तब तक तेल के पात्र में राजा का शब सुरक्षित रखा जाय जब तक अपने नाना के घर–केकय देश-से भरत–शत्रुघ्न नहीं आ जाते हैं ।

नूतन कथा :–''कम्बन् कवि'' के अनुसार दशरथ को साठ हजार पत्नियाँ थीं वे

सभी प्राण देने को तैयार थीं । किन्तु वसिष्ठ ने उन्हें रोकते हुए कहा कि जब तक राजा का दाह कर्म नहीं हो जाता तब तक आपलोग प्राण त्याग नहीं करें । राजा के दाह कार्म के समय आप लोग चिता में प्रवेश कर जांय ।

वसिष्ठ ने कौशल्या, सुमित्रा को अपने भवन में जाने को कहा । इस तरह वसिष्ठ ने दशरथ के मृत शरीर को एक तेल-पात्र में सुरक्षित रखबाकर सभी सेवकों को, सदस्यों को उनके पास रहने का आदेश दिया । और वसिष्ठ के आदेशानुसार सभी नारियाँ अपने घर लौट गयीं । भरत को लाने के लिए दूत भेजे गये । दूत, 'केकय' नगर पहुँच कर भरत को तुरत अयोध्या चलने के आदेश को सुनाया । भरत ने पूछा क्या काम है । दूतों ने कहा हमलोग कुछ नहीं जानते हैं ।

भरत शीघ्र ही अयोध्या पहुँचते ही 'रामचन्द्र'' आदि के वन गमन और राजा के देहावसान का समाचार सुना । यह सुनकर भरत **'आत्महत्या'** करने के लिए तैयार हो गये । वसिष्ठ ने उससे भरत का निवारण किया और कहा कि ''आत्महत्या'' महान पाप है । ऐसा मत करो, धैर्य धारण करके आगे का कर्म करो । भरत मान गये ।

विशेष :–''आत्महत्या'' के लिए भरत को तैयार होने का वर्णन किसी भी रामायण में नहीं देखा गया है । इसलिए शोकोद्‌गार के पाराबार का विशद वर्णन भी सम्भव नहीं है । यह भी ''कम्बन्'' की नूतन कथा-शैली है ?

''गंग गैप पऽलम् (गंगा पटल)

इस पटल में राम के **गंगा पार** करने की कथा प्रमुख है ।

वन गमन के समय अति विशेष सौन्दर्य युक्त श्यामल शरीर वाले राम अपने तेज से सूर्य को तिरस्कृत कर रहे थे । क्योंकि राम की शीतल शान्ति-दायक-छाया में सूर्य की किरणों का तेज विलीन हो गया । सीता की कमर इतनी पतली थी जिससे वह है या नहीं यह मिथ्या माया की तरह प्रतीत होता है । **(कम्बन् की यह चतुरता अनेक वर्णनों में देखी जाती है, कि श्रृंगार रस और ज्ञान तत्व को एकत्र कर देते हैं ।**

राम भारत के उत्तर भाग कौशल देश से दक्षिण–चित्रकूट की ओर जा रहे थे। जहाँ का सौन्दर्य अत्यन्त महत्वपूर्ण था । ''रामचन्द्र'' के साथ सुगन्धित पराग पूर्ण-मिश्रित विशाल केश-वाली सीता, मूंगे की लालिमा के समान अधर-ओष्ठ वाले-राम के साथ मेघ माला में छिटकती हुई विजली के समान दीख रही थी, जिनका ललाट–मस्तक–अर्ध चन्द्राकार के समान था ।

रास्ते में किसान अपने खेतों में अनेक प्रकार के अन्न उत्पादन के लिए कृषि-कार्य कर रहे थे । इस तरह उद्यान और पर्वतीय क्षेत्र को देखते हुए वे लोग गंगा तट पर

पहुँच गये। जहाँ नित्य वेद पाठ करने वाले तपस्वी गण रहते थे। वे लोग कहने लगे कि हमलोगों की तपस्या पूर्ण हो गयी। क्योंकि तपस्या की फल प्राप्ति का अन्तिम लक्ष्य **"राम-पद प्राप्त करना है" जो राम स्वयं उपस्थित हैं।"** राम ने त्रिदण्ड धारी–ऋषियों का स्वागत किया। उन ऋषियों ने अपने आनन्द की अश्रु-धार से पाद्यार्घ्य, स्तुति रूपी फूल, और भक्ति रूपी नैवेद्य समर्पित किया और वन के कन्द मूल फलों को भी समर्पित किया।

अति विशेष :–सीता का हाथ पकड़कर राम गंगा में प्रवेश कर रहे थे। तब गंगा ने ये वाक्य कहे **"मेरी धारा में स्नान कर लोग पाप रहित हेते हैं, किन्तु आज मेरे जनक आप (राम) ने स्वयं आकर मेरे पाप को दूर किया और मेरा उद्धार किया" (राम-विष्णु के साक्षात अवतार हैं अैर विष्णु के चरण से गंगा निकली है। इस वैदिक कथा के आधार पर राम गंगा के जनक पिता हुए।**

आज तक गंगा में महादेव के जटा जूट में स्थित पत्र पुष्पों की ही सुगन्धि थी। अब विशाल-केश जाल से निकले हुए कस्तूरी युक्त फूलों के सौरभ से गंगा सुगन्धित हो गयी। मालूम पड़ता है कि गंगा जल की श्वेत धारा में सीता के काले मेघ के समान विशाल केश मिलकर गंगा यमुना का संगम स्थल **त्रिवेणी के** समान हो गया है। विष्णु के स्वरूप भगवान 'रामचन्द्र" ने स्नान किया जिससे गंगा सर्वथा पवित्र हो गयी।

विशेष दक्षिण भारत में मदुरा-क्षेत्र के समीप एक पवित्र जल का स्रोत बहता है। उस स्रोत समान "नूपुर के गंगा-शब्द से वहाँ के लोग व्यवहार करते हैं। उसमें स्नान करने से लोग पवित्र होते हैं। यह दक्षिण भारत की मान्यता है।

वहाँ गंगा तटपर तपस्वियों ने श्रीराम का विशेष रूप से भक्ति भाव पूर्ण सेवा सत्कार किया। उससे सन्तुष्ट होकर राम ने स्वयं बहुत परिश्रम से गंगा नदी के अन्तःस्तल में प्रवेश कर एक **"विशेष-प्रकार के अमृत"** को निकाला तथा उन मुनियों को अमृत देते हुए कहा कि इस पवित्र अमृत को ग्रहण करें। ऋषियों ने अपनी सेवा-तपस्या का फल उसीक्षण प्राप्त कर लिया। (यह कथा सर्वथा नवीन है।)

"गुहप पडलम् (निषाद पटल)

इस पटल में निषादराज गुह–मल्लाहों और कोल, भील, किरातों के सेनापति से भेंट परिचय और उसकी सहायता से राम के गंगा पार करने की कथा प्रमुख है।

इसी समय वन के कोल, भील, किरात और मल्लाहों का राजा निषादराज उपस्थित हुए। उनका स्वरूप साक्षात भयंकर चाण्डाल के समान था। उनकी विशाल जंघा लाल वस्त्रों से युक्त और बाघ के छालों से घिरी हुई थी। उनकी माला कौड़ियों के दाँत

से गुंथी हुई थीं। इससे उनका शरीर भयंकर दीख रहा था। उनकी विशाल सेनायें उन्हें चारों ओर से घेरे हुई थीं।

वह निषादपति गंगा के समीप 'शृंगवेर-पुर' ठहरे हुए सीता लक्ष्मण के साथ राम के दर्शनार्थ गये। वे सुन्दर फूल, मधु और गंगा की अच्छी मछलियाँ राम के उपहार के लिए लेकर आये थे। लक्ष्मण की जिज्ञासा करने पर निषादराज ने कहा कि मैं आप का सेवक निषादराज हूँ। जो इस क्षेत्र की नावों के अधिष्ठाता और वन्य जीब-जन्तुओं का एकाधिपति शासक हूँ।

कुत्ते की तरह यह तुच्छ जन आपके दर्शनार्थ उपस्थित हैं। लक्ष्मण ने कहा आप यहीं ठहरें। भगवान् राम से निवेदन करता हूँ। यदि उनकी आज्ञा होगी तो दर्शन सम्भव है। लक्ष्मण राम के समीप जाकर सभी बातें कहते हैं। जिन्हें सुनकर राम ने निषादपति को आने की आज्ञा दी। तदनुसार लक्ष्मण के निर्देश से निषादपति (गुह) वहाँ आकर राम के संकेत से बैठ गये। गुह ने कहा आप के लिए ये मधु और मछलियाँ मैंने लायी हैं। कृपया इसे स्वीकार करें।

राम वहाँ उपस्थित तपस्वियों को देखते हुए बोले। ये पदार्थ सर्वथा पवित्र विचार और भक्ति से लाये गये हैं। इन्हें मैं स्वीकार करता हूँ। किन्तु मांसाहार अभी वर्जित है। फिर भी मैंने स्वीकार किया यही प्रर्याप्त है। राम बोले तुम अपने परिजनों के साथ नगर लौट जाओ। कल प्रातःकाल एक नाव लेकर आओ हमलोगों को गंगा पार जाना है?

निषाद ने कहा। भगवन्, नहीं आप यहीं रहें। यह भी वन ही है। हम सभी आपके सेवक हैं। हम नहीं लौटेंगें राम ने मान लिया और कहा कि यहीं रहो। यह सुनकर गुह ने तुरत चारों ओर रक्षा की व्यवस्था कर दी। राम संध्यावन्दन आदि करके वन्य फलों को खाकर सीता के साथ पृथ्वी पर एक चटाई की शय्या पर सो गये। लक्ष्मण धनुष वाण के साथ खड़े होकर राम की रक्षा में लग गये। निषादराज ने भी वैसा ही किया।

सवेरे राम ने उठकर संध्या पूजनादि करके आगे जाने के लिए ऋषियों से आज्ञा प्राप्त की। भक्त निषादराज के नाव लाने का आदेश दिया। निषादराज ने फिर यहीं रहने की प्रार्थना की। राम ने कहा मैं तुम्हारे स्नेह और भक्ति से तुम्हारे वश में हूँ। किन्तु अपने कार्य को समाप्त कर पुनः तुम्हारे पास आऊँगा। (इस रामायण में भी वाल्मीकि रामायण की तरह पुनः **यहाँ आने की प्रतिज्ञा की कथा वर्णित है।)**

निषादराज 'गुह, राम की भावना को समझकर एक सुन्दर नाव ले आये। सीता लक्ष्मण के साथ राम उस नाव पर चढ़कर नदी की सुन्दरता को देखते हुए जा रहे थे और सीता मछली सहित-गंगजल को अपने हाथों से उछाल रही थी। इस तरह वे लोग

गंगा पार आ गये। गंगा पार आने पर राम ने 'चित्रकूट' जाने का मार्ग दिखाने को कहा।

निषादरज ने पुनः प्रार्थना की, मैं भी आप लोगों के साथ ही रहूँगा और सेवा करूँगा। यह सुनकर राम बोले। तुम मेरे प्राण के समान प्रिय हो। यह लक्ष्मण तुम्हारा छोटा **भाई है, यह सीता तुम्हारी भौजाई है, और समुद्र से घिरी हुई यह पृथ्वी तुम्हारी है। तुम आज से मेरे पाँचवें भाई हो इससे पहले हमलोग चार भाई थे। आज से पाँच भाई हो गये।**

अति विशेष :–यह अभूतपूर्व मनोरम उदात्त भावनमय घटना का वर्णन किसी भी राम काव्य में नहीं है। जहाँ निषादराज को लक्ष्मण से अग्रज भाई मान कर अपने को राम ने आज से पाँच भाई वाले होने की दिव्य घोषणा की। यहाँ "कवि कम्बन्" राम की भव्य-भावना का जितना उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है वह राम को "मर्यादा-पुरुषोत्तम" के रूप में प्रतिष्ठित करने का महान् संसाधन है।

इस तरह किंकर्तव्यविमूढ़ होकर (क्या करें क्या नहीं करें उधेड़बुन में) निषाद ने राम की आज्ञा को सर पर रखकर "**राम फिर आयेंगे**" इस आशा विश्वास से लौट गये। **(इस रामायण में भी वाल्मीकि रामायण की तरह केवल निषाद द्वारा पाद प्रक्षालन–पैर धोने की कथा नहीं है।)**

श्रीः

"वनम् वुड्प् पडलम् (वन प्रवेश पटल)"

इस पटल में राम का चित्रकूट पहुँचना और चित्रकूट की गरिमा महिमा और सुषमा का वर्णन अति मनोहर है।

सीता लक्ष्मण के साथ राम चित्रकूट के मार्ग में वन की अद्वितीय शोभा और वसंत ऋतु के मनोहर दृश्य को देखते हुए आगे बढ़े। यहाँ वन्य पशु सिंह, हाथी, घोड़ा, भैंस और साँप, नेवला परस्पर अपने नित्य स्थायी शत्रुता को छोड़कर एक ही जगह घूम रहे हैं, खेल रहे हैं, कोई किसी को बाधा नहीं पहुँचा रहे हैं, मयूर नाच रहे हैं, भौरे गूंज रहे हैं, कोयलें कूक रही हैं, और पक्षी गण मधुर शब्द कर रहै हैं। ये अपूर्व दृश्य थे। वहाँ संन्यासी-तपस्वीगण रहते हैं, घूमते हैं, और तपस्या करते हैं। त्रिदण्डधारी तपस्वी मृगछाल ओढ़े हुए वल्कल पहने हुए जटा कमंडल धारी हैं।

इसके बाद राम महर्षि भरद्वाज के आश्रम पर गये। वहाँ भरद्वाज ने उनका अलौकि

सत्कार किया। और वार्त्तालप के क्रम में कहा कि आप लोग यहीं पावन-प्रयाग के तट पर रहें। यहाँ वन शोभा के साथ पवित्र त्रिवेणी-संगम है। राम ने कहा हे महर्षि अयोध्या यहाँ से समीप में ही है। मेरा यहाँ रहना जान कर अयोध्यावासी जन और पारिवारिक सद्स्य यहाँ आकर मेरे कार्य और मेरी यात्रा में बाधा देंगे इसलिए कोई शान्तिमय सुन्दर स्थान का कृपया निर्देश करें।

महर्षि भरद्वाज ने इसका अनुमोदन समर्थन करते हुए, देवताओं से भी दुर्लभ पवित्र 'चित्रकूट' नाम के स्थान का निर्देश किया और यहाँ से दश योजन (१२०, कोश २४० माइल और लगभग ३६० किलो मीटर) पर यह स्थान है। यहाँ आप स्वेच्छानुसार रह सकते हैं। तब राम मुनि की आज्ञा लेकर वहाँ से चले। वहाँ पवित्र यमुना नदी में स्नान कर नये बाँस से बने हुए सोपान-पुल पर चल कर यमुना पार गये।

विशेष :– इस तरह की कथा किसी अन्य राम काव्य में और ''रामचरित-मानस'' में भी नहीं है। अन्य रामायणों में भरद्वाज ऋषि के दर्शन पहले हैं। तब गंगापार करने का वर्णन है। अतएव **'कम्बन'' की यहाँ भी नूतन कथा शैली है।**

''महाकवि कम्बन्'' ने चित्रकूट के वर्णन में पूरा एक पटल लिखा है। अन्य रामायणों में जहाँ चित्रकूट का वर्णन कुछ ही पद्यों में हैं, वहाँ इस रामायण में (५५) पचपन पद्यों में चित्रकूट का माहात्म्य और उनकी शोभा क वर्णन किया गया है।

''शित् कूडप पडलम (चित्रकूट पटल)''

यद्यपि राम देवताओं से भी अज्ञेय हैं। हमलोगों के लिए तो सर्वथा अगम्य और अगोचर हैं। अपनी रची हुई ही सृष्टि की शोभा और चित्रकूट की विशिष्टता भगवती सीता को दिखाते हुए **परमात्मा 'राम'** यहाँ लौकिक लीला देख रहे हैं और दिखा रहे हैं।(पद्य (७४०)-सात सौ चालीस–इस पटल का प्रथम पद्य है।)

राम ने कहा, हे सुन्दर नेत्र वाली सीते देखो, चित्रकूट की शोभा। यहाँ मेघ के आकार वाले सोये हुए हाथी हैं। इलायची और लौंग (लवंग) की लतायें हैं। पहाड़ी बकरे और स्फटिक के पत्थर सुशोभित हैं। जहाँ पर्वत के शिखर से श्वेत-जल धारा निकली है जो भगवान शिव के जटा-जूट से गंगा निकलती हैं। देखो एक गर्भवती हथिनी के उसके पति हाथी अपनी सूंढ़ से मधुर और मधुयुक्त फलों को लेकर हथिनी के मुँह में दे रहा है। यहाँ यक्ष किन्नर गण पर्वत क्षेत्र में रहने वाले दम्पत्ति की प्रीति के लिए मधुर गीत गा रहे हैं। इस पर्वतीय क्षेत्र के लोग कुदाल आदि से पृथ्वी के नीचे से कन्द फल को निकालते हैं।

विशेष :– आज भी 'चित्रकूट' में स्फटिक शिला के पास कन्द मूल फल प्रसाद के रूप में बिकते हैं, और दर्शक गण–भक्त गण उन्हें आदर के साथ खरीदते हैं और ग्रहण करते हैं।

यहाँ भौंरे से घिरी हुई लताओं से फूल तुम्हारे पैर की पूजा के लिए गिर रहे हैं। हे लम्बे काले केशपाश वाली–सीते, सब जगह आकाश में यज्ञ की धूमराशियाँ फैली हुई हैं। वहाँ मणिमय पत्थर के खण्डों पर पड़ती हुई सूर्य किरणें विशेष रूप से चमक रही हैं। वयोवृद्ध तपस्वियों के कमण्डलों में हाथी अपनी सूंढ़ से वहीं के तीर्थ जल को दे रहा है। यहाँ की छटा तो विचित्र है। वहाँ तपस्वियों के होम की आग को मयूर गण अपनी विशाल पूँछ के पंखों से प्रज्चलित कर रहे हैं।

इस तरह के चित्रकूट में रहने वाले तपस्वी गण ''राम'' के स्वागत के लिए उपस्थित थे। उन लोगों के स्वागत सत्कार प्राप्त का लक्ष्मण के द्वारा बनाई गयी **'पर्णशाला'** में सीता के साथ राम प्रवेश करके विश्राम करने लगे।

अति विशेष :–यह पर्णशाला माया से रहित मन, परमादरणीय वेद, पवित्र क्षीर सागर और परब्रह्म परमात्मा का निवास स्थान बैकुण्ठ के समान है। जहाँ ''राम'' ने निवास किया। फूल से भी अधिक कोमल चरणकमल वाली सीता यहाँ पर्णशाला में निवास कर रही है। जो पर्णशाला सर्वगुण सम्पन्न वन्दनीय मेरे अनुज लक्ष्मण द्वारा निर्मित है।

राम ने कहा हे लक्ष्मण इसके निर्माण करने में तुमने बहुत कष्ट का अनुभव किया इसलिए मेरा मन खिन्न हो रहा है। लक्ष्मण ने दुःखी होकर कहा यह तो मेरा दुःख नहीं है। यह तो मेरे लिए परम सुख हैं। दुःख तो केवल आपका वनवास ही है। इस प्रकार सीता लक्ष्मण के साथ राम इस पवित्र चित्रकूट में चिर दिनों तक रहे, और विचरण किये। यहाँ की **मन्दाकिनी** नयी-धारा सीता के स्नान से पवित्र हो गयी। इस तरह यह ''चित्रकूट'' श्रेयस्कर और प्रेयस्कर अर्थात् प्रिय कल्याण-दायी एवं तपःपूत–तपस्या से पवित्र है।

राम काव्यों में कहा जता है कि राम साढ़े एग्यारह (११ १/२) वर्षों तक यहाँ रहे और शेष दो वर्ष छः महीने पञ्चवटी में और समुद्र तटपर बिताया। क्योंकि राम चौदहवें वर्ष पूर्ण होने के दिन ही अयोध्या आ गये। **'यह मत 'कम्बन्' का नहीं है।**

''पल्लिप डैप पडलम् (चितारोपण पटल)

इस पटल में भरत का ननिहाल से आगमन, दशरथ का अन्तिम संस्कार तथा गुरु वसिष्ठ के द्वारा मरण के समय दशरथ के आदेशानुसार भरत का श्राद्ध से वञ्चित होने की कथा प्रमुख है।

गुरू वसिष्ठ के आदेशानुसार चतुर दूत-गण **केकय–देश** से भरत को लाने के लिए गये। वहाँ पहुँचकर दूतों ने कहा कि हमलोग आप के पिता का संदेश लेकर आये हैं। यह पत्र लीजिए। ताल-पत्र पर लिखित पत्र को भरत ने पढ़ा और पूछा कि क्या चक्रवर्ती–पिता महाराज बीमार हैं ? दूतों ने कहा, सब ठीक है। और कुछ नहीं कहा।

भरत बिना यात्रा-मुहूर्त आदि के विचार से शीघ्र सुसज्जित रथ से अयोध्या चले। रास्ते में बहुत से नर-नारी पशु-पक्षी आदि विभिन्न जीवजन्तुओं को देखते हुए जा रहे थे। कोशल देश पहुँचने पर भरत ने देखा कि बार-बार यन्त्रों के द्वारा ईख का रस नहीं पेरा जा रहा है, खेत में हल नहीं जोते जा रहे हैं वहाँ पानी भी नहीं है, गाछ में तो मीठे फल हैं, लेकिन कोई उसे खा नहीं रहा है।

इन अशुभ सूचक दृश्य को देख चिन्तित हुए। आगे चल कर अयोध्या में नाच-गान आदि नहीं हो रहे थे, सभी लोग चुप थे और अयोध्या के प्रासाद पर राष्ट्र-ध्वज (राष्ट्र का झंडा) नहीं फहरा रहा था।

इस तरह देखते-देखते शत्रुघ्न के साथ भरत अयोध्या के राजभवन में पहुँच गये। सबसे पहले अपनी माता के पास जाकर प्रणाम करके पूछा, क्या पूज्य पिता स्वस्थ तो हैं ? कैकेयी ने कहा तुम्हारे पिता देवताओं से सम्मानित होकर स्वर्ग चले गये। तुम शोक मत करो।

यह सुनते ही भरत मूर्छित हो गये। उनकी आँखों से आँसू की नदी बहने लगी। थोड़ी चेतना होने पर भरत ने कहा। तुमको छोड़कर कोई दूसरा यह कठोर वचन नहीं कह सकता है। सौन्दर्य के साक्षात् स्वरूप–जिसे "तमिल भाषा में गुरू गण कहा जाता है" **राम कहाँ हैं ?** भरत लम्बी साँस लेकर विलाप करते हुए बोले हे सूर्य कुल के सूर्य तुल्य पिता ? आप श्री राम को छोड़कर कैसे स्वर्ग चले गये चिर तपस्या के बाद पुत्र रूप में प्राप्त श्री राम को बिना राज्य दिये हुए कैसे वैकुण्ठ चले गये ?

इस प्रकार भरत को विलाप करते हुए देखकर कर्कशा कैकेयी बोली। पिता ने तुम्हें राज्य देकर, राम को चौदह वर्षों तक के वनवास की आज्ञा देकर स्वयं स्वर्ग सिधार गये। अचानक यह सुनकर भरत स्तब्ध हो गये। उनकी संज्ञा शून्य हो गयी। वे बोले यह कौन-सी बात है ? यह कैसी दुर्घटना है ? यह सब कैसे हुआ ? यह सुनकर कैकेयी बोली-चक्रवर्ती ने मुझे बहुत पहले दो वरदान दिये थे। मैं ने ही एक तुम्हारे लिए राज्य और दूसरा चौदह वर्षों तक राम के वनवास की याचना की। प्रतिज्ञानुसार राजा ने वैसा ही किया। लेकिन राम के वन-गमन-जन्य शोक को नहीं सहते हुए राजा ने प्राणों को त्याग दिया।

यह सुनकर भरत के दोनों हाथ कान पर चले गये। आँखें लाल हो गयीं। लम्बी

साँसे लेते हुए वे कांपने लगे, क्रोध से भरत ने पृथ्वी पर दोनों पैर पटके। जिससे भूकम्प की तरह धरणी (पृथ्वी) काँपने लगी। भरत ने माँ से कहा। ऐसे कठोर वचन को सुनकर भी मैं तुम्हारी हत्या नहीं कर रहा हूँ। उसका एक मात्र कारण है कि राम उससे मुझपर रूष्ट हो जाएँगे। पहले तो तुमने मुझे अपने स्तन से दूध पिलाया और आज यह अनन्तकाल तक का कलंक–विष पिलाया। तुम राक्षसी पति के प्राणों को पी गयी। इस तरह अशेष कटु वचनों से कैकेयी की भरत ने भर्त्सना की। इसके बाद भरत माता कौशल्या के पास आये। माता उन्हें देखकर विलाप करती हुई सब कुछ कह गई। भरत ने वहाँ महान कोलाहल, प्रलाप और शोकप्रकाश किया। यह देख सुनकर कौशल्या आश्वस्त हुई और उन्होंने समझा कि इसका भरत को कोई ज्ञान नहीं है। तथापि कौशल्या ने भरत से पूछ दी कि क्या पहले से इस विषय में तुम्हें कोई जानकारी थी ?

इस प्रश्न-वाचक वाक्य को सुनते ही भरत अत्यन्त विकल हो गये और बोले। पिता, माता, गुरू, भाई और राजा इस पाँच महान व्यक्तियों की हत्या और बाल हत्या, स्त्री हत्या के जितने पाप होते हैं, वे सभी मुझे हों। यदि पहले से मुझको कोई भी ज्ञान रहा हो। ये हत्यारे लोग जिस नरक में जाते हैं वहीं मैं चला जाऊँ, यदि इस महा पातक का साक्षात या परम्परा से भी मेरा कोई सम्पर्क हो। इस तरह बहुत विस्तार पूर्वक भरत ने वहाँ अपनी अति उदात्त-भावना का परिचय दिया

विशेष :– (इस तरह की कथा का यह अंश किसी भी रामकाव्य में नहीं है)

कौशल्या तो केवल समान्य रूप में भरत को परीक्षण–रूप में यह पूछा था। इसके बाद माता कौशल्या बोली। तुम्हारे पिता के मरण के सात दिन बीत गये। पुत्रों के द्वारा जो अंतिम कर्म किये जाते हैं यह सब शीघ्र तुम करो । माता की आज्ञा प्राप्त कर भरत गुरु वसिष्ठ के साथ वहाँ गये जहाँ दशरथ का शरीर तेल के पात्र में सुरक्षित रखा हुआ था। उसे देखकर भरत अत्यन्त बिह्वल होकर चीत्कार करते हुए रोते हैं। वहाँ सभी उपस्थित जन उन्हें सान्त्वनाधैर्य-देते हैं।

इसके बाद दाह कर्म के लिए विधि विधानानुसार चिता बनायी गयी और उस पर दशरथ का शरीर रख दिया गया। भरत दाह संस्कार के लिए तैयार हो गये। तब गुरू वसिष्ठ ने कहा। हे भरत तुम्हारे पिता ने अन्तिम क्षण में तुम्हारी माता के कुकर्म के कारण तुमको दाह-कर्म आदि अन्तिम कार्य से वञ्चित कर दिया है। तब भरत ने दशरथ की देह को छोड़ दिया। इस तरह कहकर अत्यन्त दुःखी होते हुए शत्रुघ्न को दाह--संस्कार के लिए निर्देश दिया, और ऐसा ही हुआ।

अति विशेष घटना :–वहाँ दशरथ की साठ हजार (६,००००) पत्नियाँ उनकी

चिता पर चढ़कर पुण्य लोक चली गयीं–सती हो गयीं। तब शास्त्रानुसार दश दिनों तक सभी कर्म विधिवत् सम्पन्न हुए। गरीवों को, ब्राह्मणों को, बहुत से धन, गाय आदि दान में दिये गये। इस तरह दशरथ के अन्तिम संस्कार–श्राद्ध-आदि सम्पन्न हुए।

यहाँ की ऐसी कथा संस्कृत से लेकर भारतीय बाङ्मय के किसी भी **रामायण–रामकाव्य में** उपलब्ध नहीं है। इसका मूल क्या और कहाँ है ? यह तो कवि ''कम्बन'' ही कह सकते थे यदि वे जीवित होते। क्योंकि ''कम्बरामायण'' के सभी टीकाकार भी यहाँ मौन हैं।

''आरूशैल पडलम् (मार्ग गमन पटल)''

चक्रवर्ती समाट्र महाराज दशरथ के श्राद्धोपरान्त सभी मंत्री-गण, विद्वान एवं नागरिक गुरु वसिष्ठ के साथ आये (प्रधानमन्त्री सुमन्त तो वेदना से मौन ही थे, किन्तु संकेत से वसिष्ठ को निवेदन किया)। वसिष्ठ बोले, हे रघुकुल भूषण भरत, तुम उस राज्य का संचालन करो, यही तुम्हारा कर्त्तव्य है, यही धर्म है, और यही नीति है।

यह सुनते ही भरत शिथिल और विचलित हो गये। आँखों से अश्रुधारा बहने लगी और मूर्छित हो गये कुछ काल के बाद होश आने पर बोले –यदि सर्व-गुण सम्पन्न 'राम' को छोड़कर मैं राज मुकुट धारण करता हूँ, तो मेरी माता के कुकर्म में क्या दोष होगा ? यदि आप लोग इसे स्वीकार करते हैं तो त्रेता युग, और द्वापर युग दोनों को पार कर ''कलियुग'' आ गया, यही माना जायगा। यह कहकर भरत ने अपने संकल्प की घोषणा की।

आप लोग कृपया सुनें! मैं आप लोगों के साथ वन जाकर पूज्य अग्रज राम की प्रार्थना कर उन्हें लौटा कर आपलोगों के द्वारा उनके मस्तक पर राज-मुकुट दिलाऊँगा। अन्यथा मैं वन में रहकर कठोर तपस्या करूँगा, या प्राण त्याग कर दूँगा। यह सुनकर सभी मंत्रीगण और नागरिक-गण ने बारंबार पुनः पुनः भरत को आशीर्वाद दिया। भरत के गमन की सूचना नागरिकों को दी जाय यह शत्रुघ्न को आदेश दिया गया। इस घोषणा को सुनकर सभी आबाल वृद्ध नर नारी अयोध्या के नगरनिवासी भरत के साथ राम को लौटाने के लिए (वन जाने के लिए) तैयार हो गये।

अयोध्या से वन प्रस्थान तो यथार्थतः अभूतपूर्व एवं विचित्र था। सभी नगर निवासी ऐसे उत्साहित थे जिससे अपने शरीर की रक्षा को भी भूलकर आत्मा और मन से 'राम' को खोजने के लिए संलग्न हो गये। भरत के साथ जाती हुई राज्य की सेनायें रास्ते की नदियों के जल पीकर उन्हें सुखा दिया और नीची ऊँची जमीन को समतल बना दिया।

यहाँ नौ सौ विरासीवें (९८२) पद्य में तमिल-क्षेत्र की विशेषता का वर्णन करते हुए 'कवि कबवन्'' कहते हैं तमिल क्षेत्र के पहले आचार्य अगस्त्य हुए। उन्होंने सपूर्ण समुद्र के जल को पीकर, विन्धाचल को पाताल में भेजकर पृथ्वी को स्थिर किया। **''तमिल क्षेत्र''** में यह कथा प्रसिद्ध है, कि पार्वती के विवाह में सभी जीव–दक्षिण से उत्तर दिशा की ओर (हिमालय पर) गये। परिणामतः दक्षिण-भाग हलका होने के कारण ऊपर उठ गया तब परमेश्वर ने दक्षिण-भाग को सम बनाने के लिए महर्षि अगस्त्य को भेजा। मार्ग में विन्ध्य पर्वत ने बाधा दी, जिसे अगस्त्य ने पाताल भेज दिया। और वे दक्षिण भारत–भाग में आ गये। तब दक्षिण भाग समतल हुआ। इसलिए अगस्त्य को तमिल क्षेत्र का जन्म दाता कहा जाता है। अगस्त्य पाणिनि के समान **प्रथम महा वैयाकरण थे।**

यहाँ कवि ने अगस्त्य की तुलना विशाल-सेनाओं से की। क्योंकि सेना द्वारा ही भूमि समतल होती है। जिसे अगस्त्य ने किया। यहाँ ''तमिल क्षेत्र'' के प्रति कवि की बड़ी श्रद्धा-भक्ति देखी जाती है, जो इस महाकाव्य के प्रारम्भ से ही बनी हुई है।

रास्ते में कोई कुछ नहीं बोलता था। सबका ध्यान 'राम' पर ही केन्द्रित था। शत्रुघ्न के साथ भरत राम वहीं ठहरे जहाँ पहली रात में सीता लक्ष्मण के साथ राम ठहरे हुए थे। कन्द मूल फल खाकर रात में भरत नहीं सोये तथा समूची धूल से भरी हुई जमीन पर लेटे हुए रात बिता दी।

''गंगैकाण् पडलम् (गंगा दर्शन पटल)''

इस पटल में भरत का निषादराज के साथ परिचय, गंगा पार जाना और भरद्वाज आश्रम में पहुँचकर विश्राम की कथा प्रमुख है।

प्रथम रात्रि में जहाँ ''रामचन्द्र'' ठहरे थे, वहीं शत्रुध्न एवं परिजनों के साथ भरत ने रात्रि विश्राम जाग कर ही किया। इस तरह काबेरी के जल से पवित्र क्षेत्र से गंगा के किनारे अपनी अगणित सेना, घोड़े, हाथी के साथ वहाँ पहुँचे। उन लोगों ने इस तरह गंगा 'जल का पान किया कि गंगा की धारा पतली हो गयी भरत के साथ साठ हजार (६०,०००) अक्षौहिणी सेनायें थीं। ऐसा विद्वान् लोग कहते हैं। ये सेनाएँ गंगा के उत्तर तटपर पहुँच गयीं।

इन सेनाओं को देखकर निषादराज-गुह क्रोध से भर गये और उन्हें अनुभव हुआ कि भरत इतनी सेनाओं के साथ ''रामचन्द्र'' को जीतने के लिए आये हैं। यमराज के समान कठोर निषादराज ने अपनी सेना को आदेश दिया कि तुम लोग संपूर्ण गंगा तट को घेर लो जिससे भरत की सेना गंगा पार नहीं जा सके। ये सेनायें अति तुच्छ

हैं। इनका नाश आ गया है। खेद है कि भरत ने यह भी नहीं सोचा कि राम के साथ महा पराक्रमी लक्ष्मण हैं। मेरी अजेय विशाल-सेना है। मेरे शासन में वे गंगा पार कैसे जा सकते हैं ? ऐसा निषादराज सोच रहे थे।

इसी समय भरत को ज्ञात हुआ कि निषादराज ''रामचन्द्र'' के मित्र हैं। वे तुरत महाबलशाली निषादराज के समीप उपस्थित हो गये। भरत को इस तरह मलिन और दुःखी देखकर-**'गुह' एकाएक स्तब्ध-सन्न हो गया** और मन में सोचने लगा कि ये तो ''रामचन्द्र'' के समान ही दीख रहे हैं। प्रायः ''राम'' के प्रति अखण्ड भक्ति, प्रेम, युक्त ये मेरे पास आये हैं। जो निश्चित रूप से ''राम'' को लौटाने के लिए जा रहे हैं।

इस तरह सोचते हुए निषादराज भरत के पास आकर उन्हें नमस्कार किया। भरत ने निषादराज को हृदय में लगाकर अपनी अश्रुधारा से निषादराज के मस्तक को सिक्त कर दिया। निषाद के अपने आने का कारण पूछने पर भरत ने कहा। मैं सभी पुरजन-परिजन-भाइयों और माताओं के साथ 'राम' को लौटाने के लिए चला हूँ। इसमें आप मेरी सहायता कीजिये।

भरत की बात सुनकर निषादराज प्रसन्नता के पारावार में निमग्न हो गये, और बोले आप के समान सर्व-गुण सम्पन्न कौन हो सकता है ? निषादराज के द्वारा रामचन्द्र के सभी समाचारों को सुनकर भरत शोक में मग्न होकर उसी गंगा तट के बालू पर बैठ गये। दूसरे दिन रथ, सैनिक, घोड़े और हाथियों को विभाजित करके उनके योग्य नावों पर चढ़ा कर गंगा पार करने के लीए निषादराज ने भेज दिया। **(यह नवीन कथा कि सी दूसरे रामायण--रामकाव्य में नहीं है।)**

दूसरी नाव पर गुरु वसिष्ठ, माताओं, मन्त्री, सुमन्त्र और शत्रुध्न के साथ भरत चले जिसपर स्वयं निषादराज 'गुह' भी चल रहे थे। वहीं निषादराज ने सबों का परिचय प्राप्त किया। इस तरह गंगा पार जाकर यज्ञ करने-कराने, पढ़ने पढ़ाने में लगे हुए ब्राह्मण समूह थे। उनके साथ महान तपस्वी भरद्वाज ऋषि थे। जिनके पवित्र आश्रम पर भरत अपनी विशाल सेना के साथ पहुँच गये और उसी तपःपूत आश्रम में ठहरें।

''तिरुवडिशूट्ट पडलम् (पादुकाशिरोधारण पटल)''

इस पटल में अपने पुरजन परिजन एवं निषादराज के साथ भरत के चित्रकूट गमन का वर्णन, वहाँ के कारुणिक दृश्य का वर्णन, राम की पादुका को मस्तक पर रखकर अयोध्या लौटने का विशद वर्णन प्रमुख है। जो वर्णन प्रेम-भक्ति-और श्रद्धा से परिपूर्ण और पूत है।

विशेषता :–''कम्ब रामायण'' में सर्वत्र महा कवि ''कम्बन्'' की रचना शैली सरस

साहित्यिक वर्णन की निपुणता और दक्षिण भारत के भूखण्डों के प्रति अति विशेष आसक्ति देखी जाती है। भरद्वाज के आश्रम में श्रद्धा और विनय के साथ भरत ने तपोमूर्ति भरद्वाज के प्रति भक्ति भाव प्रदर्शित किया। साक्षात् **"चन्द्रमौलीश्वर–शिव"** के समान मुनि ने भी भरत को अनन्त मंगल-दायक आशीर्वाद दिया। मुनि ने पूछा कि पिता के द्वारा दिये गये राज्य को छोड़कर जटा जूट धारण कर मुनि के वेश में क्यों आये हो ?

यह सुनकर कुछ क्रोध और अत्यधिक दुःख के साथ भरत ने कहा, परम्परा के क्रम को लांघ कर मुझे राज्य देना सर्वथा अनुचित था यह समझकर मैं "रामचन्द्र" के पास जाकर वह राज्य–उनका राज्य–उन्हें समर्पित करूँगा। यदि वे नहीं स्वीकार करेंगे तो मैं भी चौदह वर्षो तक वनवास करुँगा।

श्री खण्ड–चन्दन की तरह सौरभ युक्त शीतल दायक भरत के इन वचनों को सुनकर मुनि अत्यन्त प्रसन्नता से पूर्ण हो गये तव महर्षि भरद्वाज ने सबों के साथ भरत को अपने आश्रम पर लाया। ऋषि ने अपने तपोवल से वहाँ स्वर्ग को ही उतार दिया। वहाँ सभी भोजन, शयन, नृत्य, गीत, वादय आदि राज्य सुख साधनों के सहित स्वर्गीय अप्सराओं को भी उपस्थित करा दिया। मुनि के इस तपोवल के चमत्कार से सभी विस्मित हो गये।

जहाँ सभी लोग स्वागत सत्कार में लीन थे। वहीं भरत केवल कन्द मूल फल खाकर बालुकामय भूमि पर ही सो गये। सबेरे उठकर नित्य कर्म करके नत-मस्तक होकर मुनि की आज्ञा और आशीर्वचन प्राप्त कर चित्रकूट की ओर चले जहाँ "रामचन्द्र" निवास कर रहे थे। विशाल सागर की तरह आती हुई सेना को देखकर लक्ष्मण सोचते हैं कि भरत हम लोगों के संहार के लिए आ रहे हैं। क्रोध से युक्त लक्ष्मण अपने धनुष पर वाण चढ़ाकर राम के समीप आकर बोले। आप देखें, भरत विशाल सेनाओं के साथ हम लोगों के नाश के लिए आ रहे हैं। कृपया आज्ञा दीजिए मैं आज चौदहों भुवनों का संहार करूँगा।

यह सुनकर राम बोले। हे लक्ष्मण, यदि तुम चौदहों भुवनों के संहार का संकल्प कर युद्ध के लिए जाओगे तो कौन रोक सकता है। लेकिन सावधान होकर मेरी इन बातों को सुनो। क्या तुमने यह नहीं सोचा कि भरत पिता की आज्ञा से और मेरे स्नेह से यहाँ आ रहा है। **(अभी तक राम को पिता के मरण की सूचना नहीं थी)** क्या तुम नहीं देखते हो कि भरत कितना दुबला-शोक से व्याकुल नतमस्तक है। भरत के समान मेरा अति प्रिय अनुज क्या मेरे प्रति शत्रुता कर सकता है ? भरत कदापि राज्य के मद से स्वप्न में भी उन्मत्त नहीं हो सकता है। इसी वार्तालाप के समय भरत आ गये।

इस तरह शोकाकुल भरत को छाती से लगाने पर भरत ने कहा कि **आप के वियोग में पिता स्वर्गीय हो गये।** हमलोगों की यह दुर्दशा समस्त कोशल वासियों की व्यथा मैं कुछ भी नहीं कह सकता हूँ। वज्राघात के समान पिता की मृत्यु के समाचार को जानकर ''रामचन्द्र'' मूर्छित हो गये। कुछ देर के बाद उन्हें होश आया।

इसके बाद समस्त राज्य के परिजनों और माताओं के साथ ब्रह्म के पुत्र वसिष्ठ राम को चारों ओर घेर कर बैठे और बोले हे सर्वज्ञ ''रामचन्द्र'' तुम जानते हो कि यह संसार अनित्य है। सभी जीव मरेंगे ही, इसपर शोक और चिन्ता करने से क्या होगा ? तुम्हारे पिता तो कितने हजार वर्षों तक यज्ञ-दान और तपस्या करते हुए वीर-भाव से जीवन विताया। भाग्यवश अन्त में यही गति थी। इसलिए शोक को छोड़कर स्वर्गीय पिता की शास्त्र रीति से जलांजलि आदि क्रिया करें।

विशेष :– यहाँ भी वसिष्ठ ने मरण के समय दशरथ के कहे गये निर्देश को सुनाया कि राजा ने भरत को श्राद्ध कर्म से निवारित (वञ्चित) कर दिया था। ''रामचन्द्र'' वसिष्ठ के साथ मंन्दाकिनी के तट पर आकर वसिष्ठ द्वारा कहे गये वचनों पर कुछ काल चुप होकर बोले।

इस समय **मेरी आज्ञा से** भरत भी पिता के सभी अन्तिम कृत्य करेंगे। और यथोचित कृत्य भरत से भी कराया गया, और उन्होंने ही किया। इसके बाद सभी चित्रकूट के समीप पर्णशाला में आ गये वहाँ सीता ने श्वसुर के मरण का समाचार जानकर अत्यन्त पीड़ित होकर मंदाकिनी के तटपर आई। वहाँ उसे स्नान आदि कराया गया।

इसके बाद राम ने भरत से पूछा चक्रवर्ती तो चिर निद्रा में सो गये। उनके द्वारा दिया गया राज्य तुम्हारा है। तुम इस तरह क्यों जटा मुकुट धारण किये हो ? भरत बोले। मेरे पिता ने जो कुछ किया, मेरी माता ने जो सबों को दुःख दिया वह सब अवर्णनीय है। मेरा केवल इतना ही निवेदन है कि कृपा-पूर्वक आप अयोध्या लौटकर अपने राज्य का संचालन करें तथा हम सभी भाइयों की सेबा ग्रहण करें।

यह सुनकर ''रामचन्द्र'' बोले मैं चौदह वर्षों तक वनवास में ही रहूँगा। तुम मेरी आज्ञा से भी तबतक (चौदह वर्षों तक) राज्य का शासन करो। राम की ऐसी प्रतिज्ञा सुनकर वसिष्ठ आदि ने भी अपनी सम्मति इसी रूप में दी। अन्त में बड़ी नम्रता पूर्वक दीन और कातर भाव से भरत ने प्रार्थना की। यदि ऐसी ही बात है तो कृपया अपनी चरणपादुका मुझे दें। मैं इसी पादुका को आप के प्रतीक के रूप में रखकर ही चौहद वर्षो तक राज्य का संचालन करूँगा।

किन्तु जिस दिन चौदह वर्ष पूरे होंगे उसी दिन यदि आप अयोध्या नहीं पहुँचेंगे तो मैं उसी दिन सूर्यास्त होते ही **आग में प्रवेश कर प्राण त्याग दूंगा। यह निश्चित**

रूप में ''आप की शपथ'' लेकर बोलता हूँ। यह सबों ने सुना। ''रामचन्द्र'' ने अपनी पादुका दे दी। भरत ने उसे मस्तक पर रखकर कहा कि यही मेरा **'राज्य-मूकुट'** है। यह कहकर भरत राम को साष्टांङ्ग प्रणाम कर पुरजन, परिजन, मातृजन, गुरूजन, निषादराज तथा सनातन-ब्रह्म स्वरूप भरद्वाज के साथ लौट गये।

अतिविशेष :–चित्रकूट तक भरद्वाज के आने की कथा किसी भी रामकाव्य में उपलब्ध नहीं हैं। **यह सर्वथा नूतन कथा है।**

भरत पादुका को माथे पर रख कर गंगा पार करके अयोध्या आये। रात में जागरण कर प्रातःकल 'नन्दीग्राम'' में पादुका की स्थापना करके मुनि व्रत को धारण करते हुए आँसू से भरे हुए नेत्र से राज्य का संचालन करने लगे।

इसके बाद राम ने सोचा अब तो अयोध्यावासी समझ जायेंगे कि हमलोग **'चित्रकूट'** में हैं। इसलिए यह निश्चित संभावना है कि वे लोग यहाँ आकर मेरी तपस्या में विघ्न दे सकते हैं। ऐसा सोचकर सीता लक्ष्मण के साथ ''रामचन्द्र'' ने चित्रकूट से दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया।

इस काण्ड की कुछ विशेषता :–

(क) भारद्वाज का चित्रकूट तक आगमन का वर्णन किसी भी रामायण में नहीं है।

(ख) इस रामायण में भरत राम के सम्वाद अत्यन्त उत्कृष्ट और मर्म भेदी है।

(ग) यहाँ भरत के अयोध्या लौटते ही तुरत 'राम चन्द्र'' के चित्रकूट परित्याग का वर्णन भी नूतन है।

(घ) साठ हजार सेनाओं के साथ भरत का चित्रकूट आगमन का वर्णन भी नवीन है। इस रामायण में हजार, लाख करोड़, और अरबों की संख्या का उल्लेख जहाँ तहाँ पाया जाता है। इसके क्या आधार हैं यह अनुसंधन का एक विषय है।

अयोध्याकण्ड की गरिमा

रमायण का सर्वस्व-प्राणभूत अयोध्य-काण्ड इस तरह सम्पन्न हुआ जहाँ **दशरथ का पितृत्व, राम को रामत्व एवं मर्यदा पुषोत्तमत्व, सीता को पत्नीत्व लक्ष्मण को भातृत्व, अयोध्य-वासी को उत्कृष्ट नागरिकत्व तो प्राप्त हुआ ही लेकिन 'भरत' के चरित्र का उज्ज्वलतम उदात्त-चरित्र के सुमेरु के शिखर पर पहुँचाने वाला यह अयोध्या काण्ड निषादराज (गुह) को 'रामचन्द्र' के द्वारा अपना-अपना पाँचवा भाई मानना, लक्ष्मण को उनका अनुज बनना तथा सीता को निषादराज की भौजाई बनाने की घटना के वर्णनों से यह ''अयोध्या काण्ड'' रामायण रूपी मणि-माला का रत्न-सुमेरू के समान है।**

इति अयोध्या काण्डम्

अरण्य काण्डम्

''विरादन् वदेप् पडलम् (विराधबध पटलम्)''

इस कण्ड में १२ बारह पटल हैं। उनमें साबसे पहले चित्रकूट से विदा होने के समय ''रामचन्द्र'' एक रात महर्षि अत्रि के आश्रम में विताया और आगे जाने के मार्ग की जानकरी प्राप्त की। वहाँ महर्षि अत्रि-पत्नी अनसूया ने सीता को अनेक प्रकार का उपदेश देती हुई सिन्दूर आदि आभरण प्रदान करने का **वर्णन प्रमुख** है।

वन के मार्ग में तुरत ही महावलशाली ''विराध'' राक्षस का आक्रमण, उसके साथ भयंकर युद्ध का विस्तृत वर्णन और विराधराक्षस के संहार कभी विस्तार से वर्णन किया गया है। इसलिए कवि ने इस पटल का नाम **''विराधब्ध'' पटल रखा।**

इस पटल के मंगलाचारण में ''रामचन्द्र'' की महिमा का बड़ाही मनोरम वर्णन किया गया है। इस मूल पद्य का संस्कृत पद्य में ही अनुवाद लेखक (आद्या चरण झा) द्वारा किया गया है। मूल रूप में निम्नांकित हैं।

यथा :– ''यो नित्यः शाश्वतोऽयं सकल गुणयुतो निर्गुणो भेदहीन :,

यं वेदाः ज्ञान गम्यं निखिभुवनमयं नेतिनेतिब्रुवन्ति

साक्षाद् ब्रह्मात्मकं यं दशरथ तनयं न विदुस्ततत्स्वरूम्

सोऽयं मे हीन-बुद्धौ प्रविशतु कृपया सर्वदा रामचन्द्रः ।

अर्थात् जो नित्य है, शाश्वत है, सर्वगुण युक्त है, जिन्हें चारों वेद ज्ञान के द्वारा ही जानने योग्य सभी भुवनों में व्याप्त कहते हैं। और वेही 'वेद' जिन्हें ''नेति नेति–'अन्त नहीं' 'अन्त नहीं, कहते हैं। जो साक्षात् ब्रह्म स्वरूप हैं उस दशरथ पुत्र राम के स्वरूप को 'वेद' नहीं जान सके वे ''रामचन्द्र'' हमेशा कृपा पूर्वक मेरी छोटी बुद्धि में–नीच बुद्धि में प्रवेश करें।

अत्रि के आश्रम में रात बिता कर उन दोनों के अशीर्वचन प्राप्त कर दूसरे दिन सबेरे दण्डकारण्य नाम के वन में प्रवेश किया। वहाँ सहसा विकराल 'विराध' नामक राक्षस सामने आ गया। उसके भयंकर और कठोर रूप का वर्णन कवि ने चौदह १४ पद्यों में किया है। जिनका सारांश है कि विराध के एक हाथ में भयंकर अद्भुत विचित्र आकार का **''त्रिशूल'' था। उस त्रिशूल में १६ सोलह मतवाले हाथियों के (३२) बत्तीस**

सिंहों के और सोलह (१६) शरभ नाम के विशाल आकार वाला स्वरूप था। शास्त्र में "छः जीभ" और "आठ पैर" **वाले "शरभ"** नाम के जन्तु का वर्णन आया है। यहाँ **कम्बन्** कवि ने कठोर दांत, तेज नख, विशाल सूंढ़ तथा दो पाँख वाले इस जन्तु का विवरण दिया है। इस में तो कोई सन्देह नहीं।

विशेष दृष्टान्त :–महाकवि कालिदास ने अपने **'मेघदूत'** काव्य में **'शरभ'** नाम के जन्तु की चर्चा की है। और वहाँ टीकाकारों ने 'शरभ' को "छजीभ, **आठ पैर** एवं **दूरतक** आकश में **उछलनेबला जन्तु कहा है।**

यथा : ये संरम्भोत्पतन-रभसाः स्वाङ्ग, भङ्गाय तस्मिन्।
मुक्त्वाध्वानं सपदि 'शरभाः लंघयेयुर्भबन्तम्।

यह मेघदूत में –तथा–शब्दकलपद्रुयमें

यथा : अष्टपादूर्ध्वनयन ऊर्ध्वपाद चतुष्टयः।
तं सिंहं हन्तुमागच्छन् मुनेस्तस्य निवेशनम्।।

"इति महाभारतम्"। इस तरह 'शरभ' का वर्णन 'वीभत्स' रस वर्णन का अद्भुत उदाहरण है।

विराध की विकरालता :–इस प्रकार विराध के त्रिशूल का वर्णन भी वाल्मीकि रामायण और अन्य राभकाव्यों में नहीं है। जिसका वर्णन 'कवि कम्बन्' ने किया है। विराध के माथे पर लाल रंग के धुंधराले केश थे। उसके आने की गति से पहाड़ छिन्न-भिन्न हो जाते थे। उसकी छाती पर **"शुङ्ग-बिङ्ग,** नाम की जयमाला थी, उस **माला में आठ साँपों** के नायक के **फण थे** तथा **नवग्रहों की गेंठ लगी थीं।** जब वह चलता था तब कैलाश पर्वत और मेरु पर्वत गेन्द की तरह उछलते दीख पड़ते थे। उसके भयंकर वज्र स्वर से खुद ही पर्वत और वृक्ष धराशायी हो जाते थे। अर्थात् जमीन पर गिर जाते थे। वह विराध मांस को चबाते हुए कठोर शब्द से चीत्कार करने लगा।

रे भाग्यहीन वनवासी मानव, वहीं ठहरो। यह कहकर विराध ने एक हाथ से सीता को उठाकर आकाश की ओर चला। यह देखकर कुपित राम लक्ष्मण ने कहा अरे ठग, कहाँ जाते हो, ठहरो, लौटो। यह सुनकर विराध ने कहा अरे मूर्ख सृष्टिकर्ता ब्रह्मा ने मुझे वरदान दिया है कि तुम्हें कोई कुछ नहीं कर सकता है। यही बहुत है कि मैं केवल इस सुन्दरी को लेकर जा रहा हूँ। और तुम दोनों को छोड़ रहा हूँ। यह सुनकर राम ने धनुष पर धीरे-धीरे हँसते हुए वाण चढ़ाया और भयंकर धनुष का टंकार किया। उस भयंकर आवाज से शङ्कित होकर विराध ने सीता को जमीन पर पटक कर क्रोध से राम के ऊपर भयंकर त्रिशूल फेका जिस त्रिशूल का वर्णन ऊपर की पंक्तियों में किया गया है।

''रामचन्द्र'' के वाण से वह भयंकर त्रिशूल छिन्न-भिन्न हो गया। त्रिशूल को छिन्न-भिन्न होते देखकर विचलित विराध ने एक शाल (सीसम) वृक्ष को उखाड़ कर राम पर प्रहार किया।

विशेष :–भक्तिरस यहाँ कवि कहते हैं कि जो राम ''**ऊँकार'' के स्वरूप ज्ञानियों के ज्ञान, सकल सिद्धिदायक धर्म की स्थापना के लिए और दुष्टों के नाश के लिए क्षीर सागर के (शेषनाग पर शयन) छोड़कर अवतरित हुए हैं। उस विष्णु स्वरूप ''राम'' को मूर्ख विराध एक वृक्ष से मारने के लिए तैयार हुआ।** उसने यह भी नहीं सोचा कि जिसने एक ही वाण से उसके भयंकर त्रिशूल को खाण्डित कर दिया। वह राम कैसे एक वृक्ष से मारे जाएँगे। ''कम्बन् कवि'' रह रह कर **पुनः पुनः 'राम-परमात्मा हैं; जिसका स्मरण दिलाते हुए आगे बढ़ते हैं।**

''राम ने चार वाणों से उसके वृक्ष को काट दिया और बारह वाणों से उसके कन्धे एवं छाती को बेध दिया। व्यथित होकर वह भयंकर राक्षस विराध जमीन पर गिर गया। राम लक्ष्मण ये दोनों उसके दोनों कन्धें पर चढ़ गये। उस समय वह राक्षस पक्षियों में श्रेष्ठ गरुड़ के समान दीख रहा था। वह राक्षस उठकर खड़ा हुआ और चलने लगा। इस स्थिति को देखकर सीता चिन्तित हो गयी। किन्तु यह तो राम का 'नाटक' था। क्योंकि जिस विराध के आतंक से संपूर्ण दण्डकारण्य निष्प्राण की तरह था उसके कन्धों पर चढ़कर राम लक्ष्मण घूम रहे हैं। राम ने कहा, हमें तो दक्षिण की ओर जाना था। क्यों न इसी के कन्धों पर जाया जाय। रास्ते में चलने में क्लेश भी नहीं होगा। लेकिन सीता चिन्तित थी। वह कैसे जायगी। फलतः राम ने उसके दोनों कन्धों को काट दिया। तब उस राक्षस को ज्ञान का उदय हुआ कि यह ''रामचन्द्र'' साक्षात् परब्रह्मस्वरूप हैं। यह जानकर उसने स्तुति की और कहा आप ही आदि पर ब्रह्मस्वरूप परमात्मा हैं। सपूर्ण संसार आप के अधीन है। आपही सभी धर्मों के आधार हैं। मेरा उद्धार कीजिये।

तब राम ने पूछा। यह स्थिति कैसे हुई ? राक्षस ने कहा मैं स्वर्ग में रहने वाला ''तुम्बुरु'' नाम का कुबेर के अधीन गन्धर्व था। एक समय इन्द्र की सभा में प्रख्यात 'नर्तकी रम्भा' नाच रही थी। मेरा मन रम्भा में अनुरक्त हो गया। इसी अपराध से कुबेर ने शाप दिया कि तुम राक्षस-पुत्र हो जाओ तब बारंबार प्रार्थना करने पर कुबेर ने कहा कि जब श्री ''रामचन्द्र'' के चरण का स्पर्श होगा तब तुम पुनः अपने पूर्व रूप को (गन्धर्व रूप को) प्राप्त करोगे। मैं यहाँ ''किलिञ्जवन' नाम के राक्षस का पुत्र हुआ और सब जगह घूम कर जीव जन्तुओं का नाश किया। इस तरह विराध को शाप से मुक्त कर पुनः ''तुम्वरु'' के रूप में यक्ष लोक भेज दिया। इसके बाद सीता लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र 'शरभङ्ग' नाम के ऋषि के आश्रम की ओर चले।

विशेष :–वाल्मीकि के अनुसार विराध के बाप का नाम 'जय'' था और माँ का

नाम ''शतह्रदा था। 'अध्यात्म रामायण के अनुसार विराध ने ही 'शरभङ्ग', ऋषि के आश्रम जाने का परामर्श दिया था।

''शरवङ्गरपिरूपपु नीङ्गम पडलम् (शभङ्गमुक्ति पटल)

इस **पटल में** सीता लक्ष्मण के साथ ''रामचन्द्र'' शरभङ्ग-ऋषि के आश्रम पर सयाकाल आये। यह वर्णन तथा शरभङ्ग का सपत्नीक (स्त्री सहित) अग्नि में प्रवेश कर मोक्ष प्राप्ति का वर्णन प्रमुख है।

सीता 'कुरा' और कोङ्ग नाम के फूलों की कली से अपने केशों को गूंथी हुई थी। शरभङ्ग के आश्रम में ''मराम'' नाम का एक वृक्ष-विशेष था जिससे मधु का सौरभ फैल रहा था। **(दक्षिण भारत में ''मराम'' नामक पुष्प वृक्ष को कुंकुम वृक्ष भी कहते हैं। ज्ञात होता है कि आज-कल मिलने वाला सुगन्धित ''कुकुम'' इसी वृक्ष से उत्पन्न होता है।**

जब श्री ''रामचन्द्र'' वहाँ पहुँचे, उसी समय सहस्त्र नेत्र वाले इन्द्र अपनी पत्नी लक्ष्मी सदृशशची तथा देवाङ्गनाओं के साथ वहाँ आये। इन्द्र एक सौ यज्ञ करने वाले थे इसलिए ब्रह्मा, विष्णु और महेश को छोड़कर सभी देवताओं से वे इन्द्र के वहाँ पहुँचने पर स्वागत सत्कार के बाद वहाँ आने का कारण पूछा। इन्द्र ने उत्तर दिया, आप की दीर्घ-तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्माने आप को स्वर्ग आने का आदेशा दिया है। अतएव अपनी दीर्घ तपस्या से आप ''सत्यलोक'' चलें। वहाँ ब्रह्मा आप का स्वयं स्वागत करेंगे।

मुनि बोले देवेन्द्र, आपके द्वारा कथित यह ''**सत्य लोक**'' प्रशंसा के योग्य नहीं है। हाँ, यह मैंने समझा, मेरा अन्तिम-समय आ गया। हे **महा वैयकरण इन्द्र** आप कृपया इस पर ध्यान दीजिये कि **इसी नाशवान् पद को प्राप्त करने के लिए मेरी इतनी तपस्या थी ?**

विशेष :– प्राचीन ''ऐन्द्र'' नाम के तमिल व्याकरण के रचयिता ''इन्द्रा ही थे। ऐसा ''कवि कम्बन्'' कहते हैं। कम्बन् के मत से **तमिल व्याकरण के रचयिता दो महा वैयाकरण हुए। पहला अगस्त्य और दूसरा 'इन्द्र'।**

मैं तो उस पद को चाहता हूँ जो ''न घटता है, और न बढ़ता है।'' जो शाश्वत है, नित्य है। जिसे **मोक्ष** पद कहते हैं मैं उसी को प्राप्त करूँगा।

जिस समय महर्षि कह रहे थे उसी समय सीता-लक्ष्मण के साथ श्री ''रामचन्द्र'' वहाँ आ गये। आश्रम में कोलाहल होते हुए सुनकर पहले राम अकेले आश्रम के भीतर गये और सीता लक्ष्मण को बाहर ही छोड़ दिया।

एकाएक वहाँ इन्द्र राम के दर्शन कर उनके पैरों पर माथा नवा दिया और कहा

कि हे करुणानिधान हमलोगों की रक्षा के लिए ही आप ने अवतार लिया है। आप देश काल के विभाग से रहित हैं और आपका कोई शत्रु और मित्र नहीं है।'' इस तरह इन्द्र से पूजित होने पर राम ने सीता लक्ष्मण को भी आश्रम में बुला लिया। इसी समय **'शरभङ्ग'** ऋषि आग जलाकर उसमें प्रवेश करने के लिए तैयार थे। राम ने पूछा यह क्या करने के लिए तैयार है ? शरभङ्ग, ने कहा। मेरे पाप और पुण्य दोनों कर्म विनष्ट हो गये, इसलिए आज्ञा दीजिये, मैं अग्नि में प्रवेश कर रहा हूँ।

राम ने पुनः पूछा, जब मैं यहाँ आ गया हूँ तब आप क्यों अग्नि में प्रवेश कर रहे हैं ? महर्षि ने कहा मैंने हजार वर्षों तक तपस्या की। तपस्या के वल से मुझे ज्ञान हुआ। मैं जानता हूँ कि जब **पाप और पुण्य दोनों तुला पर समान होते हैं** तभी परमात्मा के दर्शन होते हैं। वह समय आ गया। **आप ''परमात्मा'' उपस्थित है।**

विशेष :–यहाँ ''कवि कम्बन्'' ने वेदान्त के चरम-सिद्धान्त का इतना सुन्दर उपस्थापन किया है कि कोई भी किसी कवि की लेखनी से ऐसे सिद्धान्त वचन निर्गत देखकर और पढ़कर अवश्य ही मुग्ध हो जायगा।

अतिविशेष :–(अद्वैतवादद सिद्धान्त)–यहाँ थोड़ा सा स्पष्टीकरण इस रूप में किया जा सकता है। **यदि पुण्य अधिक होगा तो स्वर्ग होगा।** उसका निश्चित समय है। वह पूरा होने पर पुनः पृथ्वी पर आना होगा। **जब पाप अधिक होगा तो 'नरक' होगा।** उसका भी निश्चित समय है। वह पूर होने पर फिर पृथ्वी पर आना होगा। **जब 'पाप' रहेगा, न पुण्य रहेगा** तब **'मोक्ष'** होगा। तब परमात्मा के दर्शन होंगे। ''शरभङ्ग'' ऋषि के लिए ठीक वही समय आ गया। यहाँ यदि वे थोड़ा भी विलम्ब करते तो **चाहे कुछ ''पुण्य'' हो जाता या कुछ ''पाप'' हो जाता तो ''मोक्ष'' का मौका (अवसर) नहीं मिलता। इसलिए शरभङ्ग राम के पहुँचते ही पत्नी के साथ अग्नि में प्रवेश कर गये और मुक्त हो गये।**

''महा भक्त कवि कम्बन्'' ने यहाँ वेद, उपनिषद् और गीता के वाक्यों के अनुसार मोक्ष की प्रक्रिया बता दी है।

यथा :– भगवद् गीता वाक्यानुसर :–

''यद् गत्वा न विवर्तन्ते, तद्धाम परमं मम।''

तथा च ''यतो वाचो निवर्तन्ते, अप्राप्य मनसा सह, न स पुनरावर्तते न स पुनरावर्त्ते। '' ''वेदोपनिषद्''।

भगवान् ''रामचन्द्र'' की आज्ञ से पत्नी के साथ 'शाड़्मङ्ग' ऋषि ने आग में प्रवेशकर **''अक्षय-ब्रह्म पद नाम का मेक्ष पद'** प्राप्त। जो पद जन्म जन्मान्तर तपस्या करने पर भी ऋषिगण नहीं प्राप्त कर सकते हैं। उसी पद को शरभङ्ग ने सकल लोक कल्याणकारी

परब्रह्म स्वरूप वेद-वर्णित ''भगवान् रामचन्द्र'' के समक्ष में ही प्राप्त किया। गीता के अनुसार :–''कूटस्थोऽक्षर उच्यते''। यही अविनाशी अक्षरब्रह्म पद ऋषि को मिला।

वाल्मीकि रामायण में शरभङ्ग की पत्नी की चर्चा और पत्नी के साथ अग्नि में प्रवेश की कथा नहीं है। यहाँ ''कम्बन्'' की यह नूतन कथा है।

''अट्टु तियप् पडलम् (अगस्त्य पटल)''

इस पटल में दण्डकारण्य में ही ''राम'' का दश वर्षों तक रहने की नवीन कथा वर्णन और वहाँ से अगस्त्य आश्रम में गमन का वर्णन प्रमुख है।

सकल लोक कल्याण कारक धनुर्धर ''रामचन्द्र'' कोमलाङ्गी ''सीता'' तथा लक्ष्मण के साथ शरभङ्ग ऋषि के गोलोक वासी (मोक्ष प्राप्त) होने के बाद उस आश्रम से चले। वहाँ दण्डकारण्य में ब्रह्मा के रोम (रोयें) से उत्पन्न हजारों तपस्वी-गण ''रामचन्द्र'' को देखकर प्रसन्न हुए ौर उन्होंने अनुभव किया कि मरुभूमि में सुधा (अमृत की धार) बह रही है। राक्षसों से उपद्रव किये गये ऋषि गण ने सांत्वना प्राप्त की। उन लोगों ने अनुभव किया कि राक्षसों के समुद्र में डूबे हुए हम लोगों को 'श्री राम' उद्धार करने के लिए नाव की तरह मिले।

श्री राम ने मुनियों को स्तुति कर नसस्कार पूर्वक पूछा। आप की आज्ञा सुनने को मैं उत्कण्ठित हूँ। वे ऋषि गण बोले। हम लोग राक्षसों से रात दिन पीड़ित होकर धैर्यरहित बलहीन हो चुके हैं। हम लोगों की आप उनसे रक्षा करें औरं हमारा उद्धार करें। राम ने कहा यदि वे राक्षस मेरी शरण में नहीं आते हैं तो दण्डकारण्य की कौन बात, समस्त ब्रह्माण्ड में कोई उनकी रक्षा नहीं कर सकता है।

यद्यपि मेरे पिता चक्रवर्ती सम्राट् दशरथ स्वर्गीय हो गये। सभी मातायें दुःखी हैं। भक्त अनुज भरत शोकित है। तथापि मेरा वन आगमन मेरे पुण्य का फल है। क्योंकि जो गो–**ब्राह्मण और निर्वली की रक्षा करते हैं वे पूज्य हो जाते हैं।** यह सुनकर मुनियों ने कहा। हे प्रभो, यदि आप कुपित हो जायें तो तीनों लोकों की कौन बात करोड़ों लोक आप के सामने नहीं आ सकते हैं। ऐसा 'वेद' का कथन है। हम लोगों को भी वेदों के पढ़ने से यह ज्ञान हुआ। यह सुनकर ''रामचन्द्र'' ने उसी दण्डकारणय में दश वर्षों तक निवास किया। राक्षशों के उपद्रव शान्त हो गये।

विशेष :–दण्डकारण्य में राम ने दस वर्षों तक निवास किया यह इस 'रामायण' में नूतन कथा है। सीता लक्ष्मण के साथ ''रामचन्द्र'' दस वर्षों के बाद दण्डकारण से 'सुतीक्ष्ण' मुनि के आश्रम में चले **(वाल्मीकि रामायण में शरभङ्ग, ऋषि ने ही सुतीक्षण ऋषि के आश्रम में जाने का निर्देश दिया था। यहाँ वैसी कथा नहीं हैं।**

सूर्य के समान तेजस्वी 'सुतीक्ष्ण' ऋषि को नम्र भाव से राम ने प्रणाम किया। सुतीक्ष्ण ने अलौकिक अतिथि ''रामचन्द्र'' का बहुत अधिक सत्कार किया। तब राम बोले। ब्रह्मा के वंश में आप के समान कौन ऐसा अग्रगामी महर्षि हुआ है। जिन्होंने महान् तपस्या की ? कौन मेरे समान भाग्यशाली है। जिसे आप ने दर्शन दिये। मुनि ने उत्तर दिया मेरी तपस्या का फल तो आज ही पूर्ण हो गया। क्योंकि सभी देवताओं और ऋषि से आप ही 'साक्षात्-करणीय' हैं, दर्शनीय हैं। वह आज मेरे लिए वह सम्पन्न हो गया।

राम ने कहा हे मुनि श्रेष्ठ, मुझे 'अगस्त्य' ऋषि के दर्शन की प्रबल उत्कण्ठा है। 'सुतीक्ष्ण' बोले आप वहाँ अवश्य जाँय। आपका सभी मंगल होगा। वे 'अगस्त्य' भी उत्कण्ठा के साथ आप की प्रतीक्षा कर रहै हैं। ऐसा कह कर ऋषि ने ''रामचन्द्र'' को पूर्ण आशीर्वाद देते हुए अगस्त्य आश्रम जाने का मार्ग दिखाया।

सीता लक्ष्मण के साथ भगवान् ''रामचन्द्र'' अगस्त्य आश्रम पर आ गये ।

विशेष :–तमिल-क्षेत्र में ऐसी मान्यता है कि जिविक्रम–भगवान् वामन् ने जैसे तीन पैरों से ही तीनों लोकों को नाप लिया उसी तरह **''तमिल-भाषा के द्वारा ही 'अगस्त्य' ने सभी ज्ञान लोक को माप लिया और जान लिया।** और अपनी तपस्या के बल से ही अगस्त्य ने जान लिया कि **वंदनीय ''रामचन्द्र'' उनके आश्रम में आये हैं।**

अगस्त्य यद्यपि आकार में छोटे थे। किन्तु एक चुल्लू से ही समुद्र को पी गये। जैसे विशाल ''**वट वृक्ष, उसके एक छोटे से बीज में चिपा हुआ है,** उसी तरह लघुकाय (छोटे शरीर) बाले अगस्त्य बड़े महिमाशाली थे। अगस्त्य ने ''आतापी और वातापी'' नाम के दो राक्षसों को मारा। सूर्य चन्द्रमा के मार्ग को रोक कर संसार को कष्ट देने वाले विन्ध्याचल पर्वत पर चढ़कर उसे नाग लोक-पाताल में भेज दिया।

अति विशेष :–कवि कहते हैं कि **परमेश्वर शिव ने जैसे पाणिनि को संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी वैसे ही 'अगस्त्य' को तमिल-व्याकरण की शिक्षा दी ऐसा पुराणों में प्रसिद्ध है। अगस्त्य ने अपनी बुद्धि शक्ति से तमिल-भाषा को व्याकरणों से बांधकर श्रेष्ठ-भाषा के रूप में प्रतिस्थापित किया। यह भी ''कम्बन्'' का विचार है।**

अत्यन्त हर्षित होकर अगस्त्य मन में सोचते हैं कि सकल वेद-शास्त्र पुराणों के अध्ययन–गवेषण से जिस परमात्मा का ज्ञान कठिन है। वही ''परमात्मा रामचन्द्रं'' मेरे सामने मेरी तपस्या के पल के रूप में उपस्थित हैं।

शिष्टाचार के बाद रामचन्द्र ने पूछा। हम लोग कहाँ टहरें कृपया इसका निर्देश दें। मुनि ने कहा आप लोग यहीं रहें। आप लोगों के रहने से राक्षस के नाश होंगे, उनके उपद्रव से देवतागण उद्विग्न हैं। राम कहते हैं राक्षसों के नाश के लिए मैंने प्रतिज्ञा

की है। इस लिए उनके आने के मार्ग में मेरा रहना उचित नहीं होगा। अगस्त्य ने कहा यह आपका विचार अच्छा है। आप कृपया **परात्पर परब्रह्म विष्णु के नजदीक रहने बाले इस अक्षय वाणों से युक्त इस धनुष को लीजिये और यह अक्षय-अखण्ड तलवार भी लिये।**

राम ने नत मस्तक होकर इन वस्तुओं को ग्रहण किया।

अन्त में अगस्त्य ने **'पञ्चवटी'** नाम के स्थान का रास्ता दिखाया और पञ्चवटी के महत्व एवं सौन्दर्य का भी वर्णन किया। राम मुनि की आज्ञा लेकर 'पञ्चवटी' की ओर चले।

''शडायु काङ् पडलम् (जटायु दर्शन पटल)''

इस पटल में अपने पिता महाराज दशरथ के परम मित्र तेजस्वरूप महा बलशाली 'जटायु' से भेंट-परिचय एवं जटायु द्वारा मार्ग दर्शन संरक्षण-वर्णन प्रमुख है।

'अगस्त्य' आश्रम से चलकर सीता लक्ष्मण सहित ''रामचन्द्र'' ने वन, नदी, पर्वत एवं उद्यानों की शोभा देखते हुए गृधराज–**जटायु का** दर्शन किया। जटायु मन्दराचल पर्वत के समान विशालकाय एक श्याम पर्वत के शिखर पर खुले स्थान में रहते थे। सूर्य के समान कान्ति वाले जटायु के शरीर से प्रकाश-किरणें फैल रही थीं। ऐसे प्रकाशपुंज 'जटायु' को ''रामचन्द्र'' ने देखा। ऐसे बलवान् वीर को देखकर ''रामचन्द्र'' सशंकित सोचने लगे कि यह कोई महान् राक्षस है।

'जटायु' ने भी उस धनुर्धारी वीर रामचन्द्र को देखकर मन में चिन्ता की जो यह व्यक्ति तपस्वी नहीं है। किन्तु धनुष-बाण हाथ में लिए हुए जटाजूट धारी कोई वीर है। जटायु सोंचता है। इन्द्र आदि देवताओं को तो प्रतिदिन देखता हूँ, ब्रह्मा और शिव को प्रतिदिन नमस्कार करता हूँ, और कामदेव को भी देख चुका हूँ। यह अनुपम मनुष्यरुधारी कौन है यह ज्ञात नहीं हैं।

यह सोचते हुए जटायु ने स्पष्ट रूप में राम-लक्ष्मण से पूछा। तुम दोनों कौन हो? यह साफ साफ बताओ। राम ने स्पष्ट रूप में कहा–हम दोनों वीरशिरोमणि चक्रवर्ती राजा दशरथ के पुत्र हैं। यह सुनते ही अपने चिरमित्र दशरथ के पुत्रों को देखकर और समझकर 'जटायु' परम प्रसन्न हुए। उन्होंने तुरत जिज्ञासा की। यहाँ क्यों आये हैं? क्या प्रयोजन है? यह रूप कैसे है? रामचन्द्र ने उत्तर दिया-महाराज दशरथ अपनी सत्यवादिता की रक्षा के लिए स्वर्गवासी हो गये। यह सुनते ही चेतनाशून्य होकर जटायु पृथ्वी पर गिर गया। कुछ देर में चेतना प्राप्त करने पर विलाप करते हुए राम को इस प्रकार अपना परिचय देने लगे। उन्होंने कहा -मैं 'अरुण' का पुत्र हूँ। सभी जगह

स्वेच्छानुसार जा सकता हूँ। देवताओं के साथ ही विविध प्राणियों की तरह मेरा भी जन्म हुआ। गृद्धराज सम्पाति का मैं छोटा भाई तथा **दशरथ का प्राणप्रिय मित्र हूँ।**

(विशेष : यहाँ पाँच पद्यों में जटायु की वंशावली का वर्णन है। उनमें ''विनता'' नाम की पत्नी से दक्ष प्रजापति-पुत्र 'काश्यप' से ''अभ्रशकुन्तला'' का विवाह हुआ। उसके गर्भ में **'अरुण'** हुए जिनका मैं पुत्र हूँ। इस तरह विस्तृत रूप में वंशावली का वर्णन है।)

ये जटायु पिता-दशरथ के मित्र हैं, यह जानकर राम-लक्ष्मण दोनों ने उन्हें प्रणाम किया। जटायु बोले मैं महापापी हूँ। मेरे मित्र दशरथ स्वर्ग चले गये। मेरा भी दाह-संस्कार कर दो। यह सुनकर राम ने कहा, पिता तो हमलोगों को अनाथ कर स्वर्ग चले गये। यदि आप भी इस भयंकर वन में हमलोगों को छोड़कर प्राणों को त्याग देंगे तो हम लोगों का सहायक कौन होगा ?

जटायु ने पूछा–तुमको तो राज्य शासन करना था। यहाँ कैसे आ गये ? राम ने कैकेयी के वरदान-कथा से लेकर अयोध्या की सभी घटनाओं का वर्णन कर दिया। यह सुनकर उस कोमलांगी 'सीता' को देखकर जटायु बहुत ही शोकित हुए। तब लक्ष्मण ने रामचन्द्र का विश्वामित्र के साथ जाना, ताड़का बध, मिथिला में शिवधनुर्भंग और सीता के साथ विवाह आदि की समग्र घटनाओं का वर्णन किया।

इन-सभी बातों को सुनकर जटायु बोले मैं तुम्हारी रक्षा करूँगा। तुमलोग गोदावरी के तटपर शान्त और सौन्दर्यमयी 'पञ्चवटी' जाकर ठहरो। तुम लोग पैदल चलो। मैं आकाशमार्ग से तुमलोगों के मस्तकों पर अपनी **पाँखों से छाया करते हुए पञ्चवटी'** तक चलता हूँ। वहाँ आपलोगों के संरक्षण में संलग्न रहूँगा। ऐसा करके रामचन्द्र सीता-लक्ष्मण के साथ 'पञ्चवटी' क्षेत्र में आनन्द के साथ रहने लगे। जटायु लौटकर रात-दिन बड़ी सावधानता से सीता-लक्ष्मण सहित रामचन्द्र की रक्षा में संलग्न हो गये।

विशेष :–यहाँ जटायु से परिचय और उपर्युक्त घटना का वर्णन **''वाल्मीकि रामायण से लेकर** किसी भी भारतीय वाङ्मय के ''रामकाव्य' में नहीं है। यहाँ कवि 'कम्बन्' ने जटायु के चरित्र को उच्चतम शिखर पर पहुँचा दिया है।

''इति जटायु दर्शन पटल।''

''शूरप् पङ्हैप् पडलम् (शूर्पणखा पटल)''

इस पटल में शूर्पणखा का कृत्रिम सौन्दर्य के साथ राम के समीप में आने का वर्णन, शूर्पणखा का लक्ष्मण के द्वारा नाक और स्तन काटने का वर्णन प्रमुख है।

उक्त वर्णनों में कवि ने अपनी काव्य-निर्माण शैली के अनुसार कामिनी के कटि-केश और स्तन का मनोहर वर्णन किया है।

पंञ्चवटी पहुँचने के बाद सीता लक्ष्मण के साथ राम ने प्रवाहित पवित्र **''गोदावरी''** को देखा। वह गोदावरी कवि के काव्य-निर्माण प्रवाह की तरह बहती थी। यह नदी पर्वत, वन, नदी, तट, समुद्र-तट, और मरू प्रदेश से बहती हुई स्वच्छ-शीतल आनन्ददायिनी है। यहाँ कवि ने काव्य निर्माण के प्रवाह को गोदावरी नदी के प्रवाह से **'श्लेष' अलंकार** के द्वारा तुलना की है। यहाँ सीता और राम दोनों ने प्रवाहित गोदावरी की शोभा को देखते हुए दोनों ने दोनों के प्रत्येक अंग की सरसता को देखा।

लक्ष्मण के द्वारा निर्मित पर्णशाला में सीता सहित राम जिस समय पंञ्चवटी परिसर में निवास कर रहे थे उस समय देवताओं से प्रेरित होकर **'शूर्पणखा'** सहसा वहाँ आ गई। वह इस क्षेत्र में अकेली रहती थी। यहीं कवि 'कम्बन'' ने कारण बताये हैं। (१) एक कारण उसकी अपूर्ण काम-वासना थी (२) दूसरा अपने पति के मारने वाले ''रावण'' के प्रति क्रोध था।

विशेष :–शूर्पणखा विधवा थी, जो रावण की बहन थी। किन्तु रावण ने उसके पति को मार दिया था। इस तरह की घटना का **वर्णन वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं है।**

यद्यपि वह कुरुपा राक्षसी थी। किन्तु राम के समीप आने से पहले अपनी राक्षसी-माया से अत्यन्त **सुन्दर रूप धारण** कर वहाँ आई जिससे **'राम'** उस पर तुरत मोहित हो सकें। ऐसा रूप बनाकर वह राम के पास आकर अपने हाव-भाव एवं कटाक्ष दृश्य से देखती हुई मधुर वचन से उनके पास उपस्थित हुई। **उसके विशाल केश पाश में गूथे-हुए फूलों पर भौरे मधुर-स्वर से गुन-गुना रहे थे, जो स्वर कामदेव के दुन्दुभि–नगाड़े की तरह थी।**

उसके आते ही राम ने उसका परिचय पूछा। वह बोली मैं ब्रह्मा के पुत्र पुलस्त्य के पुत्र की पुत्री हूँ। अर्थात मैं **ब्रह्मा की प्रपौत्री हूँ।** तथा त्रिलोकाधि-पति रावण तथा धन पति कुवेर की छोटी बहन हूँ। मेरा नाम **''काम बल्ली''** है, भगवान् महादेव का

वरदान मेरे भाई रावण पर है। मैं तो **ब्रह्मा की प्रपौत्री** राक्षसों के आचरण को छोड़कर **पवित्र काम** में लगी हूँ। राम ने कहा यदि तुम रावण की बहन है तो ऐसी सुन्दरता कैसे है ? शूर्पणखा बोली मैं धर्म का आचरण करने वाली विवेक पूर्ण हो गई। इसलिए भगवान की कृपा से मेरा यह सुन्दर रूप है। राम ने पुनः पूछा, जब तुम त्रिलोक विजयी रावण की छोटी बहन हो तब अकेली इस वन में क्यों रह रही हो ? उसने कहा, मैं नीच आचरण बाले मनुष्य के साथ नहीं रहना चाहती हूँ। इसलिए वन में अकेली रहती हूँ। वह फिर बोली। कुलीन स्त्रियों के लिए अपनी 'काम-वासना' का प्रदर्शन उचित नहीं है। अब आप मेरे मन के भाव को समझ गये होगे। राम उसके निर्लज्ज हाव-भाव को देखकर निश्चय करते हैं, यह माया बिनी **नारी नहीं** है जैसा यह कहती है।

इस क्रम में 'शूर्पणखा' पुनः परिचय देती हुई कहती है। यद्यपि मेरे पिता ब्राह्मण थे किन्तु मेरी माता 'शालककंटकक' नाम के क्षत्रिय-वंश की कन्या थी। इसलिए मैं तुम्हारे साथ विवाह करने योग्य हूँ। यदि मेरा विवाह तुम्हारे साथ हो जाएगा, तो रावण भी देवताओं और ऋषियों के साथ वैर-भाव को छोड़कर सर्वथा तुम्हारे सहायक होंगे। (ऐसी कथा वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं है । यह सर्वथा 'कम्बन्' की कथा-शैली की नूतनता है।

इस वार्तालाप के बीच में ही सीता वहाँ आ गयी और 'शूर्पणखा' को देखकर चकित हो गयी। क्योंकि सीता के समान सुन्दरी भी इस संसार में है, इसलिए धन्य है ब्रह्मा की सृष्टि। वह सोचने लगी, 'सीता' राम के समान सौन्दर्य संसार में कहीं नहीं देखा जा रहा है।

क्रोध-युक्त होकर सीता ने पूछा। यह नारी यहाँ कैसे आई ? राम ने कहा, यह राक्षसी-माया है। इसलिए यहाँ बुद्धि से ही काम करना चाहिए, सीता को ऐसी सान्त्वना देकर शूर्पणखा को कहा, तुम जल्दी यहाँ से चली जाओ । अन्यथा यदि क्रोधी मेरा अनुज लक्ष्मण देख लेगा तो कोई अनहोनी बातें हो सकती हैं। यह कहकर रामचन्द्र सीता के साथ **'पर्णशाला'** में चले गये। इसके बाद लक्ष्मण ने उसकी नाक एवं उसके स्तन को काट दिया। वह हाहाकार करती हुई जमीन पर गिर गयी। फिर उठकर खून से लथपथ शरीर से विलाप करती हुई ''खर'' नाम के अपने भाई–भयंकर राक्षस के पास जाकर इन घटनाओं का वर्णन किया।

विशेष : (स्तन काटने की कथा वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं है। नाक काटने मात्र का उल्लेख है।)

इति शूर्पणखा पटल

"करन् वदैप् पडलम् (खर दूषण-त्रिशिराबध पटल)"

इस पटल में एक नाक कटी हुई शूर्पणखा का अपने भाई भयंकर राक्षस 'खर' के पास आने का वर्णन, राम के साथ खर का भयंकर युद्ध वर्णन एवं खर-बध का वर्णन प्रमुख है।

लक्ष्मण के द्वारा नाक आदि कटी हुई विकृत रूपवाली शूर्पणखा इसी वन के एक भाग में रहने बाले प्रचण्ड राक्षस 'खर' के समीप आकर गिर पड़ी उसकी ऐसी दशा देखकर 'खर' ने पूछा तुम्हारी ऐसी दुर्दशा किसने की ? शूर्पणखा बोली। धनुष वाण धारण करने वाले, धर्म-मार्ग पर चलने वाले, कामदेव के समान सुन्दर कोशल देश वासी दशरथ के दो पुत्र हैं। धर्म मार्ग पर चलने वाले वे दोनों राम लक्ष्मण तुम्हारे महत्व को नहीं मानते हैं। और वे राक्षसों को जड़ मूल से नाश करने के लिए यहाँ उपस्थित हैं। उनके पास एक त्रिभुवन सुन्दरी स्त्री है। जिसको मैं अपने भाई लंकापति रावण के लिए ले जाऊँगी। यही मन में सोचकर वहाँ गयी थी। वहाँ उनके छोटे भाई लक्ष्मण ने मेरी नाक काट ली । इस तरह उसने घटना का झूठे ढ़ंग से वर्णन किया।

वीर-रस-वर्णन—उस राक्षसी के अग्रज महान् प्रचण्ड 'खर' क्रोध की आग से धधकता हुआ रथ लाने को कहा। 'खर' के पर्वताकार चौदह सेनापति को वहाँ आकर बोले हे राक्षस राज, यह कार्य हम पर छोड़ दें। 'खर' ने ऐसा ही किया। वे चौदहों सेनापति पृथ्वी को भी उठा सकते थे। खर ने आज्ञा दी कि उन दोनों मनुष्य पुत्र बालकों को मारकर उनके खून पी लो। और उसकी सुन्दरी स्त्री को लेकर यहाँ आ जाओ। वे सेनापति आज्ञा लेकर चले गये।

उनको आये हुए देखकर 'राम' कहते हैं। हे लक्ष्मण, तुम सीता की रक्षा करो। मैं इन राक्षसों के साथ युद्ध करके उन्हें मारकर शीघ्र आ रहा हूँ। यह कहकर राम ने अपने धनुष की डोरी पर वाण लगाया और उन चौदहों सेनापतियों के आट्ठाइस (२८) हाथों को काट दिया। अस्त्र-शस्त्र से युक्त उन चौदहों के दोनों हाथ जमीन पर गिर गये। इस तरह क्रमशः चौदहों के मस्तकों को काट दिया।

'शूर्पणखा' इस घटना का वर्णन भाई 'खर' के पास जाकर सुनाया। कुद्ध होकर भंयकर गर्जन करते हुए खर ने अपनी सभी सेनाओं को तैयार होकर आने का आदेश दिया। इस तरह 'खर' वहाँ जाने के लिए तैयार हुआ। खर का एक सहयोगी 'दूषण' नाम का राक्षस था। उसने कहा कि पहले मैं ही युद्ध करके उसको मारूँगा। इस तरह विशाल सेना को लेकर युद्ध के लिए दूषण चला।

यहाँ उसकी भीषण सेना का वर्णन कवि ने अनेकानेक पद्यों में किया है। जो वीर और वीभत्स रस से भरा हुआ है। कवि कहते हैं कि 'दूषण' की सेना में **सात पैर वाले, आठ पैर वाले और बीस हाथ वाले कितने राक्षस थे। कुछ विचित्र नाक, दांत, और कान बाले थे।** इन भयंकर आकृति बाले राक्षसों के साथ अकेले ''रामचन्द्र'' ने युद्ध करते हुए उनका नाश कर दिया। यही सारांश है।

तब 'खर' का एक छोटा भाई ''**त्रिशिरा**'' नाम का विचित्र आकार वाला था। इसको तीन माथे थे, इसलिए इसका नाम '**त्रिशिरा**' हुआ। वह भी विशाल सेना के साथ युद्ध करते हुए राम के द्वारा मारा गया। यह सुनकर स्वयं 'खर' अपनी सेनाओं के साथ वहाँ पहुँचा। वह बड़ा मायावी और बलशली थे। इसका विस्तृत वर्णन कवि ने किया है। उसमें 'खर' के द्वारा एक कपट पूर्ण घटना हुई। खर ने युद्ध में वीर ''रामचन्द्र'' का धनुष काट दिया। धनुष वाण से रहित राम को देखकर खर ने निश्चय किया अब तो राम शीघ्र ही मारा जायगा।

राम चिन्ता रहित होकर अपने दोनों हाथों को पीछे कर दिया और वहाँ 'वरुण' ने एक सुरक्षित धनुष राम को दिया। कवि 'कम्बन्' का कहना है कि परशुराम के साथ युद्ध करते हुए उनका धनुष लेकर 'वरुण' को रखने के लिए 'राम' ने दिया था। वही धनुष 'वरुणा' ने अभी राम को लौटाया (ऐसी कथा किसी अन्य रामायण में नहीं है)।

राम ने उसी धनुष से अजेय (नहीं जीतने योग्य) 'खर' नाम के राक्षस को छिन्न-भिन्न करके मार दिया। सभी देवता, मुनि और गणा प्रसन्न हो गये। 'शूर्पणखा' पैदल हीं लंका पहुँचकर रावण से इन घटनाओं का निवेदन किया। इस प्रकार अत्यन्त विस्तृत इन चौदहों सेनापतियों, दूषण, त्रिशिरा तथा 'खर' की विशाल सेनाओं के साथ युद्ध का रोंगटे खड़े करने बाले वर्णनों का अति संक्षिप्त अत्यन्त प्रमुख घटनाओं का ही इस पटल में दिग्दर्शन कराया गया है। यह वर्णन वीभत्स एवं वीर रस से पूर्ण है।

''इति 'खर' बध पटल''

''शूरप् पण्है शूलचचिप पडलम् (शूर्पणखा योजना पटल)''

इस पटल में शूर्पणखा अपने अग्रज महा पराक्रमी रावण के समीप लंका पहुँचकर राम के विरुद्ध एक षड्यन्त्र की योजना बनाई यही कथा प्रमुख है।

शूर्पणखा लंका पहुँची। किन्तु 'खर' दूषण, त्रिशिरा प्रभृति महावलशाली अपने भाइयों का सेना के साथ विनाश की बात भूल गई। उसके मन में केवल 'रामचन्द्र'

का सुन्दर मनोहर रूप था। जिनके साथ विवाह कर वह अपनी वासना की तृप्ति चाह रही थी। यद्यपि उसके अंग छिन्न-भिन्न हो गये थे।

महा महिमा मण्डित मणिमय मण्डप में **रावण** के समीप पहुँचकर पंचवटी की इस घटना को सुनाने के लिए उपस्थित हुई। यहाँ कवि कम्बन् ने **इक्कीस (२१) पद्यों में** रावण की विचित्र अद्भुत शोभा का वर्णन किया है उनमें भी विशेषता यह है कि **वीस (२०) पद्यों में केवल सभा की शोभा की विशेषता है। उन वर्णनों का सारांश निम्नांकित है।**

अद्भुत रस वर्णन : तीनों भुवनों के नायकों के द्वारा दिये गये उपहारों से रावण की सभा-भवन परिपूर्ण देखा जा रहा है। वहाँ रावण की सभा के सदस्य गण सर झुकाकर हाथ जोड़े हुए रावण की आज्ञा की प्रतीक्षा में थे। स्वयं वायुदेव (पवन) सुगन्धित हवा से पंखा डुला रहे थे। वहाँ मधुमय मकरन्द युक्त गिरे फूलों को शोभा देखने योग्य थी। वहाँ 'उर्वशी' नाम की अप्सरा नाच करती हुईं सभा में उपस्थित सभी पार्षदों एवं व्यक्तियों के मनों को अपनी ओर खींच रही थी। ऐसी शोभा से युक्त राज्य-सभा में रावण विराजमान था।

उसी समय कटी नाक वाली और कटे स्तन पर हाथ रखी हुई खुन बहाती 'शूर्पणखा' पहुँच गई। उसे देखकर मेध गर्जन के समान उच्च स्वर से रावण ने पूछा। किसने यह किया है ? शूर्पणखा बोली, दशरथ का पुत्र अद्वितीय सुन्दर प्रशंसनीय गुण वाले पिता की आज्ञा से वन में आकर ठहरे हुए राजकुमार ने (लक्ष्मण ने) मेरे अंगों को काट दिया। विलाप करके इस तरह कहती हुई वह फिर बोली। उस राजकुमार ने सभी सेनाओं के साथ खर-दूषण एवं त्रिशिरा-प्रभृति वीरों को मार दिया है। यह सुनकर सब काँप गये। सभा में स्थित सुन्दरियों के मेघ के समान घुंघराले बाल छितरा गये, और उनकी लम्बी साँसों से उन नारियों के स्तन उछलने लगे।

शूर्पणखा बोली। मेरा एकमात्र अपराध यह था कि उसके साथ एक स्त्री है। जिसका वर्णन करना या चित्रांकन करना कठिन है। उसका नाम 'सीता' है। आपाद-लम्बित (पैर तक लटके हुए) उसके लम्बे बालों की वेणी अत्यन्त आकर्षक है। उसके प्रत्येक अंग का वर्णन करना तो कठिन है। तुम खुद ही उसको देखोगे। मैं तुम्हारे लिए उसको लाने गयी थी। जहाँ मेरी यह दुर्दशा हुई।

यह सुनकर रावण बहुत ही कुपित हुआ। किन्तु सीता की सुन्दरता को सुनकर उसके मन में काम-वासना जग गई। "महादेव" को जीतने बाला रावण कामदेव को जीतने में असमर्थ हो गया। यह भूल गया बहन की नाक और उसके स्तन काटने की बात। शास्त्र-ज्ञान को भूलकर इस पर-स्त्री को प्राप्त करने के लिए उद्बिग्न हो

गया। यहाँ भी रावण की मनोदशा का वर्णन कवि ने अत्यन्त विस्तार से एक सौ (१००) गद्यों में किया है। जिनमें रावण के ऐश्वर्य का मुख्य रूप से चित्रण किया गया है। अन्ततः रावण ने मन्त्रियों के साथ मन्त्रणा करके वायु यान पर चढ़कर तपस्या करते हुए अपने मामा मायावी–मारीच के पास प्रस्थान कर गया।

"इति शूर्पणखा योजना पटल"

"'मारिसन् वदैवप् पडलम् (मारीच बध पटल)''

इस पटल में रावण का मारीच के पास पहुँचकर सीताहरण करने में माया रूप से सहायक होने की कथा तथा राम के द्वारा उसका बध-वर्णन प्रमुख है।

आकाश मार्ग से वायुयान पर तपस्या करते हुए मारीच के समीप रावण पहुँचा। मारीच ने उसे देखकर समुचित सत्कार करके पूछा कि लंकापति आप कष्टदायक इस वन क्षेत्र में क्यों आये ? रावण ने कहा। इस दण्डकारण्य में रहने बाले एक मनुष्य ने तुम्हारी बहन की पुत्री शूर्पणखा की नाक काट ली। इससे बढ़कर मेरे कुल की हीनता क्या हो सकती है ? इस समय मेरा मन विचलित एवं जला हुआ है। मैं उसको मारना नहीं चाहता हूँ। लेकिन उसके साथ एक सुन्दरी स्त्री है। जिसे मैं किसी तरह हरण करना चाहता हूँ। मारीच के कान में रावण का यह वाक्य पिघले हुए लोहा के समान पड़ा। मारीच ने कहा, पाप शान्त हो ! पाप शान्त हो !! धिक्कार है, धिक्कार है, क्यों तुम ऐसा सोचते हो ? निरुक्त सहित 'वेद-विद्या विशारद हे रावण, बड़ी तपस्या करके आप ने जो सम्पत्ति अर्जित की उसकी तुलना नहीं है। उस सम्पत्ति को क्यों तुम ऐसा दुष्कर्म करके नाश करना चाहते हो ? तुम जानते हो कि दूसरे के धन को हरने बाला और परायी स्त्री को हरण करने बालों का नाश हो जाता है। क्या तुम नहीं जानते कि 'अहल्या के जाररूप–इन्द्र कैसे संकट से ग्रस्त हो गये ? अद्वितीय सौन्दर्यशालिनी सैकड़ों सुन्दरी-नारियाँ तुम्हारे पास हैं।

वह राम जिसकी चर्चा तुमने की है वह सामान्य मनुष्य नहीं, किन्तु अतुलनीय वलशाली महान पराक्रमी है। इसलिए विना विचारे हुए कोई भी नीच कर्म नहीं करना चाहिए। रावण को यह बात अच्छी नहीं लगी। रावण ने कहा, हे मारीच, तुम कायर पुरुष हो। यदि तुम्हें जीने की इच्छा है तो मुझे उपदेश देना छोड़कर मेरे अनुकूल काम करो।

मारीच ने सोचा कि मेरा अन्तिम समय आ गया। रावण के भी विनाश का समय आ गया है। मारीच ने पूछा। मुझे क्या करना है ? रावण कहता है; तुम सोने का

मृग बनकर उस परम सुन्दरी सीता को लुभाओ। यह कहकर रावण दूसरे रास्ते से निकल गया।

यद्यपि 'मारीच' पहले दो बार राम के हाथ से किसी तरह बच गया था। पहली बार विश्वामित्र के यज्ञ में और दूसरी बार दो मित्रों के काम के लिए हरिण का रूप धारण कर गया था। जहाँ किसी प्रकार बच गया। वह सोचता है कि अभी फिर सोने की मृग का रूप धारण करके जा रहा हूँ। उस स्वर्ण मृग को देखकर सीता लुभा गई और उसे प्रकड़कर लाने के लिए राम को प्रेरित करने लगी। यह जानकर लक्ष्मण ने कहा। मुक्ता मणि से युक्त यह सोने का हरिण कैसे हो सकता है ? जो इधर-उधर उछल रहा है।

विशेष स्थिति : यह सुनकर राम ने कहा इस संसार में कुछ भी असंभव नहीं है। क्या भरद्वाज के आश्रम में सोना के सात हंस नहीं थे। मैं उस हरिण को लाने जा रहा हूँ। तुम यहाँ सीता की रक्षा करो। यदि यह 'माया' का मृग है तो मेरे वाणों से मरकर ऋषि महर्षियों का संकट-कंटक दूर हो जाएगा। यदि यह ठीक सोने का हरिण होगा तो उसे ले आऊँगा। जिसके साथ 'सीता' खेलेगी। दोनों तरह मेरी सफलता है।

ऐसा कहकर 'राम' उस मृग के पीछे दौड़ते हुए दूर तक चले गये। तब राम ने उसके ऊपर वाण फेंका। वह माया मृग रूपी मारीच हा लक्ष्मण, हा लक्ष्मण, यह वोलते हुए अपने रूप में आ गया। राम ने सहसा समझा कि यह तो वही राक्षस मारीच है, जो विश्वामित्र के यज्ञ में किसी प्रकार से मेरे वाणों से बचकर नहीं मरा। राम दुःखी हुए और शीघ्र ही किसी उपद्रव की आशंका से 'पंचवटी की पर्णशाला' को वापस लौटने लगे। मारीच तो वहीं मर गया।

इति मारीच बध पटल

''शहायु उचिर नीतुत पडलम (सीताहरण पटल जटायु प्राणत्याग पटल)''

इस विस्तृत पटल में पंचवटी पहुँचकर वहाँ की विचित्र स्थिति देखने का वर्णन, रावण का सीता के पास संन्यासी वेष में पहुँचने का वर्णन, पर्णशाला सहित सीताहरण का वर्णन और मार्ग में रावण द्वारा जटायु बध का वर्णन प्रमुख है।

इस पटल में कुछ ऐसी नवीन कथा का वर्णन है जो 'कम्बन्' कवि के स्वभावानुसार सर्वथा नवीन शैली है।

मारीच बध के बाद जबतक रामचन्द्र पंचटी की पर्णशाला पहुँचते हैं उससे पहले ही यहाँ सीता की विचित्र स्थिति हो गयी–क्यों कि मरने के समय मारीच का ''हा लक्ष्मण'' हा लक्ष्मण'' उस भयंकर शब्द को सुनकर सीता मूर्छित हो गयी। होश आनेपर पछताने लगी कि क्यों मैंने स्वर्ण-मृग लाने के लिए प्राण-प्रिय को भेजा। सीता लक्ष्मण

से क्रोध में कहती है। तुम्हारे भाई छल से राक्षस द्वारा आहत हो गये हैं। और तुम यहीं बैठे हो। लक्ष्मण ने उत्तर दिया। तुम केवल स्त्री की सहज बुद्धि से ऐसा कहती हो। तीनों भुवनों में और चौदहों लोकों में शिव-धनुष को तोड़ने वाले रामचन्द्र कौन क्या कर सकता है ? क्या 'राम' से भी बढ़कर कोई वलवान् बीर है।

लक्ष्मण की बात सुनकर अत्यन्त क्रोध युक्त होकर सीता कहती है। मैं इस समय आग में प्रवेश कर प्राण त्याग दूँगी यह छोड़कर कोई मेरे लिए दूसरा उपाय नहीं है। ऐसी कहती हुई, सीता जलती हुई वन की आग में प्रवेश करने के लिए दौड़ी। लक्ष्मण ने उन्हें रोककर कहा आप की आज्ञा से मैं वहाँ जाता हूँ। आप कृपया यहीं रहें। यद्यपि मैं जानता हूँ कि बहुत बड़ी विपत्ति आने वाली है। क्योंकि प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन करके आप भेज रहे हैं। ऐसा कहकर लक्ष्मण वहाँ से चले। चलने के समय कहा कि गिद्ध-राज 'जटायु' हमलोगों के रक्षक हैं। **(यहाँ कवि कल्पना करते हैं कि देवताओं की तपस्या शीघ्र सफल होगी इसलिए लक्ष्मण वहाँ से चले।)**

ये सभी घटनायें गुप्त स्थान में बैठकर रावण देख रहा था। मौका मिलते ही हाथ में त्रिडण्ड लेकर संन्यासी के वेष में पर्णशाला के पास पहुँचा। सीता उसे देखकर मन में सोचती है, यह कोई तपस्वी है। इसका यथा योग्य सम्मान सत्कार करना चाहिए। इसलिए पर्णशाला के भीतर ही पवित्र आसन पर उसे बैठाया, तब उस तपस्वी ने परिचय पूछा। सीता ने कहा 'इक्ष्वाकु' वंश में श्रेष्ठ पिता दशरथ की आज्ञा से अनुज लक्ष्मण एवं मुझ सहित ''रामचन्द्र'' यहाँ रह रहे हैं। तब उस कपट वेश-धारी संन्यासी ने रावण की महिमा सुनाई। (यहाँ कवि ने अनेक पद्यों द्वारा रावण का वर्णन किया है।)

रावण की बात सुनकर सीता ने रामचन्द्र के द्वारा विराध, खर, दूषण और त्रिशिरा प्रभृति वलवान राक्षसों के विनाश की कथा सुनाई। यह सुनकर वह कपटी साधु अपने दश मस्तक वाले रावण का रूप दिखाया और कहा कि त्रिभुवन विजयी रावण हूँ। तुम व्यर्थ चिन्ता मत करो। मेरा मस्तक तुम्हारे पैर पर गिरा है। तुम चौदहों भुवनों पर शासन करोगी। मेरा सभी ऐश्वर्य तुम्हारा ही है। केवल मुझे स्वीकार करो।

रावण की बात सुनकर सीता बोली, हे छल कपट बाले रावण, मुझे छोड़ दो। तब रावण ने विस्तृत फैली हुई भूमि को अपने बल से–एक लोहे की कुदाल से कोड कर समस्त भू-खण्ड सहित सीता युक्त पर्णशाला को उठाकर अपने रथ पर रख दिया। सीता मूर्छित हो गयी । कुछ देर के बाद चेतना प्राप्त करने पर करुण विलाप करती हुई पर्वतों, वृक्षों, हरिण, मयूरों तथा वन देवताओं से प्रार्थना पूर्वक कहने लगी कि इस समाचार को श्री रामचन्द्र के पास शीघ्र भेजो। हे भगवती गोदावरी, तुम मेरी माता के समान हो शीघ्र अपने प्रवाह की गति से इसकी सूचना मेरे पति को दें।

आकाश-मार्ग में मेघ से जाते हुए रावण को जटायु ने पूछा। रे नीच, कहाँ जाते

हो, वहीं ठहरो। वज्र के समान कठोर वह वचन कहा। तुम पुरुषोत्तम राम की पत्नी को लेकर जमीन के रास्ते से या आकाश मार्ग से नहीं जा सकते हो। यह कहकर जटायु ने अपनी विशाल पंखों से रास्ता रोक दिया और सीता से कहा मत डरो। रावण ने तुम्हारा स्पर्श नहीं किया है। विशाल भूमि-खण्ड सहित तुमको उठाकर रथ पर उसने रखा है। इसलिए तुम सर्वथा पवित्र एवं निर्दुष्ट हो।

अति-विशेष : (भूमि-खण्ड सहित सीता को उठाने की कथा केवल इसी रामायण में है। अन्य किसी रामायण में रावण से सीता का स्पर्श नहीं होने की कथा नहीं देखी गयी है।)

जटायु बोला। हे रावण तुम परिवार के साथ नष्ट हो गये। अगर अभी भी सीता को छोड़ दोगे तो तुम्हारी रक्षा हो सकती है। रावण ने कहा, अरे गिद्ध मेरे रास्ते से हट जाओ। नहीं तो तुम्हारी हत्या कर दूँगा। इस तरह जटायु–रावण के बीच भयंकर रोमाञ्चकारी युद्ध हुआ। जब रावण जटायु को अपने बल से नहीं जीत सका तब भगवान् शिव के द्वारा प्राप्त अमोघ (नहीं निष्फल होने वाला) ''चन्द्रहास' नाम की तलबार से जटायु की पांखों को काट दिया। क्योंकि महादेव का वरदान था। इस चन्द्रहास से किसी का भी शिर और अंग काटे जा सकते हैं। ऐसा करके रावण पुनः भूमि सहित सीता को उठाकर आकाश मार्ग से चला गया। और लंका आकर अशोक वाटिका में शिंशपा नाम के वृक्ष के नीचे सीता को रख दिया और वहाँ राक्षसियों का पहरा (संरक्षण) बैठा दिया। इधर मरणासन्न जटायु पर देवताओं ने आकाश से फूल की वर्षा की।

यहाँ तो यह घटना हुई। यहाँ 'पञ्चवटी' पहुँचकर लक्ष्मण सहित रामचन्द्र सीता को तथा भूमि सहित पर्णशाला को नहीं देखकर व्याकुल हो गये। लक्ष्मण ने सीता को छोड़कर राम की खोज में कैसे चले इन सभी पूर्व्र घटनाओं का विवरण सुनाया। तब दोनों ने विचार किया। अव यहाँ विलम्ब करने से कोई लाभ नहीं है। आगे चलकर सीता की खोज की जाय। यह तो स्पष्ट दीख रहा है कि इधर-उधर रथ चक्र के चिन्ह हैं और शत्रु भूमि सहित सीता को ले गया। ऐसा सोचकर ये दोनों भाई वहाँ से चले।

कुछ आगे जाकर मरणासन्न 'जटायु' को देखकर वहाँ पहुँचे । जटायु ने विस्तार से सभी बातें कही। यह भी कहा कि रावण ने सीता का हरण कर दक्षिण दिशा की ओर गया । इतना कहकर जटायु निष्प्राण हो गया।

विशेष : यहाँ कवि 'कम्बन्' कहते हैं जटायु **परात्पर–परब्रह्म स्वरूप परमेश्वर रामचन्द्र को देखते हुए और स्मरण करते हुए अपने प्राणों का परित्याग कर परम-पद–वैकुण्ठ को प्राप्त किया** जो पद मोक्ष चाहने बाले ऋषियों के लिए भी दुर्लभ है।

जटायु के वियोग में रामलक्ष्मण बहुत रोये। पिता के समान् 'जटायु' का दाह संस्कार आदि विधिवत करना चाहिए यह निश्चय करके अगुरू, चन्दन आदि की लकड़ी से दोनों भाइयों ने चिता बनाई। उस पर फूल बिखेर दिये। अपने हाथों से स्वच्छ जल से जटायु के शरीर को स्वंय रामचन्द्र ने स्नान कराया और अपने हाथों से चिता पर रखा। वहाँ **अरणि–मन्थन से आग** को प्रज्वलित कर रामचन्द्र ने पितृ संस्कार किया और जटायु को तिलाञ्जलि दिया। इस तरह जब रामचन्द्र जटायु के संस्कार से निवृत्त हुए तब सूर्यास्त हुआ। यहाँ यह समझा जायेगा कि सूर्य जटायु के सम्बन्धी थे। इसलिए उन्होंने भी–सूर्य ने भी रामचन्द्र द्वारा जटायु के संस्कार में भाग लिया।

''इति सीता हरण पटल और जटायु प्राण' त्याग पटल''

''अयो मुहिप पडलम (अयोमुखी पटल''

इस पटल में सीता की खेज में जाते हुआ राम लक्ष्मन का 'अयोमुखी' नाम की एक भयंकर राक्षसी से भेंट का वर्णन प्रमुख है।

जटायु के संस्कार के बाद राम लक्ष्मण पञ्चवटी से चले। रास्ते में **'अरुण'** शिखर से युक्त श्यामल पर्वत के समीप ठहरे, जहाँ आकाश अन्धकार से पूर्ण थां। रात में राम लक्ष्मण ने जाग कर ही समय बिताया। राम के लिए सीता का वियोग अत्यन्त दारुण था। उसी समय आकाश में चन्द्रमा का उदय हुआ। राम के मन में भ्रम हो रहा था कि सुकेशी सीता आकाश में है। क्योंकि उन्हें चन्द्रमा सीता के मुख से समान तथा काले मेघ सीता के विशाल केश-पाश की तरह समझ में आया। उस पर्वत के पास शीतल मन्द सुगन्ध युक्त हवा वह रही थी, सर्पिणी की तरह राम के शरीर पर जो घूम रही थी।

विशेष : यहाँ पचीस (२५) पद्यों में शीतल मधुर मलय पवन का वर्णन कवि ने 'टङ् तमिल टङ्न्' इस शब्द से वर्णन किया है। तमिल भाषा में तमिल शब्द का अर्थ 'मधुर' होता है। परिणामतः तमिल क्षेत्र का अर्थ **मधुर भाग और तमिल भाषा का अर्थ ''मधुर-भाषा''** है।

इस तरह सीता से वियुक्त राम मन में सोचते हैं। कैसे राक्षसों का नाश होगा? कैसे धर्म की रक्षा होगी ? कैसे मैंने क्षीर सागर को छोड़कर अवतार लिया, इत्यादि। विविध चिन्ताओं में मग्न राम ने रात बिता दी।

यह तो स्वाभाविक है कि विरहिणियों का मन प्रियतमा का स्मरण कर व्यथित होता है। इसलिए राम सीता के केश-पाशों को स्मरण करते हैं, स्तन का स्मरण करते हैं, और प्रेम प्रसंग के आलिङ्गन का स्मरण करते हैं। इसी समय लक्ष्मण ने कहा। सीता के अन्वेषण के बिना हमलोगों का यहाँ रहना व्यर्थ है। यहाँ से चलना चाहिए। ऐसा

विचार कर ये दोनों चले। मार्ग में एक स्फटिक शिला पर बैठे जो एक उपवन में थी। उसपर चन्द्रमा की किरणें फैल रही थीं, और पक्षी गण मधुर स्वर में गा रहे थे।

अति-विशेष : तमिल भाषा में संस्कृत की तरह संगीत विद्या के सात स्वर होते हैं जिनके नाम क्रमशः ये हैं। (१) इलि (२) कुरल (३) तुत्तम् (४) कैकिलै (५) कुलैः (६) विलारि (७) तारम्। संस्कृत में सातों स्वरों के ये नाम हैं।

(क) निषादः (ख) ऋषभः (ग) गान्धारः, (घ) षड्ज, (ङ) मध्यम, (च) धैवतः (छ) तन्त्रीकण्ठोत्थितः।

इधर रामचन्द्र को प्यास लगी; लक्ष्मण को जल लाने को भेजा। लक्ष्मण दूर दूर तक गये कहीं पानी नहीं मिला। इसी बीच अयोमुखी नाम की राक्षसी भयंकर स्वरूप वाली मिली जो सर्पिणी के समान थी। सर्पिणी तो मन्त्र और औषधि के द्वारा वश में होती है किन्तु यह अयोमुखी-सर्पिणी मन्त्र और औषधि के वश में नहीं थी। वह राक्षसी लक्ष्मण के साथ अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए वहाँ आयी थी। जिसके भीषण स्वरूप का वर्णन कवि ने सात (७) पद्यों में किया है। लक्ष्मण ने समझा यह भी 'शूर्पणखा की तरह ही राक्षसी है। राक्षसी बोली। मैं तुम्हारे साथ सम्भोग करने आई हूँ। मेरे स्तन का किसी ने स्पर्श नहीं किया है। किसी पुरुष ने मेरे साथ सम्भोग नहीं किया है। तुम मेरी काम-वासना की तृप्ति कर मुझे प्राणदान दो। यदि तुम ऐसा करोगे तो तुरत मैं गंगाजल ले आऊँगी और प्यास से व्याकुल तुम्हारे भाई शान्त-तृप्त हो जायगे। ऐसा कहती हुई वह राक्षसी लक्ष्मण को लेकर भाग गयी। **(भयानक रस में संभोगशृंगार रस)**

विरह-वर्णन के उत्ताप की चरम सीमा का वर्णन : यहाँ प्यास से व्याकुल राम लक्ष्मण को नहीं आते देखकर बहुत चिन्तित हुए। राम सोचते हैं। मेरे वंश के प्रख्यात पूर्वज माहाराज मान्धाता से लेकर दशरथ पर्यन्त ने जिस परम्परा की रक्षा की उसका मैंने परित्याग कर वन आ गया। सभी संबंधी छूट गये। प्राण-प्रिया–पत्नी का हरण हो गया, एक तुम्हीं (लक्ष्मण सहायक हो जो कहाँ गये।) यह मैं नहीं जान रहा हूँ। विपत्ति अकेले नहीं आती, अनेकानेक विपत्तियों के साथ आती है।

ऐसा सोचते हुए रामचन्द्र **'आत्महत्या'** करने के लिए तैयार हुए। तभी सहसा लक्ष्मण उस अयोमुखी राक्षसी के नाक, कान और स्तन काट कर वहाँ पहुँच गये। राम उन्हें देखकर बछड़े के बिना रंभाती हुई गाय जैसे बछड़े को देखकर प्रसन्न होती है उसी तरह राम प्रसन्न हुए। राम के पूछने पर लक्ष्मण ने सभी घटनाओं का विवरण सुनाया। राम ने उसी स्फटिक शिला पर फूल पत्तियों को विछाकर करवट बदलते हुए सीता के ध्यान में ही रात बिता दी। वे कभी सोचते हैं, ये उसके लम्बे काले-काले

विशाल केश हैं। अभी मुझे उसका आलिङ्गन करना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है। फिर नये खिले हुए मधु युक्त कमल के समान सीता के लाल-लाल अधर (ओठ) का अमृत पान करूँ। किन्तु ये भी भ्रम पूर्ण स्वप्न के अनुभव जैसे थे।

विशेष : यहाँ कवि 'कम्बन्' ने महाकवि 'भवभूति' के उत्तर रामचरित में छाया रूप में सीता-दर्शन के समान ही वर्णन किया है।

यहाँ यह भी जानने योग्य है कि बाल्मीकि रामायण के अरण्य काण्ड–उनहत्तर (६९) सर्ग में 'अयोमुखी' राक्षसी का सभी विस्तृत वर्णन आया। लेकिन रामचन्द्र के **''आत्महत्या''** के लिए उद्यत होने की बात वाल्मीकि रामायण आदि में कहीं नहीं है। यह 'कम्बन्' की नूतन कथा है।

''इति अयोमुखी पटल''

''कम्बन्दन् वदैप् पडलय (कवन्ध वध पटल)''

इस पटल में सीता की खोज में जाते हुए राम लक्ष्मण को कबन्ध नाम के भयंकर राक्षस की भेंट-कथा और उसके बध का वर्णन प्रमुख है।

सुबह हो गयी। राम लक्ष्मण सीता की खोज में आगे बढ़े और कबन्ध नाम के वन में पहुँच गये। वहाँ **'कबन्ध'** नाम का एक राक्षस एक ही जगह बैठकर अपने अत्यन्त विशाल लम्बी दोनों बाहों से सभी लोगों को खींच कर पकड़ लेता था, जो उस रास्ते से गुजरते थे। राम लक्ष्मण भी उस कबन्ध राक्षस की बाँहों में आ गये। मेरु पर्वत के समान विशाल कबन्ध के समीप पहुँचकर लक्ष्मण ने कहा यह तो विशाल–प्रेत है। राम ने कहा हे अनुज लक्ष्मण, तुम यहाँ से जाओ। मैं जी कर क्या क़रूँगा। प्राणप्रिया सीता हर ली गयी। पिता तुल्य जटायु भी मर गये। ऐसी स्थिति में निन्दा और अपवाद युक्त मेरा जीवन व्यर्थ है। मैं आज इसी राक्षस का माँस पूर्ण भोजन (मांसाहार) बनूँगा। **(वाल्मीकिरामायण में ऐसी कथा नहीं है।)**

अतिविशेषः यह सुनकर लक्ष्मण बोले। हे मानव रूप धारी अग्रज, क्या यह कहना आपके लिए शोभन है ? क्या ऐसा करके आप की कीर्ति स्थायी होगी या लुप्त हो जायेगी ? वन चलने के समय मेरी माता सुमित्रा ने कहा था कि निरन्तर राम की आज्ञा में रहोगे। यदि मरने की स्थिति हो तो पहले तुम ही मृत्यु का वरण करोगे। यह कहकर लक्ष्मण पुनः कहने लगे।

अतिः गंभीर : (क) क्या आप ''परात्पर–परब्रह्म स्वरूप परमात्मा **'राम'** नहीं हैं''। क्या इस वनवासी प्रेत से मारे जाने पर **''आप मर सकेंगे''**? जो अज, **नित्य, शाश्वत, पुराण पुरुष हैं**''–ऐसे आपके इस कथन का क्या अर्थ है ?

(ख) यहाँ लक्ष्मण की उपर्युक्त दोनों उक्तियाँ अत्यन्त गंभीर और श्लाघ्य (प्रशंसनीय) है। लक्ष्मण एक वाक्य से जहाँ मनुष्य रूप धारी रामचन्द्र को कर्त्तव्य का स्मरण दिला रहे हैं, वहीं दूसरे वाक्य से राम के "**परात्पर-ब्रह्म स्वरुप**" होने का स्मरण दिलाते हैं। यहाँ का यह **वर्णन अत्यन्त गोपनीय एवं दार्शिनिक रहस्य पूर्ण है।**

यह सुनकर रामचन्द्र ने कबन्ध के दोनों हाथों को अपनी तलवार से काट दिये। **कबन्ध** सर्वथा मुक्त-होकर दिव्य रुप में प्रकट हुआ और बोला। हे मोक्ष के स्वामी भगवान्, संसार के महा प्रपञ्च को आप अपने भीतर रखते हैं। आप ही आदि सृष्टि कर्त्ता ब्रह्मा हैं। अनादि पुरुष हैं, ज्योतियों के पुंञ्ज हैं, और सभी वेदों के शाश्वत रुप भी आप ही हैं। इससे अधिक मैं नहीं कह सकता क्योंकि उससे आप के अवतार का रहस्य सभी समझ जायेंगे।

यह कहकर वह कबन्ध ऋष्यमूक पर्वत के मार्ग को दिखाते हुए तथा सुग्रीव के साथ मैत्री करने का संकेत करते हुए अपने दिव्य-शरीर के साथ स्वर्ग चला गया। राम लक्ष्मण कबन्ध के द्वारार दिखाये गये रास्ते से दक्षिण दिशा की ओर चले। रात हो गयी। दोनों भाई 'मातंग-ऋषि' आश्रम के पर्वत पर आकर ठहर गये।

"इति कबन्ध बध पटल"

"शबिर पिरप्पु नीङ्गु पडलम् (शबरी जन्मविमोचन पटल)"

इस पटल में **'मातंग-आश्रम'** से "**शबरी**" के आश्रम तक पहुँचना तथा शबरी की मुख्य कथा का वर्णन है।

मातंग ऋषि के आश्रम से 'शबरी' के आश्रम की ओर चले जो आश्रम कल्प-वृक्ष के समान था। जहाँ सब सुख ही सुख था। कोई दुःख नहीं था। वहाँ चिर दिनों से राम का ध्यान करती हुई तपस्या में रत शबरी रहती थी। रामचन्द्र ने आकर कुशलादि पूछा। शबरी की आँखों से आश्रु-धार बहने लगी। उसने स्तुति की, और माया-जाल कट गये। आप के लिए इन फलों को एकत्र कर मैंने रखे हैं। उन्हें कृपया लीजिये।

मुझे पहले से ही ज्ञात था। आप यहाँ आयेंगे। मैं आप की प्रतीक्षा में ही थी। मेरे पुण्य का फल प्राप्त हुआ। राम ने कहा। हे माँ, मेरी भी परिश्रम जन्य थकावट दूर हो गयी। दोनों भाई उस दिन वहीं ठहर गये। और शबरी के दिये हुए फलों को आदर और स्नेह से खाये (यहाँ शबरी के जूठे बैर फल की चर्चा नहीं है)। शबरी रामचन्द्र को सुग्रीव का निवास स्थान और उन्हें **'ऋष्यमूक'** पर्वत पर जाने का मार्ग दिखाया। राम ने माँ के समान शबरी के उपदेश को इस तरह सुना जैसे कोई **ज्ञानी गुरु से मोक्ष का उपदेश सुनता है।**

शबरी अपनी योग-शक्ति से शरीर छोड़कर "**गोलर्क**" नाम के **मोक्ष पद** को प्राप्त कर गयी। राम लक्ष्मण भी शबरी के बताये गये पथ से नदी, पर्वत आदि को पार करते हुए पवित्र पम्पासरोवर के तट पर आ गये। यह पम्पासरोवर प्रति दिन अपने जल से स्नान द्वारा एवं सिञ्चन द्वारा अंसख्य लोगों के पाप को धोती हुई बहती है। इसलिए इस **'पम्पासरोवर'** को **साकार 'पुण्यसर** (पवित्र नदी) कहा जाता है। यह पवित्र पम्पासरोवर दक्षिण भारत के वार्तमान **कार्णाटक-राज्य** में महान् तीर्थ के रूप में विद्यमान है।

"इति शबरी पिरप्पु नीङ जन्मविमोचन पटल"

"इति अरण्य काण्डम्"

किष्किन्धा-काण्डम्

''पमथैप पडलम् (पम्पा पटल'')

इस काण्ड के इस पटल में लक्ष्मण के साथ ''रामचन्द्र'' पंञ्चवटी क्षेत्र से पवित्र पम्पा-सरोवर के तटपर पहुँचने का वर्णन और पम्पासरोवर की अपूर्व शोभा का वर्णन प्रमुख है।

सबसे पहले महाकवि ''कम्बर' ने अपने मंङ्गला-चरण में कहा है कि ''ब्रह्म स्वरूप ज्ञान गम्य, सत्य, रज एवं तमोगुण युक्त ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश के आत्म-रुप श्री रामचन्द्र अवतार लेकर **'लोक-मंङ्गल'** के लिए संलग्न हैं। ऐसे मङ्गलमूर्त्ति-राम सदा स्मरणीय एवं वन्दनीय हैं। **(कवि चक्रवर्त्ती कम्बन् प्रत्येक कुछ क्षणों के बाद पुनः पुनः याद दिलाते हैं कि 'राम' साक्षात् परात्पर–परब्रह्म हैं।)**

शोक से व्याकुल रामचन्द्र पम्पासरोवर पर पहुँचकर उसकी मनोहर शोभा को देखते हैं। भौंरों के समूह से गूंजता हुआ मधुमय कमल फूल से युक्त स्फटिक के समान श्वेत यह सरोवर सुशोभित है। यहाँ सैकड़ों मणि माणिक्य आदि अपने तेज को फैला रहे हैं। मालूम पड़ता है कि यह सरोवर विश्वामित्र के द्वारा नयी सृष्टि के निर्माण के क्रम में अभिनव समुद्र की तरह दीख रहा है। इस सरोवर के बीच में हंस से युक्त लाल कमल खिले हुए हैं। कवि की कल्पना है कि जैसे **''लाल कमल रूपी–अग्नि में श्वेत हंस प्रवेश करने के लिए तैयार हों।''**

विशेष–यहाँ कवि-कम्बन् अपनी असाधरण प्रतिभा से कहते हैं कि **''ये हंस राम को विशाल केश वाली सीता का पता नहीं दे सकने के कारण लज्जा से आग में प्रवेश कर रहैं हैं''। (उत्प्रेक्षा अलंकार का यह विचित्र उदाहरण है।)**

इस नदी के जल को पीकर लोक वैसे ही मतवाले हो जाते हैं, जैसे नारियों के विम्ब के समान अधर का पान कर मतवाले हों। यहाँ हंसों के जोड़े पस्पर आलिङ्गन कर रहे हैं। विभिंन्न प्रकार के पक्षी गण यहाँ आकर निवास करते हैं। अस्फुटित मधुर शब्दों से ध्वनि करते हैं।

लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र यहाँ आकर अत्यन्त द्रवित होकर विलाप करते हुए कहते हैं कि मेरा मन व्रण (घाव) से पीड़ित की तरह है। व्रण में कुछ शीतलता का अनुभव करते हुए मयूर से कहते हैं कि आज तुम आनन्द के साथ नाच रहे हो। लेकिन इससे

पहले **सीता के विशाल केश-पाश को देखकर तुम भाग गये थे**। हे नील कमल, सीता की आँखों के समान तुम्हारे रुप को देखकर मेरा हृदय विदीर्ण हो रहा है। (करुण रस के परिपाक में शृंङ्गार रस के समन्वय का चमत्कार पूर्ण वर्णन।)

इस प्रकार विलाप करते हुए रामचन्द्र ने उस पम्पासरोवर में स्नान किया। जहाँ स्नान करने से उनकी विरह-ज्वाला कुछ अंश में शान्त हुई। साक्षात् विष्णु के अवतार भी राम ने **वैदिक रीति** से वहाँ स्नान करके नारायण की पूजा अर्चना की तथा उसी सरोवर के तट के समीप स्थित एक उपवन में विश्राम किया। यद्यपि सीता से वियुक्त रामचन्द्र ने अर्ध-निद्रावस्था में ही रात बिता दी। सबेरे उठकर शीघ्र ही सीता की खोज में लक्ष्मण के साथ वहाँ से चल दिये।

''इति पम्पा पटल''

''अनुमप् पडलम् (हनुमत् पटल)

इस पटल में लक्ष्मण सहित राम शबरी के द्वारा दिखाये गये रास्ते से ''**ऋष्यमूक**'' पर्वत की तरफ जाने का वर्णन एवं हनुमान से परिचय का वर्णन प्रमुख है।

राम लक्ष्मण **शवरी** के द्वारा दिखाये गये संकेतानुसार '**ऋष्यमूक**' पर्वत पर जल्दी से बिना किसी प्रयास के प्रस्थान कर गये। जिस पर्वत पर बाली से डरा हुआ सुग्रीव निवास करता था। वहाँ राम को आते देखकर उन्हें शत्रु ही समझकर वहाँ से भागने के लिए तैयार हुआ और वायुपुत्र हनुमान से कहने लगा।

नील पर्वत के आकार के समान धनुषधारी इस व्यक्ति को देखो। यह अवश्य ही बाली से प्रेरित होकर यहाँ आ रहा है। यह कहकर सुग्रीव पर्वत की गुफा में घुस गया। अन्य वानर गण भी डर से व्याकुल हो गये तब **महा-ज्ञानी महादेव के समान जटा धारी हनुमान् आश्वासन** देते हुए बोले। आप लोग यहीं ठहरें मैं सब कुछ पता लगाकर आता हूँ।

इसके बाद अग्नि पुत्र हनुमान् ब्रह्मचारी का वेश धारण कर राम के समीप आकर मन में सोचते हैं कि तपस्वी वेश धारी ये धनुधारी हैं। इसलिए मनमें सन्देह हो रहा है कि ये त्रिदेव नहीं हैं। क्योंकि ये दो हैं। यहाँ क्यों आये हैं। मुखाकृति से चिन्तित दीखते हैं' और स्वभाव से सरल एवं क्रोध रहित हैं तथा उनके अंग कोमल हैं। हनुमान ने पुनः मन में सोचा कि दैहिक, दैविक और भौतिक इन तीनों तापों को नाश करने बाले ये कोई देवता के तुल्य हैं। इसी बीच राम लक्ष्मण वहाँ आ गये। हनुमान ने उन्हें प्रणाम कर यहाँ आने का कारण पूछा। उससे पहले भी हनुमान अपना परिचय देते हुए कहते हैं कि मैं **अञ्जना** के गर्भ से उत्पन्न **पुत्र हनुमान** हूँ।

इस पर्वत पर सूर्य के पुत्र **सुग्रीव** निवास करते हैं। जिनका मैं आज्ञाकारी सेबक हूँ। आप के आने से सुग्रीव व्याकुल हैं। इसलिए आप के सम्बन्ध में जिज्ञासा के लिए यहाँ उपस्थित हूँ। राम ने लक्ष्मण से कहा। यह ब्रह्मचारी नहीं है। यह कोई पराक्रमी महान व्यक्ति है। तब हनुमान से बोले। वह वानरों के राजा कहाँ है, उनको दिखाओ और उनसे परिचय कराओ। हनुमान् बोले। यह तो सुग्रीव का भाग्य है कि आप उनके दर्शन देने के लिए खुद उपस्थित हैं। सूर्य पुत्र-सुग्रीव, इन्द्र-पुत्र निर्दय बालि से उपद्रव के कारण परेशान हैं। सब को अभय देने बाले आप का परिचय किस रुप में कहूँगा। यह यह मेरी विनम्र जिज्ञासा है।

तव लक्ष्मण ने कहा। कोशल देश के अयोध्या के चक्रवर्त्ती सम्राट् दशरथ के ज्येष्ठ पुत्र ये श्री रामचन्द्र हैं। जो माता की आज्ञा से अपना राज्य अपने छोटे भाई की देकर वन आये हैं। मैं उनका छोटा हूँ। रामचन्द्र की पत्नी **(सीता)** को छल से रावण हर के ले गया है। यही हमारी संक्षिप्त कथा है।

यह सुनते ही हनुमान रामचन्द्र के चरणों पर गिर गये। तुरत ही उन्हें उठाकर बोले। हे **वेद-शास्त्र में निपुण ब्राह्मण,** क्यों ऐसा करते हैं ? मैं तो **क्षत्रिय** हूँ , क्षत्रिय के पैरों पर **'ब्राह्मण' का नमन सर्वथा शास्त्र से विरूद्ध** है। तब हनुमान ने कहा हे कमल-नयन भगवान् रामचन्द्र यह व्यक्ति भी (मैं भी) वानर के कुल में उत्पन्न हूँ। जिसने **सूर्य से व्याकरण शास्त्र का अध्ययन किया** है। कृपया आज्ञा दीजिये, तुरत ही मैं सूर्य-पुत्र सुग्रीव को आपकी शरण में ला रहा हूँ। ऐसा कहकर हनुमान वहाँ से चल दिये।

''इति हनुमत् पटल''

''नट्र् पुप् पडलम् (मैत्री पटल)''

इस पटल में हनुमान के द्वारा सुग्रीव के साथ रामचन्द्र की मैत्री का वर्णन प्रमुख है।

महादेव के समान नृत्य करते हुए हनुमान् सूर्य-पुत्र सुग्रीव की समीप जाकर बोले। इस पृथ्वी का भार हरण करने के लिए अवतार ग्रहण करने वाले **'श्री 'रामचन्द्र'** उपस्थित हैं। जों चक्रवर्त्ती राजा दशरथ के बुद्धिमान' सुन्दर न्याय करने वाले और दयाशील हैं। ये रामचन्द्र महान् यशस्वी विश्वामित्र से शिक्षित होकर उनसे प्राप्त दिव्य अस्त्रों को धारण करने बाले हैं।

उन्होंने ही महाराक्षसी **'ताड़का'** का बध किया और अत्याचारी **'सुबाहु'** को यमलोक भेज दिया। पत्थर के रूप में स्थित गौतम की पत्नी **'अहल्या'** का **अपने पैरों की धूलि से उद्धार किया।** इन्होंने शिव धनुष को तोड़कर **'सीता'** के साथ विवाह किया। ये

ही **मार्यादा पुरुषोप्तम ''राम'** पिता से प्राप्त राज्य को अपनी सौतेली माँ की आज्ञा से छोटे के भाई भरत को देकर पत्नी के साथ वन के लिए प्रस्थान कर गये।

इन्होंने ही **महापराक्रमी परशुराम के अभिमान का** नाश किया। और **खर-दूषण-त्रिशिरा** आदि राक्षसों का संहार किया। रावण के द्वारा भेजा गया माया-मृग रूप धारी **'मारीच'** का बध किया। वे ही रामचन्द्र **'शवरी'** के दिखाये हुए रास्ते से आप के पास आ गये हैं। इन्होंने **'शबरी'** को मोक्ष पद पर पहुँचा दिया। और भयंकर **'कवन्ध'** राक्षस को देव लोक भेज दिया।

यह सब विवरण हनुमान से सुनकर सुग्रीव 'रामचन्द्र' की शरण में आया। और उनके पैरों पर अपने को समर्पित कर दिया। दोनों में मैत्री हो गयी। राम और सुग्रीव की मैत्री वैसे ही देखी गयी जैसे पहले की गई **तपस्या का फल**-तथा तत्काल किये गये **उपाय** दोनों मिले हों।

विशेषः—यहाँ संकेत है कि सुग्रीव की तपस्या के **फलस्वरुप ''राम''** थे तथा हनुमान् के द्वारा किये गये **प्रयास-स्वरूप सुग्रीव** थे।

सुग्रीव ने अपनी सभी घटनाओ का वर्णन किया कि अपने बड़े भाई बालि द्वारा कैसे निकाले गये। सभी बातों को समझकर राम ने प्रतिज्ञा की। तुम्हारे शत्रु बालि को मारकर तुम को उस राज्य पर स्थापित करूँगा। **''राज्य तो मैंने अभी ही दे दिया''।** चौदहो भुवनों में और तीनों लोकों में कोई भी उसकी रक्षा नहीं कर सकता है। क्योंकि उसने छोटे भाई की पत्नी का हरण किया है। केवल मुझे उसका वास-स्थान दिखाओ। सुग्रीव हनुमान के साथ राम को लेकर महान् विशाल एवं समुन्नत **सप्त ताल वृक्ष** के समीप ले गये।

''इति मैत्री पटल''

''मरा् मरप् पडलम्'' (''शाल वृक्ष पटल'')

इस पटल में सप्त ताल वृक्षों के भेदन की कथा प्रमुख है। और सात संख्या बाले प्रमुख पदार्थों का वर्णन विशेष रुप में है।

रामलक्षमण के साथ सुग्रीव वहाँ पहुँचे। जहाँ समुन्नत विशाल **''सप्तताल''** वृक्ष थे। वहाँ आकर सुग्रीव बोले। यदि एक भी ताल का वृक्ष आपके बाण से विंध जायगा तो मेरे मन का कष्ट दूर हो जायगा। यह सुनकर राम ने सुग्रीव की मनोभावना समझ ली कि **सुग्रीव मेरे पराक्रम की प्रभा-शक्ति को जानना चाहता है।**

रामचन्द्र ने तुरत अपने धनुष पर डोरी रखकर एक ही बाण से उस विशाल वृक्ष

के निकट जाकर सातों ताल वृक्षों को बेध दिया ? वहाँ इन सात-ताल वृक्षों के अतिरिक्त कुछ भी नहीं था इसलिए वह वाण फिर लौट कर रामचन्द्र के पास आ गया। यदि कोई दूसरी वस्तु वहाँ रहती तो वह भी बिंध गयी होती।

इस घटना से इस संपूर्ण विश्व में एक जगह स्थित **सात संख्या वाले सभी व्यक्ति एवं पदार्थ** चिन्तित व्याकुल हो गये। क्योंकि जब राम ने एक ही बाण से सातों ताल वृक्षों को बेध दिया। तब हम सात संख्या वाले भी कभी विनाश को प्राप्त सकते हैं।

१. **सात लोक**–भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, जन, मह, तप, सत्य।

२. **सात पवर्त**–कैलास, हिमवान, मन्दराचल, विन्ध्याचल, निषध, हेमकूट, गन्धमान, ?

३. **सात समुद्र**–लवण, इक्षुरस, सुरा, घृत, दधि, दुग्ध, जल।

४. **सात ऋषि**–अत्रि, भृगु कुत्स, वसिष्ठ, गौतम, कश्यप, अङ्गिरा,।

५. **सात छन्द**–गायत्री, उष्णिक, अनुष्टुप, वृहती, पंक्ति, जिष्टुप्, जगती।

६. **सात कन्या**–ब्रह्माणी, माहेश्वरी, कोमारी, वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी, चामुण्डा।

७. **सूर्य के सात घोड़े**–सूर्य की प्रमुख सात रश्मियां ही सप्त अश्व हैं।

वीर रस में भक्ति का समन्वयः

विशेष–यह वर्णन सर्वथा अद्‌भुत है। संस्कृत से लेकर अन्य किसी भी भारतीय वाङ्मय के रामकाव्य में एकत्र ऐसा चमत्कार कहीं भी नहीं देखा जा रहा है। कवि कम्बन् की यह बहुत बड़ी विशेषता है।

इस प्रकार सुग्रीव ने कहा कि आप ही **साक्षात् परब्रह्म परमात्मा–सृष्टि के निर्माण करने** बाले धर्म के संरक्षक हैं। इस तरह सभी वानर आनन्द से नाचने लगे।

''इति शाल वृक्ष पटल''

''तुन डुविप् पटल'' (''दुन्दुभि पटल'')

इस पटल में महा भंयकर **'दुन्दुभि'** नाम के राक्षस का वर्णन मात्र है।

इस पर्वत के समीप 'दुन्दुभि' नाम के महिषासुर की पर्वताकार–हड्डियों की ढ़ेर थी। वे हड्डियों के समूह प्रलय काल के बाद भी बचे हुए थे। उसे देखकर राम ने पूछा कि ये हड्डियाँ किसकी हैं। सुग्रीव ने कहा, दो सींग बाला ''दुन्दुभि'' नाम का एक दानव

था जिसके दोनों शृंग (सींग) आकाश में चन्द्रमा और सूर्य के स्पर्श करते थे। उसका क्रोध आग की ज्वाला के समान था।

विशेष कथा–एक समय वह विष्णु के साथ युद्ध करने आया। विष्णु ने कहा मेरे साथ महादेव के पास चलो। महादेव के पास आकर महादेव को युद्ध के लिए ललकारा। महादेव ने कहा तुम इन्द्र के पास जाओ। वही तुम्हारे साथ युद्ध कर सकते हैं। इन्द्र के समीप आने पर उन्होंने कहा मैं तुम्हारे समान वीर नहीं हूँ। तुम बालि के पास जाओ। वही तुम्हारे साथ युद्ध कर सकता है। **(ऐसा विवरण वाल्मीकि रामायण में नहीं है।)**

बालि के पास आकर उस दुन्दुभि दानव ने बालि को युद्ध के लिए वुलाया। बालि ने आकर तुरत उस राक्षस की दोनों सींगों को तोड़कर बहुत दूर फेंक दिया और उस राक्षस को जमीन पर पटक कर उसके प्राण ले लिये। उस समय से लेकर उस राक्षस का शरीर-मांस-पिण्ड आदि पर्वताकार के रूप में विद्यमान है।

राम ने लक्ष्मण को आदेश दिया। लक्ष्मण ने **अपने पैर की अंगुलियों से** उसे फेक दिया। इस तरह सुग्रीव का एक यह भी महान संकट टल गया।

''इति दुन्दुभिः पटल

''कैलन् काङ् पडलम् (आभरण दर्शन पटल)''

इस पटल में रावण द्वारा आकाश मार्ग से ले जाती हुई **सीता** ने अपने **कुछ आभूषणों** को **'ऋष्यमूक'** पर्वत पर गिरा दिया। सुग्रीव द्वारा उन्हीं आभरणों का राम को दिखाया जाना प्रमुख है।

''सात–ताल'' वृक्षों के वेधन तथा 'दुन्दुभि राक्षस के अस्थिपञ्जर पर्वत के विध्वंस के बाद 'ऋष्यमूक' पर्वत पर बैठे हुए राम से वार्त्तालाप के क्रम में सुग्रीव ने कहा–हंमलोग यहाँ बैठे हुए थे उस समय दुष्ट रावण आकाश मार्ग से एक नारी को लेकर जा रहा था। वह नारी विलाप करती हुई जा रही थी। सम्भवतः वह सीता ही थी ? उन्होंने एक वस्त्र के टुकड़े में कुछ आभरण नीचे गिरा दिये। मैंने वस्त्र-सहित उन आभरणों को सुरक्षित रख दिया है।

अत्यन्त मधुर-भाषी सुग्रीव ने उन आभरणों को राम के समीप लाकर रखा। उन आभरणों को देखकर **''रामचन्द्र''** की **नितांत करूणापूर्ण, और वेदनापूर्ण स्थिति का वर्णन अत्यन्त कठिन है।** राम वैसे पिघल गये जैसे आग में घी पिघलता है। सभी आभरणों को अपने हृदय और माथे में लगाकर राम बहुत विलाप करने लगे। विलाप

करते हुए सीता के प्रत्येक अंग का स्मरण हो आया। जिस आभरण को राम ने अपनी नाक से सूंघा वह फूल हो गया। जिस आभरण को कन्धे पर रखा वह चन्दन के समान शीतल द्वितीय वस्त्र के समान हो गया। रोमांचित होकर राम की आँखों से आँसू की धारा बहने लगी। विरह की आग में संतप्त हो गये। विरह की आग का ताप वैसा था **जिस ताप से सुग्रीव के शरीर के 'वाल मलिन' हो गये**। (विरह ज्वाला का अमूत पूर्व उदाहरण)

यह देखकर सुग्रीव ने सोचा कि मैंने यह क्या किया ? क्यों आभरण दिखाया, जिससे राम की यह स्थिति हो गयी। तब सुग्रीव राम से बोले। हे भगवान् बह्माण्ड के किसी भी भाग में स्थित सीता की खोज करके निश्चित ही ले आऊँगा। आप निश्चिन्त रहें। कृपया मेरी कार्य कुशलता को देखें।

रामचन्द्र यद्यपि सुग्रीव के वचन से आश्वस्त हुए। किन्तु अपने हीन भाव से चिन्तित हुए। अपने वंश की उदात्त भावना: राम सोचते हैं कि सूर्य वंश में उत्पन्न राजा भगीरथ मांन्धाता, और दिलीप आदि के प्रख्यात यश को मैंने नीचे गिराया जिसने अपनी धर्म-पत्नी की भी रक्षा नहीं की। यह सोचते हुए राम सुग्रीव से कहते हैं कि तुम्हारे वचन से मैं आश्वस्त हूँ। तुम सर्वथा मेरे हितचिन्तक हो इसमें कोई भी सन्देह नहीं है। लेकिन पहले तुम्हारे कार्य का साधन करके ही तुमलोगों को कहीं भी भेजने का विचार करूँगा।

यह सुनकर हनुमान बोले। पहले बालि का नाश किया जाय तथा सुग्रीव को राज्य दिया जाय। इसके बाद भिन्न-भिन्न दिशाओं में वानर की सेनाओं को सीता की खोज के लिए भेजना अच्छा होगा। राम इस विचार से सहमत हुए।

विशष–आभरण को देखकर राम के उत्ताप का ऐसा वेदनापूर्ण वर्णन अन्य राम काव्यों में नहीं है।

"इति आभरण दर्शन पटल"

"'वालि वदैप् पडलम्'

("'बालि बध पटल'")

इस पटल में सुग्रीव युद्ध, वालि-बध एवं मरने के समम बालि का राम से उत्तकृष्ट वार्तालाप का वर्णन प्रमुख है।

पहले बालि का नाश हो इस विचार-विमर्श के बाद नल, नील, सुग्रीव, हनुमान, तथा लक्ष्मण आदि के साथ नाना प्रकार की लताओं तथा पुष्पावलियों की शोभा को देखते हुए रामचन्द्र बालि के निवास स्थान की ओर चले। ऊँचे-नीचे इस पर्वतीय क्षेत्र

में राम का पैदल ही चलना अत्यन्त कष्टप्रद और आश्चर्य कारक था। दश-योजन अर्थात् ४८ कोस, (९६ माइल, लगभग १५० किलो मीटर) चलने, बाद बालि के निवास स्थान **'किष्किन्धा नगरी''** पहुँचे। अमरावती के समान स्वर्ण मयी वह किष्किन्धा पूरी चमकती हुई दीख रही थी।

राम ने सुग्रीव को समीप में बुलाकर कहा कि तुम बालि के पास जाकर युद्ध के लिए उसे बुलाओ। मैं छिपकर तुम दोनों के युद्ध को देखते हुए वाण फेकूँगा। जिससे बालि मारा जायगा। सुग्रीव ने कहा। ऐसा ही कर रहा हूँ। यह कह कर बालि के महल की दीवाल के समीप जाकर जोर-जोर से गजरते हुए कहा कि हे बालि, बाहर निकलो मैं तुमसे युद्ध करने के लिए आया हूँ।

यह सुनकर बालि ने मन में सोचा कि यह कैसे ? यह मेरा **तुच्छ ''अनुज''** युद्ध के लिए उपस्थित है। बलि ज़ोरों से हंसने लगा। जिस हँसी की आवाज से लोक कम्पित हो गये। बालि बाहर निकल कर संहारकारी भयंकर युद्ध करने लगा। युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए **बालि की पत्नी ''तारा''** ने आकर बालि को रोका और कहा; तुम युद्ध मत करो। क्योंकि विना प्रवल सहायता के साहस भी नहीं कर सकता है। सुना जाता है कि **'राम' नाम** के कोई मित्र सुग्रीव के साथ हैं इसलिए तुम युद्ध करने का विचार छोड़ दो और लौट जाओ।

यह सुनकर बालि मन में सोचता है और कहता है कि वह तो वही **'राम'** है जो सभी **पुण्य कर्मों के फलस्वरूप दर्शन देते हैं**। वे महान् धर्मात्मा और न्याय प्रिय हैं। वही ''राम'' अपनी सौतेली माँ के कहने से संपूर्ण राज्य उनके पुत्र भरत को देकर वन चल दिये। इसलिए वे कभी अधर्म और अन्याय नहीं करेंगे तुम कुछ देर प्रतीक्षा करो। मैं तुरत ही सुग्रीव को मारकर आ रहा हूँ।

बालि और सुग्रीव के बीच जैसा भयंकर युद्ध प्रारम्भ हुआ उसका वर्णन कवि कम्बन् ने **(१००) एक सौ पद्यों में किया है**। उसका विवरण यहाँ विस्तार के भय से नहीं किया जा रहा है। युद्ध के समय बालि और सुग्रीव में समानरुपता देखकर इन दोनों के वीच में कौन बालि है इसका भेद राम नहीं कर सके। युद्ध में घायल होकर सुग्रीव भागते हुए राम के समीप पहुँचकर कहता है कि हे महा भाग, मेरी यह दुर्दशा हो गयी, आप ने क्या किया ?

राम ने कहा तुम दोनों के बीच में मैं भेद नहीं कर सका। इसलिए कुछ नहीं किया। इस समय इस फूल की माला को पहनकर जाओ। मैं उसे पहचान कर तुरत ही उसको मार दूँगा। ऐसा करके राम ने सुग्रीव को पुनः भेजा और उन दोनों के बीच में फिर भयंकर युद्ध प्रारम्भ हुआ। बालि सुग्रीव को जमीन पर गिराना ही चाहता था कि इसी

बीच में एक बाण से राम ने बालि को बेध दिया और 'बालि' पृथ्वी पर गिर गया।

बाण से बेधे जाने पर बालि व्याकुल होकर सोचता है। यह विष्णु का सुदर्शन-चक्र नहीं है, शिव का त्रिशूल नहीं है, कार्तिकेय की शक्ति नहीं है और यह इन्द्र का वज्र भी नहीं है। ये सभी मेरे शरीर को छेदने में समर्थ नहीं हैं। यह वाण तो किसी धनुष से फेंका गया है। ऐसा सोचकर अपनी विशाल पूंछ से·बालि ने उस वाण को अपने हृदय से निकाल दिया। किन्तु उसकी छाती से असीमित रक्त-धारा प्रवाहित हुई। जिससे बालि पुनः पृथ्वी पर गिर गया।

उस वाण में ''राम'' नाम अंकित देखकर बालि–सोचता है कि कैसे तीनों लोकों के संरक्षक, भक्तों के इष्ट साधक तथा इहलोक और परलोक के सभी रोगों के महान् औषध, महान्-महिमामय 'राम' शब्द हैं। कैसे यह विरही त्यागी वनवासी-'राम' धर्म-मार्ग से हट कर सूर्य वंश की विख्यात कीर्ति को छोड़कर इस दुष्कर्म को करने में तैयार हुए। यहाँ मेरा क्या दोष है। यदि स्वयं 'राम' ऐसा करते हैं तो दूसरे की बात क्या कही जाय।

इसके बाद राम वहाँ उपस्थित हुए। मरने के लिए तैयार बालि पूछता है। आप ने क्या सोचा और क्या किया ? आप तो धर्म-न्याय और सत्य वचन के रक्षक हैं। दूसरों को पाप से बचाते हैं। लेकिन स्वयं आप ने पाप किया। फिर उसने कहा आप के हाथ में स्थित यह धनुष आप का परिहास कर रहा है। क्या छिपकर वाण चलाना क्षत्रियों का धर्म है ? क्या खाली हाथ वाले मेरी छाती में इस तरह बाण चलाना उचित है ? इस प्रकार बालि ने अनेक तरह से राम की भर्त्सना की।

तब राम ने कहा। तुम बिना किसी अपराध के अपने छोटे भई सुग्रीव को मारने के लिए तैयार थे, और उसकी पत्नी को लेकर अपनी पत्नी बना लिया। ऐसे बहुत से कारण हैं। जिन कारणों से निर्दोष की रक्षा के लिए मैंने बाण चलाया। तुम जानते हो कि जो बुद्धि में श्रेष्ठ होता है वही बुद्धिमान् कहलाता है। जैसे गज और ग्राह के बीच में गज की बुद्धि स्वच्छ थी। अत-एवं शंखचक्र, गदाधारी विष्णु ने उद्धार किया। धर्म पथ पर चलने वाले गज को मोक्ष पद दिया। इसलिए दोष से पूर्ण तुम पर मैंने वाण फेंका।

यह सुनकर बालि ने राम से प्रार्थना की। जो हो गया , सो हो गया। अब मेरे अनुज सुग्रीव पर कृपा कीजियेगा। यह महा बुद्धिमान् वलवान् हनुमान है। यह आप की सेवा में तथा यह मेरा पुत्र अगंद निरंतर आप की सेवा में रहेगा। ऐसा कहकर अपने लिए ''मोक्ष-पद'' प्राप्ति के लिए याचना की। राम ने कहा 'ऐसा ही हो''। (तथास्तु) इसके बाद अगंद सुग्रीव प्रभृति वानर गण विलाप करने लगे। और बालि

की पत्नी तारा विलाप करती हुई शोक सागर में डूब गई। सुग्रीव अंगद आदि सभी वानरगण बालि के अन्तिम संस्कार में लग गये।

"इति बालि बध पटल"

"अर्शियर पडलम्" ("राज्य शासन पटल")

इस पटल में सुग्रीव का राज्याभिषेक और राम के द्वारा सुग्रीव को एवम् अगंद प्रभृति वानरों को उपदेश देने का वर्णन प्रमुख है ?

बालि के श्राद्ध के बाद रामचन्द्र ने अपने बुद्धिमान् छोटे भाई लक्ष्मण को आदेश· दिया कि सूर्य-पुत्र–सुग्रीव का अभिषेक करो। राम की आज्ञा प्राप्त कर लक्ष्मण ने हनुमान से कहा। राज्याभिषेक-मंगल कार्य के लिए अपेक्षित आवश्यक सामग्रियों की व्यवस्था करो। हनुमान शीघ्र ही तत्पर होकर अभिषेक के लिए पवित्र जल तथा सोने का मुकुट आदि उपकरणों को ले आये। लक्ष्मण ने सुग्रीव को स्वर्ण मुकुट देकर विधिवत् राज्याभिषेक किया। वेदज्ञ ब्राह्मणों ने फूल की वर्षा की।

राजनीति-रहस्य–राज्य मुकुट धारण कर सुग्रीव ने रामचन्द्र के चरणों के समीप आकर प्रणाम किया। राम ने सुग्रीव को अपनी छाती से लगा कर नीचे कहे गये कुछ उपदेश दिये। इस क्रम में राम ने कहा–हे सुग्रीव, तुम आनन्द के साथ सुन्दर मनोहर अपने आवास स्थान पर जाओ और बालि के पुत्र अगंद के साथ मिलकर सुयोग्य राज्य-शासन करते हुए सभी सुख साधनों का भोग करो। मन्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो, विशाल सेनाओं के साथ अच्छा व्यवहार और निर्दुष्ट आचरण करो। प्रजाजनों से न अधिक दूर रहो और न अधिक समीप रहो।

इस तरह देवता के समान सम्मानित हो जाओगे। न्यायशास्त्र के अनुसार "जहाँ, जहाँ धुँआ होता है वहाँ-वहाँ आग रहती है" इस अनुमान के आलोक में प्रजाजनों में उत्पन्न विरोध के धुएँ को हमेशा देखने में–मापने में–सावधान रहो। शास्त्र में विश्वास करते हुए उसके अनुसार आचरण करो। तुम्हारे प्रति जो शत्रुता करे उसके प्रति भी मधुर व्यवहार करो। प्रसन्न चित्त रहते हुए सब तरह से मधुर वचन बोलो।

जीवन यात्रा में तीन प्रकार के लोग देखे जाते हैं।

(क) मित्र (ख) शत्रु (ग) उदासीन। इन लोगों के प्रति भी दुर्व्यवहार मत करो। इन लोगों का अकल्याण कभी नहीं सोचो। अपवाद सुनकर भी मधुर वचन ही बोलो। बहुत अधिक दान करो। इस तरह के कृत्यों से तुम सुख पूर्वक निर्विघ्न राज्य-शासन करने के योग्य होगे।

बीच में एक बाण से राम ने बालि को बेध दिया और 'बालि' पृथ्वी पर गिर गया।

बाण से बेधे जाने पर बालि व्याकुल होकर सोचता है। यह विष्णु का सुदर्शन-चक्र नहीं है, शिव का त्रिशूल नहीं है, कार्तिकेय की शक्ति नहीं है और यह इन्द्र का वज्र भी नहीं है। ये सभी मेरे शरीर को छेदने में समर्थ नहीं हैं। यह वाण तो किसी धनुष से फेंका गया है। ऐसा सोचकर अपनी विशाल पूंछ से बालि ने उस वाण को अपने हृदय से निकाल दिया। किन्तु उसकी छाती से असीमित रक्त-धारा प्रवाहित हुई। जिससे बालि पुनः पृथ्वी पर गिर गया।

उस वाण में ''राम'' नाम अंकित देखकर बालि–सोचता है कि कैसे तीनों लोकों के संरक्षक, भक्तों के इष्ट साधक तथा इहलोक और परलोक के सभी रोगों के महान् औषध, महान्-महिमामय 'राम' शब्द हैं। कैसे यह विरही त्यागी वनवासी-'राम' धर्म-मार्ग से हट कर सूर्य वंश की विख्यात कीर्ति को छोड़कर इस दुष्कर्म को करने में तैयार हुए। यहाँ मेरा क्या दोष है। यदि स्वयं 'राम' ऐसा करते हैं तो दूसरे की बात क्या कही जाय।

इसके बाद राम वहाँ उपस्थित हुए। मरने के लिए तैयार बालि पूछता है। आप ने क्या सोचा और क्या किया ? आप तो धर्म-न्याय और सत्य वचन के रक्षक हैं। दूसरों को पाप से बचाते हैं। लेकिन स्वयं आप ने पाप किया। फिर उसने कहा आप के हाथ में स्थित यह धनुष आप का परिहास कर रहा है। क्या छिपकर वाण चलाना क्षत्रियों का धर्म है ? क्या खाली हाथ वाले मेरी छाती में इस तरह बाण चलाना उचित है ? इस प्रकार बालि ने अनेक तरह से राम की भर्त्सना की।

तब राम ने कहा। तुम बिना किसी अपराध के अपने छोटे भई सुग्रीव को मारने के लिए तैयार थे, और उसकी पत्नी को लेकर अपनी पत्नी बना लिया। ऐसे बहुत से कारण हैं। जिन कारणों से निर्दोष की रक्षा के लिए मैंने बाण चलाया। तुम जानते हो कि जो बुद्धि में श्रेष्ठ होता है वही बुद्धिमान् कहलाता है। जैसे गज और ग्राह के बीच में गज की बुद्धि स्वच्छ थी। अत-एवं शंखचक्र, गदाधारी विष्णु ने उद्धार किया। धर्म पथ पर चलने वाले गज को मोक्ष पद दिया। इसलिए दोष से पूर्ण तुम पर मैंने वाण फेंका।

यह सुनकर बालि ने राम से प्रार्थना की। जो हो गया , सो हो गया। अब मेरे अनुज सुग्रीव पर कृपा कीजियेगा। यह महा बुद्धिमान् वलवान् हनुमान है। यह आप की सेवा में तथा यह मेरा पुत्र अगंद निरंतर आप की सेवा में रहेगा। ऐसा कहकर अपने लिए ''मोक्ष-पद'' प्राप्ति के लिए याचना की। राम ने कहा 'ऐसा ही हो''। (तथास्तु) इसके बाद अगंद सुग्रीव प्रभृति वानर गण विलाप करने लगे। और बालि

की पत्नी तारा विलाप करती हुई शोक सागर में डूब गई। सुग्रीव अंगद आदि सभी वानरगण बालि के अन्तिम संस्कार में लग गये।

''इति बालि बध पटल''

''अरशियर पडलम्'' (''राज्य शासन पटल'')

इस पटल में सुग्रीव का राज्याभिषेक और राम के द्वारा सुग्रीव को एवम् अगंद प्रभृति वानरों को उपदेश देने का वर्णन प्रमुख है ?

बालि के श्राद्ध के बाद रामचन्द्र ने अपने बुद्धिमान् छोटे भाई लक्ष्मण को आदेश दिया कि सूर्य-पुत्र–सुग्रीव का अभिषेक करो। राम की आज्ञा प्राप्त कर लक्ष्मण ने हनुमान से कहा। राज्याभिषेक-मंगल कार्य के लिए अपेक्षित आवश्यक सामग्रियों की व्यवस्था करो। हनुमान शीघ्र ही तत्पर होकर अभिषेक के लिए पवित्र जल तथा सोने का मुकुट आदि उपकरणों को ले आये। लक्ष्मण ने सुग्रीव को स्वर्ण मुकुट देकर विधिवत् राज्याभिषेक किया। वेदज्ञ ब्राह्मणों ने फूल की वर्षा की।

राजनीति-रहस्य–राज्य मुकुट धारण कर सुग्रीव ने रामचन्द्र के चरणों के समीप आकर प्रणाम किया। राम ने सुग्रीव को अपनी छाती से लगा कर नीचे कहे गये कुछ उपदेश दिये। इस क्रम में राम ने कहा–हे सुग्रीव, तुम आनन्द के साथ सुन्दर मनोहर अपने आवास स्थान पर जाओ और बालि के पुत्र अगंद के साथ मिलकर सुयोग्य राज्य-शासन करते हुए सभी सुख साधनों का भोग करो। मन्त्रियों के साथ अच्छा व्यवहार करो, विशाल सेनाओं के साथ अच्छा व्यवहार और निर्दुष्ट आचरण करो। प्रजाजनों से न अधिक दूर रहो और न अधिक समीप रहो।

इस तरह देवता के समान सम्मानित हो जाओगे। न्यायशास्त्र के अनुसार ''जहाँ, जहाँ धुँआ होता है वहाँ-वहाँ आग रहती है'' इस अनुमान के आलोक में प्रजाजनों में उत्पन्न विरोध के धुएँ को हमेशा देखने में–मापने में–सावधान रहो। शास्त्र में विश्वास करते हुए उसके अनुसार आचरण करो। तुम्हारे प्रति जो शत्रुता करे उसके प्रति भी मधुर व्यवहार करो। प्रसन्न चित्त रहते हुए सब तरह से मधुर वचन बोलो।

जीवन यात्रा में तीन प्रकार के लोग देखे जाते हैं।

(क) मित्र (ख) शत्रु (ग) उदासीन। इन लोगों के प्रति भी दुर्व्यवहार मत करो। इन लोगों का अकल्याण कभी नहीं सोचो। अपवाद सुनकर भी मधुर वचन ही बोलो। बहुत अधिक दान करो। इस तरह के कृत्यों से तुम सुख पूर्वक निर्विघ्न राज्य-शासन करने के योग्य होगे।

गहन सत्य कथन–नारी के कारण पुरुष का विनाश होता है और उसे कष्ट होता है। उसका उदाहरण तुम्हारा बड़ा भाई बालि तथा मैं तुम्हारे सामने हूँ। यद्यपि ऐसे बहुत उदाहरण हैं। किन्तु मैं दूसरा उदाहरण नहीं दे रहा हूँ। यदि प्रजा तुम्हें स्वामी मानने के लिए तैयार नहीं भी हो तो भी तुम अपनी प्रजा को अपनी माता के समान रक्षा करने बाली मानो। उसकी सेवा करो। अत्यन्त महत्त्वपूर्ण इन विशिष्ट उपदेश पूर्ण बातों को सुनकर सुग्रीव ने ऐसा ही करने की प्रतिज्ञा की।

सुग्रीव ने कहा। हमारे वास-स्थान में यही दोष है कि यह वानर का स्थान है। अन्यथा स्वर्ग से भी अधिक मनोहर ''सुधर्मा'' नाम का सभाभवन है। यह पर्वत वृक्ष-शाखाओं, फूलों की लताओं, और पवित्र जल युक्त नदियों से घिरा हुआ अत्यन्त मनोहर भव्य स्थान है। कृपया श्रीमान मुझ पर दया करते हुए कुछ दिनों तक यहीं निवास करें। यह मेरी प्रार्थना है।

राम ने कहा मैंने तो चौदह वर्षों तक नीचे ऊँचे पर्वतीय-क्षेत्र बाले वन में ही रहने का संकल्प किया है। इसलिए गृहस्थ जीवन की सुख सुविधा में मेरा रहना सम्भव नहीं है उसमें भी सीता से वियुक्त मुझ आभागे को। यह सुनकर बानरराज सुग्रीव ने कुछ उत्तर नहीं दिया। केवल आँसू बहाते हुए राम के पवित्र चरणों को अपने मस्तक से पकड़ लिया। तब बालि के पुत्र अगंद को भी राम ने यथा-योग्य उपदेश दिया और सुग्रीव को पिता तुल्य मानने का आदेश दिया। हनुमान से भी कहा। हे महावीर, तुम भी अपने बुद्धि-बल से सुग्रीव के शासन कार्य में सहायक बनो।

विशेष : रामचन्द्र के मुख से ऐसे महत्त्वपूर्ण उपदेश तथा राजनीतिशास्त्र के मूलभूत रहस्य का विवरण किसी भी अन्य रामायण में नहीं देखा जाता है।

राम के कथनानुसार राम की आज्ञा को शिरोधार्य कर सभी राजधानी किष्किन्धा चले गये, और अपनी राजधानी कष्किन्धा आकर सुग्रीव सुख से राज्य शासन करने लगे। राम भी उस पर्वत से चलकर ''प्रश्रवण'' नाम के पर्वत पर जाकर ठहर गये।

''इति राज्य शासन पटल''।

''कारकालक पड़लम्'' (''वर्षा काल पटल'')

इस पटल में वर्षाऋतु के आगमन और राम के विरह का वर्णन प्रमुख है।

इस सम्पूर्ण पटल में कवि कम्बन् ने पावस ऋतु का वर्णन विविध प्रकार से किया है। जो काव्य-शास्त्रीय परम्परा में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। महर्षि 'बाल्मीकि ने अपने रामायण' में किष्किन्धा काण्ड के (२४) चौबीसवें सर्ग में (६६) छेयासठ पद्यों में पावस का वर्णन किया है। किन्तु कवि कम्बन ने एक सौ बीस (१२०) पद्यों में किया है।

कवि कम्बन् ने-नवम शताब्दी से पूर्ववर्ती और परवर्ती (बाद के) भारतीय वङ्मय के सभी रामकाव्यकारों को पीछा कर दिया है। जिनमें सोलहवीं शताब्दी में गोस्वामी तुलसीदास ने भी अपने विशाल रामचरित मानस में विशेष रूप से पावस का वर्णन किया है। कम्बन ने तो उन सबों को पहले ही पीछे छोड़ दिया।

यहाँ इस पटल के कुछ महत्त्वपूर्ण अंश ही दिये जा रहे हैं। जिनमें रामचन्द्र के वियोग का वर्णन किया गया है। सूर्य दक्षिणायन हो गये हैं। राम सोचते हैं कि मेरे मूल-वंश के 'सूर्य' दक्षिण दिशा में गयी हुई सीता को खोजने के लिए प्रायः गये हैं। आकाश में बादलों की घटा छा गयी है, बिजलियाँ चमक रही हैं, मेघ गरज रहे हैं, समुद्र के जल उछल रहे हैं, और वायु वेग से बह रहे हैं।

वर्षाकाल की विजलियों से एवं काले बादल के समूहों से इन्द्र आदि दिक्पालों के हाथी जहाँ तहाँ घूमते हुए दीखते हैं। इन हाथियों के क्रमशः ये नाम हैं।

(क) इन्द्र का ऐरावत, (ख) अग्नि का पुण्डरीक (ग) 'यम का वामन्, (घ) नैर्त्रृदत का कुमुद, (ङ) वरुण का अञ्जन (च) वायु का पुष्प दन्त, (छ) कुवेर का सार्वभौम (ज) ईशान का सुप्रदीप।

ये चमकती हुई बिजलियाँ सर्प की आठ जिह्वा की तरह सीता से वियुक्त मुझको काट रहे हैं। वैसा ही राम ने अनुभव किया। इन साँपों का वैसा ही राम ने अनुभव किया। इन साँपों के नाम क्रमशः ये हैं–

(अ) वासुकी (आ) अनन्त, (इ) तक्षक (ई) शंखपाल (उ) कुलिक (ऊ) पटन (ए) महा पटन (ऐ) कर्कोटिक। यह कल्पना एकदम नयी है।

मेघ से जलधारायें गिर रही हैं। जो सीता-वियुक्त रामचन्द्र को कामदेव के वाण के समान अनुभव हो रहा है। और राम को उद्विग्न एवं विचलित कर रही है। यह वर्षाऋतु इस पर्वतीय क्षेत्र में "वैङ्गै" नाम के फूल **"काठियी"** जाति की नारियों के केश पाशों में लगे हुए हैं। **"शुपुनाग"** के फूल **मल्लाहों** की वालिकाओं के केश पाशों में गुंथे हुए हैं। कृषकों की स्त्रियों के बहुत लम्बे वालों की जूड़े में **'कुन्द'** के फूल लगे हुए हैं। जिन फूल मालाओं से सुगन्ध निकल रही है। और उन पर भौरे गूंज रहे हैं।

वियोग से व्यथित रामचन्द्र इन फूलों को काँटे के समान मान रहे हैं। यहाँ **'कम्बन' ने एक सौ बीस पद्यों** में राम के विरह वर्णन का साक्षात् चित्र प्रस्तुत किया है। जो वियोग में भी विप्रलम्भ शृंगार का विचित्र चमत्कार पूर्ण वर्णन है।

विशेष : "कम्बन ने विभिन्न जातियों की नारियों के केश पाशों में भिन्न भिन्न फूलों की मालाओं का वर्णन करके सर्वथा अभूतपूर्व नवीन शैली का प्रदर्शन किया

है। यह्राँ यह समझने में कोई भी कठिनता नहीं होगी कि कम्बन को स्थानीय सभी विशेषताओं का गम्भीर एवं सुन्दर अनुभव था।

''इति वर्षा काल पटल''

''किट्‌ किड्डैप पडलम्‌'' (''किष्किन्धा पटल'')

इस पटल में किष्किन्धा के राज्य प्राप्त करके सुग्रीव का विलासिता में लीन होने का तथा क्रोध युक्त लक्ष्मण के वहाँ पहुँचने का वर्णन प्रमुख है।

इस तरह वर्षाऋतु बीत गयी। सुन्दर ''शरद-ऋतु'' आ गयी। राम ने लक्ष्मण से कहा, निश्चित समय सीमा बीत गयी। सुग्रीव नहीं आया। क्या यही वचन के पालन का तारीका है ? मेरी सहायता से प्राप्त राज्य के सुख भोग में प्रायः लिप्त होकर सुग्रीव कृतघ्न हो गया। तुम शीघ्र वहाँ जाओ और उसकी इच्छा को समझो।

राम की मानवीय भावना : यदि ऐसा है तो मेरा धनुष भी है, वाण भी है, यम भी है, और यम लोक भी है। तुम किष्किन्धा जाकर सुग्रीव को कहो। यदि राज्य शासन करना चाहता है तो सीता की खोज के लिए सभी काम शीघ्र यहाँ आकर करे। जैसा कि उसने प्रतिज्ञा की थी। अन्यथा कुपरिणाम की प्रतीक्षा करे। तुम केवल इतना ही सम्बाद वहाँ जाकर बोलो। वहाँ क्रोध नहीं करना। यह सम्बाद कहकर शीघ्र ही मेरे पास आजाओगे।

लक्ष्मण राम की आज्ञा शिरोधार्य कर राम को प्रणाम करके और धनुष वाण लेकर सुदीर्घ–कठिन मार्ग में चले। शेषावतार लक्ष्मण के तीव्र गमन से मार्ग में स्थित वृक्ष और पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो गये। इस तरह आते हुए लक्ष्मण को वानरों ने देखा और वे वानर डरकर युवराज अंगद के समीप पहुँचे। अंगद भी लक्ष्मण के आने का कारण हनुमान्‌ से जानकर अपने चाचा सुग्रीव के पास चले।

राज्यमद–सुग्रीव नल के द्वारा निर्मित राज्य के अन्तःपुर में फूलों की शय्या पर लेटे हुए थे। उनके समीप में बहुत लम्बे केश वाली सद्यः अंकुरित स्तन वाली नारियाँ सुग्रीव की चरणसेवा कर रही थीं। जिससे सुग्रीव को नीन्द आ जाय। सुग्रीव के शरीर पर उन नारियों के लम्बे-लम्बे केश इधर-उधर लहरा रहे थे। यह दृश्य किसकी काम-वासना को नहीं जगाता है। सुग्रीव तो अत्यन्त धन-मद से और अत्यधिक सुरापान से अपनी चेतना को भी भूल गया।

ऐसी स्थिति देखकर अंगद शीघ्र ही लौट कर बुद्धिमान्‌ व्यक्तियों के समीप चला। बीच में ही अंगद ने अपनी माँ के पास जाकर पूछा। इस समय क्या करना चाहिए। चाचा की यही स्थिति है। अगंद की माता 'तारा' बोली। तुम लोग कृतघ्न हो और

दुष्कर्मों को करने वाले हो। समय-सीमा बीत गयी। अबतक राम का कार्य नहीं किया। अब अपने कर्मों का फल भोगने के लिए तैयार हो जाओ। इसी बीच वानरों की विशाल सेनाओं के द्वारा सुरक्षित राजभवन में प्रवेश करने के लिए लक्ष्मण आ गये। लक्ष्मण के आते ही उनके चरण स्पर्श से ही राजद्वार के कपाट टूट गये और पत्थल के खण्ड की तरह टुकड़े-टुकड़े हो गये।

यह सुनकर अंगद की माता 'तारा' वहाँ पहुँच गयी। तारा सुसज्जिता सखियों के साथ वहाँ उपस्थित थी। सुगन्धित लम्बे काले केश वाली 'तारा' लक्ष्मण के रास्ते को रोककर मधुर वचन से लक्ष्मण के प्रति बोली। हे वीर कुमार, आप का आना तो चिर तपस्या का फल है, जो फल प्राप्त कर इन्द्र आदि देवताओं से उद्धार हो गया। किन्तु श्रीरामचन्द्र के चरण से दूर यहाँ आने का क्या प्रयोजन है, यह मैं जानने के लिए प्रार्थना करती हूँ।

'तारा' के मधुर वचन सुनकर लक्ष्मण का क्रोध शान्त हुआ। और मन में दया आ गयी। उस **विधवा सुन्दरी तारा** को देखकर लक्ष्मण के नेत्र आँसू से भर गये। लक्ष्मण ने अनुभव किया कि ऐसे ही अयोध्या में श्रीहीन मेरी विधवा मातायें होंगी। लक्ष्मण ने कहा सुग्रीव ने प्रतिज्ञा की थी, उनकी सेनाथें सीता को खोज कर लायेंगी। इस विषय में कुछ भी नहीं जानकर राम ने मुझे यहाँ भेजा है। तारा बोली। सुग्रीव कुछ भी नहीं भूले हैं। असंख्य वानर दूत भिन्न-भिन्न दिशाओं में सीता की खोज के लिए गये हैं। उनके लौटने का समय भी आ गया है। सुग्रीव ने तो आप की शरणागति से सब कुछ लाभ किया।

लक्ष्मण 'तारा' के बचन को सुनकर संतुष्ट हुए। उसी समय महा बुद्धिमान बलवान हनुमान यहाँ आ गये। हनुमान ने कहा हे वीर श्रेष्ठ, कपि कुल पति सुग्रीव कुछ भी नहीं भूले हैं। अपने दूतों को पहले ही भेज चुके हैं। हमलोग उनके लौटने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

लक्ष्मण ने कहा। यह तो निश्चित है कि यदि आपका आश्वासन नहीं होता तो सर्वशक्तिमान रामचन्द्र स्वयं ही संपूर्ण विश्व के मध्य में स्थित प्रिया सीता को खोजकर लाने में समर्थ हैं। यह सुनकर पवन कुमार बोले। कृपया आप शान्त हों। सभी काम सिद्ध होंगे। कृपया अभी सुग्रीव के समीप चलें। लक्ष्मण चले। अगंद की माता 'तारा' स्वर्गीय सुन्दरयों के समान नारियों के साथ वहीं से लौट गयी।

विशेष : कवि ने यहाँ दिखाया है की तारा तो वैधव्य जीवन बिता रही है। किन्तु उनकी सेविकायें ऐसी सुन्दरियाँ हैं। आत्मीय रक्त सम्बन्ध कितना गहरा होता है इसका प्रमाण तारा, अंगद एवं हनुमान ने लक्ष्मण को शान्त करने के लिये क्या नहीं कहा।

है। यहाँ यह समझने में कोई भी कठिनता नहीं होगी कि कम्बन को स्थानीय सभी विशेषताओं का गम्भीर एवं सुन्दर अनुभव था।

''इति वर्षा काल पटल''

''किट् किड्डैप पडलम्'' (''किष्किन्धा पटल'')

इस पटल में किष्किन्धा के राज्य प्राप्त करके सुग्रीव का विलासिता में लीन होने का तथा क्रोध युक्त लक्ष्मण के वहाँ पहुँचने का वर्णन प्रमुख है।

इस तरह वर्षाऋतु बीत गयी। सुन्दर ''शरद-ऋतु'' आ गयी। राम ने लक्ष्मण से कहा, निश्चित समय सीमा बीत गयी। सुग्रीव नहीं आया। क्या यही वचन के पालन का तारीका है ? मेरी सहायता से प्राप्त राज्य के सुख भोग में प्रायः लिप्त होकर सुग्रीव कृतघ्न हो गया। तुम शीघ्र वहाँ जाओ और उसकी इच्छा को समझो।

राम की मानवीय भावना : यदि ऐसा है तो मेरा धनुष भी है, वाण भी है, यम भी है, और यम लोक भी है। तुम किष्किन्धा जाकर सुग्रीव को कहो। यदि राज्य शासन करना चाहता है तो सीता की खोज के लिए सभी काम शीघ्र यहाँ आकर करे। जैसा कि उसने प्रतिज्ञा की थी। अन्यथा कुपरिणाम की प्रतीक्षा करे। तुम केवल इतना ही सम्बाद वहाँ जाकर बोलो। वहाँ क्रोध नहीं करना। यह सम्बाद कहकर शीघ्र ही मेरे पास आजाओगे।

लक्ष्मण राम की आज्ञा शिरोधार्य कर राम को प्रणाम करके और धनुष वाण लेकर सुदीर्घ–कठिन मार्ग में चले। शेषावतार लक्ष्मण के तीव्र गमन से मार्ग में स्थित वृक्ष और पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो गये। इस तरह आते हुए लक्ष्मण को वानरों ने देखा और वे वानर डरकर युवराज अंगद के समीप पहुँचे। अंगद भी लक्ष्मण के आने का कारण हनुमान् से जानकर अपने चाचा सुग्रीव के पास चले।

राज्यमद–सुग्रीव नल के द्वारा निर्मित राज्य के अन्तःपुर में फूलों की शय्या पर लेटे हुए थे। उनके समीप में बहुत लम्बे केश वाली सद्यः अंकुरित स्तन वाली नारियाँ सुग्रीव की चरणसेवा कर रही थीं। जिससे सुग्रीव को नीन्द आ जाय। सुग्रीव के शरीर पर उन नारियों के लम्बे-लम्बे केश इधर-उधर लहरा रहे थे। यह दृश्य किसकी काम-वासना को नहीं जगाता है। सुग्रीव तो अत्यन्त धन-मद से और अत्यधिक सुरापान से अपनी चेतना को भी भूल गया।

ऐसी स्थिति देखकर अंगद शीघ्र ही लौट कर बुद्धिमान् व्यक्तियों के समीप चला। बीच में ही अंगद ने अपनी माँ के पास जाकर पूछा। इस समय क्या करना चाहिए। चाचा की यही स्थिति है। अगंद की माता 'तारा' बोली। तुम लोग कृतघ्न हो और

दुष्कर्मों को करने वाले हो। समय-सीमा बीत गयी। अबतक राम का कार्य नहीं किया। अब अपने कर्मों का फल भोगने के लिए तैयार हो जाओ। इसी बीच वानरों की विशाल सेनाओं के द्वारा सुरक्षित राजभवन में प्रवेश करने के लिए लक्ष्मण आ गये। लक्ष्मण के आते ही उनके चरण स्पर्श से ही राजद्वार के कपाट टूट गये और पत्थल के खण्ड की तरह टुकड़े-टुकड़े हो गये।

यह सुनकर अंगद की माता 'तारा' वहाँ पहुँच गयी। तारा सुसज्जिता सखियों के साथ वहाँ उपस्थित थी। सुगन्धित लम्बे काले केश वाली 'तारा' लक्ष्मण के रास्ते को रोककर मधुर वचन से लक्ष्मण के प्रति बोली। हे वीर कुमार, आप का आना तो चिर तपस्या का फल है, जो फल प्राप्त कर इन्द्र आदि देवताओं से उद्धार हो गया। किन्तु श्रीरामचन्द्र के चरण से दूर यहाँ आने का क्या प्रयोजन है, यह मैं जानने के लिए प्रार्थना करती हूँ।

'तारा' के मधुर वचन सुनकर लक्ष्मण का क्रोध शान्त हुआ। और मन में दया आ गयी। उस **विधवा सुन्दरी तारा** को देखकर लक्ष्मण के नेत्र आँसू से भर गये। लक्ष्मण ने अनुभव किया कि ऐसे ही अयोध्या में श्रीहीन मेरी विधवा मातायें होंगी। लक्ष्मण ने कहा सुग्रीव ने प्रतिज्ञा की थी, उनकी सेनाथें सीता को खोज कर लायेंगी। इस विषय में कुछ भी नहीं जानकर राम ने मुझे यहाँ भेजा है। तारा बोली। सुग्रीव कुछ भी नहीं भूले हैं। असंख्य वानर दूत भिन्न-भिन्न दिशाओं में सीता की खोज के लिए गये हैं। उनके लौटने का समय भी आ गया है। सुग्रीव ने तो आप की शरणागति से सब कुछ लाभ किया।

लक्ष्मण 'तारा' के बचन को सुनकर संतुष्ट हुए। उसी समय महा बुद्धिमान बलवान हनुमान यहाँ आ गये। हनुमान ने कहा हे वीर श्रेष्ठ, कपि कुल पति सुग्रीव कुछ भी नहीं भूले हैं। अपने दूतों को पहले ही भेज चुके हैं। हमलोग उनके लौटने की उत्सुकता से प्रतीक्षा कर रहे हैं।

लक्ष्मण ने कहा। यह तो निश्चित है कि यदि आपका आश्वासन नहीं होता तो सर्वशक्तिमान रामचन्द्र स्वयं ही संपूर्ण विश्व के मध्य में स्थित प्रिया सीता को खोजकर लाने में समर्थ हैं। यह सुनकर पवन कुमार बोले। कृपया आप शान्त हों। सभी काम सिद्ध होंगे। कृपया अभी सुग्रीव के समीप चलें। लक्ष्मण चले। अगंद की माता 'तारा' स्वर्गीय सुन्दरियों के समान नारियों के साथ वहीं से लौट गयी।

विशेष : कवि ने यहाँ दिखाया है की तारा तो वैधव्य जीवन बिता रही है। किन्तु उनकी सेविकायें ऐसी सुन्दरियाँ हैं। आत्मीय रक्त सम्बन्ध कितना गहरा होता है इसका प्रमाण तारा, अंगद एवं हनुमान ने लक्ष्मण को शान्त करने के लिये क्या नहीं कहा।

अंगद राज्य के अन्तःपुर में जाकर सुग्रीव के पैरों को पकड़कर बोले। रामके अनुज क्रोधी लक्ष्मण आये हैं। आप निश्चित समय पर राम के पास नहीं गये, इसलिए आप राम के समीप कृतघ्न और मिथ्यावादी हुए। यहाँ तो मेरी माता ने तथा हनुमान ने लक्ष्मण के क्रोध को शान्त किया है। इसलिए यथा योग्य कार्य शीघ्र करना चाहिए।

सुरापान की भर्त्सना–सुग्रीव बोले। मेरी यह निन्दित सुरा-पान की दुष्प्रवृत्ति है। जो सुरापान प्राणियों के बुद्धि-विवेक एवं कर्त्तव्या-कर्त्तव्य विचार का हरण कर लेता है। यह सुरापान पाँच महा पातक में एक है (क) हत्या (ख) असत्य, (ग) चौर्य (घ) गुरु निन्दा (ङ) सुरापान। अब मेरा विवेक जगा। बहुत शीघ्रता से लक्ष्मण के स्वागत के लिए द्वार पर जाकर लक्ष्मण को नमस्कार किया। और रामचन्द्र के कुशल पूछे। लक्ष्मण सुग्रीव को देखकर अपने क्रोध को मन में ही रखकर राज्य के अन्तःपुर में एक पत्थर के खण्ड से निर्मित पट्टिका पर बैठ गये। सुग्रीव ने उनके स्वागत के लिए बहुत से उपहार मँगाये। लक्ष्मण ने इन सबों को छोड़कर कहा कि रामचन्द्र, के कन्द मूल फल आदि के भोजन से बचा हुआ अंश ही मैं खाता हूँ। इसलिए कुछ भी अभी नहीं लूंगा। क्योंकि मैं ही रामचन्द्र के भोजन के लिए कन्द मूल फल आदि लाऊँगा।

तब सुग्रीव भी अंगद के साथ राम के समीप चले और हनुमान से बोले कि विविध प्रकार की सेनाओं के साथ तुम शीघ्र वहाँ आओ। राम के पास पहुँचकर सुग्रीव ने राम के चरणों को पकड़ लिया। राम ने उन्हें उठाकर हृदय से आलिंगन करके कुशल आदि पूछा। उसी क्रम में राज्य शासन की और प्रजाओं के कष्ट आदि की जिज्ञासा की।

सुग्रीव ने कहा। यद्यपि हमलोग क्षुद्र हैं। एक हजार करोड़ वानर सैन्य बल यों भिन्न-भिन्न दिशाओं में सीता के अन्वेषण के लिए गये हुए हैं। जिनके लौटने की प्रतीक्षा है। राम बोले। न तुम तुच्छ हो और न तुम अपराधी हो। पुनः जो कर्त्तव्य था उसे तुमने पहले ही किया। आगे जो करना चाहिए उसकी चेष्टा की जाय। इसके बाद सुग्रीव आदि सभी उस **"माल्यवान"** नाम के पर्वत पर रात में निवास किये।

"इति किष्किन्धा पटल"

"तानैकाङ् पडलम" ("सेना संन्दर्शन पटल")

इस पटल में सुग्रीव विशाल सेना का अश्रुतपूर्व वर्णन प्रमुख है।

इस पटल में सुग्रीव के सीमाहीन विशाल सैन्य सागर का विचित्र वर्णन है। इस का वर्णन किसी भी रामकाव्य में उपलब्ध नहीं है। संक्षिप्त रूप में सर्वथा नवीन इस सैन्य वर्णन को कम्बन के अनुसार ही विश्लेषण किया जा रहा है।

१. **''शतदल''** नाम का एक वीर वानर था जिसे (१०) दश लाख हाथी के बल वाले वानरों का नायक कहा जाता है। उसके पृष्ठ भाग में दश हजार करोड़ बानर सेना थी।

२. **''सुषेण''** नाम का वीर वानर के साथ दश लाख करोड़ वानर थे।

३. **''अनुपम''** नाम के सुग्रीव के श्वसुर 'रुमा' के पिता के साथ 'अड़तालीस' कड़ोर वानर सेना थी।

४. **हनुमान के पिता केशरी** वहाँ आ गये जिनके साथ पचास लाख करोड़ वानर सेनायें थीं।

५. **''गवाक्ष''** नाम के वानर सेनापति चार हजार करोड़ सेना के साथ उपस्थित हुए।

६. **'धुम्र'** नाम के बलवान ऋक्ष सेनापति दो हजार करोड़ रीछ सेनाओं के साथ पहुँच गये

७. **''पनस्य''** नाम के वानर सेनापति बारह हजार करोड़ सेनाओं के साथ पहुँचे।

८. **''नील''** नाम के सेनापति पचास हजार सेनाओं के साथ पहुँचे।

९. **''गवय''** नाम के सेनापति तीस हजार करोड़ भयंकर सेनाओं के साथ तैयार थे।

१०. **''दरीमुख''** नाम के सेनापति तीस हजार करोड़ सेनाओं के साथ दनदना रहे थे।

११. महावल शाली **''जाम्बबान''** सोलह सौ करोड़ सैन्य बल के साथ पहुँच गये।

१२. महा भयंकर **'दुर्मुख'** नाम के सेनापति दो करोड़ सेना के साथ पहुँचे।

१३. **द्विविद** नाम के परम बलशाली वानर सेनापति कितने करोड़ सैन्य थल के साथ आ गये।

१४. **'मैन्य'** नाम के सेनापति एक सौ हजार करोड़ सेना के साथ तैयार थे।

१५. **'कुमुद'** नाम के सूर्य के समान तेजस्वी सेनापति नौ करोड़ सेनाओं के साथ उपस्थित हुए।

१६. इसके बाद स्वयं महाज्ञानी बलवान **हनुमान्** पचीस हजार करोड़ सेनाओं के साथ सदलबल पहुँच गये।

१७. देवताओं के इंजीनियर के समान **'नल'** असंख्य सेनाओं के साथ तैयार थे।

इस प्रकार संख्या की गणना से अंतिम संख्या महा शंख नामक संख्या से भी हजार गुना अधिक संख्या वाले वानर सैन्य के वहाँ उपस्थित होने का वर्णन यह प्रमाणित करता है कि सुग्रीव की वानर सेनायें असीमित बलशाली और विशाल थीं।

विशेष : यहाँ यह सर्वथा चिन्तनीय एवं विचारणीय है कि इतनी संख्याओं के वर्णन का क्या आधार है ? और क्या मूल स्रोत है। क्योंकि सपूर्ण भूमण्डल में ही नहीं किन्तु तीनों भुवनों के क्षेत्रफल में भी इतनी सेनाओं का रहना सम्भव नहीं है। इसलिए मेरे विचार से कवि 'कम्बन्' का यह वर्णन **अर्थवाद** युक्त है। तात्पर्य इतना ही है कि सुग्रीव के पास वहु संख्यक सेनापति तथा अगणित सैन्य बल थे। इसीका संकेत है। यह कथा भी नवीन है। रामचन्द्र ने इस सेना-सागर को देखकर प्रसन्नता के साथ कृतज्ञता ज्ञापन किया।

''इति सेना दर्शन पटल''

''नाड़बिद्ध पडलम्'' (''अन्वेषण प्रेषण पटल'')

इस पटल में सीता की खोज के लिए पूर्वोक्त विशाल सेनाओं के विभिन्न दिशाओं में भेजने का वर्णन तथा नये मार्ग का सुग्रीव द्वारा संकेत वर्णन प्रमुख है।

रामचन्द्र ने सुग्रीव को धन्यवाद और बधाई देते हुए कहा। हे वानरराज, व्यूह रचना के बिना कितनी भी कोई गणना व्यर्थ है। सुग्रीव ने कहा गणितज्ञ विद्वान् कहते हैं कि प्रवाह के समान ये सैनिक हैं। इनकी गणना गणितज्ञों के कथन में विश्वास के बिना कोई भी दूसरा उपाय नहीं हैं। क्योंकि सेनाओं की गणना सम्भव नहीं है। राम ने कहा। अब अनेक वार्तालाप से कोई लाभ नहीं है। अपने कार्य में सभी यथायोग्य लग जाँय। यही अच्छा है।

सुग्रीव के द्वारा महत्त्वपूर्ण मार्ग वर्णन

सुग्रीव ने कहा। हे हनुमान् तुम को अपने पिता पवन के समान वेगवान तीनों भुवनों में सब जगह घूमने वाले हो। अपने पराक्रम को दिखाओ। मेरे मन में यह निश्चय हो गया है कि रावण दक्षिण दिशा की ओर गया है। इसलिए यह दिशा कठिन है। तुम इसी दिशा में जाओ, विजयी हो। और यश लाभ करो। तुम्हारे साथ युवराज अंगद और वरिष्ठ बुद्धिमान जाम्बवान् जायंगे।

तुम लोग सबसे पहले भगवान् विष्णु के समान् पूज्य विन्ध्यपर्वत के समीप जाओ, जहाँ पवित्र 'नर्मदा' नदी बहती हैं। और वहाँ देवतागण आकर स्नान करते हैं। उसके

बाद अत्यन्त मनोहर 'हेमकूट' नाम का पर्वत मिलेगा। जहाँ-देवांगनायें गाती हैं। तथा **''अशुण्ण''** नाम के प्राणी रहते हैं। वहाँ ''पङ्डै'' नाम की एक नदी है। उसके किनारे पहुँचकर सीता की खोज करो। इसके बाद 'विदर्भ' देश मिलेगा। वहाँ सुगन्धित श्रीखण्ड के वृक्ष तथा सुगन्धित **अगुरु** के वृक्ष मिलेंगे उनके देखते हुए तुम लोग दण्डकारण्य पहुँचोगे।

वहाँ वन्य वृक्षों से घिरे हुए **'मुण्डक'** नाम के क्षेत्र में **महर्षि अगस्त्य** रहते हैं। इस मुण्डक क्षेत्र में मधुर फल असमय में भी नित्य मिलते हैं। वहाँ सूर्य का भी मार्ग रुक जाता है। यह स्थान भोग और मोक्ष दोनों का संगम-स्थल है।

'मुण्डक' क्षेत्र की शोभा को देखते-देखते उन्नत शिखर वाले **''पाण्डु''** पर्वत को देखोगे। उसके समीप **भगवती-गोदावरी** नदी मिलेगी। जिसका निरन्तर सनातन प्रवाह मोती-सोना और रत्नों को लाता है। जिस नदी में स्नान कर अपुत्र भी नरक से मुक्त होता है। उस **गोदावरी** को पार कर तुम लोग 'सोन' नदी के तटपर जाओगे जहाँ शत्रु के संहारक **''षड्मुख''** (छः मुख वाले) भगवान कार्तिकेय रहते हैं। उस सुन्दर सोन नदी को देखते हुए आगे सूर्यकान्त नाम के पर्वत पर पहुँचोगे। जिसके समीप में ही चन्द्रकान्त नाम का भी पर्वत है।

उसकी बहुत बड़ी शोभा को देखकर उसके आगे **'अरुन्धती'** नाम के श्रेष्ठ पर्वत पर पहुँचकर आकाशगंगा को देखोगे जिसके शिखर पर सूर्य और चनद्रमा विश्राम करते हैं। जिस पर्वत को दूर से ही प्रणाम करके **'मरकत'** नाम के पर्वत पर पहुँचोगे। इसी पर्वत पर 'विनता' और 'कंद्रू' नाम की दो स्त्रियाँ कश्यप मुनि की रहती हैं, विनता गरूड़ की माता थी। 'कंद्रू' नाग-माता थीं। वह कंद्रू अपनी सौतिन विनता को दासी बनाकर शासन करती थी। यहीं पर गरुड़ पर्वत भी है। इस पवित्र पर्वत को नत मस्तक होकर प्रणाम करके आगे प्रस्थान करोगे।

इसके बाद तुमलोग 'श्री वेंकट गिरि; के पास पहुँचोगे। चारों वेद के ज्ञाता वैदिक एवम् अन्य शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वान रहते हैं। वहीं 'परम-तत्त्व' है। क्योंकि यह प्रदेश 'संस्कृत प्रदेश' और 'तमिल प्रदेश' के बीच का सीमा क्षेत्र है। जो पर्वत दो क्षेत्रों का संगम स्थान है।

विशेष : कवि कम्बन के मत में श्री **वेंकट गिरि** लेकर भारत का दक्षिण भाग **तमिल क्षेत्र** है। 'वेंकट गिरि' से उत्तर भाग संस्कृत क्षेत्र है। इनके मत में तमिल भाषा संस्कृत भाषा के समान है। जहाँ संस्कृत व्याकरण की रचना 'पाणिनि प्रभृति ने की वहीं तमिल व्याकरण की रचना **महा वैयाकरण महर्षि अगस्त्य ने की।** यह कम्बन् का मत है। भाषा वैज्ञानिकों के मत से यह मत समर्थित नहीं है। और न अन्य विद्वान ही इस

१७. देवताओं के इंजीनियर के समान **'नल'** असंख्य सेनाओं के साथ तैयार थे।

इस प्रकार संख्या की गणना से अंतिम संख्या महा शंख नामक संख्या से भी हजार गुना अधिक संख्या वाले वानर सैन्य के वहाँ उपस्थित होने का वर्णन यह प्रमाणित करता है कि सुग्रीव की वानर सेनायें असीमित बलशाली और विशाल थीं।

विशेष : यहाँ यह सर्वथा चिन्तनीय एवं विचारणीय है कि इतनी संख्याओं के वर्णन का क्या आधार है ? और क्या मूल स्रोत है। क्योंकि सपूर्ण भूमण्डल में ही नहीं किन्तु तीनों भुवनों के क्षेत्रफल में भी इतनी सेनाओं का रहना सम्भव नहीं है। इसलिए मेरे विचार से कवि 'कम्बन्' का यह वर्णन **अर्थवाद** युक्त है। तात्पर्य इतना ही है कि सुग्रीव के पास बहु संख्यक सेनापति तथा अगणित सैन्य बल थे। इसीका संकेत है। यह कथा भी नवीन है। रामचन्द्र ने इस सेना-सागर को देखकर प्रसन्नता के साथ कृतज्ञता ज्ञापन किया।

"इति सेना दर्शन पटल"

"नाड़बिद्ध पडलम्" ("अन्वेषण प्रेषण पटल")

इस पटल में सीता की खोज के लिए पूर्वोक्त विशाल सेनाओं के विभिन्न दिशाओं में भेजने का वर्णन तथा नये मार्ग का सुग्रीव द्वारा संकेत वर्णन प्रमुख है।

रामचन्द्र ने सुग्रीव को धन्यवाद और बधाई देते हुए कहा। हे वानरराज, व्यूह रचना के बिना कितनी भी कोई गणना व्यर्थ है। सुग्रीव ने कहा गणितज्ञ विद्वान् कहते हैं कि प्रवाह के समान ये सैनिक हैं। इनकी गणना गणितज्ञों के कथन में विश्वास के बिना कोई भी दूसरा उपाय नहीं हैं। क्योंकि सेनाओं की गणना सम्भव नहीं है। राम ने कहा। अब अनेक वार्तालाप से कोई लाभ नहीं है। अपने कार्य में सभी यथायोग्य लग जाँय। यही अच्छा है।

सुग्रीव के द्वारा महत्त्वपूर्ण मार्ग वर्णन

सुग्रीव ने कहा। हे हनुमान् तुम को अपने पिता पवन के समान वेगवान तीनों भुवनों में सब जगह घूमने वाले हो। अपने पराक्रम को दिखाओ। मेरे मन में यह निश्चय हो गया है कि रावण दक्षिण दिशा की ओर गया है। इसलिए यह दिशा कठिन है। तुम इसी दिशा में जाओ, विजयी हो। और यश लाभ करो। तुम्हारे साथ युवराज अंगद और वरिष्ठ बुद्धिमान जाम्बवान् जायंगे।

तुम लोग सबसे पहले भगवान् विष्णु के समान् पूज्य विन्ध्यपर्वत के समीप जाओ, जहाँ पवित्र 'नर्मदा' नदी बहती हैं। और वहाँ देवतागण आकर स्नान करते हैं। उसके

बाद अत्यन्त मनोहर 'हेमकूट' नाम का पर्वत मिलेगा। जहाँ-देवांगनायें गाती हैं। तथा **''अशुण्ण''** नाम के प्राणी रहते हैं। वहाँ ''पङ्ङै'' नाम की एक नदी है। उसके किनारे पहुँचकर सीता की खोज करो। इसके बाद 'विदर्भ' देश मिलेगा। वहाँ सुगन्धित श्रीखण्ड के वृक्ष तथा सुगन्धित **अगुरु** के वृक्ष मिलेंगे उनके देखते हुए तुम लोग दण्डकारण्य पहुँचोगे।

वहाँ वन्य वृक्षों से घिरे हुए **'मुण्डक'** नाम के क्षेत्र में **महर्षि अगस्त्य** रहते हैं। इस मुण्डक क्षेत्र में मधुर फल असमय में भी नित्य मिलते हैं। वहाँ सूर्य का भी मार्ग रुक जाता है। यह स्थान भोग और मोक्ष दोनों का संगम-स्थल है।

'मुण्डक' क्षेत्र की शोभा को देखते-देखते उन्नत शिखर वाले **''पाण्डु''** पर्वत को देखोगे। उसके समीप **भगवती-गोदावरी** नदी मिलेगी। जिसका निरन्तर सनातन प्रवाह मोती-सोना और रत्नों को लाता है। जिस नदी में स्नान कर अपुत्र भी नरक से मुक्त होता है। उस **गोदावरी** को पार कर तुम लोग 'सोन' नदी के तटपर जाओगे जहाँ शत्रु के संहारक **''षड्मुख''** (छः मुख वाले) भगवान कार्तिकेय रहते हैं। उस सुन्दर सोन नदी को देखते हुए आगे सूर्यकान्त नाम के पर्वत पर पहुँचोगे। जिसके समीप में ही चन्द्रकान्त नाम का भी पर्वत है।

उसकी बहुत बड़ी शोभा को देखकर उसके आगे **'अरुन्धती'** नाम के श्रेष्ठ पर्वत पर पहुँचकर आकाशगंगा को देखोगे जिसके शिखर पर सूर्य और चनद्रमा विश्राम करते हैं। जिस पर्वत को दूर से ही प्रणाम करके **'मरकत'** नाम के पर्वत पर पहुँचोगे। इसी पर्वत पर 'विनता' और 'कंद्रू' नाम की दो स्त्रियाँ कश्यप मुनि की रहती हैं, विनता गरूड़ की माता थी। 'कंद्रू' नाग-माता थीं। वह कंद्रू अपनी सौतिन विनता को दासी बनाकर शासन करती थी। यहीं पर गरुड़ पर्वत भी है। इस पवित्र पर्वत को नत मस्तक होकर प्रणाम करके आगे प्रस्थान करोगे।

इसके बाद तुमलोग 'श्री वेंकट गिरि; के पास पहुँचोगे। चारों वेद के ज्ञाता वैदिक एवम् अन्य शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वान रहते हैं। वहीं 'परम-तत्त्व' है। क्योंकि यह प्रदेश 'संस्कृत प्रदेश' और 'तमिल प्रदेश' के बीच का सीमा क्षेत्र है। जो पर्वत दो क्षेत्रों का संगम स्थान है।

विशेष : कवि कम्बन के मत में श्री **वेंकट गिरि** लेकर भारत का दक्षिण भाग **तमिल क्षेत्र** है। 'वेंकट गिरि' से उत्तर भाग संस्कृत क्षेत्र है। इनके मत में तमिल भाषा संस्कृत भाषा के समान है। जहाँ संस्कृत व्याकरण की रचना 'पाणिनि प्रभृति ने की वहीं तमिल व्याकरण की रचना **महा वैयाकरण महर्षि अगस्त्य ने की।** यह कम्बन् का मत है। भाषा वैज्ञानिकों के मत से यह मत समर्थित नहीं है। और न अन्य विद्वान ही इस

मत को मानते हैं। किन्तु प्रारम्भ से ही कवि कम्बन् ने ही **तमिल-भाषा एवं तमिल क्षेत्र का महत्त्व सभी जगह दिखाया है।** मेरे विचार से मातृ-भूमि के प्रति इतना गहरा अनुराग स्वाभाविक होते हुये भी अभूतपूर्व है।

यहीं पवित्र **गोदावरी** नदी बहती है। यहीं **'अगस्त्य'** स्थायी रूप से रहते हैं। जहाँ से विशाल **'तमिल-देश'** में तुम लोग प्रवेश करके आगे जाने का प्रत्यन करोगे। मैं एक मास की अवधि देता हूँ। इसी बीच में सीता की खोजकर आप लोग लौट जायेंगे। सुग्रीव की इस आशा और मार्ग दर्शन के वर्णन को सुनकर रामचन्द्र हनुमान से कहते हैं। हे हनुमान, सीता के परिचय के लिए सीता के पैर से लेकर मस्तक तक के कुछ लक्षणों को कहता हूँ। यहाँ इसका अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन दिया जा रहा है। यद्यपि कम्बन ने अपने स्वभावानुसार ललित पदावली युक्त सरस काव्य रचना में अग्रगण्य कवि ने विविध रूप से वर्णन किया है। सीता के विशाल **केश-पाश** ऐसे हैं जिनका वर्णन-चित्रण कवि की कल्पना से और वर्णन से परे है। सीता के नेत्र, **अधर, कपोल, दाँत, स्तन, उरू, दोनों, जाँघ, दोनों हाथ, दोनों पैर, दोनो वाँह, सभी अँगुलियां** और **सभी अंग प्रत्यंग** के लावण्य-लालित्य ऐसे हैं जिनकी शोभा को देखकर ही तुम तुरत समझ जाओगे कि यही 'सीता' है। यदि तुम सीता को देखोगे तो तुम मेरी उक्ति से उन्हें यह कहना।

विश्वामित्र के साथ **मिथिला की राजधानी** विदेह जनक के धनुष यज्ञ में 'कन्या सौध' नाम की अट्टालिका पर मैंने सीता को देखा था। इसलिए मैंने शिव धनुष को तोड़ा (शिव धनुष तोड़ने में सीता के सौन्दर्य का आकर्षण ही एक मात्र कारण था)। इस तरह सीता का परिचय हनुमान को देकर **'राम' नाम से अंकित अंगूठी** को अपनी अंगुली से निकाल कर सीता के विश्वास के लिए राम ने हनुमान को दी। इस तरह सभी वानर वीर सुग्रीव के दिखाये हुए मार्ग से यथा योग्य बड़े उल्लास और गर्व के साथ अपने अपने निर्दिष्ट स्थानों की ओर चल दिये।

"इति अन्वेषप्रेषण पटल।

"पिलम् पुक्कु निङ्गु पडलम्" ("विल प्रवेश निर्गमन पटल")

इस पटल में हनुमान आदि वीरों के विन्धयाचल पर्वत के समीप एक विशाल बिल में प्रवेश, वहाँ की अद्भुत स्थिति और बिल से निकलने का विस्तृत वर्णन प्रमुख है। वाल्मीकि आदि ने भी बिल में प्रवेश का वर्णन किया है।

रामचन्द्र की आज्ञा और उनकी अँगूठी लेकर जाम्बवान् अगंद आदि के साथ हनुमान ने दक्षिण दिशा की ओर प्रस्थान किया। यहाँ केवल दक्षिण दिशा जाने वाले

का ही वर्णन 'कम्बन; ने लिखा है। जिसका संक्षिप्त प्रमुख वर्णन निम्नांकित है।

यह विन्ध्यांचल पर्वत शिव के जटा-जूट के समान है। जहाँ सीता की खोज के लिए आये हुए हनुमान आदि वानर इधर-उधर, ऊपर-नीचे घूम रहे थे। यहाँ नर्मदा नदी बहती है। जहाँ हँसों का क्रीड़ास्थल स्वर्गीय नारियों के घूमने का स्थान है। यह दक्षिण दिशा पृथ्वी में शिरा-भूषण रूप में है। यहाँ सीता को खोजते हुए वे वानरगण सीता के समान देखते हुए चले थे। यहीं पर **'हेमकूट'** नाम का पर्वत है। वहाँ भी सीता की खोज की। सीता नहीं मिली। तब उनलोगों ने निश्चय किया कि यह 'रावण' का स्थान नहीं है।

तब अगंद वाले **''वल्लभ''** संख्या वाली सेना जल से घिरी हुई भूमिपर जाकर सीता की खोज करें। तुम लोग उसके बाद 'महेंन्द्र' पर्वत पर मिलोगे। हनुमान प्रभृति हमलोग मरु प्रदेश जा रहे हैं। जहाँ न जल है, न वृक्ष है और न छाया है। अत्यन्त तप्त-भूमि है। जहाँ चलने से पैरों में फफोले हो जाते हैं। एक मरण ही सम्भव है। तभी एक अंधकारमय गुफा में वे लोग घुस गये। जहाँ डर से सूर्य चन्द्रमा भी नहीं आते हैं। साहस करके वायु पुत्र हनुमान् बोले। आपलोग मेरी पूँछ को जोरों से पकड़कर पीछे से आइये। मैं आगे चलता हूँ।

तब स्वर्ग-पुरी के समान ''कोलोत्तुङ्ग' नाम के एक स्थान को देखा। जहाँ की शोभा अनुपम थी। वहाँ नाना प्रकार के फल, **तमिल क्षेत्र का मधु,** और **शीतल जल** है। वे वानर इन सबों को देखकर सोचने लगे कि यही रावण की नगरी है। लेकिन जब इन लोगों ने भ्रमण किया तो जाना कि यहाँ कोई लोक नहीं है। यह 'देव-लोक', 'मानव-लोक', और नाग-लोक' भी नहीं हैं। यह **'माया नगरी''** तो स्वर्ग-पुरी है। पुनः निश्चय किया कि **हम लोग तो जी रहे हैं। स्वर्ग जाने के लिए तो मरना जरूरी है।** वह तो नहीं हुआ है।

तव जामववान् साहस को वढ़ाते हुए बोले। हमलोगों का संतोष कम नही हो रहा है। हनुमान् बोले। इस बिल से बाहर जाना अत्यन्त कठिन है। इसलिए साहस करके आगे जाना ही उचित है। कुछ दूर जाने पर अत्यन्त सुन्दरी जटा-जूट मयी **''स्वयं प्रभा''** नाम की एक तपस्विनी योगाभ्यास में लीन थी। हनुमान सोचते हैं कि क्या यहीं 'सीता' है। राम ने जो लक्षण बताया था उसके आधार पर मुझे ऐसा मालूम होता है। इसी बीच में ही वह तपस्विनी समाधि को समाप्त कर जग गयीं और पूछती है कि तुमलोग कहाँ से क्यों यहाँ आये हो। हनुमान् ने कहा अत्याचारी रावण ने अपनी माया से, छल से रामचन्द्र की पत्नी 'सीता' का हरण कर लिया। उन्हीं सीता की खोज में हमलोग यहाँ आये हैं।

सहसा वह "**स्वयं-प्रभा**' उठकर स्वागत करती हुई नाचने लगी और बोली, मेरी तपस्या सफल हो गयी। पवन-सुत ने उससे पूछा **जिसके लम्बे केश समूह जमीन पर लोट रहे थे।** "**स्वयं-प्रभा**" बोली किसी कारण से शापित होकर मैं यहाँ तपस्या कर रही हूँ। क्योंकि इन्द्र ने कहा था जब रामचन्द्र की आज्ञा से वानर यहाँ आयेंगे तब तुम शाप से मुक्त हो जाओगी। वह समय आ गया।

यह सभी सुखों के योग्य प्रदार्थ हैं। उनका उपयोग कीजिये। हनुमान् आदि ने उस कल्पित माया-नगरी को उठाकर समुद्र में फेंक दिया। और वे लोग तपस्विनी "**स्वयं-प्रभा**" के साथ बाहर आ गये। वह 'स्वयं–प्रभा' स्वर्ग चली गयी। इन सभी वीरों ने बाहर आकर पुनर्जीवन प्राप्त किया तब सूर्यास्त हो गया।

"इति बिल प्रवेश निर्गमन पटल"

"आरूश पडलम्" ("मार्ग गमन पटल")

इस पटल में सीता की खोज में जाते हुए वानरों के द्वारा विविध स्थानों की शोभा देखने का वर्णन तथा महेन्द्र पर्वत पर पहुँचने का वर्णन प्रमुख है।

वे वानर सैनिक पूर्वोक्त जलाशय का जल पीकर, मधुर फलों को खाकर वहाँ के मधु का पान किये कुछ देर तक वे लोग आराम करने के लिए लेट गये। इसी बीच एक भयंकर दानव वहाँ पहुँचा। वह दानव वानरों को देखकर उनके साथ युद्ध करने के लिए पहुँच गया। अगंद नीन्द टूट जाने के क्रोध से उस दानब को मुट्ठियों से प्रहार कर घायल करके नीचे फेंक दिया।

तब जाम्बवान ने विचार कर कहा इस सरोवर के रक्षक और स्वामी 'धूम्र' नाम का महा राक्षस है। तब वे वानर "**पड्डै**" नाम की नदी किनारे आ गये। वहाँ कुछ ठहर कर नदी पार कर "**विदर्भ** देश में पहुँचे। समूचे विदर्भ देश में सभी जगह सीता की खोज की वहाँ सीता नहीं मिली।

वहाँ से चलकर "**गुण्डक**" नाम की नदी के किनारे पहुँचे। वहाँ देवांगनायें और यक्षिणी गण आकर जलकेलि करते हैं। वहाँ सुसज्जित लम्बे-केश बाली नारियों के समूह भ्रमण करते थे। लेकिन वहाँ भी 'सीता' नहीं मिली।

वहाँ से चलकर "**सोन**" नदी के तटपर आये वहाँ से "**कोङ्कण**" देश पहुँचकर उसके सातों भागों में घूमे, वहाँ भी सीता नहीं मिली। वहाँ से चलकर **'वेंकटादि-पर्वत'** के समीप पहुँचे। जहाँ साक्षात् भगवान विष्णु के दोनों चरणों के चिह्न का दर्शन कर लोग मोक्ष प्राप्त करते हैं। ये वानर वहाँ 'वेंकटाचल' भगवान की पूजा करके दक्षिण

तमिल देश के सभी भागों में घूमे, कष्ट सहे और थक गये। लेकिन वहाँ भी 'सीता' नहीं मिली। निराश होकर। सभी वानर गण थके हुए **'महेन्द्र'** नामक पर्वत के समीप पहुँच गये। जिसका संकेत चलने के समय सुग्रीव ने दिया था।

''इति मार्ग गमन पटल''

''समपादिप्-पडलम्'' (''सम्पाति-पटल'')

इस पटल में हनुमान् आदि का विशाल **'महेन्द्र'** पर्वत पर पहुँचने तथा जटायु के बड़े भाई सम्पाति से मिलने का वर्णन प्रमुख है। दिग्गज के समान महेन्द्र नाम के पर्वत पर जाम्बवान, अंगद, और हनुमान, आदि प्रमुख व्यक्तियों ने दक्षिण समुद्र को मेघ के समान गरजते हुए, और उछलते हुए तंरग समूहों को देखा। यहाँ कवि कल्पना करते हैं। ये उछलते हुए तरंग समूह अपने हाथों से वानरों को आमंत्रित कर रहे हैं कि हमारे समीप 'लंका' में वह विशाल नेत्र-एवं सुन्दर केश-वाली **'सीता'** है। वहीं भिन्न-भिन्न देशों से अन्य सैनिक भी आकर मिल गये। वे सभी अपनी सफलता पर विचार करते हुए चिन्तित थे कि कार्य-सिद्धि के विना लौटना उचित नहीं है। समय सीमा समाप्त हो चुकी है। हमलोग क्या करें। यह समझ में नहीं आता है। क्या विष पीकर अपने प्राणों को हम लोग छोड़ दें। हमलोगों ने प्रतिज्ञा की थी। लेकिन कार्य में सफलता नहीं हुई। जब वे लोग इस तरह व्यथित और चिन्तित थे तब ज्ञान और अवस्था में श्रेष्ठ जाम्बवान बोले।

यदि हमलोग यहाँ मरण को वरण करेंगे, तो यह समाचार अवश्य ही किसी तरह सुग्रीव समझ जायंगे। यह सुनते ही वे सुग्रीव स्वर्ग लोक चले जायेंगे। इसे देखकर राम-लक्षमण भी मर जायगें, यह निश्चित है। इतना ही नहीं जिस किसी तरह इस दुर्घटना को जानकर अयोध्या में भरत आदि सभी व्यक्ति एवं सभी मातायें देव लोक के अतिथि हो जायंगी।

तब महावीर हनुमान ने कहा। अभी तो हमलोगों ने तीन लोकों में एक ही लोक में खोज की है। अन्य दो लोक तथा उनके सभी भाग बचे हुए हैं। इसीलिए यदि अवधि बीतने पर भी सीता मिल गयी तो क्या सुग्रीव समय के बीत जाने का दोष देंगे ? मरण तो सर्वथा निन्दनीय है। यदि अन्वेषण के क्रम में जटायु की तरह मरण हो तो वह शोभनीय है।

''महेन्द्र' पर्वत के समीप जटायु के बड़े भाई सम्पाति रहते थे। वानरों के द्वारा अपने अनुज जटायु के मरण को सुनकर सम्पाति रोते और विलाप करते हुए। वानरों के समीप आयें। उसको देखकर क्रोध के कारण जोरों से गरजते हुए हनुमान ने सम्पाति

को पूछा। अरे कपट वेश धारण करने वाले ठग राक्षस, क्या तुम मेरे हाथ से बचोगे। सम्पाति ने कहा, मैं जटायु का बड़ा भाई सम्पाति नाम का गीध हूँ। जटायु को किसने मारा, यह सविस्तार बताओ। यदि तुम सब कुछ कहोगे, तो मैं भी सीता के प्रसंग में सभी विवरण दूँगा। मैं भ्रातृ-विहीन हो गया। इसलिए बहुत दुखी हूँ।

तब हनुमान् ने विस्तार से जटायु के मरण का सभी समाचार सुनाया, यह भी बताया कि **'चन्द्रहास'** नाम की तलवार से रावण ने गटायु को मारा। यह सुनकर सम्पाति बोले आकाश मार्ग से जाते हुए रावण के द्वारा हरी गयी सीता को मैंने देखा। वह सीता लंका के किसी भयंकर जेल में वन्दिनी बनी हुई है। लेकिन अभी वह जीवित है। वहाँ जाकर उन्हें देखो। किन्तु लंका गमन सरल नहीं बल्कि अति कठिन कार्य है। यदि सम्भव हो तो अकेले ही कोई जाओ। वहाँ छिपकर उनको देखकर, उनके साथ बातें कर के लौट जाओ। साथ ही तात्कालिक दुःख को दूर करने के लिए शीघ्र ही **राम** के समीप जाकर सब कुछ निवेदन कर दो। यह कहकर सम्पाति आकाश मार्ग से चला गया।

"इति सम्पाति पटल"

"मयेन्दिरप पडलम्" ("महेन्द्र पटल")

इस पटल में सभी वानरों का राम लक्ष्मण एवं सुग्रीव के पास पहुँचने तथा वहाँ 'महेन्द्र' पर्वत पर से हनुमान का लंका प्रस्थान वर्णन प्रमुख है।

सम्पाति के द्वारा सीता के प्रसंग में सभी बातें जानकर जाम्बवान, अगंद नल, नील और हनुमान् आदि सभी श्रेष्ठ वीर प्रसन्न होकर आपस में गम्भीर विचार विमर्श करने लगें। उन लोगों ने कहा कि सम्पाति कथन पर सभी लोग मिलकर गहराई से विचार करें। तब सबसे पहले वानरों में प्रमुख अभियन्ता (इंजीनियर) 'नल' ने कहा इस विशाल समुद्र में पुल बनाना तो मुझसे सम्भव नहीं है।

यह सुनकर जाम्बवान बोले। एक समय था, जब त्रिविक्रम भगवान् वामन ने एक ही पैर से समूची पृथ्वी को लांघ दिया। उस समय, मैं ही सारे भूमण्डल पर दौड़ते हुए, यह सूचना प्रसारित की। लेकिन इस समय शक्ति-हीन बहुत वृद्ध हो गया हूँ। समुद्र पार नहीं जा सकता। यह कह कर। जाम्बवान ने हनुमान् को बुलाया और कहा कि हे महावीर हनुमान, तुम राम के प्रिय हो और राम के साथ तुम्हारी निकटता है। तीनों लोकों में तुम्हारे साथ कोई भी युद्ध नहीं कर सकता है। तुम तो काम रूप हो। कभी मेरु पर्वत के समान हो सकते हो, आकाश मार्ग से जाने में समर्थ हो, तथा समुद्र पार करने में भी सशक्त हो, इसलिए आकाश मार्ग से समुद्र तैरने के लिए तुम तैयार हो

जाओ। भगवान तुम्हारे सहायक होंगे।

जाम्बबान् के वचन सुनकर हनुमान ने विनम्र भाव से निवेदन किया। हे श्रेष्ठ वीर, यद्यपि आप विशाल सागर को पार करने में समर्थ हैं। सीता की खोज कर के रावण को हरांकर सीता को ले आने में भी सभी तरह समर्थ हैं। किन्तु जब आप की आज्ञा हुई तब मैं अपने जन्म को सफल करने के लिए इस महान् कठिन कार्य में लग जाता हूँ। जब तक इस विशाल तरंग बाले समुद्र के बीच में स्थित लंका में प्रवेश कर के और कार्य साधन करके नहीं लौटता हूँ, तब तक आपलोग मेरी प्रतीक्षा में यहीं ठहरें। आप लोग शीघ्र ही आज्ञा दें।

अगंद आदि सबों ने हनुमान् को बधाइयाँ दीं। देवताओं ने आकाश से फूल की वर्षा की। हनुमान् तुरत ही कूद कर **'महेन्द्र'** पर्वत के आकाश छूने वाले शिखर पर पहुँच गये। हनुमान के बहुत वेग से उस पर्वत पर चढ़ने के कारण महेन्द्र पर्वत का कुछ अंश पृथ्वी में चला गया और उसके कुछ शिखर जहाँ तहाँ टूटकर फैल गये। महेन्द्र पर्वत तो हनुमान के पैर के समान दिखाई पड़ा।

''इति महेन्द्र पटल''

''इति किष्किन्धा काण्डम्''

सुन्दरकाण्डम्

''कडलुताबु पडलम्'' (''समुद्र तरण पटल'')

'सुन्दरकाण्ड' रामायण रूपी रत्न माला का मणि मय 'सुमेरु' के समान सुन्दर है।

इस पटल में हनुमान के द्वारा समुद्र तरण का वर्णन, मैनाक सुरसा आदि से भेंट का वर्णन, समुद्र की शोभा का वर्णन और हनुमान् की विशालता का वर्णन प्रमुख है।

इस काण्ड के तमिल-मंगलाचरण पद्य का संस्कृत पद्य में ही अनुवाद संस्कृत लेखक ने (मैंने) किया है। वह पद्य निम्नांकित है।

''पञ्चतत्त्वात्मक विश्व प्रपञ्च निर्माणकर :

सर्पवद्रज्जु निवारण समोवरो,।

निर्गुण–सगुणाकारो यः सर्ववन्धः,

जगदिदं रक्षतु स महान् रामचन्द्र :।

अर्थात्–इस पञ्च-तत्वमय समस्त विश्व के निर्माण करने वाले निर्गुण और सगुण, सभी से वन्दनीय सर्प के समान रज्जु (रस्सी) को निवारण में–समर्थ वह महान् रामचन्द्र इस संसार की रक्षा करें ?

समुद्र तैरने के लिए **'महेन्द्र' पर्वत** से उड़ने वाले–हनुमान् ने आकाश में देवलोक **को देखकर** यही लंका है इस भ्रमात्मक ज्ञान का अनुभव करके समुद्र तैरने के लिए आकाश मार्ग में चले। तब उन्होंने देखा कि यह लंका विशाल प्राचीर 'दीवार' विजय द्वार, एवं स्वर्ण मय अट्टालिकाओं बाली तथा विविध गलियों वाली सुशोभित हो रही है। आनन्द और उत्साह से अपने दोनों हाथों को मलते हुए भयंकर गर्जन करके कूद गये। जिनके गर्जन से दशों दिशायें काँप गयीं और दिक्पाल गण डर गये।

हनुमान की पैर को भार से हिलता हुआ वह महेन्द्र पर्वत पाताल में प्रवेश करने की तरह दीख रहा था। इस पर्वत पर सिंह, बाध, साँप आदि भयंकर जन्तु विचलित हो गये। कुछ बाहर निकल गये, और कुछ खून वमन करते हुए उसी के भीतर प्रवेश कर गये और मर गये। वह (महेन्द्र) पर्वत यद्यपि फैला हुआ विशाल था। किन्तु अनेक वृक्ष लता फूल आदि से हरिण, सारस आदि सुन्दर पशु-पक्षियों से भी सुशोभित था। वहाँ से चलकर जब पवन सुत हनुमान आकाश-मार्ग से चले तब आकाश में देवता और ऋषि गण एकत्र हो कर सुगन्धित केसर युक्त फूलों की वर्षा की।

हनुमान पल में ही कभी अपने विशाल रूप को और कभी अपने अल्प रूप को दिखाते हुए आकाश से ऊपर 'अंतरिक्ष'' में प्रवेश कर गये। उनके अति शीघ्र वेग के कारण वृक्ष, लता, पशु, एवं असंख्य पदार्थ इधर उधर बिखर कर नीचे से ऊपर और ऊपर से नीचे हो गये।

आकाश में देवता गण स्तुति कर रहे थे। वेदज्ञ ऋषि गण साधुबाद दे रहे थे, और भूमि पर रहने वाले नमस्कार कर रहे थे। हनुमान तो मन में यह सोचते हुए जा रहे थे कि जिस क्षण में ही चन्द्रहास–तलवार धारण करने वाला रावण मिलेगा, तभी उसको अपनी छाती से रगड़कर मसलते हुए पीस डालूँगा। जिस रावण ने तपस्या करके दश मस्तक प्राप्त किये और सुदीर्घ तपस्या तथा इन्द्रिय निग्रह करके वरदान प्राप्त किये उसका अन्त समय आ गया। उत्तर दिशा से दक्षिण दिशा की ओर जाते हुए हनुमान् सूर्य के समान् तेजस्वी दीख रहे थे जैसे सूर्य पूर्व दिशा को छोड़कर दक्षिण दिशा में ही उदित होकर रावण संहार के लिये दक्षिण दिशा गये हों।

जब पर्वत समान हनुमान् आकाश मार्ग से झंझवात की तरह जा रहे थे तभी आकाश मार्ग को छूते हुए 'मैनाक' पर्वत समुद्र से बाहर आया। वह पर्वत वैसा ही दीख रहा था जैसे क्षीर सागर में शयन करनेवाले हजार मस्तक वाले भगवान् विष्णु उठकर आये हों। क्योंकि उस पर्वत को भी हजार लाल शिखर थे। अतएव मैनाक पर्वत का नाम 'हिरण्यनाभ' भी है।

यहाँ कवि ने चतुर्वेद मन्त्र **''सहस्त्र शीर्षा पुरुषः सहस्ताक्षः सहस्त्रपात्''** की ओर इंगित करते हुए मैनाक पर्वत को **'सहस्त्रशीर्षा'' विष्णु से तुलना की है।**

एक समय दुर्वासा ऋषि ने प्रसन्न होकर इन्द्र को एक माला दी। इन्द्र ने उस माला को अपने हाथी ऐरावत के माथे पर फेंक दिया। दुर्वासा ने उसे अपना अपमान समझ क्रुद्ध होकर समुद्र में उसे निक्षेपण का शाप दे दिया। तब सभी स्वर्गीय पदार्थ समुद्र में चल गये। तब विष्णु से प्रेरित होकर सभी देवगण एवं राक्षस गण ने क्षीर सागर का मन्थन किया। उसी मन्थन से ''मैनाक'' पर्वत भी बाहर आया। वही मैनाक सर्वत्र आकाश मार्ग में व्याप्त हो गया। यह देखकर हनुमान् चिन्तित हुए।

बिगड़कर वायु पुत्र हनुमान् ने पैर से इसतरह प्रहार किया जिससे मैनाक पर्वत नीचे गिर गया। मैनाक पर्वत के शिखर भाग नीचे चला गया और निचला भाग ऊपर आ गया। इससे मैनाक ने दुःखी होकर फिर उठकर हनुमान के पास आकर प्रार्थना की।

हे तात, सुनो मैं तुम्हारा विरोधी नहीं हूँ। जब इन्द्र ने मेरी पाँख काट दी तब तुम्हारे पिता वायु ने मेरे ऊपर दया करके मुझे समुद्र में रख दिया। और कहा कि जब रामचन्द्र

की आज्ञा से सीता की खोज के लिए मेरा पुत्र हनुमान आयेगा तब तुम्हारा उद्धार होगा। तुम उसकी सहायता करोगे, उनके कहने से ही मैं तुम्हारी सेवा के लिए, सहायता के लिए उपस्थित हूँ। कुछ देर विश्राम करके जाओ। मैं तुम्हारा सब तरह से कल्याण करने वाला हूँ। मेरा आतिथ्य स्वीकार करो, फल आदि खाओ।

हनुमान ने कहा रामकाज के सम्पादन के बिना मैं नहीं खाऊँगा। मधु के समान मधुर आपका वचन ही मेरा आतिथ्य है। केवल 'त्रिकूट' पर्वत के शिखर पर स्थित लंका जाना मेरा प्रथम कर्त्तव्य और कार्यक्रम है। जब कार्य सम्पन्न कर लौटूँगा तब आपका आतिथ्य सत्कार प्राप्त करूँगा। इस समय आज्ञा दें। यह कहकर पवन-पुत्र हनुमान वहाँ से प्रस्थान कर गये।

इसी बीच देवताओं ने 'सुरसा' नाम की राक्षसी को हनुमान के पास उनके बल को जानने के लिए भेजा। यह सुरसा राक्षसी होती हुई भी गुणवती थी। (वाल्मीकि ने सुरसा को 'नागमाता शब्द से व्यवहार किया है।) हनुमान के पास आकर सुरसा बोली। आज देवताओं ने मेरे लिए माँस का आहार भेजा है। तुमको खा लेने से मेरी भूख शान्त हो जायगी। हनुमान बोले ऐसा ही हो। मैं तुम्हारे मुंह रूपी द्वारा से ही जाऊँगा। सुरसा ने अपने मुँह को फैलाया जिसमें असंख्य लोग प्रवेशकर सकते थे। यह देखकर हनुमान ने अपना एकदम छोटा रुप बना कर सुरसा के मुँह में प्रवेश करके बाहर आ गये। यह देखकर देवताओं ने फूल की वर्षा की। सुरसा हनुमान को आशीर्वाद देती हुई कही कि तुम्हारे कार्य की सिद्धि हो गयी।

इसके बाद एक भयंकर आकार बाली 'अंग-तारा'' नाम की राक्षसी ने सामने आकर हनुमान को बाधा दी। हनुमान ने कहा कि किसी की छाया पकड़कर अपने समीप लाने में तुम समर्थ हो यही बरदान तुमने प्राप्त किया है। लेकिन तुम क्यों मेरे रास्ते को रोककर यहाँ खड़ी हो, क्या काम है ? यह स्पष्ट बताओ। मेरे साथ जो संघर्ष करता है वह नाश हो जाता है। वह जब ऐसा कह रही थी, तभी हनुमान उसके पेट में बैठकर पेट के सभी माँस-अंतड़ी आदि, को लेकर पक्षी के समान अकाश में उड़ गये। इस तरह राक्षसी ''अंगतारा'' मर गयी। क्योंकि हनुमान् ने उसके पेट और छाती को चीर दिया। इस तरह सुग्रीव से कहे गये सभी बाधा विघ्नों को दूर करके स्वर्ग के समान सात सौ योजन फैली हुई सभी सुख साधन पदार्थो से परिपूर्ण 'लंका' को देखा।

''इति समुद्र तरण पटल''

''उरूतेडु पडलम्'' (''लंका अन्वेषण पटल'')

इस पटल में लंका की शोभा का वर्णन तथा लंका में हनुमान के प्रवेश का वर्णन प्रमुख है।

यहाँ कवि कम्बन् ने २३४ पद्यों में लंका महानगरी का विस्तृत वर्णन किया है। यहाँ स्वर्गीय सुन्दरी नारियों की अपूर्व शोभा का वर्णन है। यद्यपि ''वाल्मीकि रामायण'' के सुन्दरकाण्ड में लंका की मनोहारिणी शोभा एवं वहाँ की नारियों की काम-कला का विस्तृत वर्णन है। लेकिन ''कम्बन्'' की अपनी शैंली में वर्णित शोभा के कुछ अंशों का यहाँ वर्णन किया जा रहा है।

सूर्य-किरणों के समान चमकती हुई स्वर्णमयी लंका मणियों से निर्मित प्रासाद-अट्टालिका युक्त चमक रही है। जिन्हें देखकर आँखे चौंधिया जाती हैं। वहाँ देवांगनायें दासी रूप में हैं। वहाँ के सभी वृक्ष देववृक्ष कल्प-वृक्ष के समान हैं। देवता गण अपने अधिकारों को छोड़कर यहाँ दास बने हुए हैं। केवल ब्रह्मा, विष्णु, एवं शिव को छोड़कर सभी रावण के आज्ञापालन में तत्पर थे। वहाँ सभी तरह के हाथी, घोड़े, कस्तूरी मृग, नव विकसित फूल, मधु क्षरण करते हुए, एवं विविध लतायें सुशोभित हैं। लंका के वैभव-ऐश्वर्य को देखकर यह कोई भी निश्चय नहीं कर सकता कि विश्वकर्मा प्रशंसनीय हैं या ''रावण की तपस्या'' प्रशंसनीय है, अथवा ब्रह्मा द्वारा प्रदत्त 'वरदान'' प्रशंसनीय है।

लंका में चक्रवात (बवण्डर) नहीं प्रवेश करते हैं। मेघ नहीं जाते हैं, आग नही तपती है। विद्याधर-यक्ष-गण नाचते हैं। लम्बे-लम्बे केशवाली नारियाँ यक्षिणियों से स्पर्धा करती हैं। आठों सिद्धियाँ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्रकामिनी, वशित्व, ईशित्व वे अष्टसिद्धियाँ (अप्रमरकोष) । एवं नवनिधियांः पद्म, महापद्म, शंख, मकर, कच्छप, मुकुन्द, कुन्द, नील। (१) नवो निधियाँ दास की तरह अनुसरण करनी हैं। (२) आठो सिद्धियाँ हाथ जोड़कर निरन्तर प्रार्थना करती हैं। वहाँ की नारियों के ओठ, कपोल, नाक, नेत्र एवं स्तन के साथ उनके विशाल काले मेघ के समान चिकने केश पाश हमेशा लोगों को आकृष्ट करते रहते हैं।

इन सबों को देखकर हनुमान सोचते हैं। भगवान् राम के समीप जाकर मैं क्या कहूँगा यह समझ में नहीं आता है। वे सोचते हैं कि इसके पास असंख्य असीमित सेनायें सैन्य बल हैं। रावण के पराक्रम की सीमा नहीं है। यहाँ मायावी राक्षसगण हैं। उनकी हाथ में शूल, फरसा, तलवार, मुसल, गदा, वज्रदण्ड, चक्र, भाला, अंकुश, भुशुण्डि (बन्दूक) आदि अस्त्र शस्त्र हैं।

ऐसी स्थिति में सहसा लंका देवी (लङ्किनी) नाम की राक्षसी आ गयी। उसके चार मुख, आठ हाथ, एवं तीक्ष्ण तेज नेत्र थे। उसके हाथ में तलवार शूल, भयंकर गदा, पाश, शंख, धनुष, प्रभृति अस्त्र थे वह 'लंकिनी' पाँच रंगों के वस्त्रों को पहने हुई थी।

उसे देखकर हनुमान बोले। हे भयंकर रूप वाली यहाँ आओ। मैं तो लंका देखने आया हूँ। मैं एक दीन व्यक्ति हूँ। क्यों मुझे बाधा दे रही हो। उसी बीच वह बोली। जल्दी जाओ, क्यों 'वाग्-जाल' फैला रहे हो। यहाँ तो त्रिपुरासुर नाशक देव भी नहीं आ सकते हैं। तुम कौन हो भागो भागो, तुम दया के पात्र हो। ऐसा कहकर वह "अम्भारी" यह बोलती हुई हंसती हुई फिर फिर बोली। किसकी आज्ञा से यहाँ आये हो ?

हनुमान् ने कहा। मैं बिना लंका देखे नहीं लौटूँगा। यदि मार सकती हो तो मुझे मारो। यह सुनकर उसने अपने आठों मुखों से आग की ज्वाला धधकाती हुई चीत्कार करती हुई 'अग्नि-मुख' नाम के 'त्रिशूल' हनुमान के ऊपर फेंका। हनुमान ने उसे अपने दांतों से तोड़ दिया। यह देखकर वह सोचने लगी। एक बार 'ब्रह्मा' ने कहा था कि जब कोई बानर यहाँ आयेगा और तुम को छूकर दण्ड देगा तब तुम अपने काम को छोड़कर मेरे पास आ जाओगी। इसके बाद इस लंका का विनाश हो जायगा। प्रायः वही वानर और वही समय आ गया है।

तब वह हनुमान से बोली कि ब्रह्मा का वचन सत्य हुआ। धर्म जीत गया, पाप पराजित हुआ। तुम जो चाहते हो, करो। सभी कार्य सिद्ध होंगे। इस सोने की नगरी में प्रवेश करो। यह कहकर वह चली गयी। हनुमान भी अपना लघुरूप धारण करके लंका में प्रवेश कर गये।

वहाँ रावण के अन्तःपुर में प्रवेश कर के वहाँ की विविध अनेक अलंकार युक्त मनोहर सुन्दरियों को देखा। जिनके आपाद-मस्तक (पैर से सिर तक का) वर्णन कवि ने अनेक पद्यों में किया है। तब हनुमान ने कुम्भकर्ण के भवन को देखा। जिसकी सुन्दरता और भयंकरता विचित्र थी। तब सीता को खोजते हुए वे विभीषण के घर पर पहुँचे। वहाँ देवता, वेदज्ञ ब्राह्मण सम्मानपूर्वक रह रहे थे। विभीषण के समीप पहुँचकर हनुमान ने सभी बातों को समझा। तब सीता की खोज में तैयार हो गये। इसी खोज के क्रम में हनुमान ने विभिन्न प्रासादों (कोठों) पर हजारों संख्या में देवांगनायें, अप्सरायें और अनेक यक्षिणियाँ थी, जिनकी शोभा अभूतपूर्व थी। उस स्थिति में यहीं "सीता" हैं यह निश्चय करने में असमर्थ हनुमान सोचते हैं। सुग्रीव के द्वारा दिया गया समय समाप्त हो गया। लेकिन सीता के दर्शन नहीं हुए। वे किंकर्त्तव्यविमूढ़, (क्या करें क्या नहीं

करें इस निश्चय में असमर्थ) होकर चिन्तित हुए। इसके बाद एक सुगन्धित उद्यान (फुलवारी) में यही सोचते हुए ठहर गये।

''इति लंका अन्बेषण पटल''

''कार चिप् पडलम्—सीता दर्शन-पटल

इस पटल में अत्यधिक चिन्तित हनुमान का सीतान्वेषण तथा सीता दर्शन का वर्णन प्रमुख है।

हनुमान् ''चैत्य'' नाम के प्रासाद के समीप में स्थित वन के समीप पहुँचकर सोचने लगे कि यदि यहाँ भी सीता नहीं मिली तो इस लंका को समूल नष्ट करके अपने प्राण त्याग दूँगा। दूसरा कोई चारा नहीं था। उसी समय देवताओं ने आकाश से फूल की वर्षा की। यहाँ कवि कम्बन् ने 'सीता' के सौन्दर्य का वर्णन किया है। जिस सीता को वन्दिनी के रूप में रावण ने यहीं रखा था।

सीता अर्धनिद्रावस्था में थी। उन्हें नींद नहीं आती थी। बाघों के बीच बाल-हरिणी के समान वह कोकिला कण्ठी मयूरी के समान सीता देखी गयी। बार-बार ऊँची-साँसे लेती हुई, रोती हुई और श्री राम का स्मरण करती हुई, सीता वेदना से पूर्ण थी। उनकी आँखों से आँसू की धारायें स्तनों के बीच से वहती हुई वर्षा-ऋतु के समान हो गयी थीं। राम के समान काले मेघ को देखकर वे उसे 'राम' ही समझती हैं। सीता के मुख को इनके विशाल काले केश इस तरह ढक रहे थे जैसे भयंकर दाँत वाले राहु निष्कलंक चन्द्रमा को निगलते और उगलते हों। सीता अपने विशाल केशपाश की एक वेणी बनाकर उन केशों को हाथ से पकड़ रखा था।

वह सोचती है रावण ने जटायु को मार दिया, मेरा सन्देश राम को कौन कहेगा। मैंने देवर लक्ष्मण को कटु-वाक्य कह कर महापापिनी बन कर असंख्य पापों को किया जिसका यह फल है। सीता के लिए दिनरात के बीच में कोई भेद नहीं था। वह हमेशा रोती हुई सोचती रहती है। मैं राक्षस से मारी गई यह सोचकर राम मेरे पास नहीं आयेंगे। प्रायः भरत पुनः आकर लक्ष्मण के साथ राम को लौटा लेंगे। जनकपुर में विवाह के समय सप्तपदी पर (विवाह वेदी पर) सातबार अग्नि परीक्षा के क्रम में राम के उस सुन्दर रूप का स्मरण कर फिर रोती है।

जब रामचन्द्र मेरे साथ वन चले तब ''त्रिजट'' नाम का कोई लोभी ब्राह्मण वहाँ आकर गोदान माँगा। ब्राह्मण ने कहा—मेरी यह लकुटी (छड़ी) जितनी दूर फेंकने से पहुँचती है, वहाँ तक स्थित सभी गायें मुझे दो। राम ने कहा—ठीक है। ऐसा ही करो।

उस दुर्बल ब्राह्मण ने अपनी लकुटी बहुत दूर तक फेंकी। राम ने हँसते हुए वहाँ तक स्थित सभी गायें उसे दे दीं (यह कथा किसी भी अन्य रामकाव्य में नहीं है)।

फिर सीता परशुराम विजय की घटना का स्मरण करती है। विराध आदि राक्षस के विनाश का स्मरण करती है। वहाँ बहन के समान अत्यन्त प्रिय ''त्रिजटा'' नाम की एक राक्षसी सीता के पास थी। जो अन्य भयंकर राक्षसियों के साथ रहती थी। आधी रात में जब सभी राक्षसियाँ सो जाती थीं। तब 'त्रिजटा' को सीता कहती है। हे माँ, आज मेरे बाँये अंग वैसे ही फड़क रहे हैं जैसे विश्वामित्र ऋषि के साथ रामचन्द्र के 'मिथिला' गमन के समय फड़कते थे। बोलो, क्या कारण हो सकता हे।

दुःस्वप्न वर्णनः- त्रिजटा बोली, यह सुन्दर लक्ष्मण हैं मंगलकारी समय आ गया है। यह निश्चित है तुम्हारे प्राणपति द्वारा कोई दूत शीघ्र आयेगा, यह अनुमान हो रहा है। मैंने भी गत रात स्वप्न में देखा जो प्रायः सर्वथा सत्य ही है। मैंने देखा, रावण लाल वस्त्र धारण कर माथे पर तेल मलते हुए गदहा के वाहन से युक्त रथ पर बैठ कर दक्षिण दिशा की ओर जा रहा है। जहाँ रावण के यज्ञ की आग सदा जलती रहती थी वही अग्नि इस समय मलिन हो गया है। वज्रपात से प्रासाद नष्ट हो गये हैं। आकाश में विजलियाँ छिटक रही हैं। नक्षत्र गिर रहे हैं। लंका की दीवारें घूम रही हैं और सभी दिशायें जल रही हैं। रावण की पत्नी मन्दोदरी के वेणी रूप में स्थित केशों के समूह फैल गये हैं जिससे दुर्गन्ध निकल रहे हैं। ये सभी अनर्थ के कारण हैं।

इसी समय फूल के बन में ''अशोक'' नाम के उपवन में राक्षस राज रावण पहुँचा। उसके बीस हाथ और मुकुट युक्त दस मस्तक थे। जिसके बगल में तलवार धारण करने बाली उर्वशी, पान के डब्बा को लेकर चलने वाली 'मेनका' और जूता ढ़ोने बाली ''तिलोत्तमा' आदि अप्सराएँ अगल-बगल में चल रही थीं। साथ ही कस्तूरी की सुगन्धित द्रव्य से मिश्रित घी के दीपों से सैकड़ों सुन्दरियाँ आगे और पीछे चल रही थीं। उन नारियों के आपादमस्तक (पैर से लेकर माथे तक) विखरे हुए केश, आभरण एवं नूपुर के अलौकिक शब्द हो रहे थे। जब रावण वहाँ आया तब संकट की आशंका करते हुए देवतागण डर गये कि क्या अनिष्ट होगा, रावण क्या करेगा, किस नीति का अनुसरण करेगा, और क्या फल होगा ?

एक तरफ तो यह दृश्य था और दूसरी तरफ रामभक्त हनुमान् पापी रावण को निर्विकल्प रूप में (अब इसका दूसरा कोई विकल्प नहीं होगा) देखते हुए जोरों से उद्घोष किया। रामचन्द्र की जय हो, जानकी की जय हो, चारों वेदों की जय हो, ब्राह्मण निर्विध्न हों और धर्म की जय हो। किन्तु काममोहित रावण ने जयघोष नहीं सुना। वह तो लम्बे-केश वाली सीता के समीप आकर बोला। मैं त्रिभुवन विजयी, त्रैलोक्या धिपति

रावण हूँ। क्यों मेरे वैभव का तिरस्कार करती हो ? क्या वनवास की अवधि समाप्त कर राम अयोध्या लौट सकेंगे। यह सम्भव नहीं है। हे सीते, संसार में जीवन और यौवन चिरस्थायी नहीं हैं। बीता हुआ यौवन और बीती हुई अवस्था पुनः लौटकर नहीं आती है। जीवन की क्या सफलता होगी ? रावण के ये कोमल वचन सीता के कान में गर्म-तेल की तरह और तपे हुए लोहे की छड़ के समान दग्ध करने लगे।

पतिव्रता सीता एक तृण को सामने रखकर रावण से कहती है। (तृण रखने का वर्णन वाल्मीकि ने भी किया है, अन्य रामकाव्य में भी है और रामचरित्र मानस में तुलसी दास ने भी वर्णन किया है।)

विशेष : यहाँ कम्बन् कवि कल्पना करते हैं कि सीता रावण को तृण के समान समझती थी। ऐसा अन्य कवियों ने नहीं लिखा है।

हे पापी मूर्ख रावण, तुम इस अशिष्ट वचन को कह कर अपने दस मस्तकों को गिरा रहे हो। यदि ऐसे पराक्रमी हो तो क्यों वंचक बन कर मायामृग को भेज कर मुझे हर लिया। उस दिन तुम 'जटायु' नाम के एक पक्षी से हार गये। तब महादेव के द्वारा प्रदत्त ''चन्द्रहास'' नाम की तलवार से जटायु को मार दिया। क्या तुम शिव के 'धनुर्भङ्ग' का स्मरण नहीं कर रहे हो, इसलिए तुम्हारा विचार सर्वथा हीन और पापयुक्त है। जब ही तुम दण्डयकारण्य में आए तभी तमिल व्याकरण के रचयिता अगस्त्य ने राक्षसों के नाश के लिए प्रार्थना की।

इसी क्रम में **खर-दूषण-त्रिशिरा** आदि राक्षस, मायामृग **मारीच** और **कबन्ध** आदि मारे गए। केवल तुम बचे हुए हो। यह सुनकर क्रोध की आग से दग्ध रावण ने कहा। तुम्हारे मरने का केवल दो महीना बचा हुआ है। अर्थात् मैं आज से तुम्हें सोचने के लिए दो मास का समय देता हूँ। यह कहकर रावण लौट गया। तब भयंकर राक्षसियाँ सीता को मारने के लिए तैयार हो गयीं। त्रिजटा ने उसी समय रात में अपने स्वप्न-दर्शन की घटना का वर्णन किया, उन्हें सुनकर सभी राक्षसियाँ शान्त हो गईं।

इति सीता दर्शन पटल

''उरूक् काट्टु पडलम्'' (''रूप प्रकट पटल'')

इस पटल में हनुमान का अपने रूप को प्रकट कर सविस्तार राम के परिचय देने का वर्णन प्रधान है।

जब राक्षसियाँ सो गई थीं तब हनुमान ने अपनी विलक्षण मायामयी विद्या के बल से उन राक्षसियों को गाढ़ निद्रा में निमग्न कर दिया। (इस जादू-विद्या का वर्णन मूल

वाल्मीकि रामायण में नहीं है। ऐसा करके राम के आगमन की प्रतीक्षा में निमग्न सीता को देखा। सीता सोच रही थी कि मैंने मायामृग-स्वर्ण मृग को लाने के लिए पति को भेजा, पुत्र तुल्य लक्ष्मण की भर्त्सना की। मेरा यहाँ रहना निन्दनीय है, इससे तो मरण ही अच्छा है। इस तरह मन में सोचकर सीता वहाँ की 'माधवी' नाम के वन में प्राण त्यागने के लिए प्रस्थान करती है। तभी हनुमान पेड़ की डाल से नीचे कूदकर हाथ जोड़कर सीता के समीप उपस्थित हुए और बोले।

हे भगवती सीते, रामचन्द्र की आज्ञा से मेरा यहाँ आगमन हुआ है। राम नहीं जानते हैं कि आप यहाँ हैं। हनुमान के वचन को सुनकर सीता सोचती है ; यह राक्षस नहीं है, कोई वानर रूप धारी ऋषि या देवता हैं या कोई राक्षस ही है। लेकिन 'राम' नाम लेता है। इसी दुविधा में हनुमान बोले, हे माँ, ''सुग्रीव'' नाम के सूर्य पुत्र वानरराज के साथ राम ने मित्रता की उन्हीं के मंत्रिमंडल का एक आकाशचारी मैं **''वायुपुत्र-हनुमान''** नाम का सदस्य हूँ। राम के दूत के रूप में आप के समीप उपस्थित हूँ। सम्पूर्ण भूमण्डल पर व्याप्त सुग्रीव की अगणित विशाल सेनाएँ हैं। इसलिए आप इस समय चिन्ता से मुक्त हो जाएँ।

आप के द्वारा भक्ति से छोड़े हुए वस्त्र आदि हमलोगों ने राम के आगे रख दी। उन्हें देखकर विचलित होते हुए राम बोले ये आभरण तो 'सीता' के ही हैं। यह सुनकर सीता आनन्दमग्न होती हुई पूछती हैं–राम के कुछ रूपरंग आदि का वर्णन करो। हनुमान ने कहा, राम की उपमा तो किसी से सम्भव नहीं है और न मुझसे वर्णन के योग्य है। तो भी उनके कुछ चिह्नों को मैं विवेचित करता हूँ।

राम के चरण रक्तकमल के समान हैं। मूँगा से युक्त चन्द्र के समान नख हैं, त्रिविक्रम के अवतार उनके चरण का वर्णन और उसकी महिमा का वर्णन कैसे किया जा सकता है। उनके वक्षःस्थल मरकत पर्वत के समान हैं और वे 'आजानुवाहु' हैं। उनके घुँघराले केश, फूलों के हार अद्वितीय हैं। मेरे चलने के समय उन्होंने एक 'अंगूठी' दी जिसमें रामनाम अंकित है। इस अंगूठी को भगवतीतुल्या आप कृपया ग्रहण करें। सीता उस अंगूठी को पुनः पुनः देखती हुई बार-बार सिर पर, आँख पर और कुच के अग्र भाग पर स्पर्श करती हुई श्री रामचन्द्र का स्मरण करती हुई बैठ गई। जैसे कोई भूखा हुआ अमृत तुल्य सुन्दर भोजन को पाकर आनन्दित होता है, वैसे ही जीवन की आशादायिका औषधि के सामान इस अंगूठी को सीता ने प्राप्त किया। इस प्रकार हनुमान पुनः बोले। यहाँ से चलकर रावण को और राक्षस को छिन्न-भिन्न हमलोग कर देंगे जैसे बानर अपने हाथ से फूलों की माला को कर देते हैं।

''इति रूप प्रकट पटल''

"चूड़ामणिप् पडलम्–चूड़ामणि पटल"

इस पटल में सीता द्वारा अपने मस्तक से चूड़ामणि उतार कर राम के लिए देने का वर्णन मात्र मुख्य है।

बहुत बड़ी चिन्ता में मग्न सीता को जानकर हनुमान ने कहा व्यर्थ वार्त्तालाप से क्या लाभ है, इसी समय आपको लेकर तुरत ही अनाथों के नाथ रामचन्द्र के समीप जाकर पहुँचा दूँगा। हे भगवति, कृपया मेरे कोमल केशयुक्त कन्धे पर चढ़कर चलिए। मैं अति शीघ्र राम के समीप पहुँचा दूँगा। बीच में यदि कोई राक्षस बाधा देंगे तो उन्हें मैं मार दूँगा। मुझे कोई भी कुछ नहीं कर सकेंगे। मुझे अमरता का वर भगवान से प्राप्त है। यदि आपका विचार हो तो दाएँ हाथ से लंका को उखाड़कर राम के पास पहुँचा दूँ। मार्ग में कोई भी अवरोध करने वाले नाश हो जाएँगें।

यह सुनकर सीता बोली, हे तात यद्यपि यह काम तुम कर सकते हो लेकिन मेरी तुच्छ बुद्धि में स्त्री होने के कारण तुम्हारी पीठ पर मेरा जाना उचित नहीं प्रतीत होता है। साथ ही राम का धनुष कलंकित होगा कि राम ने स्वयं इस काम को नहीं किया और तुम भी वंचक रावण के समान ही हो जाओगे क्योंकि जैसे रावण ने ठग कर गुप्त रूप से मुझे यहाँ लाया उसी तरह तुम भी मुझे गुप्त रूप से ले जाओगे। इसलिए रामचन्द्र के द्वारा ही रावण का विनाश उचित है। जब विजयी रामचन्द्र राक्षसों को मार कर उनकी स्त्रियों के मंगल सूत्र उनकी गर्दनों से निकलवा लेंगे, तभी मेरे मन में शान्ति होगी।

हे हनुमान, यदि मैं शाप दूँगी तो न केवल लंका अपितु समस्त लोक नष्ट हो जाएँगे। लेकिन ऐसा करने से राम के विजयी धनुष पर कालिमा लग जाएगी। इसलिए मैंने यह विचार छोड़ दिया। तुम जानते हो कि हीन मतवाला रावण ने मेरा स्पर्श नहीं किया। **वह पर्णशाला सहित पंचवटी की भूमि को उखाड़कर मुझे यहाँ ले आया।**

इसलिए पुत्र के समान जितेन्द्रिय तुम भी मेरे स्पर्श के योग्य नहीं हो क्योंकि आखिर तुम भी तो पुरुष ही हो। (ऐसी कथा की श्रृंखला वाल्मीकि रामायण में नहीं है, यहाँ सीता की ज्ञान गरिमा चरमोत्कर्ष पर चली गई है)

तब सीता बोली दो मास पर्यन्त ही मेरा जीवन है, वहाँ जाकर राम से निवेदन करो कि मेरा मरण यहीं ठीक है। राम चौदह वर्षों को बिता कर अयोध्या लौटकर राज्यसिंहासन ग्रहण करके सभी माताओं और भरत आदि सभी भाइयों को शोक से मुक्त करें। यही श्रेयस्कर है, कल्याणकारक है। ऐसा सुनकर हनुमान ने कहा क्या आपका मरण जानकर रामचन्द्र राज्य ग्रहण करेंगे। ये सभी आपका कथन केवल

शोकमूलक है। इस तरह विविध वार्त्तालाप करती हुई अपने मस्तक की सुरक्षित चूड़ामणि लेकर हनुमान को देते हुए बोली। मेरी अपनी आँख की पुतली के समान यह चूड़ामणि राम को दोगे। तुमने यहाँ आकर मुझे प्राणदान दिया। हनुमान चूड़ामणि लेकर सुरक्षित वस्त्र में रखकर सीता को प्रणाम करके वहाँ से चले।

''इति चूड़मणि पटल''

''पौलिप्ति पडलम् (''उद्यान विध्वंस पटल)''

इस पटल में हनुमान जी द्वारा लंका के उद्यानों उपवनों के ध्वस्त करने का वर्णन प्रमुख है। सीता द्वारा दिये हुए चूड़ामणि को लेकर हनुमान् ने पहले उत्तर दिशा की ओर चलने का विचार किया। लेकिन पुनः निश्चय किया कि केवल माता सीता को देखकर लौटना उचित नहीं है। लंका में कुछ करना चाहिए। यदि अपनी विशाल पूँछ से बीस (२०) भुजा और दश मस्तक वाले रावण को बाँधकर जेल में नहीं रख दिया और रावण की पत्नी मन्दोदरी के वे सुगन्धित श्रृंगार युक्त केशों को फैलाकर तथा उन केशों को पकड़कर कारागार में नहीं ठूंस दिया तो मैंने क्या किया ? जब इस अशोक वन का विनाश करूँगा तब राक्षस गण इसे जानकर अवश्य आयँगें, उन्हें मारूँगा और जीवित वे नहीं लौटेंगे।

ऐसा विचार कर अपने विशाल रूप को धारण कर हनुमान पैरों से वृक्षों का मर्दन करना आरम्भ किया। उनके प्रहार से सैकड़ों वृक्ष गिर गये। कुछ नीचे झुक गये, और अनेक छिन्न-भिन्न होकर जड़ से विनष्ट हो गये। इस तरह रत्न निर्मित चबूतरे को उखाड़कर समुद्र में फेंक दिया। वे पत्थल के खण्ड समुद्र में रास्ते के समान हो गये। आकाश में उखाड़कर फेके गये वृक्ष मेघ के समान दीखने लगे। शाल-वृक्ष और चन्दन आदि के वृक्ष नष्ट हो गये। यह देखकर लंका वासी डरकर इधर-उधर भाग गये।

इन सबों को देखकर चन्द्रमा छिप गये। यहाँ कवि की कल्पना है कि सीता के स्नेह से मैंनें कुछ नहीं किया। इससे रावण मुझे तंग करेगा। अतएव चन्द्रमा छिप गया। तब सूर्योदय हुआ। सूर्योदय काल का सूर्य सीता के चूड़ामणि के समान दिखाई दे रहा था।

विशेष : यहाँ कवि कल्पना करते हैं कि सीता के सघन केश-पाश के लिए समुद्र ने फिर एक चूड़ामणि सीता के लिए दिया। जहाँ तहाँ कवि की विचित्र और अद्भुत कल्पना अत्यन्त चमत्कार पूर्ण है।

जब राक्षसियों ने अशोक वन को नष्ट होते हुए देखा तो सीता से पूछा क्या तुम इस कपि को जानती हो ? सीता ने व्यंग रूप में कहा। ''दुर्जन ही दुष्कर्मों को जानते

हैं। सुजन कैसे दुष्कर्म को जान सकते हैं ? यह तो राक्षसों का ही कोई षड्यन्त्रं हो सकता है। जैसे 'सोने का माया-मृग' दिखा कर मेरा हरण किया गया।

हनुमान् ने सुना था कि रावण ने जड़ से ही कैलाश पर्वत को उठा लिया था। मैंने भी क्यों नहीं मेरु-पर्वत के समान इस चैत्य, प्रासाद को ही उठाकर समुद्र में फेक दूँ। ऐसा सोचकर 'चैत्य' नाम के प्रासाद को उठाकर जोरों से लंका के ऊपर फेंक दिया, जिससे लंका की विशाल अट्टलिकायें चूर-चूर हो गयीं। उससे आग जलने लगी।' डरे हुए राक्षस महाबलशाली रावण के समीप जाकर उनके पैरों पर गिर कर अशोक-वाटिका के विध्वंस की सभी घटनाओं का निवेदन किया। उन्होंने किस तरह उस कपि के द्वारा अशोक वाटिका नाश की गई ''चैत्य', प्रासाद को उठाकर फेंका गया, और किस तरह महानगरी लंका ध्वस्त हो गयी, ये सभी बातें कहीं।

''इति उद्यान विध्वंस पटल''

''किन गरर् वदैप पडलम्'' (किंकर वध पटल)

इस पटल में रावण के दूतों के नाश का वर्णन प्रमुख है।

अशोक वाटिका के विध्वंस की कथा सुनकर रावण आश्चर्यचकित हो गया। कौन विश्वास कर सकता है कि यह सत्य है। इसी समय हनुमान् ने इस तरह से गर्जन किया जिससे आकाश और पृथ्वी पर बहुत जोरों का महानाद हुआ। जिससे दिग्गज और देव गण जहाँ तहाँ भाग गये। तथा राक्षसियों के गर्भपात हो गये।

यह जानकर रावण ने सेनाओं को और नौकरों को बुलाकर आज्ञा दी कि आकाश मार्ग को भी नहीं छोड़कर जिस किसी भी उपाय से उस वानर को मेरे पास ले आओ। इस आज्ञा को प्राप्त कर रावण के वे वीर त्रिशूल, करवाल, शक्ति, तोमर, और दंडायुध, नाम के अस्त्र शस्त्रों को लेकर चले। वे राक्षस महान् बलशाली थे और ये बोलते हुए जा रहे थे कि कैसे अकेले उस वानर ने अशोक-वाटिका को नाश करके यज्ञ-मण्डप आदि को भी उखाड़कर फेंक दिया।

पर्वत के समान अगणित अस्त्र-शस्त्रों के चलाने में दक्ष वे राक्षस वहाँ पहुँच गये। वहाँ ''निवात-कवच'' जाति के राक्षस दमक रहे थे और नाग-गण युद्ध के लिए उपस्थित थे। उनको देखकर पर्वताकार हनुमान् वहीं ठहर गये। वे राक्षस हनुमान् के ऊपर अपने-अपने विशेष अस्त्रों का प्रहार करने लगे। हनुमान् ने उन सबों को विखण्डित कर दिया और उन राक्षसों को अपनी विशाल पूँछ से बाँधकर आकाश में घुमाते हुए जमीन पर पटक दिये। उनमें कुछ गिर गये, कुछ के प्राण चले गये, और जो हनुमान् को पकड़ने के लिए गये, उन्हें खींचकर हनुमान् ने मार दिया। वे राक्षस जिस रूप में वहाँ आये थे उनको उसी रूप में मार दिया।

जिस तरह ईख के टुकड़ों को लोहा के यन्त्र में (कोल्हू) पेरकर रस निकाला जाता है उसी तरह राक्षसों को पकड़कर हनुमान् ने पेर दिया पीस दिया। इस तरह घायल बचे हुए राक्षस रावण के पास आकर सभी बातें कहने लगे। रावण अत्यन्त क्रुद्ध (क्रोधित) हुआ और कहा यह कैसे हुआ ? रावण के दश मुखों से आग की ज्वाला निकलने लगी। वन के रक्षकों ने हाथ जोड़कर निवेदन किया कि यह सामान्य वानर नहीं है। जिस किसी भी उपाय से यह वानर बाँधकर लाया जाय, इसे छोड़ा नहीं जाय।

"इति किंकर वध पटल"

"सम्बु मालि वदैप पडलम्–जम्बु माली वध पटल"

इस पटल में "जम्बु माली" नाम के सेना पति और उसके सैन्य वलों के नाश का वर्णन प्रमुख है।

अशोक वाटिका के विध्वंस की बात को सुनकर रावण अत्यन्त क्रुद्ध होते हुए एक महान् बलशाली 'जम्बु-माली' नाम के राक्षस सेना-पति को आदेश दिया। तुम हाथी घोड़े और रथ युक्त सेनाओं के साथ जाकर उस वानर को पकड़कर शीघ्र मुझे समर्पित करो। रावण के क्रोध का साकार रूप जम्बु-माली सेनाओं के साथ तुरत प्रस्थान कर गया। उसके पास अनेक प्रकार के अस्त्र शस्त्र थे और बहुत बड़े सैन्य बल उसकी चारों ओर घिरे हुए थे। वहाँ घोड़े एवं रथ युक्त क्रूर सैनिक युद्ध के लिए तैयार थे।

अशोक-वाटिका को नाश कर देने के बाद हनुमान् मन ही मन विचार रहे थे कि कोई राक्षस युद्ध के लिए क्यों नहीं आ रहा है। सहसा वहाँ 'जम्बु-माली' अपनी सैनाओं को अनेक विभागों में विभक्त कर **'व्यूह' रचना** की, तब हनुमान् ने भी अपनी सेना के व्यूह की रचना की।

अति विशेष : यहाँ तुरत जिज्ञासा हुई की हनुमान् के शरीर में स्थित-केश-समूह ही सैन्य थे, नखों के समूह ही तीक्ष्ण-तलवार थे और दोनों हाथ दो अक्षौहिणी सेना के समान थे।

हनुमान ने जहाँ ही जो सैन्य थे वहीं उनको मारकर यमलोक भेज दिया। राक्षसों के रक्त, मज्जा, माँस से अशोक-वाटिका कीचड़मय हो गयी।

इसके बाद जम्बुमाली की सेनाओं को गिराकर उसके पताका से युक्त अश्व-सहित रथ को जमीन पर गिराकर नष्ट कर दिया, और सबों के प्राण ले लिए। 'जम्बु-माली' अस्त्र शस्त्र से रहित सेना से हीन हो गया। वायु पुत्र ने उससे कहा हे राक्षस, तुम अकेले ही प्राणों की रक्षा करो और यहाँ से भाग जाओ, जम्बुमाली ने कहा। तुम्हारा

यह व्यंग वचन भी मेरे लिए शल्य (विष वाण) के समान है।

तब हनुमान् ने उसे एक शस्त्र देकर कहा, यह लो और युद्ध करो। जम्बु माली ने बिगड़कर हनुमान् के उपर अकेले ही आक्रमण किया। हनुमान् ने उसे दोनों हाथों से गेन्द की तरह उठाकर घुमाते हुए, जमीन पर पटक दिया और मार दिया। इस तरह हनुमान् ने भयंकर गर्जन किये। रावण 'जम्बु-माली' के बध का समाचार सुनकर बहुत दुःखी और क्षुब्ध हुआ और स्वयं वहाँ जाने के लिए तैयार हुआ।

"इति जम्बु-माली बध पटल"

"पयूज सेनापति हल वदैव पडलम्" ("पञ्यसेनापति पटल)

इस पटल में रावण के पाँच बड़े-बड़े सेनापतियों के साथ हनुमान् के युद्ध वर्णन और उन सेनापतियों के नाश का वर्णन प्रमुख है।

हनुमान के साथ युद्ध करने के लिए स्वयं रावण को देखकर महावल-शाली पाँच सेनापतियों ने कहा ! हे प्रभो, हमलोगों के रहते हुए सामान्य वानर के साथ युद्ध करने के लिए आप का जाना कैसे सम्भव है ? और कैसे शोभनीय है ? ये आप ही विचार करें। हमलोग हाथ जोड़कर प्रार्थना करते हैं कि आप यहाँ ठहरें। हमलोग जा रहे हैं। यह सुनकर रावण संतुष्ट हो गया।

रावण की आज्ञा से असंख्य रथ, घोड़े, हाथी और पैदल वीर सेनाओं के साथ 'पंच-महा-भूत' के समान पाँचों सेनापतियों ने वहाँ से प्रस्थान किया। मेघ के समान गरजते हुए ये सेनापति वैसे ही दीख रहे थे जैसे इन्द्र के साथ युद्ध करते हुए रावण के पीछे सेनापति थे।

विशेष : यहाँ वाल्मीकि ने इन पाँचों सेनापतियों के नाम विरूपाक्ष, यूपाक्ष, दुर्धर, भासकर्ण और प्रहास, कहा है।

महाबल-शाली हनुमान ने आते हुए उन राक्षसों को देखा। हाथ में लोहे का दण्ड लेकर समुद्र में फेंक दिया। यह देखकर पाँचो सेनापतियों ने मिलकर हनुमान के उपर वाणों से प्रहार किया। उन वाणों को हनुमान् ने दूर से ही नाश कर दिया और उनके रथ के चक्के को विखण्डित कर दिया। फिर वे भी अस्त्र शस्त्रों से प्रहार करने लगे। क्रुद्ध होकर हनुमान ने उनमें से एक को उठाकर आकाश में फेक दिया। दूसरे को पैरों से मसल कर यम-लोक भेज दिया। इस तरह दो मर गये।

बचे हुए तीन हनुमान् के सामने आकर बोले। अरे वानर, कहाँ जा रहे हो ? आओ हनुमान् ने उन तीनों में से दो सेनापतियों को अपनी विशाल पूँछ से बाँध कर गिरा

दिया। बचे हुए को इस तरह पटक दिया, जैसे सिंह हाथी के ऊपर कूदकर उसके मस्तक को चीर कर गिरा दिया हो। इस दुःखद समाचार को सुनकर रावण पागल की तरह विकल हो गया।

अति विशेष दार्शनिक विश्लेषण : यहाँ कवि की यह महत्त्वपूर्ण कल्पना अत्यन्त उत्कृष्ट है। कवि कहते हैं जैसे 'ज्ञान पाँच कर्मेन्द्रियों को जीतकर-नाश कर देता है उसी तरह ज्ञान-रूप हनुमान पाँच कर्मेन्द्रियों के समान पाँचों राक्षस सेनापतियों को मारकर जीतकर स्वयं हनुमान् **''ज्ञान रूप''** हो गये।

'इति पंञ्चसेनापति पटल'

''अक्क् कुमार वदेप् पडलम् (अक्षय कुमार बध पटल)

इस पटल में रावण के बलशाली छोटे पुत्र 'अक्षय कुमार' के करुण पूर्ण बध का वर्णन प्रमुख है।

पाँचों सेनापतियों के विनाश का समाचार जानकर क्रुद्ध एवं विक्षिप्त रावण फिर स्वयं हनुमान् के प्रति प्रस्थान करने को तैयार हुआ। यह सुनकर रावण का महावलशाली पुत्र 'अक्षय-कुमार' वहाँ आ गया। जो मेघनाद से छोटा मन्दोदरी का पुत्र था। अक्षय कुमार ने कहा हे पिता, क्या यह वानर भगवान् शिव का वाहन बैल है ? क्या विष्णु का वाहन गरूड़ है ? अथवा विष्णु के सच्चा रूप शेष नाग है ? या दिग्गजों में कोई एक है ? लेकिन ऐसा नहीं है। यह तो एक वानर है। मेरे रहते हुए वानर के साथ आप युद्ध करना चाहते हैं। यह बहुत बड़ी चिन्ता का विषय है। कृपया मुझे उस वानर के साथ युद्ध करने की आज्ञा दीजिये।

अगर यह वानर देवताओं के प्रपञ्च का स्वरूप है, तो भी मैं उसको सरलता से पकड़कर आप के पास ले आऊँगा। रावण ने 'अक्षय-कुमार' को अत्यन्त वेगवान् अश्व युक्त रथ पर बैठाकर युद्ध में जाने के लिए आज्ञा दी। 'अक्षय-कुमार' ने विशाल चतुरंगिंणी सेनाओं के साथ प्रस्थान किया जिन सेनाओं का वर्णन करना कठिन है। (चारो तरफ से घेरकर सुरक्षा करती हुई सेनाओं का नाम चतुरंगिणी सेना है) उस अक्षय कुमार के साथ पाप-रूप कौआ, गीध, भूत-प्रेत पिशाच आदि भी थे।

यहाँ लंका में मारे गये राक्षसों की नारियाँ रो रही थीं। विशाल सेनाओं से युक्त उस अक्षय कुमार को देखकर हनुमान मन में सोचते हैं कि क्या यह स्वयं रावण है, अथवा उसका पुत्र इन्द्रगित–'मेघनाद' है। यदि इन दोनों के मध्य में एक भी है तो मेरा यहाँ आना सफल होगा। लेंकिन यह दश मस्तक बाला रावण या इन्द्रजित–मेघनाद

जैसा वीर नहीं है तब यह कौन है ? हनुमान को इसकी चिन्ता हुई।

हनुमान् को देखकर हँसते हुए 'अक्षय-कुमार' बोले। क्या यही मर्कट–वानर है ? यह सुनकर 'अक्षय कुमार' के सारथी ने कहा। इसी वानर ने अशोक वाटिका को ध्वस्त किया। 'जम्बु-माली' को मारा, और असंख्य सेना सहित महावलशाली विरूपाक्ष आदि पाँच सेनापतियों को मार दिया। इसलिए इसके आगे सावधान होकर जाना चाहिए।

'अक्षय कुमार' ने उस वानर को मारने के लिए अस्त्रों का प्रहार किया किन्तु सभी अस्त्र-शस्त्रों को हनुमान ने खण्डित कर दिया तथा राक्षसों को मार डाला। तब स्वयम् अक्षय कुमार हनुमान् के सामने आकर युद्ध करने लगा। उस कुमार ने चौदह अमोघ बाण फेंके, जिन्हें हनुमान् ने नष्ट कर दिया। अक्षय कुमार ने भी अपने तेज बाण से हनुमान् का लौहदण्ड खण्डित कर दिया। हनुमान् खाली हाथ हो गये। अक्षय कुमार ने फिर हनुमान् के ऊपर अस्त्रों को फेंका हनुमान् ने उन्हें भी खण्डित कर दिया।

तब अक्षय कुमार ने हनुमान् को अपने वाहु-पाश में बाँध लिया। हनुमान ने अक्षय कुमार पर चाँटा चलाया और मुक्के से प्रहार किया जिससे अक्षय कुमार के पेट से माँस-मज्जा आदि बाहर निकल गये। इस तरह 'अक्षय-कुमार' का क्षय हो गया। यह देखकर बहुत से राक्षस भाग गये और वहुत से राक्षस हनुमान की शरण में आ गये।

वेदनापूर्ण इस समाचार को सुनकर मेघ के समान विशाल केश पाश की वेंणी को फैला कर दोनों हाथों से छाती पीटती हुई मन्दोदरी विलाप करने लगी। रावण भी-पुत्र बध के दुःखद समाचार को सुनकर प्रभा शून्य शोक मग्न हो गया।

''इति अक्षय कुमार पटल''

''पाशप पडलम्'' (''पाश बन्धन पटल'')

इस पटल में मेघनाद का हनुमान् से युद्ध वर्णन और मेघनाद द्वारा संचलित ब्रह्मास्त्र द्वारा हनुमान् का बह्मास्त्र के जाल बन्धन-वर्णन मुख्य है।

अपने छोटे भाई अक्षय कुमार के मरण को सुनकर मेघनाद अत्यन्त शोकाकुल हो गया। जिस मेघनाद ने इन्द्र को जीत कर संसार को चकित कर दिया था। वह भी इस शोक से विचलित हो गया। इसने तुरत मजबूत विशाल रथ पर बैठकर तेजी से अपने पिता के पास प्रस्थान किया। जिसे देखकर देवता गण कंपित हुए। मेघनाद मन में सोचता है कि राक्षस सेनाओं के नाश से और अक्षय कुमार के नाश से मेरे पिता का यश क्या नष्ट नहीं हुआ ? **अवश्य हुआ।**

इस तरह सोचते हुए मेघनाद पिता के पास आकर उनके चरणों पर गिर कर भ्रातृ-मरण शोक से बहुत रोने लगा। रावण ने उसे उठाकर गले लगा कर सांत्वना दी। तब मेघनाद बोला। हे पूज्य पिता, क्या आप अपना कल्याण नहीं सोचते हैं ? यह सामान्य वानर नहीं है, किन्तु अद्वितीय बलशाली है। तब आप ने आज्ञा दी जाओ, और उस वानर को पकड़कर ले आओ वह भी तब जब किंकर, जम्बु-माली और परम वलशाली पाँच सेनापति मारे जा चुके थे। सभी सैन्य-बल निहत हो चुके थे। तो भी आपने अक्षय-कुमार को भेजा दिया यदि आप खुद भी जाकर उसक वानर को मरेंगें तो भी क्या आप की प्रतिष्ठा बढ़ेगी ? क्या यह काम वुद्धिमानों का हो सकता है ?

ऐसी स्थिति में भी, मैं जाकर उस वलवान् वानर को पकड़कर आपके समीप ले आऊँगा। यह निश्चित है। इसमें चिन्ता का कोई कारण नहीं है। यह कहकर इन्द्रजित उठकर वहाँ से चल दिया। वह अनेक अश्व से युक्त अस्त्र शस्त्र से परिपूर्ण रथ पर बैठकर चला जिसके सैन्य गर्जन से सारी दिशायें पूर्ण हो गयीं।

जहाँ 'अक्षय-कुमार' गिरा हुआ था और राक्षस मरे हुए थे वहाँ आकर महावलशाली मेघनाद विकल होकर रोने लगा। भाई के शव को देखकर वहुत क्रुद्ध हो गया। अक्षय-कुमार खून के प्रवाह में डूबा हुआ–मृत था जिसको देखकर मेघनाद की बुद्धि नष्ट हो गयी। फिर साहस करके वानर के समीप चला। हनुमान् ने देखा कि सूर्य के समान तेजस्वी महान् बलशाली इन्द्रजित् आ रहा है। जो सर्वथा सुशोभित–चमक रहा था। यदि यह मरेगा तो रावण की मृत्यु निश्चित है।

प्रायः रावण मेघनाद-बध को सुनकर 'सीता' को छोड़ देगा। और राम को दे देगा। इसके मरने से दुःखी इन्द्र भी शान्ति लाभ करेंगे। इसी समय मेघनाद की सेनाओं ने भयंकर गर्जन किया। हनुमान भी अपने आकार को विशाल वना कर एक शाल के वृक्ष को उखाड़कर प्रहार करने के लिए तैयार हो गये। इस परस्पर युद्ध में कितने घोड़े, हाथी और सैन्य गण हनुमान् के पैरों के मर्दन से नष्ट हो गये। कुछ हाथी और घोड़ों के अंग कट गये, कितने रथ चूर-चूर हो गये। इस तरह वहाँ पर स्थित मेघनाद ने कहा, आओ, वानर तुम तो महावीर हो। कहो कुशल तो है ? वानर तुम तो महावीर हो। कहो कुशल तो है ? लेकिन आज तुम्हारी आयु समाप्त है। और तुम्हारा अन्तिम दिन है।

यह सुनकर हनुमान बोले सुनो मेघनाद, राक्षसों के विनाश का समय आ गया। तब मेदनाद ने हनुमान पर वाण से प्रहार किया। जिससे हनुमान् के मस्तक और छाती से रक्त की धारा बहने लगी। इसे देखकर आकाश में विचरण करने बाले देवता गण चिन्तित हो गये। विगड़ते हुए हनुमान् ने अपना विशाल रूप धारण कर मेघनाद के

ऊपर प्रहार किया। जिस मेघनाद ने किसी समय इन्द्र को बाँध कर ले आया था वही हनुमान् के सपूर्ण विशाल रूप को मेघनाद देख भी नहीं सकता था। इस तरह इन दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। उसमें मेघनाद सहसा पृथ्वी पर गिर गया। फिर उठकर रथ से हीन मेघनाद सोचता है कि इस वानर को पकड़ने के लिए ब्रह्मास्त्र के प्रयोग के विना दूसरा कोई उपाय नहीं है।

ऐसा सोचकर इन्द्रजित् ने मन से उस ब्रह्मास्त्र की पूजा करके हनुमान के ऊपर फेक दिया। जिस अस्त्र से सर्पाकर रूप में विराट् रूप बाले पवनपुत्र बाँध दिये गये। ब्रह्मास्त्र से बंधे हुए हनुमान् ने समझा कि ब्रह्मास्त्र का अपमान अचित नहीं है। इसलिए वासुकी नाग रूपी ब्रह्मास्त्र से बंधे हुए विन्ध्य पर्वत के समान विशाल आकार बाले हनुमान् को इन्द्रजित–मेघनाद ने रावण के समीप लाकर उपस्थित कर दिया।

"इति पाश वन्धन पटल"

"पिनी विटप पटलम्" ("वन्धन मुक्ति पटल")

इस पटल में ब्रह्मपाश से बंधे हनुमान का रावण की सभा में लाने का, रावण के साथ वार्तालाप का और हनुमान् का बन्धन मुक्त होने का वर्णन प्रमुख है।

हनुमान् जब रावण की सभा में लाये गये तब राक्षसों ने गर्जन किया कि मारो-मारो, काटो-काटो। इस वानर को मसल दो, किसी ने कहा मेरे भाई को लौटाओ मेरे पिता को लौटाओ, मेरे पुत्र को लौटाओ, नहीं तो हमलोग तुम्हारे प्राण ले लेंगे। हनुमान को देखकर बहुत सी स्त्रियाँ रोने लगीं जिनके पति मारे गये थे। इस तरह सब कुछ देखते हुए राक्षस-समूहों से घिरे हुए हनुमान् रावण के समीप लाये गये। वे मन में सोचते हैं कि रावण को क्या कहा जाय ?

ब्रह्मास्त्र के द्वारा वह कपि बांधा गया। यह जानकर रावण प्रसन्न होकर बोला। अरे वानर तुम कौन हो, कहाँ से क्यों यहाँ आये हो। हनुमान बोले मैं सर्व शक्तिमान् रामचन्द्र का दूत वायु-पुत्र–हनुमान हूँ। जिन रामचन्द्र की पत्नी 'सीता' को हरण कर तुम ले आये हो। उन्हीं की खोज करते हुए मैं यहाँ आया हूँ। यहाँ जो मेरे साथ युद्ध करने आये उन्हें मैंने यमलोक भेज दिया। इस समय "ब्रह्मास्त्र" की मर्यादा रखते हुए तुम्हारे सामने उपस्थित हूँ क्योंकि रामचन्द्र का सन्देश तुम्हें कहना है। अन्यथा इस ब्रह्मास्त्र को भी तोड़कर कुछ भी मैं कर सकता हूँ।

अशोक-वाटिका में जानकी शोक में डूब गई। कैसे यह बलशाली पवनपुत्र हनुमान् मेघनाद द्वारा बाँध कर रावण के पास चला गया। प्रायः रावण उसे अवश्य ही मार देगा। ऐसा सोचती हुई शोक में निमग्न हो गयी।

यहाँ रावण की सभा में सभी अनेक प्रकार के तर्क-वितर्क में लगे हुए थे। यहाँ कम्बन् कवि ने रावण की पराक्रम–शोभा और रावण-सभा की शोभा का अपने स्वभावानुसार अनेक पद्यों में वर्णन किया है। यहाँ केवल मुख्य कथा का अंश ही दिया जा रहा है। हनुमान् सोचते हैं यदि मैं 'ब्रह्मपाश' को काट कर रावण को मारूँगा तो रामचन्द्र की महिमा नहीं देखी जायगी। रावण भी सामान्य वलवान् नहीं है। और मैं भी उससे जीता नहीं जा सकता हूँ अर्थात् मुझे भी वह जीत नहीं सकता। इसलिए रावण क्या करता है यह देखना चाहिए।

रावण ने पुनः पूछा न तुम शिव हो, न तुम ब्रह्मा हो, न तुम शेषनाग हो, न तुम कार्तिकेय हो, न तुम यम हो, न तुम काल हो, तो बताओ तुम कौन हो ?

हनुमान् ने कहा मैंने तो पहले ही कह दिया है कि जिनकी पत्नी सीता को तुमने हरण कर लिया उस परात्पर-पर-ब्रह्मस्वरूप वेदों से वन्दित ज्ञान के मूल ''रामचन्द्र'' का दूत हूँ। जिस रामचन्द्र ने ऋषियों और देवताओं की रक्षा के लिए राक्षसों के नाशार्थ अवतार ग्रहण किया है। उन्हीं का मैं दास हूँ। मेरा नाम हनुमान् है। मैं 'वालि' के अनुज सूर्य पुत्र सुग्रीव का मित्र हूँ। सुग्रीव ने ''रामचन्द्र'' से मित्रता की। उसी राम ने उस महाबलशाली वालि को मारा, जिस बालि ने अपनी पूँछ में बाँधकर तुमको बहुत दिनों तक घुमाया।

यह सुनकर रावण ने उस वानर को मारने के लिए आदेश दिया। तब रावण के नीतिज्ञ-भाई विभीषण बोले। नीति शास्त्र में दूत को संन्देशवाहक कहा गया है। इसलिए दूत का मारना विधेय नहीं है। राम ने जैसे मेरी बहन शूर्पणखा को कुरूप करके छोड़ दिया और मारा नहीं; उसी तरह करके इस वानर को भी छोड़ दिया जाय।

विभीषण के परामर्श को मानकर वानर की पूँछ में तेल डालकर आग में जलाने का आदेश दिया। राक्षस गण उसी तरह चिल्लाते हुए हनुमान की पूँछ में आग लगायी। हनुमान् भी जलती हुई पूँछ सहित कूद कर लंका की अट्टालिका पर चले गये।

''इति वन्धन मुक्ति पटल''

''इलङ्गै यँरिमुट्ट पडलय'' (''लंकादहन पटल'')

इस पटल में हनुमान् के द्वारा सपूर्ण लंका दहन का विस्तृत वर्णन प्रमुख है। जो कवि कम्बन् की अपनी नूतन शैली में है।

जलती हुई पूँछ वाले हनुमान् रत्नमय लंका के प्रासाद पर स्वर्णमय भवनों पर यहाँ से वहाँ कूदते हुए पूरी लंका को जला देना प्रारम्भ किया। कुछ ही क्षणों के बाद सारी

लंका धू-धू करने लगी। समूची लंका में नर नारियाँ चीत्कार करती हुई इधर-उधर भागने लगीं। सभी जगह हाहाकार मच गया। धूएँ से भरे हुए आकाश में दिशा का ज्ञान नहीं हो रहा था कि कौन कहाँ जाते हैं।

जैसे वामन रूप-धारी विष्णु पहले छोटे आकार वाले होकर सहसा संपूर्ण ब्रह्माण्ड में व्याप्त हो गये। उसी तरह वानर की पूँछ में लघु रूप की आग समूची लंका में फैल गयी। यह क्या हुआ ? यह जानने में अशक्त नागरिक इधर-उधर भागो, भागों यह वोलते बोलते जहाँ तहाँ गिरने लगे। सभी उद्यान नष्ट हो गये। पूरी लंका भस्म-सात् होकर राख हो गयी। आग की ज्वाला से आकाश में चन्द्रमण्डल के अमृत का प्रवाह बहने लगा। उस अमृत के प्रवाह से लंका में मरे हुए कितने राक्षस जी गये। रावण अपने विशाल स्वर्णमय भवन को अग्नि ज्वाला से पिघलते हुए देखकर पत्नी के साथ पुष्पक-विमान पर चढ़कर दूसरी जगह चला गया। इस तरह की कथा वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं हैं।

इस तरह लंका जल गई। वहाँ कुछ नहीं बचा। अग्निदेव रावण के भय से कहीं छिप गये क्योंकि रावण फिर आकर दण्ड देगा। यह तो सब जानते ही हैं कि इन्द्र, वरूण, यम, कुबेर, वायु, अग्नि प्रभृति सभी रावण के अधीन में हैं। इस तरह लंका के जल जाने पर हनुमान् अपनी पूँछ को समुद्र में वुझाकर फिर अशोक-वाटिका में सीता के पास पहुँच गये। वह अशोक वाटिका पूरी तरह से संरक्षित थी, उसकी कोई हानि नहीं हुई।

"इति लंका दहन पटल"

"तिरूपडितौलय" ("श्री चरण वन्दना पटल")

इस पटल में लंका दहन के बाद हनुमान् का राम के समीप सीता की चरण वन्दना के वाद प्रस्थान का वर्णन प्रमुख है।

अशोक-वाटिका में पहुँचकर हनुमान् वहाँ के स्वादिष्ट मधु युक्त फलों को खाकर और पुनः सीता को प्रणाम कर वेग से समुद्र लांघते हुए वहीं पहुँच गये जहाँ अगंद, जाम्वबान् प्रमृति वानर, रीछ आदि थे। हनुमान् को देखकर लोगों ने हनुमान् का अभिन्दन किया और सीता की स्तुति की। साथ ही प्रार्थना की, कि लंका के सभी वृत्तान्त सुनायें।

हनुमान् यथा शीघ्र भगवान् रामचन्द्र के पास चलने का विचार करके सभी वहीं चल दिये। जहाँ सुग्रीव लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र ठहरे हुए थे। सीता का समाचार सुग्रीव के द्वारा दी गयी समय-सीमा तो पहले ही बीत चुकी थी। इससे सभी स्वभावतः चिन्तित

थे। सबों के मन में यही था कि प्रायः सीता मर गयी। इसलिए उनकी मृत्यु का समाचार लेकर यहाँ आना ठीक नहीं है। ऐसा मानकर वानर गण इधर-उधर चले गये थे।

इस बीच में ही दक्षिण दिशा से आते हुए हनुमान् देखे गये जैसे पूर्व दिशा से सूर्य उदित होते हैं। हनुमान् को देखकर सुग्रीव लक्ष्मण सहित राम अत्यन्त प्रसन्न हुए। हनुमान् को देखकर राम ने समझा वह सुकेशिनी सीता का समग्र समाचार तथा उनके माहात्म्य का वर्णन करेगा। हनुमान् ने कहा–वह भगवती 'सीता' मिथिला के राजा जनक की योग्य पुत्री, चक्रवर्त्ती महाराज दशरथ की सम्माननीया पुत्र बधू, आप के सर्वथा उत्तमोत्तमा–धर्मपत्नी तथा हमलोगों की पूजनीयाँ हैं।

यह भी कहा कि रावण ने पंचवटी की ''पृथ्वी-सहित-सीता'' को उठाकर ले गया। इसलिए उनके शरीर का उसने स्पर्श भी नहीं किया। उन्होंने कैसे लंका के अन्तः पुर में प्रवेश करके सीता की खोज की ? यह सविस्तार कहा–साथ ही यह भी कहा कि अशोक वाटिका में एक लता को पकड़कर 'आत्महत्या' के लिए उद्यत 'सीता' को कैसे देखा तथा कैसे वार्त्तालाप किया। और कैसे आप की दी हुई अंगूँठी सीता के लिए 'मृतसंजीवनी' की तरह हुई। जिसे देखकर सीता अत्यत प्रसन्न हुई।

इसके बाद सीता के द्वारा प्रदत्त ''चूड़ामणि'' को लेकर अशोक वाटिका का विध्वंस, राक्षसों का बध तथा लंका दहन की विस्तृत घटनाओं का हनुमान् ने वर्णन किया तथा सीता के द्वारा भेजा गया 'चूड़ामणि' राम को समर्पित कर दिया। उस चूड़ामणि को लेकर राम अनेक प्रकार की पूर्वघटनाओं का स्मरण करके चिन्ता से व्याकुल हो गये।

अन्त में सुग्रीव सहित सभी वानर सेनायें दक्षिण दिशा की ओर चलीं। हनुमान् और लक्ष्मण के साथ रामचन्द्र भी चले। मार्ग में जहाँ तहाँ चलकर समुद्र तटपर पहुँच गये। जहाँ से **''त्रिकूट''** पर स्थित लंका को उन लोगों ने दूर से ही देखा। इस तरह सागर तटपर सभी ठहर गये।

''इति श्री चरणवन्दना पटल''

''इति सुन्दर काण्डम्''

''अथ युद्ध काण्डम्-पूर्वार्धम्''

१. कड्ल काण् पडलम्'' (''समुद्र संदर्शन पटल'')

यह तो प्राक्कथन में ही कहा गया है। कि 'कम्ब-रामायण' में उत्तर काण्ड नहीं है। युद्ध काण्ड को दो भागों में पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध के रूप में वाँट कर रामराज्याभिषेक तक का ही विस्तृत मधुमय वर्णन कम्बन् की अपनी शैली में है।

विशेष सूचना–इधर हाल में आचार्य श्री ति-शेषाद्रि ने मुझे एक पत्र के द्वारा जानकारी दी है–कि ''कम्बन्'' के समकालीन किसी विद्वान के साथ समझौता के कारण कम्बन् ने उत्तर-काण्ड उन्हीं को लिखने के लिए छोड़ दिया। वह 'उत्तर काण्ड' लिखा भी गया। कहा जाता है अब लगभग ११ वर्षों के बाद उसकी पाण्डुलिपि प्रकाशन के क्रम में हैं। देखें वह कब तक सामने आता है।

इस पटल में लक्ष्मण एवं सुग्रीव की सभी सेनाओं के साथ समुद्र के सौन्दर्य देखने का वर्णन मात्र है।

युद्ध काण्ड के मंगलाचरण में ईश्वर की स्थितिऔर उनकी व्याख्या बहुत कठिन एवं जटिल है क्योंकि एक कहिए या अनेक, माने या नहीं मानें ''नेति नेति कहिए, हैं कहिये, नहीं है यह कहिये। यह सब कहना आप की इच्छा-अनिच्छा पर निर्भर है। किन्तु ''ईश्वर'' उस शब्द में ही विश्व एवं व्रह्माण्ड की सत्ता एवम् उसके विकास उद्भव और विनाश निश्चित हैं। ऐसे परमेश्वर परमात्मा को साष्टांग नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ।

कथारंभ–किष्किन्धा नगरी से एवं ''ऋष्यमूक'' पर्वत से चलकर विशाल वानरों की सेना सहित सुग्रीव आदि तथा लक्ष्मण एवं हनुमान सहित राम चन्द्र समुद्र तट पर पहुँच गये। वहाँ विशाल सेनाओं से घिरे हुए रामचन्द्र ने एकटक खुले नेत्रों से समुद्र को देखा। सीता की अश्रु-धारायें सागर में आ गईं। किन्तु सागर अपने मलयानिल से सुगन्धित वायु से मिश्रित जल कणों से राम का अभिषेक किया। क्योंकि रामचन्द्र समुद्र के 'दामाद' थे। 'लक्ष्मी' समुद्र की कन्या है। लक्ष्मी-पति-विष्णु ही ''सीता-पति-राम'' हैं। इस गम्भीर संबंध से राम समुद्र के जागाता हैं। इसलिए राम का समुद्र ने सत्कार किया।

रत्नाकर समुद्र आनन्द की अधिकता से और महान हर्ष से रामचन्द्र के स्वागत

के लिए उपस्थित हुए। और अपनी तरंग रूपी हाथों से राम का अभिवादन किया। अपनी पुत्री वन्दिनी तथा दुःखी 'सीता' के उद्धार के लिए राम आये हैं, यह भी 'राम' के स्वागत का कारण था ?

''इति समुद्र दर्शन पटल''

''ईरावङ्ङण मण्दिरप पडलम्'' (''रावण यन्त्रणा पटल'')

इस पटल में लंका की निर्माण शोभा का तथा अपने मन्त्रियों से युद्ध के लिए मंत्रणा-विचार-विमर्श का वर्णन प्रमुख है।

कहा जाता है कि ब्रह्मा के साथ एक बार देवों के शिल्पी-अभियंता (इंजीनियर) **'मय'** लंका आये थे। वहाँ आकर मय नाम के देव शिल्पी ने लंका को इस तरह बनाया कि देव-गण चका चौंध में पड़ गये। वैसे तो लंका पहले से ही मनोहारिणी थी। किन्तु रत्न आदि से जटित करके सोने की लंका इस समय अद्वितीय हो गयी। वहाँ राज सभा में दिव्य वस्त्र और अलंकार से युक्त राक्षस-राज रावण आकर सिंहासन पर बैठकर बोला। यह तो महान् खेद और अपमान का विषय है कि एक वानर ने इस विशाल लंका को ध्वस्त कर दिया। राक्षस गण, मेरे बन्धु-वान्धव, गण पहले मारे गये और बाद में मेरा पुत्र 'अक्षय कुमार' मारा गया। इससे भी अधिक कुछ भी दुःखद और चिन्ता जनक बात क्या हो सकती है ? ये सारी बातें मेरे सामने हुई हैं। लेकिन मैं शरीरधारी सिंहासन पर बैठा हुआ हूँ। आज भी कूएँ से (कूप से) रक्त बह रहा है और आग की ज्वाला पूर्ण रूप से नहीं वुझी है। नारियों के केश-पाशों से कस्तूरी की सुगन्धि के स्थान पर आग की दुर्गन्ध आ रही है।

इस तरह कहते हुए रावण के अत्यन्त क्रुद्ध होकर उसके सेनानायक उठकर वोला। हे महाराज मैंने पहले ही कहा था। कायर की तरह 'सीता-हरण' उचित नहीं है। लेकिन आप ने नहीं सुना। उस रामचन्द्र ने खर-दूषण-त्रिशिरा आदि आप के वीर वन्धुओं को मार दिया। शूर्पणखा की नाक काटने बाला फिर आप का अपमान करने के लिए तैयार है। इस लिए जब तक उसका विनाश नहीं करता हूँ तबतक शान्ति नहीं होगी। तब ''महोदर'' नाम का महान बलशाली राक्षस बोला।

हमलोगों का यही निर्णय है। कृपया आज्ञा दीजिये, हमलोग आप की दासता का मूल्य चुका देंगे। इसके बाद दुर्मुख नाम का राक्षस बोला, हे वीर राक्षस जरा ठहरो मुझे कुछ निवेदन करने दो। यह कहकर उसने रावण को कहा। हे महाराज जब तक अपनी उदासीनता भंग नहीं करेंगे तब तक जीत कठिन है। रावण प्रसन्न होकर बोला। तुम लोगों की जैसी इच्छा हो वैसा ही करो। मैं प्रसन्न हूँ। यह सुनकर महान् बलबान

अनेक अस्त्र-शस्त्रों से लैस-महोदर दुर्मुख-विशाल-महा पार्श्व-भानुकोप, यज्ञहा-धूम्राक्ष प्रभृति राक्षस तैयार हो गये। इसके बाद रावण का अनुज कुम्भकर्ण ने कहा हे सर्व शास्त्र के मर्मज्ञ अग्रज, आप लंका दहन से दुःखी एवं चिन्तित हैं। लेकिन ठगकर दूसरे की नारी को हरण कर ले आये। क्या वह सुखमय काम है ? क्या उस कुकर्म से आपके यश नष्ट नहीं हुए ? आप के समीप में तो अनुपम सुन्दरी असंख्य-नारियाँ हैं। इस सीता से क्या प्रयोजन है। लेकिन अब यदि उस सुकेशी-सीता को लौटा भी देते हैं तो भी आप चिरकाल तक निन्दा के पात्र बने रहेंगे ? इसलिए इस समय सुसज्जित सैन्य-युक्त होकर सेना सहित राम के विनाश के लिए ही प्रस्थान करना उचित है। प्रस्थान से पहले मन में यह निश्चित कर लें कि पराजय होने पर भी हमलोग युद्ध क्षेत्र से कभी नहीं भागेंगे।

यह कहकर उन लोगों ने कहा जबतक राम सेनाओं के साथ तैयार हो, इस बीच में ही हमलोग उनके ऊपर आक्रमण कर दें। यह सुनकर रावण अत्यन्त प्रसन्न होकर बोला। तुम लोग धन्य हो, शीघ्र जाओ। शत्रु को मारकर विजय प्राप्त करो और तुम्हारा कल्याण हो। तब इन्द्रजित बोला। यदि त्रिभुवन-पति भी युद्ध के लिए आयेंगे तो उन्हें मारकर ही लौटूँगा अन्यथा मैं तुम्हारे पुत्र कहाने योग्य नहीं हो सकता हूँ। पाताल से लेकर समुद्र तक और समुद्र से लेकर तीनों भुवन और संपूर्ण ब्रह्माण्ड को भी जीतकर शत्रुओं को मारूँगा।

इसके बाद महात्मा विभीषण ने रावण से निवेदन किया। हे अग्रज, आप मेरे पिता तुल्य हैं। बड़े भाई हैं, मेघनाद अज्ञानी है। यदि मेरे नीति-पूर्ण विचार की उपेक्षा नहीं करें तो मेरा यह वचन ग्रहण करें। एक 'सीता' के लिए आप की यह विशाल राजधानी लंका नष्ट हो गयी। असंख्य सैन्य और सेनापति हार गये। यह सीता वेदवन्ती होकर आई जो आप को शाप दे चुकी। साथ ही यह दशरथ का वंश वीरों का वंश है। राम साक्षात्-विष्णु के स्वरूप हैं। उनके हाथ में शिव के धनुष बाण हैं, राम के बाण सर्प तुल्य हैं। और उनकी तरकस अक्षय-भण्डार के रूप में है। इस तरह युद्ध को छोड़कर राम के साथ 'सन्धि' कर लेना ही उचित है।

यह सुनकर क्रोध से पागल रावण बोला। तुमने कहा कि हितकारी वचन कह रहा हूँ। लेकिन तुमने शत्रु की असीम प्रशंसा की है। क्या तुम नहीं जानते हो, सभी देवता मुझसे पराजित हुए। मैंने कैलाश उठा लिया। क्या तुम नहीं जानते हो कि महावली बालि को राम ने छिपकर मारा। वह कैसे वन्दनीय हो सकता है ?

यह सुनकर विभीषण फिर बोले, हे मेरे पूज्य अग्रज, आप इस रहस्य को समझें।

यह ''राम-परात्पर-पर-ब्रह्म-स्वरुप'' हमलोगों के नाश के लिए अवतार लिए हैं। हठ मत कीजिये। मैं फिर भी एक पुरानी कथा सुनाऊँगा, कृपया आप सावधान होकर सुनें।

''इति रावण मंत्रणा पटल''

३. ''इरणियन बदैव पडलम'' (''हिरण्यबध पटल'')

इस पटल में भगवान नृसिंहावतार का वर्णन और हिरण्यकशिपु के बध का वर्णन प्रमुख है।

इस कथा की पृष्ठ भूमि–यद्यपि वाल्मीकि रामायण से लेकर आज तक के किसी भी रामकथा काव्य में हिरण्यकशिपु के बध का वर्णन नहीं है। यहाँ यह भी दन्त-कथा है कि कवि कम्बन महोदय ने श्री रंग मन्दिर के मण्डप में इस कम्ब रामायण का विमोचन किया। इस समय तमिलनाडु क्षेत्र में यह परम्परा थी कि शंका समाधान पूर्वक विद्वानों के द्वारा अनुमोदित काव्य ही प्रकाशन के योग्य प्रमाणित होता था। इस क्रम को वहाँ के विद्वानों ने आपत्ति प्रकट की हिरण्यकशिपु बध कथा 'वाल्मीकि रामायण' आदि-मूल कथा में नहीं है।

इसलिए यह काव्य दोष-युक्त है। उस समय वहाँ के एक मन्दिर में भगवान् नृसिंह के पत्थर की मूर्ति ने अपने मस्तक को हिलाकर और अपने गर्जन द्वारा 'कम्बन्' लिखित इस अंश को प्रमाणित किया। तब वहाँ के विद्वानों ने इसपर अपनी सहमति दे दी। यह भी कहा जाता है कि कम्बन को भक्त प्रह्लाद की प्रशंसा में काव्य-रचना करने की इच्छा थी। उस इच्छा को ही इस रामकाव्य में उचित स्थान में छोड़कर अपनी थोड़ी इच्छा की पूर्ति की।

इसी पृष्ठभूमि में इस पटल का कथा वर्णित है।

इस पटल की कथा :-

महा बल-शाली हिरण्यकशिपु के आदेश से अनेक यज्ञों का सम्पादन किया गया। ब्रह्मा से बल प्राप्त करने पर कोई भी उसका नाश नहीं कर सकता है। केवल त्रिदेव ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही उसका नाश कर सकते थे। वह यह जानता था। इस तरह वह दानव अजेय और सर्वाधिकारी हो गया। वह आकाश गंगा में नहाता है। नाग लोक में नाग कन्याओं के साथ भोजन करता है और उसके साथ शयन करता है। वहाँ से इन्द्रलोक जाकर देवताओं से स्तुति किये जाते हुए समय विताता है। सायंकाल वह ब्रह्मलोक जाकार राज-सभा करता है। वायुयान पर चढ़कर चन्द्रलोक पहुँचकर

चन्द्रमा का काम स्वयं करता है। सूर्य-रथ पर चढ़कर सूर्य के प्रकाश का भी काम करता है। और दिग्गजों का कार्य स्वयं संचलित करता है। वह दानव कभी-कभी मेरु के शिखर पर चढ़कर राज्य शासन का संचालन करता है।

इसकी प्रभुता में ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने भी संसार की सृष्टि स्थिति और संहार करने के क्रम को छोड़ दिये। योगी-गण, अपने योग-फल को छोड़ चुके। सूर्य और चन्द्रमा हिरण्याक्ष के कानों के कुण्डल के समान थे जो हिरण्याक्ष–हिरण्यकशिपु का भाई था। दोनों जुड़वां भाई थे। उस हिरण्याक्ष को वराहावत्तार विष्णु ने मारा।

हिरण्यकशिपु को एक महान्-ज्ञानी वेद से भी पवित्र धर्म स्वरूप ''प्रह्माद'' नाम का पुत्र हुआ। उसके पिता ने उसका नाम प्रह्माद इसलिए रखा कि वह विशेष रूप से आनन्द देने बाला था (प्रकर्षेण आह्लादयति-आह्लादं-आनन्दं प्रददाति यः स-प्रह्मादः)।

एक समय उसके पिता ने वेदज्ञ ब्राह्मणों को बुलाकर उसको वेद शिक्षा के लिए आदेश दिया। उसे ऐसी धारणा थी कि वेद ईश्वर को नहीं मानते हैं। किन्तु प्रकृति और नियति-भाग्य की शिक्षा देते हैं। जहाँ ईश्वरबादी 'वेद' को प्रमाण मानते हैं वहीं अनीश्वरबादी कहते हैं कि 'वेद' शासक है। निर्देश है। पढ़ाने के क्रम में वह ज्ञानी प्रह्माद स्वयं ही ''ॐ नमो-नारायणाय'' यह मन्त्र जपते हुए ध्यान मग्न हो गया। यह सुनकर अध्यापक चिन्तित हुए और बोले कि हे तात, हे शिष्य, ऐसा तुम क्यों बोलते हो ? इस से तो खुद विनष्ट होगे। और मुझको भी नष्ट करोगे। प्रह्लाद ने कहा मैंने अपने पिता का उद्धार किया। स्वयं उद्धृत हुआ और आप का भी उद्धार किया। क्योंकि सबों के कारण स्वरूप ''वेद'' जिनका प्रतिपादन करते हैं उसी नारायण का तो मैंने उच्चारण किया हैं इसमें मेरा क्या दोष है ?

अध्यापक बोले। तुम्हारे पिता तीनों देव के शासक हैं। इसलिए अपने पिता को ही देवता समझो। प्रह्लाद ने उत्तर दिया। चारों वेदों के द्वारा वर्णित नारायण ही तो वेद के तत्त्व हैं। जिस विष्णु ने एक पैर से ही पृथ्वी पर व्याप्त हो गये। वे ही इस विश्व के आत्मा हैं।

यह सुनकर वे अध्यापक हिरण्यकशिपु के समीप जाकर प्रणाम करके बोले। आप का पुत्र स्वयं ही इस तरह बोलता है। और करता है।

यह जानकर पिता ने प्रह्माद को बुलाया और अपनी गोद में बैठाकर पूछा। तुम क्या बोले हो जो तुम्हारे अध्यापक सुन नहीं सकते हैं ? प्रह्लाद ने कहा मैंने वेदों के द्वारा प्रति-पादित ''ॐ नमो नारारणाय'' इस मन्त्र का उच्चारण किया। यही नाम सर्वस्व है। यही नाम आपके हृदय में है।

यह सुनकर पिता बोले। जो नारायण मेरे साथ युद्ध करते हुए गरुड़ पर चढ़कर भाग गये और क्षीर-सागर में छिप गये तथा आज तक बाहर नहीं आये वे कैसे मेरे हितकारी हो सकते हैं ? जिसने मेरे भाई हिरण्याक्ष को मार दिया वह कैसे मेरा मित्र हो सकता है। मैंने तो तपस्या कर वरदान प्राप्त किया है कि मैं ही सर्वस्व हूँ। उसका फलदाता कोई नहीं है। ब्रह्मा, विष्णु, महादेव भी अपने कर्म के अधीन हैं। इसलिए हे अज्ञानी बालक, इस समय मैं क्षमा करता हूँ। जाओ ये गुरू जो पढ़ाते हैं, उसी को पढ़ो।

पुत्र ने कहा ! हे पिता, वीज के विना वृक्ष नहीं होता है। एक परमात्मा ही सृष्टि के करने वाले हैं। उसी सृष्टि के प्रपञ्च का यह नाना रूप में विस्तार है। यह आप अच्छी तरह समझें। उसीमें सांख्य, योग-मार्ग, ज्ञान-मार्ग, और कर्म-मार्ग है। वेदों का तत्व उपनिषदों में है। और उपनिषदों का तत्व ही 'वेदान्त' शास्त्र में है। प्रह्लाद का यह कथन 'गीता' के रहस्यमय तत्वपूर्ण है, जिसका वर्णन गीता में हैं। यहाँ प्रह्लाद द्वारा कवि ने सांख्य-शास्त्र के सिद्धान्त का भी प्रदर्शन किया है। यह भी उसने कहा कि ''ॐ कार'' ही वेद के प्राण हैं, मुख्य ध्वनि है, और सृष्टि का प्रथम ध्वनि कारक शब्द है। विभिन्न मत वाले व्यर्थ ही विवाद करते हैं। परमार्थ में तो जल-बीची तरंग न्याय से सभी पदार्थ भ्रमात्मक ही हैं। जल और तरंग दोनों एक ही हैं लोग भ्रम से जल को 'तरंग' कहते हैं। क्या तरंग जल से कोई भिन्न प्रदार्थ है ? इस तरह परमतत्व तो–पर-ब्रह्म परमात्मा सच्चिदान्द 'वेद-तत्व' मूलक ''प्रणव''-''ॐ कार'' ही हैं।

इस व्याख्या को सुनकर सहसा चकित होकर चीत्कार करते हुए हिरण्यकशिपु ने धोषणा की। षड्यन्त्रकारी विधाता मेरे शत्रु रूप में आया है। इसलिए इसका बध करना ही उचित है। यह सोचकर उसने बधिकों को बुलाया है। यमराज से भी अधिक क्रूर बधिक (जल्लाद) वहाँ आकर प्रह्लाद को जोरों से पकड़कर वाहर मैदान में ले आये। वहाँ भयंकर अस्त्र-शस्त्रों का प्रह्लाद के ऊपर प्रहार किया गया। लेकिन ये सब विफल हो गये। यह जानकर उस दानव ने आज्ञा दी। एक बहुत बड़े गढ़े में लकड़ी, घी, तेल आदि देकर आग को जलाकर उस जलती हुई आग में प्रह्लाद को डाल दो। बधिकों ने वैसा ही किया।

जैसे लंका को जलाते हुए हनुमान् की पूंछ और पीठ में आग की ज्वाला शीतल हो गयी वैसे ही यहाँ के अग्नि-दाह प्रह्लाद को कुछ नहीं कर सके। तब आठ नागों को बुला कर प्रह्लाद को काटने के लिए–दशं के लिए आदेश दिया। लेकिन 'गरूड़' को देखकर जैसे 'नाग' भाग जाते हैं वैसे ही ये आये नाग प्रह्लाद को देखकर भाग गये। इसके बाद ऐरावत आदि हाथी भी पराजित हो गये। उनके दांतों को प्रह्लाद ने केले की फल की तरह उखाड़ लिए। इस लिए पिता के सभी उपायों को प्रहलाद ने विखण्डित कर दिया।

इन सब को देखकर हिरण्यकशिपु बोला। हे दुष्ट तुम्हारा डरा हुआ वह हरि भगवान् सागर में जाकर छिपा हुआ कहाँ है ? क्या वह मेरे इस खम्भे में है ?

यदि सर्व-व्यापी है तो निकलो। यह कहने के बाद ही वह खम्भा फूट कर विदीर्ण हो गया। इससे नरसिंह के आकार का (आधा मनुष्य आधा सिंह का रूप) एक विकराल पुरुष निकला। उसको देखकर प्रह्लाद ने कहा ! पिता जी, क्या इस नरसिंह को देखकर भी आप कुछ नहीं समझ रहे हैं। कृपया समस्त लोकों के अधिपति इस देव को प्रणाम कीजिये। वे क्षमा कर देंगे। लेकिन हिरण्यकशिपु ने कहा कि तुरत ही मैं इसके हाथों पैरों को काट दूँगा।

यह सब सुनकर नरसिंह ने उस दानव के दोनों हाथ पैर धर के उठाकर चारों ओर घुमाया और उसको स्वर्ण-भवन के कपाट के समीप लाकार अपनी जंघा पर रख के अपने नखों से उसको चीर दिया। इस तरह उस महादानव का संहार हो गया है। यह देखकर देवतागण संतुष्ट हुए। और प्रह्लाद ने स्तुति की। उस नरसिहावतार भगवान ने प्रह्लाद के मस्तक पर राज्य मुकुट रखकर उसे राज्य दे दिया।

इस रूप में विभीषण ने रावण को 'हिरण्यकशिपु' का पराक्रम एवं बध का वर्णन सुनाया। इस पटल में रावण विभीषण के संम्बाद के बीच में हिरण्यकशिपु के नाश की चर्चा की तथा प्रह्लाद के द्वारा श्रद्धा भक्ति और ज्ञान-योग की कथा का भी वर्णन किया। यह नूतन कथा केवल इसी रामायण काव्य में है। जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है।

"इति हिरण्यकशिपु बध पटल"

४. वीड्रण् नड्रैककलप् पडलम् (''विभीषण शरणागत पटल'')

इस पटल में रावण से अपमानित होकर विभीषण का राम की शरणागति में आने का वर्णन प्रमुख है।

पूर्व पटल में विभीषण द्वारा कही गयी 'हिरण्यकशिपु' की बुद्धि विकृत हो गयी थी। इसलिए उसके विनाश की कथा को ध्यान से तो सुना, किन्तु सीता हरण के मोह से उसकी कोई भी प्रभाव रावण पर नहीं पड़ा। रावण ने कहा, क्या 'हिरण्यकशिपु' मेरे पूर्वजों से अधिक बलवान था ? बालि के नाश करने बाले की भक्ति करते हो। लेकिन मृत्यु सबों का अन्त करती है यह समझो। तुम तो पहले से ही राम-लक्ष्मण के ऊपर स्नेह करके हमलोगों के प्रति वैर भाव करते हो। इसलिए राम ही तुम्हें शरण देने बाले हैं। प्रायः तुम मेरे राज्य को लोभ की दृष्टि से देखते हो।

इसके पहले जिस वानर ने अशोक वाटिका का नाश किया, उसके मारण को तुमने रोक दिया और कहा कि 'दूत का बध'' नहीं होता है। इसलिए तुम जहाँ चाहो जाओ। तुम्हारी विनाश-काल में विपरीत बुद्धि हो गयी है। तब विभीषण उठकर आकाश के मध्य में जाकर बोला। हे अग्रज, यह समझ लीजिये कि मेरे सभी बन्धु वान्धव राम के द्वारा मारे गये। 'अक्षय-कुमार' मारा गया। इन सबों को याद करके और ध्यान में रखकर जो करना चाहिए वह आप कर सकते हैं। मैंने तो पहले राम के दर्शन नहीं किये हैं। और न उनके बारे में अधिक सुना है। लेकिन उनके स्मरण से मन शीतल हो जाता है। और वे पतितपावन हैं–नीचों को पवित्र करने बाले हैं। यह मेरा अनुमान है।

ब्रह्मण वंश में उत्पन्न होकर मैंने बड़ी तपस्या करके बरदान में प्राप्त किया कि भक्ति, धर्म-परायणता, नीति मार्ग पर चलना, सभी प्राणियों पर दया और ब्राह्मणों की कृपा उस वरदान की फल-प्राप्ति का समय आ गया इसलिए उन्हीं की-राम की-शरण में जाना चाहिए। यह निश्चय करके विभीषण राम की शरण में गये। उस समय संध्या हो गयी थी इसलिए कहीं ठहर कर रात बिता दी।

''इंति विभीषण शरणागति पटल''

५. ''डलङ्गै के लविप पडलय्'' (''लंका श्रवण पटल'')

इस पटल में सुग्रीव आदि के सहित राम ने लंका संबन्धी-विवरण विभीषण से प्राप्त किया। यही वर्णन प्रमुख है।

संध्या आ गयी। वहीं ठहरे हुए राम ने संध्या-बन्दन आदि करके रात बिताई। रात बिताते हुए राम भावनाओं में डूब गये। वे सुकेशी-सीता का स्मरण करते हुए शोक में डूब गये। समुद्र तट की बालुकाओं पर फैली हुई चन्द्र किरणों दूध के समान दीख रही थीं। शीतल मन्द सुगन्ध देने बाले मलय गिरि के वायु विषयुक्त सर्प के समान काटने के लिए आये हैं ऐसा राम को अनुभव हुआ।

इस तरह दुःखी राम ने सुग्रीव से कहा। काम करने वाले आप लोग यहाँ आये हुए हैं। विभीषण के साथ क्यों नहीं विचार विमर्श करके आगे का कर्त्तव्य पथ का निर्धारण करते हैं। इसी बीच 'विभीषण' वहाँ पहुँच गये। राम ने कहा, लंका की सुरक्षा व्यवस्था के सम्बन्ध में वहाँ की सभी बातों एवं वस्तुओं का आप सुस्पष्ट वर्णन करें।

विभीषण ने कहा। प्रक़ाश समूहों से भी ऊपर स्थित लंका की दीवार-किलायें सात सौ योजन गोलाकर और गहराई सौ योजन पर्यन्त है। जिस दीवार किला की वास्तु कला अपलक नेत्रों से देखने योग्य हैं। उसकी उत्तर दिशा में सोलह करोड़, पश्चिम

दिशा में दो करोड़, दक्षिण दिशा में सोलह करोड़ और पूर्व दिशा में सोलह करोड़ संख्या बाले वीर अजेय सेनायें हैं। साथ ही अन्तरिक्ष में (३२) बत्तीस करोड़ संख्या वाले राक्षस सैनिक बीच में घूम रहे हैं। ये सभी अत्यन्त क्रूर और दुर्जेय हैं जिनके डर से कोई भी सामने नहीं आता है।

विशेष : यहाँ कवि कम्बन् जो संख्याये एवं प्राचीरो की विशालता का वर्णन तथा अगणित हाथी, घोड़े, रथ, सैनिक आदि के प्रसंग में जो संख्यायें दी हैं उस पर 'ऐतिहासिक' और 'भौगोलिक' विद्वान् ही अनुसन्धान कर सकते हैं या कवि स्वयं जानते होंगे। यहाँ इस रामकाव्य के सभी टीकाकार भी इस प्रसंग में मौन हैं।

कवि पुनः कहते हैं। इस तरह तीन प्राचीर-दीवार हैं। राजद्वार पर चौंसठ करोड़ द्वारपाल हैं। दश हजार पद्म संख्या वाले रथ हैं। उससे दुगुने हाथी हैं। उससे दुगुने घोड़े हैं और उससे दुगुंने ऊँट हैं। ये संख्याये भी अनुसन्धेय हैं।

पुनः विभीषण ने कहा इन विशाल सैन्य वलों के पास भगवान् शिव के द्वारा प्रदत 'चन्द्रहास' नाम की तलवार निरंतर उसके साथ में है। रावण को निकुम्भ, महोदर, भानु, कोप, महापार्श्व, वज्रदेष्ट्र, पिशाच, दुर्मुख, विरूपाक्ष, और घूम्राक्ष नाम के अजेय कुकर्म करने वाले बड़े-बड़े सेनापति हैं। जिनमें प्रत्यके के साथ करोड़ों सैनिक हैं। इस के साथ ही 'इन्द्रजित्' विश्व विजयी-मेघनाद नाम का पुत्र है। तथा देवांतक, नरातंक और त्रिशिरा नाम के तीन दुर्दान्त दैत्य हैं।

यह रावण व्रह्मा के पुत्र, पुलस्त्य का पौत्र विश्रवा का पुत्र है। जिसने अपनी तपस्या से व्रह्मा और शिव के द्वारा अनेक वरदान प्राप्त किये हैं। रावण से डरते हुए यम, कुवेर, वायु आदि देव गण तथा सूर्य और चन्द्रमा रावण की आज्ञा से ही चलते हैं। ऐसे महावलशाली रावण को जीतने में और नाश करने में आपही समर्थ हैं। आपके हाथ से ही यह मरेगा। आपके दास 'हनुमान्' का भी पराक्रम अवर्णनीय है जिसने लंका स्थित विशाल लौह-स्तम्भ को उखाड़कर अनेक राक्षसों का नाश किया। इसी हनुमान् ने 'जम्बुमाली' को मारा। 'अक्षय-कुमार' को मारा और स्वर्णमयी लंका को जला दिया।

यह सुनकर राम ने हनुमान् को यथा योग्य आदेश दिया एवं विभीषण को उत्तर दिया। सृष्टि का स्थिति पालन और संहार आदि तो सामान्य बात है। लेकिन इस सागर के पार करने का उपाय सोचना चाहिए। विभीषण ने कहा पहले सागर से निवेदन किया जाय। क्योंकि सागर आपके अभिप्राय को पूरी तरह जानता है।

सागर ने आप के पूर्वज 'सगर' को पुत्रों का उद्धार किया था। राम विभीषण के विचार को स्वीकार करके वैसे ही करने को तैयार हुए।

''इति लंका श्रवण पटल''

''वरूणन् अडैक्कलम्'' (''वरुण-शरणागति पटल'')

इस पटल में रामचन्द्र द्वारा समुद्र तटपर स्थित होकर समुद्र की प्रार्थना करना तथा वरुण-देव की राम की शरण में आने का वर्णन प्रमुख है।

समुद्र तट पर 'कुश' के आसन पर बैठकर वरुण के मन्त्र को जपते हुए एकाग्रचित्र से समुद्र पार करने के लिए राम ने मन्त्र द्वारा प्रार्थना की। लेकिन सागर के देवता वरुण नहीं आये। राम ने अनुभव किया कि याचना करने से ''महान्'' भी लघु हो जाते हैं। इसलिए मेरी शक्ति की उपेक्षा करके सागर सामने नहीं आ रहे है। इससे सागर के नीच स्वभाव और धार्मिक भावना के ह्रास का परिचय होता है। अच्छी बात है, अब समुद्र मेरे क्रोध का सहन करें। राम ने कहा कि समुद्र शोषण कर लेने से उनके असंख्य जीब-जन्तु का नाश हो जायेगा। तथा समुद्र के रत्नों का समूह यम-तक विखर जायगा। इसलिए समुद्र से याचना की। ऐसा सोचते हुए राम का मुखमण्डल लाल हो गया और धैर्य जाता रहा। लक्ष्मण को आदेश दिया कि मेरा धनुष दो। लक्ष्मण ने धनुष दे दिया।

वीर रस वर्णन

राम ने धनुष पर बाण चढ़ाकर तीक्षण वाणों से समुद्र को विचलित कर दिया। उनके धनुष का टंकार सुनकर सभी कांप गये। सागर में स्थित जल जन्तु लकड़ी की तरह भस्म हो गये। राम के वाण की ज्वाला-माला से आकाश भर गया। पृथ्वी जलमग्न हो गयी। आग जल का शोषण करता है। इस कथन को राम ने आज प्रमाणित किया।

इस समय राम के बाण के महर्षि 'अगस्त्य' की समता हो गयी। क्योंकि अगस्त्य ने समुद्र का शोषण किया था। इसके बाद राम ने 'ब्रह्मास्त्र' उठाया। यह देखकर सभी देवगण काँपने लगे। असहाय जल देवता वरुण स्तुति करते हुए राम के समीप आये। और प्रार्थना करने लगे। हे पुराण पुरूष राम, आप को पुनः पुनः प्रणाम है। क्रोध छोड़िये। प्राणों की रक्षा कीजिये, और क्षमा कीजिये। आप ही भूमि, जल, अतल, वायु और आकाश के स्वरुप हैं। आप का कौन अपराध कर सकता है ? मैं आपका शरणागत हूँ। मुझे अभय दान दीजिये।

राम ने कहा, ठीक है। ऐसा ही हो। तब वरुण बोले। सप्त सागर के बीच में ग्राहों के बीच युद्ध हो गया था, वहीं मैं गया था। वहाँ किसी ने आप के आने की चर्चा की। तब दौड़ा आया। राम ने कहा, मेरे अमोघ बाण की क्या गति होगी ? वरुण बोले। हे प्रभो, एक 'मकरान्तक' द्वीप है वहाँ दो करोड़ संख्या वाले राक्षस रहते हैं। वे लोगों को खा जाते हैं। उनके ऊपर इस अमोध वाण को आप छोड़ दें। राम ने

वैसा ही किया। और वे दानव नष्ट हो गये।

इसके बाद वरुण बोले। यदि सागर का गौरव आपके द्वार नष्ट हो जायगा तो बहुत बड़ा अपयश होगा। इसलिए पर्वतों के खण्डों के एकत्र कर पुल बनबा दें। यही उत्तम मार्ग है।

''इति वरुणशरणागति पटल''

७. शेतुवन्दनप् पडलम्'' (''सेतुबन्धन पटल'')

इस संक्षिप्त पटल में समुद्र में सेतुबन्धन 'पुल' का वर्णन प्रमुख है।

इसके बाद राम ने सुग्रीव आदि को बुलाकर आदेश दिया कि जैसे वरुण ने कहा है उसी तरह किया जाय। सुग्रीव, विभीषण, जाम्बवान् आदि सभी प्रमुख व्यक्ति वहाँ एकत्र हुए। वहाँ 'नल' नाम के वानर जिसे अभियंता (इंजिनियर) कहा जाता है, वे अन्य सभी अपने दल के सैन्यों के साथ सेतु वन्धन के कार्य में संलग्न हो गये। उनमें 'गवाक्ष' नाम के एक वानर एक विशाल पर्वत को उखाड़कर समुद्र में फेंक दिया। जिससे समुद्र में उठते हुए तरंग आकाश में व्याप्त हो गये। अन्य वानर गण भी वृक्ष, पर्वत आदि को उखाड़कर समुद्र में फेंक रहे थे।

इस तरह 'नल' के नेतृत्व में वानरों ने तीन दिनों के बीच सागर में पुल वनाकर सुग्रीव विभीषण आदि के साथ राम के समीप आकर सूचना दी, कि सौ योजन विस्तृत-सागर में सेतु का निर्माण पूर्ण हो गया और इस तरह यह महान् विधि सम्पन्न हो गया।

''इति सेतुबन्धन पटल''

''आररूककेलविप पडलम्'' (''चरश्रवण पटल'')

इस पटल में रावण द्वारा प्रेषित गुप्तचर के व्यापार का वर्णन प्रमुख है।

'नल' आदि के द्वारा समुद्र में 'सेतु' निर्माण हो जाने की बात को सुनकर राम अत्यन्त प्रसन्न हुए और उसे देखने के लिए उत्कण्ठित हुए। सेनाओं के साथ राम सेतु देखने चले जिनके आगे में विभीषण, पीछे की ओर सकल शास्त्र के मर्मज्ञ कुशल-विद्वान हनुमान् और दोनो वगल में अगंद, लक्ष्मण आदि थे। परिजनों के साथ 'राम' सेतु के समीप आ गये।

उस पुल को देखकर राम आश्चर्यित हुए और सुग्रीव आदि सेनाओं के बीच में बहुत बड़े अभियंता 'नल' की प्रशंसा की। जैसे काबेरी नदी पुष्प चन्दन आदि से युक्त लंका को दिखाने के लिए चली हो। इसी तरह सेतुबन्धन दिखाई पड़ा। अनेक रत्न

फूल आदि से युक्त समुद्र की तंरगें लंका की ओर जा रही थीं। इन वानर सेनाओं के साथ सीता की चिन्ता करते हुए राम सेतु के मार्ग से समुद्र को लांघकर लंका के समीप पहुँच गये। वहाँ सेनापति 'नल' ने आदेश दिया कि इन सैन्य वलों के लिए तथा मेरे लिए आवास आदि की व्यवस्था करें।

आज्ञा प्राप्त करते ही रत्न आदि से परिपूर्ण शिविरों का निर्माण तुरत ब्रह्मा के निर्माण की तरह कर दिया गया। राम वहाँ सुख से रहने लगे और सभी सैन्य गण भी आनन्द के साथ वहाँ निवास करने लगे।

इसके बाद रावण से प्रोरित एक मायावी-दानव वानर का रूप धारण करके सुग्रीव के सैन्य बल के बीच घूम रहा था। जिसको 'विभीषण' ने समझ लिया कि यह राक्षसी माया है। अणिमा, लधिमा, गरिमा आदि आठ सिद्धियाँ भी अपने रूप को छिपाकर वहाँ गयी थी। विभीषण उनको भी पहचान गये। वानर गण उनको देखकर मुक्के के प्रहार से पीटकर, लताओं की डोरी से बाँध कर 'राम' के समीप लाये और बोले कि ये कपट, वेशधारी राक्षस हैं। राम ने उन्हें देखा और वे दीन भाव से राम को देखने लगे। राम ने पूछा। तुम लोग यहाँ क्यों आये हो। उन्होंने कहा, रावण की आज्ञा से आप की गतिविधि को जानने के लिए हमलोग यहाँ आये हैं। जिस रावण ने जगन्माता सीता को हरण कर लाया है।

राम ने उनलोगों को मुक्त करा दिया और कहा कि तुमने मेरे शिविर के विषय में सब कुछ देख लिए और मेरे अभय दान को भी देख लिए। जाओ, रावण को बोलो कि मैंने (राम ने) विभीषण को लंका के अधिपति के रूप में अभिषेक कर दिया । इस बीच रावण ने भी राम के आने का सभी समाचार सुन लिया। वह चिन्तित होकर अनेक प्रकार की मन्त्रणा में लग गया। अभी हमलोगों को क्या करना चाहिए, रावण के इस कथन पर रावण के मातामह (नाना) माल्यवान् बोले। हे राजन् आप ने सब कुछ देखा तथा आप देख रहे हैं। एक वानर आकर राक्षसों को मारकर लंका जलाकर चला गया। इस विशाल सागर में सेतु बनबाकर अपनी विशाल वानर सेनाओं के साथ राम यहाँ लंका के पास उपस्थित हैं। इसलिए यथोचित कार्य ही करना चाहिए। यह सुनकर रावण बोला। आप भी विभीषण के साथ जायें। आप भी मेरे अतुलनीय बल को विना जाने हुए ऐसा कहते हैं। इसी बीच कौई गुप्तचर आया। रावण ने उसे कहा, वहाँ का पूरा समाचार कहो। गुप्तचर बोला। जैसे अमृत पान के समय सूर्य ने दानव का संकेत्त कर दिया वैसे ही विभीषण ने हमें पहचान लिया और राम को सबकुछ बता दिया। इकसे बाद राम ने मुझपर दया करके मुझे मुक्त कर दिया और मैं जिस किसी तरह यहाँ उपस्थित हूँ।

'राम' धर्म के रक्षक, विष्णु स्वरुप देवताओं से प्रेरित होकर यहाँ मानवरूप में उपस्थित हैं। ऐसा लोग कहते हैं। यह सुनकर रावण वोला, सभी देवता मिलकर स्वयं 'महादेव' भी यदि यहाँ आ जांय तो उनके साथ मैं युद्ध अवश्य करूँगा। परिणाम का कोई प्रभाव और भय मुझे नहीं है। वर्त्तमान स्थिति में भागना सम्भव नहीं है। ऐसा तुम लोग समझ लो।

'इति चर श्रवण पटल''

९. इलङ्गैकाण् पडलम्'' (''लंका संदर्शन पटल'')

इस छोटे से पटल में राम के द्वारा 'त्रिकूट' शिखर पर स्थिति लंका देखने का वर्णन मात्र है।

इसके बाद रामचन्द्र **'त्रिकूट'** शिखर पर वसी हुई महामहिमामयी मनो-हारिणी स्वर्ण-मयी लंका को देखने के लिए उत्सुक हुए। जिस लंका में पहले सूर्य भी प्रवेश नहीं कर सकते थे; उसमें अब रामचन्द्र के आने से निर्भय होकर प्रवेश कर रहे है। विभीषण और सुग्रीव राम के एक हाथ को पकड़कर क्रमशः **'सुवेल'** पर्वत पर चढ़कर लंका को दिखाना प्रारम्भ किया,। इस पर्वत शिखर पर राम उदय गिरि को छोड़कर दूसरी दिशा में सूर्य के समान दीख रहे थे। यहाँ सूर्य का उदय-गिरि का छोड़ना और **अपने लाल रंग को छोड़कर 'श्याम वर्ण' होना-अशुभ सूचक है।** यह ध्वनित होता है। क्योंकि राम सूर्य के समान किन्तु 'श्यामवर्ण' थे

राम अपने नेत्र कमलों से अमरावती से भी मनोरम लंका को देखा। लाल किरणों से व्याप्त लंका जैसे हनुमान् से जलाई गई की तरह दिखाई दे रही है। इस नगर में बड़ी-बड़ी अट्टालिकायें हैं। जिनके बीच में रावण का सुसज्जित महल है। राम कहते हैं। हे लक्ष्मण देखो, मूंगें की तरह लाल महलों को, जहाँ सुसज्जित और फूलों से अलंकृत **केश पाशों को सुगन्धित करने के लिए अगुरु आदि के धूप दिये जा रहे हैं।** जिससे श्यामल प्रासाद 'भगवान' अर्धनारीश्वर शिव'' के समान हो गया है। इस तरह लंका को देखते-देखते राम प्रसन्न हो गये।

''इति लंका संदर्शन पटल''

१०. ''इरावणन् वानरततानै काण् पटलम्'' (''रावण द्वारा वानर सेना दर्शन पटल'')

इस संक्षिप्त पटल में रावण के द्वारा वानरी सेना देखने का वर्णन मात्र प्रमुख है।

इसी समय रावण वानर सेनाओं की विशालता को देखने लिए एक लाल स्वर्णमय

गोपुर ('द्वार') के अग्रभाग पर आया। यह गोपुर स्वर्णमय मेरु पर्वत के समान था। जहाँ रावण वासुकी नाग के समान दिखाई दे रहा था। पुराण में यह कथा प्रसिद्ध है कि एक समय वायु और शेषनाग के बीच बल परीक्षा हुई उस परीक्षा में वायु ने मेरु शिखर को उखाड़कर फेंक दिया। जिसके तीन शिखर समुद्र में गिरकर "त्रिकूट" हो गया। उस 'त्रिकूट' नाम के पर्वत पर यह लंका स्थित है। वहीं पर वायु के समान वह रावण था। **(लंका का 'त्रिकूट' पर्वत पर स्थित होने की यही मूल-पौराणिक कथा है)।**

रावण के अगंरक्षक एक सौ करोड़ भयंकर क्रूर तथा अनेक शस्त्र सहित राक्षस थे। ऐसा रावण राम को देखकर कुपित हो गया। उसके वाम अंग और वाम नेत्र फड़कने लगे। जो अशुभ के चिह्न हैं। रावण ने शूर्पणखा की नाक काटने बाले लक्ष्मण को देखा। सूर्य पुत्र अंगद, **महावैयाकरण ज्ञानियों में श्रेष्ठ हनुमान, अग्नि पुत्र-त्रिशूल धारी नील, पर्वत-तुल्य नल और त्रिकालज्ञ रीछों का राजा जाम्वबान को देखा।**

इस तरह देवता के वैद्य अश्विनी कुमार के दो पुत्र राम लक्ष्मण के समान "**मैन्द्र और द्विविद**" को देखा। उन दोनों ने भी रावण को देखा! इसी तरह कुमुदाक्ष, गबयाक्ष, केशरी, त्रिदश, सुषेण, दधिमुख, शंख, प्रभृति प्रख्यात बल-शाली सेनापतियों को तथा असंख्य वानर सेनाओं को रावण ने देखा। जैसे– **समुद्र तट पर फैले हुए बालू के कण नहीं गिने जा सकते उसी तरह ये वानर सैन्य नहीं गिने जा सकते हैं।** यह सब देखकर रावण चिन्तित हुआ।

"इति रावण द्वारा वानर सेना दर्शन पटल"

(११) "मड्डुडगङ्गप पडलम" ("मुकुट भंग पटल")

इस पटल में रावण के मस्तक से मुकुट गिर जाने का वर्णन प्रमुख है।

जब कि रावण राम की सेनाओं को देख रहा था उसी समय रावण के मस्तक से मुकुट गिर गया और मुकुट गिरना अशुभ सूचक है।

जब रावण राम के शिविर और उनकी वानरी सेनाओं को देख रहा था। तब रामचन्द्र ने विभीषण को पूछा। इस अभेद्य किला पर खड़े हमलोगों की सेनाओं को कौन देख रहा है। विभीषण ने कहा, पर्वत के समान गोपुर-द्वार पर 'तिलोत्तमा' आदि अप्सराओं से घिरा हुआ **नीच कर्म करने वाला वह 'रावण' ही है।** राम विभीषण के बीच इस कथा को सुग्रीव भी सुन रहा था। इसी बीच सहसा सूर्य पुत्र सुग्रीव क्रोध से जलते हुए रावण के ऊपर कूद गये। जैसे एक समय हनुमान ने सूर्य को कोई पका फल समझकर उसे लेने के लिए कूद गये थे। इस समय सुग्रीव सूर्य के समान दीख

रहे थे।

सुग्रीव गोपुर पर स्थित रावण के ऊपर आकाश मार्ग से उसी तरह पहुँच गये। जैसे 'जटायु' ने किया था। रावण ने पूछा, तूम कौन हो और क्यों यहाँ आये हो ? बिना कुछ उत्तर दिये हुए सुग्रीव ने तुरत रावण के ऊपर अपने कठोर हाथ के मुक्कों से प्रहार किया। जिससे रावण क्रोध से उन्मत्त होकर अपने बीस (२०) हाथों से सुग्रीव के ऊपर कठोर रूप से प्रहार किया। इस प्रहार से सुग्रीव के शरीर से खून की नदी बहने लगी।

सुग्रीव भी उन्मत्त होकर अपने पैर से रावण के मस्तक और मुख पर प्रहार करने लगा। रावण ने ऐसा करते हुए सुग्रीव को कसकर हाथों से पकड़कर जमीन पर गिरा दिया जैसे मदमत्त हाथी को सिंह गिरा देता है। वैसा करने पर सुग्रीव मूर्च्छित हो गया। कुछ देर के बाद सुग्रीव ने चेतना प्राप्त कर रावण को इस तरह गिरा दिया जिससे रावण के मुख से रक्त की धारा बहने लगी। इस तरह रावण और सुग्रीव के बीच परस्पर भयानक युद्ध हुआ, जहाँ कभी सुग्रीव का पक्ष प्रवल होता था और कभी रावण का।

इस तरह सुग्रीव ने लंका गोपुर को ध्वस्त कर दिया और वे नीचे कूद गये। इसी बीच अपने सहायक मित्र सुग्रीव को नहीं आये देखकर 'राम' चिन्तित होकर सोचते हैं यदि रावण सुग्रीव को मार देगा तब हमलोग कैसे जीत सकेंगे। क्योंकि सुग्रीव की सहायता से ही 'सीता' की खोज हुई, समुद्र में सेतु का निर्माण हुआ और हम लोग लंका के द्वार तक आये।

जब राम ऐसा सोच ही रहे थे, तब तक सुग्रीव आकाश मार्ग से उत्तर कर राम के पैरों पर गिर गये और रावण के मस्तक से गिरे हुए **'किरीट मुकुट' को राम के पैरों पर रख दिये**। यह देखकर सभी स्वस्थ एवं प्रसन्न हो गये। राम ने अपनी छाती से लगाकर सुग्रीव का आलिंगन किया। जिससे भयंकर युद्ध में प्राप्त सुग्रीव के शरीर की व्यथा विलुप्त हो गयी। अर्थात् सुग्रीव के दर्द दूर हो गये। राम ने कहा, हे मित्र तुमने अच्छा नहीं किया। यदि रावण के युद्ध में तुम्हारा विनाश हो जाता तो हमलोगों की क्या गति होती ? क्यों तुम विना पहले विचार किये हुए सहसा लंका के गोपुर पर कूद गये और उस दुर्दान्त रावण के साथ युद्ध में भिड़ गये। अच्छा, अभी तुम आराम करों ।

भक्ति भावना की उत्तेजना–सुग्रीव ने कहा। मैंने 'जटायु' के समान अच्छा काम नहीं किया, और न मैंने निषाद राज गुह के समान निश्छल प्रेम दिखाया। मैंने तो न सीता को लाया और न रावण के शिरों को लाया। मैं तो खाली ही हाथ आया। मैं

तो खाली ही हाथ आया। आप के द्वारा तो मेरे शत्रु मारे गये और मेरे द्वारा केवल वानर स्वभाव की चञ्चलता दिखाई गई और की गयी।

इसी बीच महाबल वुद्धिशाली वैयाकरण–हनुमान् बोले। हे महाराज, सुग्रीव रावण के मस्तकों से रत्नजटित किरीट मुकुट आदि को निकालकर ले आये, यह क्या सामान्य घटना है ? इससे भी अधिक कुछ भी यश देने बाला काम हो सकता है ? यह तो रावण के विनाश का सूत्रपात है। यह तो हमलोग की **विजय का शिलान्यास है**। इस तरह परपर वार्त्तालाप कर रहे थे, तब संध्या हो गयी। किन्तु रावण के मस्तक के रत्नों से ऐसा प्रकाश हो रहा था जिससे अन्धकार भाग गया। वहाँ लंका के 'गोपुर' से रावण अपने पराजय से लज्जित और दुःखी होते हुए अपने भवन को लौट गया।

"इति मुकुट भंग पटल"

१२. अणिबहुप्पुप पडलम्" ("ब्यूह रचना पटल")

इस पटल में दोनों पक्षों के द्वारा युद्ध के लिए **"व्यूह" रचना** का वर्णन प्रमुख है।

('ब्यूह' शब्द का अर्थ है युद्ध से पूर्व अपनी सेनाओं को निश्चित स्थान पर व्यवस्थित करने की प्रक्रिया, जिससे वे सैनिक उचित समय पर उसी स्थान से यथोचित कार्य कर सकते हैं।

सुग्रीव के साथ युद्ध में अपमानित होंने से मर्माहत रावण का मुख मलिन कमल फूल के समान हो गया। वह अपने कोठे पर आकर नाच, गान, सुरा पान, आदि को छोडकर अपने कोमल विछौने पर लेट गया। इसी बीच द्वारपाल ने आकर निवेदन किया कि आप के द्वारा प्रेषित **'शार्दूल'** नाम का गुप्तचर आया है। रावण ने उसे प्रवेश करने की आज्ञा दी। 'शार्दूल' वहाँ आकर रावण के पैरों पर गिरकर रावण को मलिन मुख को देखकर सन्न रह गया। उसको देखकर रावण बोले। तुम निःसंकोच **(बिना किसी शंका के)** सभी बातों को कही जो जो तुमने वहाँ देखा।

गुप्तचर **'शार्दूल'** ने कहा हे महाराज वहाँ महावल-शाली पवन-पुत्र मारुति लंका के पश्चिम द्वार पर आक्रमण करने के लिए तैयार बैठा हुआ है। उसके चारों तरफ सत्तरह **"बैल्लम"** करोड़ संख्या की सेनाएँ हैं। स्वयं राज कुमार अगंद सत्रह **"वैल्लम करोड़"** संख्या वाले वानरों के साथ दक्षिण द्वार पर खड़े हैं, महावलशाली **'नील'** सत्रह करोड़ सेनाओं के साथ उत्तर गोपुर पर विराजमान हैं। जहाँ विभीषण लंका की सभी स्थितियों का विवरण दे रहे है।

"**शार्दूल'** के द्वारा इस समाचार को सुनकर क्रोध से पागल रावण अपने दाँतों

को पुनः पुनः पीसते हुए कहा। मैं सेना सहित राम को मिट्टी के धूलि-कण की तरह जमीन पर मसल दूँगा। वहाँ प्रलय कालीन पवन को बहा दूँगा। रावण के क्रोध से उसकी पुष्पा शय्या के फूल मुरझा गये। रावण वहाँ से उठकर दूसरे रत्नमय सिंहासन पर आकर बैठ गया।

तब रावण ने मन्त्रियों को वुलाया। वहुत से मन्त्रीगण आ गये। उनको देखकर रावण बोला। सभी द्वारों पर वानर की सेनाएँ तैयार बैठे हैं। अभी क्या करना चाहिए यह विचार कर परामर्श दीजिये। तब **'निकुम्भ'** नाम के मंत्री बोले। क्या सत्तरह वल्लम कोटि संख्या बाले वानर हमारे द्वारों को लांघने में समर्थ हैं ? ऐसा नहीं हो सकता है।

अनेक अस्त्र शस्त्र से युक्त हमलोग जब युद्ध के लिए उपस्थित होंगे, तब उनका विनाश निश्चित है। इस समय तो युद्ध करना ही अच्छा है। मुझे कोई दूसरा उपाय नहीं दीखता है। यह सुनकर रावण के (नाना) मामा **'माल्यवान'** ने कहा। इस नगर में एक वानर प्रवेश कर राक्षसों को एवं सेनापतियों को पराजित कर दिया, अक्षय कुमार को मार दिया और सोने की लंका जला दी। उसके नायक महावल शाली रामचन्द्र के साथ बैर करना उचित नहीं है, इसलिए युद्ध को छोड़कर राम की सुन्दर स्तन और बहुत लम्बे-काले केश वाली पत्नी सीता को उन्हें लौटाकर अपनी लंका की, और राक्षस कुल की रक्षा कीजिये।

यह सुनकर रावण बहुत क्रोधित हुआ और 'माल्यवान्' की भर्त्सना करने लगा। इसके बाद **'प्रहस्त'** नाम के भयंकर दैत्य सेनापति से कहा। तुम अपनी वीर सेनाओं के साथ पूर्व दिशा की ओर जाओ। हे महोदर तुम 'महा-पार्श्व' के साथ दो सौ करोड़ सेनाओं के साथ दक्षिण दिशा की ओर जाओ। अपने पुत्र **'मेधनाद'** से कहा तुम दो सौ करोड़ सेनाओं के साथ सूर्योदय से पहले पश्चिम द्वार पर जाओ। और **'विरुपाक्ष'** नाम के देवताओं को त्रास एवं कष्ट देने बाला भयंकर सेनापति को आदेश दिया कि तुम इस विशाल नगरी लंका की रक्षा करो। मैं **खुद** दो सौ करोड़ सेनाओं के साथ **उत्तर दिशा** की ओर जा रहा हूँ। इस प्रकार रावण सेनाओं का विभाजन कर युद्ध के लिए तैयार हो गये। इस दोनों पक्षों के विशाल सैन्य-समूह अपने-अपने प्रतिनियोजित (निश्चित) स्थानों पर उपस्थित हो गये। इस रुप में युद्ध आरम्भ की प्रक्रिया पूरी हो गयी।

"इति व्यूह रचना पटल"

१३. ''अगंदन तूदुप् पडलम्'' (''अंगद दौत्य पटल'')

इस पटल में रामचन्द्र के द्वारा अन्तिम रूप में 'शान्ति-दूत' बनाकर अगंद को रावण के समीप भेजने का महत्वपूर्ण कथा का विवरण प्रमुख है।

रामचन्द्र के द्वारा **शान्ति दूत** के रूप में भेजे गये **अंगद** के साथ रावण का वार्तालाप सर्वथा अति उत्कृष्ट है। यद्यपि रावण अंगद का संम्बाद सभी रामकथा-काव्यों में है। लेकिन जिस तरह इस रामायण में गम्भीर और उत्तेजक सम्बाद है वैसा अन्य रामायण में नहीं देखा जा रहा है। इसलिए यह **'पटल' अपना विशिष्ट महत्व-रखता है।**

युद्ध के लिए एकत्र सुग्रीव की सेनायें उपस्थित हैं। रामचन्द्र भी स्वयं लंका की किला के समीप रावण की प्रतीक्षा में उत्तर दिशा के गोपुर पर तैयार हैं। वहाँ राम ने विभीषण से कहा। मेरे मन में विचार आया है कि अंतिम बार रावण के समीप एक दूत भेजकर सीता को लौटाने के लिए कहा जाय। यह 'राज्य-नीति' है। विभीषण ने कहा। यह सुन्दर विचार है। सुग्रीव ने कहा यह राजगणोचित कार्य है। वहाँ लक्ष्मण ने कहा मेरे कथन पर विचार करें कि जिस तरह रावण ने देवताओं का विनाश किया। ब्राह्मण उससे अपमानित हुए। जीव जन्तु विनष्ट हुए। तथा देवी **'सीता'** बन्दिनी की गयी, उसके साथ अब क्या बातें करनी हैं।

अतिविशेष–फिर लक्ष्मण ने अत्यन्त गम्भीर विचार प्रगट किया। यदि रावण 'देवी सीता को लौटा देता है तो आपके द्वारा विभीषण को दिये गये राज्य का क्या होगा ? आप ने जो दण्डकारण्य रहने बालों को वचन दिया उसका क्या होगा ? ये सभी बातें विचारने के योग्य हैं।

'राम' ने हँसकर कहा। हे आयुष्मान् लक्ष्मण, तुमने जो कहा है वह सभी तथ्य पूर्ण है। मैं कुछ भूला नहीं हूँ। अन्त में वही होगा जो तुम कहते हो। किन्तु वृहस्पति-शुक्र आदि प्रभृति नीति-शास्त्रों के विशारद विद्वान जिस रास्ते को दिखा गये हैं उसका अनुसरण उचित है। क्योंकि युद्ध में भुजवल–बाहु बल का महत्त्व रहने पर भी **'क्षमा'** गुण है। **विजय में यही राज-धर्म है।** इसलिए अन्तिम बार राजनीति के अनुसार एक दूत भेजना चाहिए यह अच्छा है।

राम ने कहा, यदि फिर हनुमान् को भेजा जाता है तो लंका में सभी जानेंगे कि राम के पास एक ही वीर है। इसलिए किसी दूसरे को भेजना चाहिए। तुरत 'सुग्रीव' बोले, अंगद को भेजा जाय। वह काम करके लौट जायगा ऐसा विचार कर अंगद को बुलाया। अंगद ने आकर कहा। लंका जाकर मुझसे क्या किया जायगा ? और क्या कहा जायगा। राम ने कहा वहाँ जाकर तुम रावण को विकल्प दोगे किं सीता को लौटा

दो अथवा युद्ध में अपने दश-मस्तकों को छिन्न-भिन्न करा लो। अंगद आज्ञा प्राप्त कर हर्ष और उल्लास के साथ लंका प्रस्थान कर गये।

अंगद के मन में हर्ष था कि मेरा भी स्थान **'हनुमान'** के समान है इस तरह आकाश मार्ग से तीव्रगति में जाते हुए लंका पहुँच गये। वहाँ युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए **'रावण'** को देखा। रावण को देखकर और उसके विशाल सैन्य बल को देखकर अंगद मन में सोचता है कि एक समय मेरे पिता ने युद्ध में रावण के ऊपर प्रहार किया था फिर उसका पुत्र ही रावण के समीप आया। यह चमत्कारपूर्ण है। कुछ दिंन पहले ही मेरे चाचा सुग्रीव ने रावण के किरीट मुकुट आदि लेकर राम को दिया था। यह सब सोचते हुए अंगद रावण के पास पहुँच गया। रावण ने पूछा, तुम कौन हो ? कहाँ हो अपने प्राण देने के लिए आये हो ? अंगद ने हंसकर कहा। मैं संसार के कल्याण करने वाले पृथ्वी पर अवतरित वेदों से बन्दनीय सीता पति **'राम'** का दूत हूँ ; और **'बालि' का पुत्र अंगद** नाम का वानर सेनापति हूँ।

यह सुनकर रावण हँसकर बोला, क्या राम हरि, हर या ब्रह्मा है। नहीं, वह तो वानर सेनाओं को इकट्ठा कर जिस किसी भी तरह समुद्र में पुल बनाकर यहाँ आया। तुम्हारे पिता 'बालि' मेरे मित्र थे। इसके साक्षी 'धर्म' हैं। यह कथा आगे कही जायेगी। तुम उसी राम के दूत का काम कर रहें हो **जो तुम्हारे पिता को छिपकर मारने वाले हैं** ? तब तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो गयी है। आज तुम मुझे पुत्र रूप में मिले हो। सीता' भी मिली है। अब कुछ भी असाध्य नहीं है। तुम्हारा राज फिर तुम्हें दूँगा। तुम यहाँ ठहरो। चिर काल तक यहाँ शासन करो। देवगण तुम्हारी स्तुति करेंगे। मैं तुम्हारे मस्तक पर मुकुट दूँगा।

अति उत्कृष्ट संवाद–यह सुनकर अंगद हंस कर बोला-क्या इस तरह मधुर वचनों से आप मुझे वश में लाने का प्रयास कर रहें हैं। क्या यही दूत का कर्त्तव्य है ? और यही शासन की पद्धति है ? इस तरह तुम मुझे शासन का अधिकार देते हो और मैं स्वीकार करता हूँ। तो यह वैसा ही हुआ **जैसा 'कुत्ता' देता है। ''सिंह'' उसे ग्रहण करता है। ऐसे कठोर वचन किसी भी राम काव्य में अंगद द्वारा रावण को नहीं कहा गया है।**

ह्वास-वीररस का मिश्रण

यह सुनकर रावण तुरत बोला क्या तुच्छ वानर के लिए मैं शस्त्र ग्रहण करूँ ? तब अंगद ने कहा। राम ने अब भी-इस समय भी तुम्हारे ऊपर से दया को नहीं छोड़ा है। आप कृपया भगवती **'सीता'** को छोड़ दें या युद्ध में अपने प्राणों को छोड़ें। जिस दिन तुम्हारी दादी **'ताड़का'** राम से मारी गयी और गिद्धों ने उसके माँस खाये तथा

तुम्हारे मामा **'सुबाहु'** राम के द्वारा मारे गये एवं लक्ष्मण के द्वारा तुम्हारी **बहन की नाक काट ली गयी** और स्तनों को खण्डित कर दिया गया, उस दिन आप का पौरुष-बल कहाँ था।

जब हनुमान् लंका आकर राक्षसों को मारकर, **'अक्षय-कुमार'** को मारकर और सोने की लंका को जला रहे थे तब तुम्हारी वीरता कहाँ थी ? जिस रामचन्द्र की बन्दना सभी करते हैं। जिस राम ने तुम्हारे भाई **'विभीषण'** को युद्ध से पहले ही लंका का राज्य दे दिया उस राम की **सुन्दर केश वाली पत्नी 'सीता'** को वापस कर आप निश्चित हो जायें। आयें मेरे साथ।

यह सुनकर रावण ने चीत्कार किया की इस वानर को मारो। रावण के दूतों ने अंगद को चारों ओर से घेर लिया। अंगद सहसा उठकर उन राक्षसों को रावण के गोपुर द्वार के समीप फेंक दिया। तथा राम के पास आकर निवेदन किया कि वह रावण अपने हठ को नहीं छोड़ सकता है यही मेरे वार्त्तालाप का सारांश है।

विशेष–यहाँ इस रामायण में रावण के सामने अंगद के पैर रोपने की कथा नहीं है। हाँ ऐसी उत्तेजना पूर्ण परस्पर वार्त्तालाप किसी दूसरे राम काव्य में नहीं है। उसका अति संक्षिप्त वर्णन यहाँ है।

''इति अंगद दौत्य पटल''

१४. ''**'मुदर पोरम्' पडलम्**'' (''**'प्रथम युद्ध' पटल**'')

इस पटल में दोनों पक्षों द्वारा युद्ध की तैयारी तथा युद्ध प्रारम्भ होने का विस्तृत वर्णन प्रमुख है।

पूर्वोक्त पटल में कहे गये क्रम में युद्ध के निश्चय हो जाने पर राम पक्ष के सेनापति **'नील'** ने घोषणा की। अवश्यंभावी युद्ध है। अतएव सभी वानर-सेना प्रस्थान करके पूर्वनिश्चित स्थान पर अपने-अपने ब्यूह की रचना करें। 'नील' ने यह भी कहा कि समुद्र बन्धन के समय जिस तरह पर्वत, वृक्ष आदि उखाड़े गये उससे भी तीन गुणा अधिक और वृक्षों को उखाड़कर तैयार रखें। और लंका की चारों ओर गम्भीर जलाशय रूपी जो रक्षक है। **(जलाशयों से घिरी हुई लंका सुरक्षित है)** उन्हें पहाड़ों और वृक्षों से ढ़क दें। इसी क्रम में राम ने कहा। वृक्षों से मार्ग को ढ़क कर आवागमन को रोक दें। और लंका की उच्च्व किला शिखर पर जाकर उसे अपने अधिकार में कर लें, जहाँ सूर्य भी नहीं जा सकता है।

वीर–भयानक रस–इस तरह अष्टम-सागर के समान सत्तर (७०) करोड़ सैनिक इस काम में लग गये। जिससे जल के समूह लंका में चले गये क्योंकि रावण की किला

के चारों ओर छोटे छोटे जल की नहरें थीं। उन्हें राम की सेनाओं ने ढ़ंक दिये और वे जल लंका में प्रवेश कर गये। इस तरह राम की सेनायें बहुत समृद्ध थीं।

इसके बाद रावण के सैनिक वहाँ पहुँच गये। शंख की ध्वनियाँ होने लगीं। असंख्य घोड़े, हाथी जोरों से चिग्घाड़ करते हुएं चले। जहाँ वानर की सेनायें अपने-अपने दाँतों, नखों, वृक्ष, एवं पर्वतों से युद्ध के लिए तैयार थे। वहीं रावण के सैनिक अनेक प्रकार के अस्त्र-शस्त्र से युक्त होकर उपस्थित थे। जिनसे वानर सेनाओं के द्वारा फेंके गयें पर्वत चूर-चूर हो गये। और समूह खण्डित हो गये। वानरों के द्वारा फेंके गये पत्थरों के खण्डों से राक्षसों के मस्तक चूर-चूर हो गये और राक्षसों के वाणों से वानरों के शरीर में व्रण **(घाव)** हो गये।

इस तरह दोनों सेनाओं के बीच भयंकर तुमुल-युद्ध हुए। जिसमें दोनों पक्षों के असंख्य सैनिक हताहत हुए, मरे और घायल हुए। इसी बीच इस भयानक युद्ध में वानरों के सैनिक क्षीण होते गये, घटते गये। राक्षस के सैनिक ''धक्का-युरूड़'' नाम के बाजे गूँजती हुई 'संका' नाम का वाद्य तथा प्रशंसा योग्य ''काहल'' नाम के वाद्य और **''आडुलि''** नाम के **छोटे डमरू** एवम् अन्य **विविध-वाद्यों** के भयंकर शब्द करने लगे। (ये इन वाद्यों के ऊपर्युक्त **'तमिल भाषा' के नाम हैं।**) इस तरह रावण की सेनायें सुग्रीव के पास पहुँच गयीं।

अपने पक्ष के घटते हुए बल को (सैनिक को) देखकर सुग्रीव ने एक विशाल साल वृक्ष को उखाड़कर राक्षसों के ऊपर फेंका, जिससे हजारों राक्षस जमीन पर लोटने लगें और खून की नदी बहने लगी। इस तरह सुग्रीव और राक्षसों के बीच भयंकर युद्ध हुए इस युद्ध में (क) रक्त की धारा बही, (ख) वाणों की वर्षा हुई तथा असंख्य वानरगण एवं अगणित राक्षस मारे गये (घ) रक्त पिघलने लगें।

विशेष–इस पटल के एक हजार पाँचवें १००५ पद्य में **''पाड्लपट्ट पलकड् मशियिन''** पद्ध शब्द के उक्त चार अर्थ होते हैं जिसका विवरण (क), (ख), (ग), (घ) में दिया गया है।

भयानक-वीर रस वर्णन–अब राक्षस के सैनिक अपने बल को क्षीण देख रहे थे। इस बीच **''बज्रमुस्टि''** नाम के राक्षस ने जल पोत–जहाज के समान वेग से समुद्र मार्ग के द्वारा सेनाओं को लाकर तेज वाणों से वानर सैनिकों को छिन्न-भिन्न कर दिया। जिससे सुग्रीव चिन्तित हुए। तब सुग्रीव उसके रथ के ऊपर कूद कर उस **'वज्र मुस्टि'** राक्षस के धनुष वाणों को खण्डित कर दिया। राक्षस गण विष तुल्य त्रिशूल, करवाल, फरसा, तोमर, चक्र, भिन्दिपाल और वाण आदि नाम के अस्त्र-शस्त्रों को लेकर युद्ध संचालन करने लगे। जिसमें कितने वानरों की पूछें कट गयीं। पैर टूट गये। तब वानर सेनाओं

ने यमराज के समान राक्षस सेनाओं के ऊपर प्रहार किया। जिससे राक्षसों के घोड़े, हाथी नष्ट हो गये। इसके बाद अग्निपुत्र महावलशाली **'नील'** ने एक बहुत बड़े शाल वृक्ष को उखाड़कर राक्षसों के ऊपर फेंकें, जिससे कितने राक्षस नष्ट हो गये।

"कुम्भानु" नाम के राक्षस को **'हिडिम्ब'** नाम के ऋक्षों के सेनापति ने मार दिया। 'प्रहस्त' नामका राक्षस सेनापति ने 'कुम्भानु' को निहत देखकर **'सुमालि'** नामक सेनापति के पुत्र 'प्रहस्त' ने चिन्तित' होकर असंख्य-बाणों को वानर सेनाओं के ऊपर फेंका। वानर के सेनापति नील ने उनको खंण्डित कर दिया और प्रहस्त को दोनों हाथों से पकड़कर आकाश में उछालकर पृथ्वी पर गिरा दिया। इस तरह **'नील'** के प्रहार से **'प्रहस्त'** मर गया।

यहाँ कवि कहते हैं कि इस युद्ध का वर्णन असम्भव है। जहाँ 'प्रहस्त' मारा गया वहीं दक्षिण दिशा में **'अंगद'** द्वारा **''सुपार्श्व''** मारा गया। पश्चिम दरबाजे पर हनुमान् के द्वारा **'दुर्मुख'** मारा गया। इस तरह दोनों सेनाओं के बीच युद्ध प्रारम्भ हुआ।

इसके बाद दूतगण आकर सभी समाचार रावण से बोले और उन्होंने राक्षस सेनाओं की विनाश लीला का भी वर्णन किया। जहाँ प्रहस्त, सुपार्श्व, वज्रमुष्टि, और दुर्मुख प्रभृति भी मारे गये। यह सब सुनकर कुपित होते हुए **'रावण'** एक शक्तिशाली रथ पर बैठकर युद्ध के लिए चल दिये। जहाँ हजारों घोड़े लगे हुए थे, पीछे से बहुत अधिक सैनिक चल रहे थे। रावण ने **शिव की स्तुति और प्रार्थना की।** अपनी छाती पर विशाल कवच को पहनकर युद्ध सूचक **''तुम्बै''** नाम के हार को धारण कर लिया इस तरह **त्रिभुवन विजयी-रावण'** समर-भूमि में पहुँच गया। सेना के साथ युद्ध भूमि में **रावण** आ गया। यह सुनकर **'राम'** ने भी युद्ध के लिए बाण आदि एकत्र किये। राम के हाथ में धर्म के लिए हस्तत्राण (युद्ध के समय हाथ में पहने जाने वाले हस्त रक्षक दस्ताना) ऐसा दीख रहा था जैसे कल्प वृक्ष की शाखा में काले सर्प सटे हुए हों। राम ने **'अगस्त्य'** फूल की माला, **तुलसी की माला ''तुम्बे''** माला को धारण किया। **अगस्त्य का फूल चोल-वंशीय राजा के चिह्न हैं।**

विशेष–कम्बन् कवि **चोल वंश को भी सूर्य वंश ही मानते हैं।** तुलसी वृक्ष तो विष्णु के प्रिय हैं तथा **''तुम्बै फूल''** तो युद्ध के सूचक हैं। जिस **''तुम्बै''** फूल की माला को युद्ध का सूचक माना जाता है। जिसे राम-रावण दोनों ने धारण किया था। तात्पर्य यह कि दोनों युद्ध के लिए तैयार थे।

इस तरह लक्ष्मण सहित विशाल सैन्य से युक्त राम समर क्षेत्र में संहारकारी **'रुद्र'** के रूप में प्रगट हुए। युद्ध के प्रारम्भ में दोनों पक्षों के वीरों के हाथ पैर कट गये। पेट को चीरकर उससे माँस मज्जा निकल गये। रावण ने अपने धनुष के टंकार से

युद्ध भूमि को और आकाश को भर दिया। ऐसी स्थिति में विभीषण सुग्रीव और लक्ष्मण मिलकर आगे की कार्य प्रणाली की चिन्ता करने लगे। वे सोचते हैं किं कैलाश को उखाड़ने वाला रावण इस पृथ्वी को उखाड़ने में सर्वथा समर्थ है। और राम प्रलय करने में समर्थ हैं। इसलिए यहाँ क्या होगा यह कोई भी निश्चय नहीं कर सकता है।

इसी बीच सुग्रीव ने बज्र के समान एक पर्वत के खण्ड उखाड़कर रावण के ऊपर में फेंका। रावण ने उस पर्वत खण्ड को विखण्डित कर दिया और सुग्रीव के ऊपर वाणों को फेंका। जिससे आहत होकर सुग्रीव शिथिल हो गये, धीमे पड़ गये। इसी बीच सहसा हनुमान् आकर रावण से बोलॿमेरे साथ युद्ध करों। यह कहकर एक पर्वत उखाड़ कर रावण के ऊपर फेंका। रावण ने उसे भी विखंडित कर दिया। हनुमान् ने फिर एक पहाड़ के टुकड़े को फेंका जिससे रावण के हाथ के **वलमकंगन** गिर गये। तब रावण ने एक तेज वाण हनुमान् के ऊपर फेंका। वह वाण हनुमान् की छाती में घुस गया। तब रावण और क्रुद्ध होकर हनुमान् को वाण से बेधने लगा। हनुमान् मूर्च्छित की तरह हो गये।

रावण व्यंग-वचन से बोला, वानर का बध मेरे लिए अपयश का कारण हो सकता है इसलिए इस वानर को छोड़ रहा हूँ। इस प्रकार वानरों को हताहत देखकर लक्ष्मण युद्ध क्षेत्र में आकर वाणों से राक्षसों को डराने लगे। राक्षस भी लक्ष्मण के ऊपर वाण फेंकने लगे जिन बाणों को लक्ष्मण ने विखण्डित कर दिया। कितने सैनिकों के मस्तक काट दिये। पैर तोड़ दिये। दाँत तोड़ दिये और छातियों को चूर चूर कर दिये। हाथी घेड़े और सुसज्जित रथों के लक्ष्मण ने गिरा दिये। लक्ष्मण की तैजी देखकर राक्षस चकित हो गये।

इसके बाद लक्ष्मण ने रावण को ललकारा और कहा कि अब तुम्हारा जीवन कठिन है। ऐसा कहकर लक्ष्मण ने रावण के ऊपर वाणों को फेंका। रावण ने अपने तेज वाणों से उन्हें विखण्डित कर दिया। इसी बीच में हनुमान् की मूर्छा छूट गयी। सहसा उठकर वे गरजे कि रावण तुम्हारा काल उपस्थित है और तुम्हारी मृत्यु आ गयी यह समझो।

विशेष–तमिल क्षेत्र में हनुमान् को 'लघु चरण' कहते हैं। तथा गरुड़ के **'गुरु श्री चरण''** कहते हैं।

वे **लघु चरण** श्री हनुमान् युद्ध के लिए उपस्थित होकर कहते हैं कि इस समय तुम्हारे भुजबल और साहस का नाश करके तुम्हारे प्राणों को ले लूँगा। हे रावण गम्भीर पुरूषार्थ के साथ तुम यहाँ आये हो। तुम्हारे शस्त्र चलाने का सामर्थ्य सातों लोकों के नाश की शक्ति यत्नशीलता और अद्वितीय साहस एवं भुजबल को एक ही प्रहार में तुम्हारे यश के साथ चूर कर दूँगा।

यह सुनकर रावण बोला। हे महा महिमावान् **हनुमान्**, तुमको छोड़कर कौन मैरे सामने आ सकता है ? तुम तो अकेले ही आये हो। दूसरा कोई भी तुम्हारे समान वीर राम के पक्ष में नहीं है। मैं वीस हाथ वाला त्रिभुवन विजयी रावण हूँ। **जिसके सैनिकों को वालू के कणों की तरह कोई गिन नहीं सकता है।** उस रावण के सामने आकर युद्ध के लिए तुम मुझको ललकार रहे हो ? क्यों देर कर रहे हो ? शीघ्र मेरे ऊपर मुक्कों से प्रहार करो।

यह सुनकर हनुमान् रावण की अद्भुत वीरता से आश्चर्यित और चिन्तित हुए। इस तरह सोचते हुए तुरत ही रावण की छाती पर मुक्के से प्रहार किया। जिस प्रहार से रावण के हार, कवच आदि टूट गये। कवच की सन्धियाँ (बटन) प्रकाशमय रत्न तथा नक्षत्र के सदृश इधर-उधर विलुप्त हो गये एवं विखर गये। रावण कुछ देर तक मूर्च्छित हो गया। यह देखकर आकाश में विचरण करने वाले रेवतागण आनन्द मग्न हो गये और वानर गण खुशी से नाचने लगे।

रावण पुनः चेतना प्राप्तकर उठा जैसे कोई सिद्ध पुरुष दूसरे के शरीर में प्रवेश कर फिर से लौट कर पहले के शरीर में प्रवेश करता है। उसी तरह रावण चेतना प्राप्तकर फिर साँस लेने लगा। वह हनुमान् से बोला कि तुम तो त्रिलोक विजयी और सातों लोकों को जीतने वाले रावण को मूर्च्छित कर दिया। यह मैं मानता हूँ। अब मैं तुम्हारी छाती पर एक मुक्का मारता हूँ। अगर इससे तुम नहीं मरोगे। तो तुम चिरंजीवी रहोगे। कोई भी तुम्हारा शत्रु नहीं होगा। यह सुनकर रावण के पास आकर पवन पुत्र बोले। मेरे प्रहार से यदि तुम जीवित ही हो तो तुम विजयी हो गये। लो, ये छाती तुम्हारे सामने है। इस को ताड़ित कर इसपर मुक्का मारकर मेरे ऋण से मुक्त हो जाओ। रावण ने हनुमान की छाती पर इस तरह प्रहार किया कि हनुमान् विचलित हो गये और मूर्च्छित होकर जमीन पर पहाड़ के समान गिर गये। यह देखकर देवता गण और वानर समूह विचलित हो गये। वे वानर विशाल पर्वत को उखाड़कर रावण के ऊपर फेंके। रावण ने उन पर्वतों को अपने वाणों से खण्डित कर दिया। युद्ध भूमि में खून की धारा बहने लगी। रावण के वाणों के आघात से **'नील'** विचलित हो गये और नीलगिर गये, **'गवय'** मृत-तुल्य हो गया। अंगद घायल हो गया। और एक ही बाण से जाम्बवान् निश्चल हो गये। हिल-डुल नहीं सके। यह देखकर सहसा लक्ष्मण आ गये।

लक्ष्मण ने अपने वाणों से असंख्य वीर राक्षसों को और रावण के दश हाथों से निकले वाणों को लण्डित कर दिया। रावण ने लक्ष्मण की प्रशंसा की और कहा कि मुझको, मेघनाद को और राम को छोड़कर तुम्हारे समान दूसरा कोई वीर नहीं है। यह कहकर रावण लक्ष्मण के ऊपर **'ब्रह्मास्त्र'** फेंका। जिससे लक्ष्मण समर भूमि में मूर्च्छित होकर गिर गये।

यह देखकर वानर सैनिक घवड़ा गये और देवता गण चिन्तित हो गये। लक्ष्मण 'ब्रह्मास्त्र' की शक्ति से न डरे, न मरे, लेकिन थक गये। रावण लक्ष्मण के समीप आकर अपने वीसों हाथों से स्वर्ण पर्वत, मेरु शिखर की तरह लक्ष्मण को उठाने का रावण ने प्रयास किया, किन्तु कैलाश पर्वत को उठाने में रावण के हाथ लक्ष्मण को नहीं उठा सके। बीच में ही हनुमान् आकर लक्ष्मण को लेकर (उठाकर) अपने शिविर में आ गये। जहाँ लक्ष्मण ठीक हो गये।

इस समाचार को हनुमान् ने राम के समीप पहुँचकर निवेदन किया। शीघ्र ही 'राम' वहाँ पहुँचे जहाँ रावण रथ पर चढ़कर युद्ध कर रहा था। वहाँ राम पैरों से ही चलकर युद्ध में लग गये। तब हनुमान् राम को अपने कन्धे पर बैठाकर युद्ध के लिए चले। ऐसा करने पर देवता गण **'मारुति'** की प्रशंसा करने लगे और आशीर्वाद दिये। राम ने रावण के ऊपर पहले सात वाण और पुनः पाँच वाण फेंके, जिन्हें रावण ने अपने पाँच वाणों से विखण्डित कर दिया और राम के ऊपर दश वाण फेंके। राम ने उन्हें खण्डित कर दिया। हनुमान् तो युद्ध क्षेत्र में राम को अपने कन्धें पर रखकर मन के वेग के समान शीघ्रता से इधर उधर घूम रहें थे। रावण के वाण राम के कन्धे में लगे। और राम के वाण से रावण का धनुष खण्डित हो गया। रावण का रत्न से बना हुआ मुकुट राम के वाण से समुद्र में गिर गया। रावण शस्त्र हीन हो चुका।

खाली हाथ मलिन मुख रावण वहाँ खड़ा था। यह देखकर रामचन्द्र ने सोचा और कहा कि तुम **'शस्त्र-हीन'** हो। इसलिए तुम अभी मारने के योग्य नहीं हो अब भी यदि जीने की इच्छा है तो अब भी **'सीता'** को लौटा दो अपने अनुज विभीषण को देव-तुल्य समझकर उसकी सेवा करो। अन्यथा तुम्हारे मस्तकों को शीघ्र मैं काट दूँगा। यदि मेरे वचन को नहीं मानने की इच्छा हो तो युद्ध करके ही मरो। **''युद्ध में मैं नहीं मारूँगा'' यह मनमोदक मत खाओ। आज लौट जाओ मेरे कथन पर विचार करो।** यदि युद्ध ही चाहते हो तो तुम को कल आना चाहिए। **कल आओ, आज शस्त्र रहित हो, चुपचाप घर लौट जाओ।**

''इति प्रथम युद्ध पटल''

ॐ

१५. कुम्बकरुणन् वदैप पडलम्

(''कुम्भकर्ण बधपटल)

इस विस्तृत पटल में कुम्भकर्ण के साथ युद्ध का वर्णन और कुम्भकर्ण बध का वर्णन अन्य महत्त्वपूर्ण वर्णनों के साथ प्रमुख है।

विशेष–इस पटल में कुम्भकर्ण की महानिद्रा का वर्णन जिस तरह है वैसा अन्य किसी रामायण में नहीं है। इसके साथ **रावण-कुम्भकर्ण सम्बाद तो अत्यन्त महत्वपूर्ण है।** यद्यपि रावण कुम्भकर्ण सम्बाद विभिन्न राम काव्यों में है ही। किन्तु कावि-'कम्बन' ने ऐसे सम्बाद प्रस्तुत किये हैं जैसे कुम्भकर्ण ने सीता हरण के प्रसंग रावण की भर्त्सना तथा राम की वीरता और ईश्वरता का वर्णन किया है वैसे वर्णन का विवरण और व्याख्यान अन्य किन्हीं भी रामायणों में नहीं देखे जा रहे हैं।

इसीलिए यह पटल तीन सौ पचपन **(३५५) पृष्ठ बाला अति विस्तृत** है। पीछे के चौदहों पटलों में पहले युद्ध का वर्णन है और रावण राम से पराजित होकर, **शस्त्र रहित** होकर संध्याकाल अपने सर झुकाये हुए लंका लौट गया। यही वर्णन प्रमुख रूप में है। इस पटल में कवि कहता है कि **महा पण्डित दश-मस्तक बीस हाथ बाला रावण आज खाली हाथ सर झुका कर** पैदल ही लंका में प्रवेश कर रहा है। जिसके हाथ में भगवान् शंकर द्वारा दिया हुआ **''चन्द्रहास'** था। यह देखकर अनुमान होता है कि 'सूर्यास्त' हो गया। रावण के आने के मार्ग में दोनों तरफ लम्बे **लम्बे केश बाली श्रृगांर सज्जित, अलौकिक नारियाँ हाथ जोड़े खड़ी थीं।** जिनके ऊपर बिना नजर डाले हुए ही रावण अपने अन्तः पुर में प्रवेश कर गया। **यह वही रावण हैं जिसने नवो ग्रहों को अपने कारागार में बन्दी कर चुका था, दशों दिक्पालों को सेबक के रुप में रख लिया था और इन्द्रपुरी की सभी अप्सराओं को अपने वश कर चुका था। उसी रावण ने उन सुन्दरियों के दोनों स्तनों पर नजर भी नहीं डाली।**

रावण ने एक स्वर्ण पीठमय सिंहासन पर बैठकर दूतों को बुलाया। तुरत सैकड़ों बलशाली दूत उपस्थित हो गये। जिनमें मानों गति-पवन वेग मरुत और महा मेघ सदृश महाबल-शाली सेनापति थे। जिन्हें शीघ्र ही विशाल सेनाओं के साथ प्रस्थान करने का आदेश दिया। इस बीच में ही रावण के नाना **'माल्यवान'** रावण की शय्या के समीप एक पीठ पर बैठ गया। माल्यवान ने पूछा। हे राजन् आप क्यों चिन्तित हैं ? क्या हुआ है ? कृपया कहिए। रावण ने कहा अपयश के साथ मुझे पराजय मिला है। रावण

ने पुनः कहा। लक्ष्मण का पराक्रम अद्‌भुत है। राम ने मेरे ऊपर वाणों को चलाकर मुझे पराजित और अपमानित किया है। राम के मुख पर क्रोध का कोई भी चिह्न मैंने नहीं देखा। राम के बाण मेरु पर्वत के भेदन करने में, पाताल तक पृथ्वी भेदन करने में और बाणों से आकाश को आच्छादित करने में समर्थ हैं। ऐसा वह महाबलशाली राम सब तरह से प्रशंसा के योग्य हैं। उदात्तभावना–**ऐसा बीर पहले मैंने नहीं देखा था। राम का वाण धनुष से निकलकर चतुभुर्ज ब्रह्मा के समान हो जाता है। जब वह वाण चलाता है तो हजार मुख बाले बिष्णु के समान हो जाता है। जब शत्रु के ऊपर जाता है तो प्रलयकारी रूद्र के समान दीख पड़ता है। इस तरह राम के बाण ब्रह्मा, विष्णु एवं महादेव के समान हैं।**

यह सुनकर 'माल्यवान' बोले मैंने तो पहले ही कहा था। इसी कारण तुम मुझ पर विगड़ गये। तुमने अपने छोटे भाई 'विभीषण' का भी उपदेश नहीं सुना। इस वार्त्तालाप में उपस्थित **महोदर** नामक राक्षस बोला, हे माल्यबान् ऐसा गौरवहीन लघु वचन क्यों बोलते हो ? यह संसार की रीति है कि कभी जीतने बाला हार जाता है और कभी हारने बाला जीत जाता है। यदि तत्काल महाराज का कोई पराजय हुआ है तो वह संपूर्ण युद्ध की कल्पना नहीं हो सकती। यदि **'सीता'** को छोड़ देंगे तो महाराज रावण का यशोवल क्षीण हो जायगा। यदि यश का क्षण होता है तो प्राणों से क्या प्रयोजन है। इसलिए चिन्ता छोड़कर आगे का कार्यक्रम बनाना चाहिए। यहाँ सबसे पहले अपने अनुज महाबलशाली **'कुम्भकर्ण'** की उपेक्षा क्यों की गयी। वे उपेक्षा के योग्य नहीं हैं। इसलिए शीघ्र ही कुम्भकर्ण को बुलाकर यथायोग्य काम करने की आज्ञा दी जाय।

रावण ने सोचा, यह कहना सर्वथा उपयुक्त है। दूतों को बुलाकर कुम्भकर्ण को जगाने का प्रयास करो। यह आज्ञा दी। कुम्भकर्ण की लम्बी साँसों से (खर्राटे से) दूत इधर-उधर गिर गये। वे चिन्तित हुए कि यह कैसे जगेगा। उन लोगों ने मिलकर कुम्भकर्ण के शरीर, छाती, गाल और हाथ-पैरों पर अनेक अस्त्र शस्त्रों से प्रहार किये, लेकिन उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा। तब वे लोग उसके शरीर पर घोड़े एवं हाथियों को दौड़ाया। उसका भी कुछ परिणाम नहीं हुआ। तब वे दूत रावण के समीप लौटकर सब कुछ निवेदन करने लगे और जगाने का उपाय पूछने लगे। रावण ने कहा मजबूत त्रिशूल से और फरसा से प्रहार करो। तब वह जागेगा। हजारो राक्षस फिर आकर वैसे ही करने लगे तब कुम्भकर्ण करबट बदलकर जग गया।

कुम्भकर्ण के जागने के बाद, क्यों मुझे जगायें हो ? क्या स्थिति है? क्या समाचार है ? इसी बीच कुम्भकर्ण के स्वभाव से परिचित उसके दक्ष अनुचर-नौकर

कुम्भकर्ण के सामने माँस मदिरा अनेकानेक व्यंजन युक्त भोज्य पदार्थों को रख दिया। तब कुम्भकर्ण सैकड़ों घड़ा मदिरा पी गया, और बहुत से पदार्थ खा गये। तब सामान्य स्थिति में आया। इसके बाद रावण के दूतों ने रावण की आज्ञा कही। तुरत ही उठकर कुम्भकर्ण रावण के समीप चलकर रावण के गगनचुम्बी–आकाश छूने बाले महल पहुँचे।

कुम्भकर्ण ने वहाँ आकर रावण को साष्टांग प्रणाम किया। रावण उठकर अपनी छाती से उसे लगाकर स्नेह प्रदर्शित किया। दोनों का मिलन परस्पर दो विशाल पर्वत की तरह दिखाई दिया। रावण ने कुम्भकर्ण को अपने पास बैठाया। कुम्भकर्ण ने कहा। यह युद्ध क्यों हुआ ? किसके कल्याण के लिए ये उपाय हो रहे हैं। रावण बोला। दो मनुष्य वानर सेनाओं के साथ लंका में प्रवेश करके व्याप्त हो गये हैं। तुम वहाँ जाकर उन्हें मारकर खा जाओ।

अति उत्कृष्ट अंश–यह सुनकर कुम्भकर्ण दुःख और आश्चार्य से बोला। क्या अनन्त पातिव्रत्यशालिनी **'सीता'** का कष्ट दूर नहीं हुआ ? क्या तुम्हारा विश्वविख्यात यश लुप्त नहीं हुआ ? क्या हमलोगों का विनाशकाल आ गया ? क्या 'सीता' के लिए ही युद्ध हो रहा है ? क्या तुमने पहले ही कहे गये मेरे वचन से सीता को नहीं छोड़ दिया ? धन्य है विधाता का विधान और उसकी प्रवलता। फिर कुम्भकर्ण बोला–विशाल भूमि को कोड़कर गढ़ा बना देना सरल है। किन्तु अजेय राम को जीतना और सीता का समालिंगन तुमसे सभव नहीं है। **'पौलस्त्य'** वशं के यश तुम्हारे हाथ से ही मुक्त हो जायेंगे ? इस कर्म से तुम 'इन्द्र' का राज्य लौटाने के लिए तैयार हो ? और अपने एवं कुल के नाश के लिए तैयार हो ? तुमने देवताओं को मुक्त कर दिया ? हे भाई धर्म नष्ट होने पर कौन तुम्हारी रक्षा करेगा ? हम लोग तो इस समय पाप में और ठगी में दक्ष हो गये। हे अग्रज, हे महा प्रताप शालिन्, कृपया तुरत सीता को छोड़ दीजिये। **'राम'** की शरण में जाइये, विभीषण को लौटाइये ? यही उद्धार का रास्ता है। दूसरा रास्ता एक और है, वह है हम सभी एक साथ सभी सेनाओं सहित चल दें। अलग-अलग भेजना या जाना उचित नहीं है। (यद्यपि होगा यही–अलग अलग जाना।)

कुम्भकर्ण के धर्म और नीतिपूर्ण वचन को सुनकर रावण बोला, हे मेरे अनुज कुम्भकर्ण, बहुत श्रम से तुमको जगाकर इसलिए नहीं बुलाया है ? अतीत तो **'अतीत'** ही है। अर्थात् **बात जो बीत गयी और उसकी चिन्ता करने से क्या लाभ है** ? चिन्ता करना तो कायर पुरुष का काम है। अभी तो उनके साथ युद्ध करना ही एकमात्र श्रेष्ठ मार्ग है। **अपमान और उपालम्भ-व्यंग से मलिन प्राणों का क्या प्रयोजन है ? नर और**

वानर के सामने आत्म-सर्मपण से प्राण त्याग ही अच्छा है, प्रिय है, एवं कल्याणकारी है। तुम उठो, युद्ध के लिए शस्त्रों को एकत्र करों और शीघ्र युद्ध के लिए प्रस्थान करो।

भाई की आज्ञा प्राप्त कर युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए, कुम्भकर्ण ने अन्तिम रूप में निवेदन किया। मैं युद्ध के लिए जा रहा हूँ। जीतकर या हारकर मेरा पुनः लौटना निश्चित नहीं है। यह तो विधि का विधान है। किन्तु पराजय के बाद भी आप के द्वारा आदर के साथ **'सीता'** राम को दे दी जाय यह तपस्या के समान काम होगा। मुझे अनुमान हो रहा है कि 'राम' के अनुज लक्ष्मण के बाणों के आघात से इन्द्र का शत्रु इन्द्र को जीतने बाला **'मेघनाद'** भी प्राणों को छोड़ देगा। तब आप अपनी इच्छा से जो मन में आवे करेंगे। हे भाई क्षमा करें और आज्ञा दें। ऐसा कहकर **महाबलशाली, महाज्ञानी, महांन् विवेकी 'कुम्भकर्ण' द्वार पर आ गया।**

विशाल सेनाओं के साथ कुम्भकर्ण समर भूमि में आ गया। उसके सैनिक तोमर, चक्र, शूल, बाण, परश्व, मुशल, हल, दण्ड, करबाल, एवं कोडग्ड (धनुष) प्रभृति विशेष अस्त्रों से सुसज्जित हैं। रामचन्द्र ने कुम्भकर्ण को आते देखकर विभीषण से पूछा। यह विशाल पर्वताकर कौन है ? विभीषण ने कहा यह रावण का अनुज और मेरे अग्रज महान् बलशाली यमराज के समान भयंकर शूल धारण करने बाले कुम्भकर्ण हैं। रावण के समान ही बलशाली हैं। लेकिन एक युग तक सोने बाला है। इनके पास एक **'शूल'** है। जिसे विषपान करने बाले **'रूद्र-शिव'** ने इनको दिया था। इनकी बात को जब रावण ने स्वीकार नहीं किया, तब मरण निश्चित है यह मानकर आप के साथ युद्ध करने के लिए आये हैं। यह सुनकर सूर्य पुत्र–सुग्रीव बोले। यदि आयें है तो हमलोगों के साथ 'सन्धि' करने के लिए आये है तो ठीक है। इनके साथ मिलकर ही सभी कामों को करेंगे।

उच्चतम भावना–राम ने पूछा कौन उसके पास जाकर बात करेगा ? विभीषण ने कहा मैं ही जाकर उनके मनोभावों को और विचारों को जानने जाऊँगा। ऐसा ही करें। यह राम ने कहा विभीषण कुम्भकर्ण के पास पहुँचकर वहाँ बैठ गया। कुम्भकर्ण स्नेह और वात्सलयपूर्ण भाव से आँसू बहाते हुए बोले। तुम हमलोगों में अकेले ही यहाँ आकर उद्धार पा गये। अब कौन काम है। तुम तो ज्ञानी है। आनन्द लाभ करो। क्यों यमराज के मुहँ में जाने बाले मेरे समीप में आये हो ? क्यों अमृत को छोड़कर विष पीओगे। मेरे कुल गौरव तो नष्ट हो ही चुके। केवल तुम्हारे द्वारा ही घटती हुई भी **'पुलस्त्य'** वशं की प्रतिष्ठा रक्षित हुई है। विभीषण के कहा। सर्व शक्तिमान सर्वेश्वर राम युद्ध के लिए उपस्थित हैं, उनका अनुज वीर लक्ष्मण भी विशाल वानरी सेनाओं के साथ तैयार हैं। परिणामतः राक्षस विनाश को प्राप्त करेंगे ही। इसलिए मेरे प्रति

दयालु राम आप के प्रति भी दयालुता दिखायेंगे। अगर आप भी उनके शरणागत हों। हे भाई दुष्कर्म करने बालों के साथ दुष्कर्म करना कभी अच्छा नहीं है। आप विवेकशाली हैं। राम के शरणागत होकर आप अपनी दीर्घ-निद्रा से भी मुक्त हो जायेंगे। आप चिरंजीवी होकर बहुत दिनो तक राज्य का भोग करेंगे यदि आप नीच कर्म में प्रवृत्त नहीं होंगे। यह मैं मानता हूँ।

यह सब सुनकर कुम्भकर्ण ने कहा। तुम्हारे लिए राम की शरण ही श्रेष्ठ है। मेरे लिए तो निकृष्टतम–नीचतापूर्ण मरण ही अच्छा और यश देने वाला है। यदि अविवेकी राजा सुमार्ग जाने के लिए तैयार नहीं है तो युद्ध में मरना ही सबसे पहले उसके लिए सरल है। हे मेरे अनुज, लंका की समाप्ति नित्य और शाश्वत मानकर भाई के शत्रु की शरण में आकर उनकी स्तुति करने से मरना श्रेष्ठ है।

मैं तो युद्ध में सुग्रीव, अगंद, हनुमान् आदि वानर कुलों के श्रेष्ठ को हरा कर राम लक्ष्मण के साथ युद्ध करके जय प्राप्त करूँगा। जो कोई भी मेरे सामने युद्ध में आयेगा उसको मैं ज़ीवित नहीं छोड़ूँगा। हे विभीषण, तुम जाओ यदि राम के शस्त्र से मेरा मरण होगा तो तुम 'वैदिक-रीति' से मेरे श्राद्ध कर्म को करोगे। और मुझे नरक से उद्धार करोगे। यही मेरा अनुरोध है। इस तरह कहकर कुम्भकर्ण ने फिर भी विभीषण को उठाकर अपनी छाती से लगा कर रोते हुए वापस कर दिया। विभीषण भी उसके पैरों पर गिरकर प्रणाम करके रोते हुए लौट गया। कुम्भकर्ण सोचता है कि मुझ वंचक को ठग-को छोड़कर प्रौढ़ विचार बाला विभीषण चला गया। वह तो धन्य हो गया और मैं पतित हो गया।

विभीषण ने राम के समीप आकर कहा। यद्यपि कुम्भकर्ण परम ज्ञानी और विवेकी है। लेकिन पापी और दुराचारी अपने अग्रज रावण को छोड़ने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए युद्ध अवश्य होगा। तब तक राक्षस की सेनाएँ चारों तरफ घिर गयीं। उन्हें देखकर वानरों ने पत्थलों के खण्डों को उनके ऊपर फेंका जिससे कितने राक्षस आहत–घायल हो गये। राक्षसों के बाणों के बीच में भयंकर युद्ध को देखकर सेनापति 'नील' बीच में कूद गया और हाथ में एक ऊँचे पर्वत को लेकर घुमाते हुए फेंक दिया। कुम्भकर्ण ने उस टुकड़े-टुकड़े कर दिया तब कुम्भकर्ण और नील के बीच में हाथों से युद्ध होने लगा।

इस बीच में ही अगंद ने समुद्र के भीतर से एक बड़े पर्वत को उठाकर कुम्भकर्ण के ऊपर फेंका। कुम्भकर्ण ने उसे विफल कर दिया फिर कुम्भकर्ण एक बज्र–दण्ड को लेकर फेंका जिसको हाथ से पकड़कर अगंद ने कुम्भकर्ण के ऊपर ही फेंक दिया। इस तरह अगंद और कुम्भकर्ण के बीच में भयंकर युद्ध दोनों के बीच में व्यंग वार्त्तालाप

भी हुए। जहाँ अगंद ने कहा कि मेरे पिता वाली ने तुम्हारे भाई रावण को अपनी पूँछ में लेकर घुमाया था। वही कुम्भकर्ण ने कहा कि छल से पिता को मारने वाले 'राम' के समीप शरण में जाने से क्या तुम्हें लज्जा नहीं होती है। कुम्भकर्ण और अगंद के बीच जब युद्ध हो रहा था, तभी पवन पुत्र हनुमान् गर्व के साथ बोले। इस पर्वत खण्ड को रोको, कुम्भकर्ण ने तुरत उस पर्वत खण्ड को टुकड़े टुकड़े कर चूर्ण विचूर्ण कर दिया। इधर जब कुम्भकर्ण संग्राम में लीन था तभी वानर सैनिक ने उसके ऊपर प्रहार किया। लेकिन लगातार सभी आक्रमणों को कुम्भकर्ण ने तुरत विफल कर दिया।

उत्कृष्ट–इसके बाद **युद्ध केशरी लक्ष्मण,** आकर युद्ध करने लगे। जब लक्ष्मण के धनुष का टंकार हुआ तभी राक्षसों की पत्नियों ने अपने सौभाग्य चिह्नों को उत्तार लिया–फेंक दिया। (यहाँ कवि की चतुरता है कि लक्ष्मण के धनुष ढंकार को सुनते ही राक्षस की पत्नियों ने समझा कि हमारा सौभाग्य समाप्त हो गया। क्योंकि हमारे पति लक्ष्मण के द्वारा अवश्य मारे जायेंगे।) लक्ष्मण के और कुम्भकर्ण के बीच में भयंकर संग्राम हुआ जिसमें अंसख्य घोड़े, हाथी, रथ और सैन्य हताहत हुए–मारे गये–और घायल हुए जिनके रक्त प्रवाह से समर भूमि पंकिल हो गयी। खून की धार बहने लगी। वहाँ किसी के हाथ, किसी के पैर, और किसी के सर कटे हुए इधर-उधर विखरे हुए थे।

'पुलस्त्य' के वंशज कुम्भकर्ण युद्ध में लक्ष्मण की अनुपम वीरता और राक्षसों का नाश देखकर स्वयं रथ पर आकर वहाँ उसने भयंकर युद्ध प्रारम्भ कर दिया। कुम्भकर्ण रथ पर था और लक्ष्मण समर भूमि में पैदल ही चलते हुए युद्ध कर रहे थे। इस बीच **'हनुमान'** वहाँ पहुँचकर लक्ष्मण को अपने कन्धे पर रखकर युद्ध कराने के लिए तत्पर हुए। तब कुम्भकर्ण ने कहा तुम राम के अनुज हो, मैं रावण का अनुज हूँ। इसिलए हम दोनों की लड़ाई देखने के लिए देव-गण आकाश में आ गये हैं। हे लक्ष्मण जिस हाथ से तुमने मेरी बहन की नाक काट ली थी, वह हाथ मुझसे काटा जा रहा है। ऐसा कहकर कुम्भकर्ण ने अनेक अस्त्र चलाये, जिन्हें लक्ष्मण ने खण्डित कर दिये और कुम्भकर्ण के रथ को भी खण्डित कर दिया। रथ, विहीन होकर कुम्भकर्ण जमीन पर आ गया तब लक्ष्मण भी हनुमान् के कन्धों से उत्तर कर समर-भूमि में आकर युद्ध करने लगे।

इस बीच सूर्य-पत्र 'सुग्रीव' वहाँ आकर एक विशाल पर्वत कुम्भकर्ण के ऊपर फेंका। कुम्भकर्ण ने भी उससे अधिक पर्वत को उठाकर सुग्रीव के ऊपर फेंका। यह देखकर सहसा 'हनुमान्' ने वहाँ पहुँचकर उस पर्वत को तोड़ दिया और बहुत दूर फेंक दिया। इस तरह हनुमान् का गर्जन वैसा ही हुआ जैसे **मिथिला में सीता स्वयंवर के समय**

धनुर्भंग होने से प्रलयकारी ध्वनि हुई थी। तब कुम्भकर्ण ने सुग्रीव के हाथों को पकड़ा और सुग्रीव ने कुम्भकर्ण के हाथों को पकड़ा। उन दोनों के बीच में भयंकर युद्ध हुआ। (कुश्ती की तरह) इस तरह सुग्रीव को बांधकर उसे लंका ले जाने चला। वानरों ने तुरत आकर रामचन्द्र को इस घटना का निवेदन किया। तुरत रामचन्द्र धनुष बाण लेकर लंका के द्वार पर पहुँच गये।

रामचन्द्र को देखकर कुम्भकर्ण हँसकर बोला। तुम मुझे निबंल बालि और कबन्ध समझकर सुग्रीव को छुड़ाने आये हो ? देखो मेरे बल का प्रभाव राम ने कहा जिस कन्धे पर सुग्रीव को उठाकर ले जा रहे हो उस कन्धे को यदि मैं नहीं काटूँगा तो मैं पुनः धनुष धारण नहीं करुँगा। ऐसा कहकर राम ने अपने वाणों से **कुम्भकर्ण को मूर्च्छित किया। कुम्भकर्ण को मूर्च्छित देखकर सुग्रीव ने कुम्भकर्ण के नाक कान चीर दिये।**

इस तरह रामचन्द्र ने सुग्रीव की रक्षा की। फिर वाणों से कुम्भकर्ण के मस्तक को छेद दिया। जिससे उसके मुख से खून की धार वह चली। फिर चेतना प्राप्त कर बाणों से छिन्न-भिन्न कुम्भकर्ण युद्ध के लिए तैयार हो गया। तब **'राम'** ने कहा हे कुम्भकर्ण तुम्हारी आयु समाप्त हो गयी है। तुम मृत्यु के मुख में जा रहे हो। यदि मन में कुछ हो तो बोलो। कुम्भकर्ण बोला। मैं **'शूर्पणख''** नहीं हूँ। जो कान, नाक कटने पर भी जीवित है। मैं जीना नहीं चाहता हूँ। लेकिन मेरी इच्छा यही है कि समर-भूमि में तुम दोनों भाइयों को मारकर अपने अग्रज रावण को आनन्द दूँ। इस तरह कहकर फिर कुम्भकर्ण ने शिव द्वारा प्रदत **'त्रिशूल'** रामचन्द्र के ऊपर फेंका। रामचन्द्र ने उस **'त्रिशूल को खण्डित कर दिया।** लेकिन कुम्भकर्ण के अभेद्य कवच को खण्डित नहीं कर सके। तब कुम्भकर्ण के हाथों को और पैरों को काटकर उन्हें समुद्र में फेंक दिया।

ऐसा होने पर कुम्भकर्ण ने कहा। हे रामचन्द्र अन्त में मेरी यही याचना है कि **मेरे नीतिज्ञ अनुज शरणागत विभीषण की रक्षा करेंगे।** मेरी गर्दन सहित मस्तक को काटकर काले सागर में फेंक दें। क्योंकि तुम्हारे पूर्वज महाराज शिवि ने अपने शरीर के माँस खण्डों को देकर एक कबूतर की रक्षा की थी।

यह सुनकर रामचन्द्र ने वैसा ही किया जैसी कुम्भकर्ण ने प्रार्थना की थी। यह सब देखकर वेदज्ञ ब्राह्मण ऋषि गण और देव गण भय से मुक्त हो गये। अप्सरायें मधुर गान से नाचने लगीं। इधर राक्षस गण कुम्भकर्ण के विनाश की सूचना देने के लिए रावण के पास दौड़ते हुए भागे। **इस तरह अति विस्तृत कुम्भकर्ण बध पटल को संक्षेप करते हुए भी विवरण देकर कुछ विस्तृत रूप से प्रमुख घटनाओं का वर्णन किया गया है। जो अनिवार्य था।**

इति कुम्भकर्ण बध पटल

१६ "मयाशनहप पडलम्" "माया जनक पटल"

इस पटल में रावण के एक माया जाल का वर्णन प्रमुख है।

ऊपर के विस्तृत पटल में कुम्भकर्ण के उत्कृष्ट-चरित्र, उसके साथ "**तुमुल**" युद्ध तथा कुम्भकर्ण के बध का वर्णन किया गया जिसे रावण ने अच्छी तरह जाना और सुना। इस भयंकर दारुण और करुणा पूर्ण घटना के बाद भी '**सीता**' के प्रति आकृष्ट रावण ने एक नीचता पूर्ण कठोर मार्ग को अपना कर एक '**माया-जाल**' रचा।

रावण ने '**महोदर**' नाम के राक्षस से सीता की प्राप्ति का उपाय पूछा। महोदर ने एक सफल उपाय बताया। उसने कहा मारुत नाम के मेरे एक सहयोगी–मायावी राक्षस सब तरह से चतुर और कुशल है। वह अपनी "**उबकीप**" माया से **महाराज 'जनक' का** रूप धारण कर सीता के समीप पहुँचकर उन्हें आदेश देंगे कि 'तुम रावण को स्वीकार कर लो'! जनक के आदेश को प्राप्त कर निश्चित रूप से '**सीता**' आप को स्वीकार कर लेगी। ऐसा यह सुनकर रावण ने 'महोदर' को अपनी छाती से लगाकर ऐसा ही करने का आदेश दिया। '**महोदर**' वहाँ से चला। इस बीच रावण सीता को दुःखी करने के लिए उनकी ओर अपनी नजर लगाने के लिए चला। रावण अप्सराओं के साथ अशोक वाटिका पहुँचा जहाँ सीता थी। सभी राजचिह्नों से युक्त होकर रावण बोला। हे सुन्दरी ? ये ऋतुयें, ये फूल, और ये कोयल एवं भौंरों के गुञ्जन–मधुर कूजन मुझे व्यथित कर रहे हैं। मैं काम बाण से पीड़ित होकर तुम्हारी शरण में आया हूँ। यद्यपि मैं जानता हूँ कि '**विष' के समान** तुमको '**अमृत' मानकर** यहाँ लाया हूँ। मेरा मन प्रतिक्षण क्षीण हो रहा है। तो भी तुमको भूलकर प्राण त्याग कर दूँ, यह नहीं हो रहा है। क्योंकि मैं मरण से डरता हूँ। इसलिए हे सीते, मैं तुम्हारा अक्षय–निधि-कभी नहीं नाश होने बाला ऐश्वर्य हूँ। **(इस पद्य में रावण ने अपनी आन्तरिक सद्भावना और अपने बाहरी दुर्गुणों का स्पष्ट संकेत किया है।)**

पुनः रावण ने कहा, यहाँ की सभी अप्सरायें, सभी नारियाँ तुम्हारे रूप में एकत्र होकर प्रवेश कर गयी हैं। सभी नाम तुम्हारे नाम में समावेश कर गये हैं। मेरी बीसों आँखें तुमको ही देखती हैं। कामदेव के '**पाँच वाण**' मेरे लिए असंख्य वाण हो गये हैं। सभी देवता, सभी दानव, सभी वीर रावण से डरते हैं। विरह की **ये दश दशाये,** अभिलाष, चिन्ता, स्मृति, उद्वेग, गुण, प्रलाप, उन्माद, व्याधि, जड़ता, और मरण मेरे लिए असंख्य सहस्र बनकर इकट्ठे हो गये हैं। इस तरह कहकर रावण अपने दसों मस्तकों से सीता को प्रणाम करने के लिए तैयार हो गया। तब **सीता** एक '**तृण**' को लेकर उसे आगे रखकर रावण से कहने लगी।

विशेष–यहाँ वाल्मीकि रामायण के सुन्दरकाण्ड में भी लिखा हुआ है '**तृण मन्तरतः**

कृत्वा तमुवाच पतिव्रता' और सोलहवीं शताब्दी में रचित ''रामचरितमानस'' में भी तुलसी दास ने लिखा। ''**तृण धरि ओट कहत वैदेही**''।

इस तरह '**तृण**' को आगे रखकर कहना पूर्व और पर की शास्त्रीय परम्परा के अनुसार है। सीता ने कहा हे रावण, तुम्हारी यह काम-वासना सर्वथा विपरीत और विनाशकारी है। तुम्हारे इतने बन्धु-बान्धव, पुत्र आदि मारे गये किन्तु तुम्हें ज्ञान नहीं हुआ। यदि तुम इतने बड़े विजयी हो तो पहले '**राम**' के साथ युद्ध करके उन्हें पराजित करो। मैं तो केवल राम-दर्शन की आशा से उनसे रहित होकर भी जीवित हूँ। यह सुनकर रावण परिहास के स्वर में बोला ठीक है। राम बध के बाद ही तुम मुझे स्वीकार करोगी।

इसके बाद ''**महोदर**'' द्वारा प्रेरित ''**मरुत**'' नाम का राक्षस माया-रूपी '**जनक**' का रूप धारण कर सीता के पास आया। वे माया रूपी जनक ने वहाँ आकर सीता से कहा। ''तुम रावण को स्वीकार कर लो।'' यह सुनकर और देखकर सीता स्तब्ध हो गयी। वह कुछ नहीं समझ सकी कि यह क्या घटना है। सीता की स्थिति विचित्र हो गयी। सीता बोली। हे पिता, नित्य कर्म के अनुष्ठान और तप में लगे हुए आप यहाँ क्यों और कैसे आये ? आप तो इससे पहले यहाँ कभी नहीं आये थे।

मैं भी अपनी मातृ-भूमि '**जनकपुर**' नहीं गयी हूँ। इस समय मुझ बन्दिनी को देखने के लिए क्यों आये हैं। यह मैं नहीं समझ रही हूँ। इस तरह सीता ने निश्चय किया कि रावण ने कसी तरह जनक को भी छल से हरण करके ले आया है। इसके बाद भरत और शत्रुध्रन को ले आयेगा। समझ में नहीं आता क्या होने वाला है ? इसी बीच राक्षस गण बोले। हे हंस गामिनी सीते, तुमको हमलोगों ने बहुत कष्ट दिया। इस समय लंका का राज्य स्वीकार कर हम लोगों को क्षमा करो। यदि तुम्हारी स्वीकृति हो तो संसार के निर्माण करने बाले पितामह 'ब्रह्मा' **स्वयं आकर तुमसे निवेदन करें।**

इसी बीच किसी ने आकर रावण के कान के पास जाकर कहा कि तुम्हारा भाई '**कुम्भकर्ण' राम के द्वारा मारा गया**। यह सुनकर रावण बहुत शोकित होकर विलाप करने लगा। जो भाई कभी रावण से अलग नहीं हुआ। रावण सोचता है कि जिस कुम्भकर्ण का शरीर शिव के त्रिशूल, विष्णु के चक्र, और इन्द्र के बज्र से अभेद्य था। वह शरीर राम के द्वारा छिन्न-भिन्न कर दिया गया। इस पूर्व घटना को सोचकर रावण ने चीत्कार किया। इन कार्यों से रावण का यह शब्द सार्थक हुआ क्योंकि ''**रावयति पीडयति भीषयते जनान् यः स; रावणः**'' अर्थात् जो लोगों को पीड़ा दे, डरावे, वह उसे ''**रावण**'' कहते हैं।

तब माया रूप धारी जनक बोले। तुम रावण को स्वीकार करो। सबों का कष्ट

दूर हो जायेगा। यह सुनकर सीता ने निश्चय किया ये मेरे पिता जनक नहीं हैं। यह कोई रावण की राक्षसी माया है।

वार्त्तालाप के बीच में ही माया रूपी जनक विलुप्त हो गये तब 'महोदर' ने कहा हे राजन् जिस राम ने और जिस वानर सेना ने इतना उपद्रव किया, पहले उस पर विजय प्राप्त करो। सीता स्वयं तुम्हारे अधीन हो जायेगी।

तब दुःखिनी सीता को त्रिजटा जो हमेशा सीता की रक्षा करती थी, वह आकर बोली "**मरुत**" नाम का राक्षस तुम्हारे पिता का रूप धारण कर आया था। यह सब माया-जाल है। तुम भय मत करो। सभी बातें पहले की तरह हैं। इस समय राम रावण के बीच युद्ध शीघ्र हो होगा। क्योंकि राम के द्वारा **'कुम्भकर्ण' मारा गया**। यह जानकर सीत शान्त और स्वस्थ हो गयी।

"इति माया जनक पटल"

१७ अदिकायं वदैप पडलम् "अतिकाय बद्य पंटल"

इस विस्तृत पटल में रावण की किसी दूसरी पत्नी का एक बीर पुत्र "अतिकाय" की अद्‌भुत वीरता के साथ युद्ध करने तथा उसके बध का वर्णन प्रमुख है।

रावण को '**अतिकाय**' नाम का एक महान् बीर पुत्र किसी दूसरी पत्नी से था। 'कवि कम्बन्' ने अपनी रचना शैली के अनुसार इस विस्तृत पटल में अतिकाय के साथ युद्ध का लम्बा वर्णन किया है। यह पटल भी कुम्भकर्ण बध पटल की तरह ही बड़ा है। सर्म्पूण पटल के 'तुमुल' युद्ध का विवरण देना सम्भव नहीं है। और न वह सर्वथा विश्वास के योग्य है। किन्तु कवि की कल्पना, काव्य-रचना शैली, विभिन्न रसों के समावेश की शैली सब तरह से प्रशंसनीय और महनीय है। इसमें कोई सन्देह नहीं है।

कुम्भकर्ण के बध का समाचार सुनने के बाद रावण का क्रोध पराकाष्ठा पर पहुँच गया। वह बोला हे राक्षस गण तुम लोग भाग जाओ। झूठे ही अपने बल का बखान और प्रलाप करते हो। तुमलोगो ने कहा था, सेनाओं के साथ राम लक्ष्मण को सामप्त कर ही हमलोग लौटेंगे, वह तो नहीं हुआ किन्तु मेरे प्राण-प्रिय भाई की रक्षा करने में भी तुम लोग समर्थ नहीं हुए—सफल नहीं हुए। मैं तो युद्ध अवश्य करूँगा और अवश्य जीतूँगा। लेकिन वे ही मेरे साथ चलें, जो मरण को बरण करने के लिए तैयार हैं। युद्ध में मरण निश्चित है, वहाँ से नहीं भागेंगे ऐसा निश्चित करके ही चलें। जो ऐसा करने के लिए तैयार नहीं है। वे मेरे सामने से भाग जायें, मैं उन्हें देखना नहीं चाहता हूँ।

इसके बाद अतिकाय नाम का रावण का एक ज्येष्ठ पुत्र था। वह उपस्थित हुआ।

(अतिकाय रावण का पुत्र था यह वाल्मीकि रामायण में भी है।) लेकिन अतिकाय मन्दोदरी का पुत्र नहीं था। किन्तु रावण की किसी दूसरी पत्नी का या किसी दासी का पुत्र या (कवि कम्बन् ने अन्त में **'अतिकाय' की माता का नाम ''धान्यमालिनी''** बताया है।) वह महान् बलशाली था। रावण ने किसी कारण से उसका तिरस्कार किया था। उसे कभी स्मरण नहीं किया और न कभी बुलाया। इस समय 'अतिकाय अपने पिता की दुर्दशा सुनकर और अपने वंश के नाश होने का समाचार जानकर खुद ही–स्वयं-ही वहाँ आ गया।

अतिकाय बोला। हे महानायक मेरे पिता, मैं अक्षय कुमार नहीं हूँ, कायर विभीषण और न मैं कुम्भकर्ण हूँ। मैं तो वानर सेनाओं को मारूँगा। वीरता से युद्ध करूँगा, आप के भाई के प्राणघातक लक्ष्मण को मारकर उसके भाई रामचन्द्र को कठोर दुःख देते हुए उसको बाँधकर आप के पास लाऊँगा यदि मैं ऐसा नहीं करूँगा तो मैं आपके पुत्र कहाने योग्य नहीं रहूँगा। अगर आप की आज्ञा हो तो मैं अकेले ही जा सकता हूँ। आप की आज्ञा की प्रतीक्षा है।

अत्यन्त प्रसन्न होकर रावण बोला तुम धन्य हो। तुमने ठीक कहा। यदि तुम **लक्ष्मण** को मारकर ले आओगे तो दूसरे ही दिन मैं स्वयं **'राम'** को मारकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करूँगा। रावण ने आज्ञा दी। जाओ, विजयी हो और 'अतिकाय' धनुष बाण के लिए रावण को प्रणाम कर प्रस्थान कर गया।

वहाँ युद्ध भूमि में रामचन्द्र राक्षसों को और कुम्भकर्ण को मारकर प्रसन्नता से घूम रहे थे। वहाँ अतिकाय पहुँचा। उसने अपनी सेना की विफलता से अस्त-व्यस्त हो गया। उसने देखा कि यह विशाल पर्वत न कोई दिग्गज है और न कोई सागर के समान पदार्थ है यह तो मेरे पिता के समान कुम्भकर्ण का शरीर है। जिसका शरीर समर भूमि में गिरा हुआ है। कुपित होते हुए वह भयंकर **'अतिकाय' ने महिष** नाम के राक्षस को कहा, जाओ लक्ष्मण को बोलो ! आज मैं शीघ्र ही उसके मस्तक को काटकर अपने पिता के समीप ले जाऊँगा।

यह मेरा विचार प्रतिकूल नहीं है। यह तो राजधर्म है और मेरा स्वभाव है। क्योंकि मेरे पिता का भी यही राजधर्म है। और यही स्वभाव है। साथ ही अपने **पिता के अनुज** के नाशक राम **के अंनुज लक्ष्मण** को मारकर अपने पिता के ऋण से मुक्त होऊँगा। इसलिए चतुरता पूर्ण वचन से लक्ष्मण को यहाँ ले आओ। महिष लक्ष्मण के पास पहुँच गया। वहाँ उसे सभी वानर मारने के लिए तैयार हो गये। तब किसी ने कहा। यह युद्ध के लिए नहीं आया है, यह तो दूत है। दूत का वचन सुनना चाहिए, साथ ही यह शस्त्ररहित है इस पर प्रहार करना उचित नहीं है।

तब राम ने कहा। तुम कौन हो, क्या चाहते हो, क्यों आये हो ? महिष राक्षस ने कहा महाबलशाली अतिकाय आप से बैर कर बदला लेने के लिए आपके अनुज लक्ष्मण को खोज रहा है। उस लक्ष्मण को दिखायें। क्योंकि आपके द्वारा रावण का अनुज कुम्भकर्ण मारा गया। इसलिए 'अतिकाय' के द्वारा आपका अनुज मारा जायेगा। इसलिए अतिकाय आप को नहीं खोज रहा है। तब श्री राम ने अलिङ्गन करके लक्ष्मण को युद्ध में जाने के लिए आदेश दिया। तुरत विभीषण ने कहा हम सबों को लक्ष्मण के साथ जाना चाहिए। तब लक्ष्मण युद्ध कर सकते हैं। क्योंकि सिंह के समान महा क्रूरू निर्भय **अतिकाय वहुत बड़ी तपस्या करके ब्रह्मा से वर प्राप्त किया है कि 'यदि मैं मरूँगा–तो आकाश के ऊपर में ही।**

जब विभीषंण ने ऐसा कहा तब राम बोले। देखो, विभीषण अगर आठ करोड़ रावण, सभी ब्रह्माण्डबासी साक्षात् त्रिमूर्ति ब्रह्मा, विष्णु और महादेव भी युद्ध में आयेंगे तो भी तुम लक्ष्मण की वीरता को देखोगे। यदि मेरा अनुज बिगड़ जायगा तो त्रिलोक काँपने लगेंगे। कोई भी ठहर नहीं सकेगा। अच्छा, तुम लक्ष्मण के साथ जाओ। जब लक्ष्मण बाण से अतिकाय के मस्तक को काटकर जमीन पर गिरा देगा और काक, कंकाल, बेताल आदि उसके मस्तक को खायेंगे तब तुम देखोगें। केवल ब्रह्मा, विष्णु, महेश ही लक्ष्मण को जीत सकते हैं और कोई नहीं। यह लक्ष्मण सबका नाश कर देगा। **वहाँ रामचन्द्र के हृदय से उनका ईश्वरत्व बोल रहा है, ऐसा आभास होता है।**

लक्ष्मण रामचन्द्र की तीन बार परिक्रमा करके समर भूमि में आ गये जहाँ पर्वताकार **'अतिकाय'** उपस्थित था। विभीषण भी लक्ष्मण के साथ गये। वहाँ वानरों ने घोड़े और हाथियों को पकड़कर तहस नहस कर दिये और पहाड़ों एवं वृक्षों को उखाड़ दिये। इधर राक्षसों के सैनिक घटते हुए दीखने लगे तब लक्ष्मण बोले। मत डरों अपनी वीरता से शत्रुओं को मार गिराओ। इस तरह लक्ष्मण ने राक्षस की सेनाओं के अस्त्र-शस्त्रों को खण्डित कर दिया।

विशेष–शास्त्र में कहा गया है कि जहाँ अठतालीस (४८) हजार संख्या बाले वीर मरते हैं वहाँ एक **'कबन्ध' (मस्तक रहति शेष शरीर को कवन्ध कहते हैं)** उठकर नाचता है। यदि **यह सत्य है तो इस युद्ध में असंख्य** कबन्ध नाच रहे थे। **यह तो लक्ष्मण के पराक्रम का परिणाम है।**

यह तो सर्वथा सत्य और स्पष्ट है कि रावण ने सीता को लाकर यमराज को निमन्त्रण दिया है। परिणाम स्वरूप रावण के सभी पुत्र, पौत्र, भाई और सैनिक लक्ष्मण के वाण से मारे गये। तब **'दारूक'** नाम का पर्वताकार अग्नि के समान धधकते हुए आक्रमणकारी राक्षस युद्ध भूमि में आया। जिसके द्वारा लक्ष्मण के सैनिक तितर-वितर

हो गये। वह **'दारुक'** लक्ष्मण के पास आ गया। लक्ष्मण ने अपने तीक्ष्ण वाण से उस भयंकर 'दारुक' का मस्तक काट दिया। राक्षस के बीच में हाहाकार मच गया।

तब काल, कुलिस, काल संख, माली और मरुत नाम के पाँच, और शूल और फरसा को घुमाते हुए भिन्दिपाल नाम का राक्षस आ गया। उसने अनेक अस्त्र शस्त्र चलाये जिन्हें लक्ष्मण ने नष्ट कर दिये। तब कितने हजार मतवाले हाथियों के साथ अतिकाय के सैनिकों ने वानर सेनाओं को अपने बीच घेर लिया तथा वानर सेना को विचलित कर दिया। इस बीच में लक्ष्मण ने कितने हाथियों के सूढ़ को काट दिये और दाँत तोड़ दिये। इस तरह एक साथ ही अनेक अस्त्रों को लक्ष्मण फेंकने लगे।

बीच में हनुमान् ने असंख्य राक्षसों को मार डाला। रक्त का समुद्र बहने लगा। मुर्दों के पहाड़ दीखने लगे। इस बीच में 'देवान्तक' नाम के राक्षस के साथ लड़ते हुए हनुमान ने उसे मार दिया। यह देखकर 'अतिकाय' पहुँच गया। अतिकाय और हनुमान के बीच रोमांच–कारी युद्ध हुआ। अतिकाय ने पूछा तुम वही वानर हो जिसने मेरे अनुज 'अक्षय कुमार' को मारा, अशोक वाटिका का नाश किया, समुद्र को लांघकर मेरे सैन्य रूपी सागर में प्रवेश करके अति बलशाली देवान्तक' को मारा ? इसलिए आज तुम्हारा नाश करने वाला मैं उपस्थित हूँ।

हनुमान ने कहा तुम अजेय लक्ष्मण के साथ और मेरे साथ युद्ध चाहते हो। मैं तो 'त्रिशिरा' के साथ तुमको भूमि पर पटक कर चूर कर दूँगा। यह कहते हुए हनुमान ने पर्वत के समान विशाल 'त्रिशिरा' नाम के राक्षक को मार दिया। उसको मारकर हनुमान् पश्चिम दरवाजे पर चले गये। तब अतिकाय सोचता है मैं लक्ष्मण-बध का संकल्प करके आया हूँ। इसलिए विलम्ब करना उचित नहीं है। यह सोचकर अतिकाय और लक्ष्मण परस्पर सामने आ गये। वहाँ अंगद आकर लक्ष्मण को अपने कन्धे पर रखकर लड़ने के लिए निवेदन किया। क्योंकि 'अतिकाय' रथ पर था और लक्ष्मण पैदल ही थे इसलिए लक्ष्मण का अंगद के कन्धे पर बैठकर युद्ध करना कल्याणकारी था। दोनों के बीच भयंकर युद्ध प्रारम्भ हो गया। लक्ष्मण ने पूछा, तुम्हारी क्या इच्छा है। केवल खुद स्वयं युद्ध करोगे या सेनाओं के साथ। अतिकाय ने कहा मैं स्वयं ही युद्ध करूँगा यदि मैं पराजित हो जाऊँगा तो ये सैनिक स्वयं पराजित हो जायेंगे।

यह सुनकर लक्ष्मण ने 'सन्तापक' नाम का बाण फेंका। अतिकाय के द्वारा वह बाण खण्डित कर दिया गया। तब पुनः लक्ष्मण के बाण से अतिकाय मूर्च्छित हो गया। इस बीच लक्ष्मण के द्वारा बहुत से राक्षस सैनिक मारे गये। अतिकाय पुनः चेतना प्राप्त कर युद्ध करने लगा, अतिकाय के प्रहार से सभी दिशाएँ कंपित हो गयीं। देवतागण चिन्तित हो गये। तब अतिकाय ने लक्ष्मण पर बाण से प्रहार किया। अन्त में लक्ष्मण

ने चमकता हुआ तेज-पुँज बिजली के समान ''ब्रह्मास्त्र'' नाम के अस्त्र को अतिकाय के ऊपर फेंका। वह ब्रह्मास्त्र अतिकाय के मस्तक को काट कर आकाश मार्ग से निकल गया। आकाश से फूल की बर्षा हुई, देवतागण और ऋषिगण प्रसन्न हुए।

इसके बाद तब नरान्तक नाम का राक्षस पहुँचा, जिसको अंगद ने मार दिया। तब कुम्भ नाम के राक्षस और दण्डायुध नाम के राक्षस ये दोनों राक्षस पहुँचे। ये दोनों सुग्रीव के द्वारा मारे गये। इस तरह विभिन्न राक्षस सैनिकों के साथ 'अतिकाय' के बध का समाचार रावण सुनकर पागल की तरह हो गया। अतिकाय की माता ''धान्यमालिनी'' बच्छ-रहित ''गाय' के समान हो गयी। राम लक्ष्मण की विजय का समाचार सुनकर प्रसन्न हुए और वानर सैनिक नाचने लगे।

''इति अतिकाय बध पटल''

१८. नाहपाशप् पडलम् (''नागपाश पटल'')

इस पटल में लक्ष्मण और मेघनाद के साथ भयंकर युद्ध में लक्ष्मण के नाग-पाशबन्धन का वर्णन प्रमुख है।

इस पटल में कवि ने अपनी पूर्व शैली के अनुसार ही लक्ष्मण एवं मेधनाद के प्रलयकारी युद्ध का अति विस्तृत वर्णन किया है। इसमें अगणित राक्षस सैनिक के तथा वानर सैनिकों के वर्णन हैं। इस युद्ध में ब्रह्मा से बरदान में प्राप्त 'नागपाश' में बँधने की विस्तृत कथा है।

'अतिकाय' बध के बाद लंका की नारियाँ अपने बालों को छितराकर विलाप कर रही थीं। यह देख सुनकर इन्द्रजित–मेघनाद चिन्तित हुआ कि क्या युद्ध में रावण मारे गये। जिससे इस तरह शोक में मग्न नारियाँ विलाप कर रही हैं। ऐसा सोचकर मेघनाद अपने पिता के समीप आया और वहाँ रावण की विचित्र दशा को उसने देखा। मेघनाद बोला, क्या हुआ ? रावण ने कहा तुम्हारा भाई 'अतिकाय' स्वर्गीय हो गया। कुम्भ-निकुम्भ मारे गये। यह सुनकर कुछ देरतक 'इन्द्रजित' क्रोध से काँप रहा था। और बोला, आप ने युद्ध के लिए मुझे नहीं भेजा, इसीसे ऐसी स्थिति हुई।

जब हनुमान् के द्वारा 'अक्षय कुमार; मारा गया, तब आप ने विभीषण के कहने से उसको दूत समझकर छोड़ दिया। इसीसे ऐसी स्थिति हुई। अब इस चिन्ता से क्या लाभ, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अतिकाय के बध करने बाले लक्ष्मण को जब तक नहीं मारूँगा तब तक लंका नहीं लौटूँगा। आज नागास्त्र, पाशुपस्त्र, दिव्यास्त्र आदि मेरी रक्षा करेंगे। यदि ऐसा नहीं हुआ तो मेरे जीवन से क्या प्रयोजन है ? यह सुनकर पुत्र साधुबाद, अब जाओ विजयी हो, और मेरे कष्ट को दूर करो। तुमसे कुछ भी असाध्य नहीं है।

इस तरह आज्ञा देकर अस्त्र-शस्त्रों एवं सैनिकों के साथ 'इन्द्रजित' वहाँ से प्रस्थान कर गया। इन्द्रजित के साथ असंख्य सैनिक एवं देवताओं के द्वारा दिये गये नहीं नाश होने बाले अमोध-अस्त्र थे। इनका विस्तृत विवरण देना अनावश्यक है। यह युद्ध तो पहले के युद्धों से भी अधिक तीव्र है। समर भूमि में लक्ष्मण सोच रहे थे। 'अतिकाय' मर गया। यह जानकर शत्रु रावण खुद आयेगा, अथवा देवेन्द्र को जीतने बाला रावण का पुत्र मेघनाद आयेगा। लक्ष्मण इसकी प्रतीक्षा में ही वहाँ खरे थे।

तब तक मेघनाद को आते देखकर विभीषण ने कहा। हे यशो-भूषण लक्ष्मण, इस युद्ध में आप पवन पुत्र हनुमान्, जाम्बवान, सुग्रीव, अंगद, और नील अदि वलवान् सेनाओं के साथ रहें। क्योंकि यह युद्ध भयानक दीर्घ-कालीन होगा, यह मैं सोच रहा हूँ। लक्ष्मण इस विचार से सहमत हो गये। हनुमान् मेधनाद की सेनाओं को देखकर डर गये और आँखें बन्द कर लीं, तथा अपना निश्चित स्थान पश्चिम द्वार को छोड़कर लक्ष्मण के समीप आ गये। वहाँ अंगद, सूर्य पुत्र सुग्रीव और बहुत अधिक वानर सेनिक एकत्र हो गये।

स्वर्ग में देवताओं ने सोचा कि इस अभूतपूर्व युद्ध को देखने के लिए पत्नी के साथ हमलोगों को चलना चाहिए। ऐसा सोचकर वे लोग समरभूमि के ऊपर इकट्ठे हो गये। दोनों सेनाओं के बीच तुमुल-युद्ध प्रारम्भ हुआ। स्वभावानुसार मारो, मारो, पकड़ो-पकड़ो, जमीन पर गिरा दो, गिरा दो, मसल दो, मसल दो, और बाणों को चलाओ, चलाओ इत्यादि वाक्यों से और धनुष के टंकारों से प्रलयकालीन बज्रनाद के समान आवाजें हो रही थीं। यहाँ का युद्ध वर्णन कम्बन् कवि ने अपनी-वाक्य शैली में पहले की तरह ही किया है। यहाँ मेघनाद ने वानर सैनिकों को तितर-वितर कर दिया। सुग्रीव एक शाल वृक्ष लेकर मेघनाद पर फेंका मेघनाद के द्वारा वह शाल वृक्ष विखण्डित कर दिया गया। तब हनुमान् पहुँचे। इन्हें देखकर मेघनाद बोला अरे दूत ठहरो, ठहरो, तुमको देखकर ही यहाँ आया हूँ। तुमको मारकर ही आगे युद्ध करूँगा।

हनुमान् ने जबाब दिया अरे मेघनाद, तुम भी अपने भाई और चाचा की तरह स्वर्ग जाओगे। देखो मेरी भुजा की ताकत ! यह कह कर हनुमान अपने विशाल रूप को धारण कर बोले। क्या तुम अपने भाई और चाचा के मारने बाले बलशाली 'लक्ष्मण' के साथ युद्ध करोगे या पुरुषोत्तम रामचन्द्र के साथ। जिन्होंने तुम्हारे पिता के बध का संकल्प कर तैयार हैं। कहो क्या इच्छा है ? जैसा कहो वैसा ही करूँगा।

इन्द्रजित्-मेघनाद ने कहा। कहाँ वह बुद्धिहीन-लक्ष्मण है ? उसी के साथ मैं युद्ध करूँगा। यह कहकर मेघनाद ने हनुमान के ऊपर एक ही साथ नब्बे, (९००००) हजार बाणों को फेंका। हनुमान ने भी मेघनाद के ऊपर एक विशाल पर्वत को उठाकर फेंका।

मेघनाद ने उस पर्वत को विखण्डित कर दिया। तब अंगद, नील आदि मेघनाद के साथ युद्ध करने लगे। मेघनाद के प्रहार से बानर सैनिक छिन्न-भिन्न हो गये। तब लक्ष्मण विगड़ कर विभीषण से बोले।

हे राजन् मेरा उद्देश्य विफल हो रहा है। मेरे सैन्य मर रहे हैं। इस समय क्या करना चाहिए ? विभीषण ने कहा मेघनाद के साथ आप ही युद्ध करने में समर्थ हैं। आप स्वयं ही आगे चलें। यह सुनकर लक्ष्मण मेघनाद के समीप आ गये। मेधनाद जबतक लक्ष्मण पर प्रहार करने को सोच ही रहा था तब तक मेघनाद के सैनिक लक्ष्मण पर प्रहार करने लगे। जिस प्रहार ने लक्ष्मण को व्याकुल कर दिया। इसके बाद हनुमान के कन्धे पर चढ़कर लक्ष्मण युद्ध करने लगें। उन दोनों का युद्ध अभूतपूर्व था।

कम्बन्-कवि के अनुसार 'पद्म' और 'शंख' संख्या बाले सैनिक युद्ध कर रहे थे (यह संख्या भी विचारणीय है। लक्ष्मण ने बहुत वाणों से उनके प्रहार को विफल कर दिया। यह देखकर देवताओं ने शुभाशीर्वाद दिये। इसी बीच विभीषण बोले। हे महाबाहु लक्ष्मण यदि तुरत ही मेघनाद को नहीं मारियेगा तो रात आ रही है। रात में ये मायावी कोई भी 'माया-जाल' रच सकते हैं। मेधनाद आकाश में चला जायेगा और वहीं विजयी होगा। क्योंकि ब्रह्मा के बरदान से निर्भय मेघनाद सभी माया-मन्त्रों को जानता है। इसी समय एक 'नाग पाश' लेकर मेघनाद अदृश्य हो गया–नहीं दीखने लगा। वानरों ने समझा कि मेघनाद भागा। लक्ष्मण भी ऐसा ही समझकर हनुमान् के कन्धे पर से जमीन पर उतर गये। यह देखकर मेघनाद ने आकाश से अचानक लक्ष्मण के ऊपर 'नागपाश' को फेंका जिस अमोघ नागपाश से लक्ष्मण के सभी अंग बंध गये।

वे जमीन पर गिर गये। लक्ष्मण की सेनाओं में हाहाकार मच गया। सभी विभीषण से पूछते हैं। इसका क्या उपाय है ? विभीषण चुप थे। लक्ष्मण को जमीन पर गिरा हुआ देखकर मेघनाद ने अपने पिता के पास यह शुभ सूचना भेज दी।

वानर सैनिक राम के पास जाकर सभी घटना समूहों की सूचना दी। सभी क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए किंकर्त्तव्यविमूढ़ समर-भूमि में पहुँचे जहाँ नागपाश में बँधे हुए लक्ष्मण जंमीन पर गिरे हुए थे। इस तरह लक्ष्मण को देखकर राम विचलित होकर विलाप करने लगे। और बार-बार लक्ष्मण का आलिंगन कर रोने लगे। विभीषण से पूछा 'नागपाश' देने बाले कौन देवता हैं ? उनका नाम बताओ। मैं उन्हीं का नाश कर दूँगा। विभीषण ने कहा। ब्रह्मा के द्वारा यह 'नागपाश' दिया गया है।

इसी क्षण आकाश मार्ग से भगवान विष्णु का वाहन महान् वलवान गरूड़ आ गये। इनको देखकर राम ने सोचा कि हजार बर्षो के बाद भी इस गरूड़ के सभी पाँख

पहले की ही तरह सुरक्षित हैं। गरुड़ ने वहाँ आकर तुरत ही नागपाश को काट दिये। और लक्ष्मण नागपाश से मुक्त हो गये। रामचन्द्र लक्ष्मण को आलिंगन करके अत्यन्त प्रसन्न हुए। गरुड़ ने रामचन्द्र को प्रणाम कर कहा। मैं तो आप के ही समीप में रहने वाला सेबक वाहन हूँ। आज्ञा दीजिये। इस समय जाता हूँ। युद्ध समाप्त होने के बाद फिर दर्शन करूँगा।

इस तरह रामचन्द्र के शिविर में बहुत प्रसंन्नता के नाद हुए। उस महानाद को सुनकर रावण चिन्तित हुआ, यह क्या हुआ वहाँ विजय के उत्सव में लगा हुआ मेघनाद और उसके अन्य वन्धु-गण अनेक प्रकार की विशाल क्रीडा में नारियों के साथ रत थे। तभी कुछ दूत आकर लक्ष्मण के नागपाश से मुक्त होने की घटना सुनाई। यह जानकर सभी आश्चर्यित हो गये। रामचन्द्र लक्ष्मण को लेकर समर भूमि से शिविर में लौट आये।

"इति नागपाश पटल"

१९. पडैतृतलैवर बदैप पडलम् ("सेना नायक बध पटल")

इस पटल में नागपाश से लक्ष्मण के मुक्त होने की घटना के बाद रावण के कुछ बड़े सेना-नायक के साथ युद्ध का और उसके नाश का वर्णन प्रमुख है।

अब इस पटल में रावण के महान् सेना-नायक के साथ युद्ध की शैली में ही किया है। यहाँ केवल सेना-नायक के बध का ही वर्णन विशेष रूप से है। लक्ष्मण के नागपाश से मुक्त होने की घटना को सुनकर रावण चिन्तित और कुपित हुआ। उसी समय भयंकर 'धूम्राक्ष और महापार्श्व' नाम के महा सेना-नायक उपस्थित हुए। रावण ने आज्ञा दी, और कहा कि जो सैनिक पहले युद्ध से भाग गये वे फिर आये हैं। क्या ये कायर नहीं हैं ? इन लोगों से क्या काम होगा ? रावण ने आज्ञा दी। वीरता रहित इन राक्षसों को पकड़ लो और तलवार से इन लोगों की नाक काट कर नगर में घुमाओ जिससे लोग समझेंगे कि ये कायर, निर्बल और डरे हुए सैनिक हैं।

निर्भीक, स्पष्ट वक्तव्य–इसी बीच 'माली' नाम का एक सेनापति आकर बोला। ऐसा नहीं करें। घटना यों है। लक्ष्मण के नागपाश कट गये। बहुत बड़ी सेना नष्ट हो गयी। लक्ष्मण शब्द से ही सैनिक डरे हुए थे इसलिए ये डरकर भाग गये। जैसा आप ने सोचा था वैसा युद्ध नहीं हुआ है। राम लक्ष्मण तो कुशल हैं ही। तब क्यों नहीं किसी वीर की नाक काटने के लिए आपने आज्ञा दी। यह सुनकर रावण शान्त हो गया। तब 'महापार्श्व' एवं धूम्राक्ष ने कहा आज्ञा दीजिये। हमलोग युद्ध में विजयी होंगे या मरेंगे। यही आप सुनियेगा। हमलोग नहीं भागेंगे यह कहकर दोनों चले।

राम और रावण की सेना के बीच भयंकर युद्ध हुआ। युद्ध के समय विभीषण

ने लोगों का परिचय दिया और कहा कि यह महान् बलशाली महापार्श्व है यह विकरालाक्ष-धूम्राक्ष है और महादंष्ट्रा है। यह सूर्य के सदृश 'भानुकोप' है। और यह मालाधारी परम बलशाली। 'माली' नाम का सेनापति है। ये सभी सेनापति अगंद, सुग्रीव, नील, एवं हनुमान के साथ युद्ध करते हुए मारे गये। बीच में महापार्श्व ने कालपार्श्व के समान एक शूल को फेंका। जिसको आते हुए देखकर राम ने एक विषाक्त बाण से उस शूल को खण्डित कर दिया। इस तरह सभी सेनापति यमलोक चले गये। राम के शिविर में हर्ष और उल्लास छा गये। बचे हुए सैनिक इस घटना की सूचना देने के लिए रावण के पास गये।

"इति सेना नायक पटल"

२०. महरक्कणड़ण वदैप पडलम–"मकराक्षबध पटल"

इस छोटे से पटल में 'खर' का बेटा 'मकाराक्ष' के युद्ध तथा उसके बध का वर्णन मात्र है।

सेनानायक के बध का समाचार सुनकर साँप की तरह फुफकार करते हुए रावण पागल की तरह हो गया। इस स्थिति को देखकर 'मकराक्ष' राक्षस आकर बोला हे पिता, मेरे पिता 'खर' को सेना के साथ रामचन्द्र ने मारा था। इसलिए मुझे आज्ञा दीजिये कि मैं उसको जीतकर आप के पास लाउँग। मेरी माँ नित्य दुःखी होकर बोलती है कि अपने पति के हत्यारे के मस्तक के पात्र को छोड़कर किसी दूसरे पात्र में जल लेकर तर्पण नहीं करूँगी। इसलिए मैं युद्ध में जाने बाला हूँ। रावण ने कहा, साधुबाद ऐसा ही करो। तदनुसार मकराक्ष असंख्य सेना के साथ समरांङ्गण में आ गया। जहाँ पहले की तरह घोड़े, हाथी, रथ और विशाल सैनिक मकराक्ष के पीछे थे।

मकराक्ष युद्ध भूमि में आकर सीधे रामचन्द्र से बोला। मैं तुम्हारे साथ ही युद्ध करूँगा। पिता की मृत्यु का बदला लूँगा। रामचन्द्र हँस कर बोले। तुम धन्य हो ठीक ही तुम खर (गदहा) के बेटा के समान ही हो। यह उचित पुरुषार्थ है। तुम बाप के मरण का बदला लो। मकराक्ष बज्र तुल्य-धनुष निकाल कर रामचन्द्र के ऊपर हजारों बाण फेंकने लगे, जिन्हें। रामचन्द्र ने तुरत विखण्डित कर दिया। इसके बाद हँसकर रामचन्द्र ने एक ही बाण से उसके रथ को घोड़े से रहित करके खण्डित कर दिया। मकराक्ष की छाती में एक बाण मारा जिससे रक्त वमन करते हुए मकराक्ष मारा गया। जमीन पर उसका कटा हुआ सर लोटने लगा। ऐसी स्थिति में भी रामचन्द्र ने मकराक्ष की वीरता की प्रशंसा की। जिसे राम ने गेन्द की तरह उछालकर मार दिया। इस तरह बचे हुए सैनिक रावण के पास आकर मकराक्ष बध की सूचना दी।

"इति मकराक्ष बध पटल"

उत्तरार्ध युद्ध-काण्डम्

१. पिरमात्तिरप् (''ब्रह्मास्त्र पटल'')

पृष्ठ भूमि–यह तो पहले ही कहा गया है कि 'कम्ब-रामायण में उत्तर काण्ड नहीं है। युद्ध काण्ड के ही पूर्वाद्ध और उत्तरार्ध दो भाग हैं जिनमें यहाँ दूसरा-भाग अर्थात् उत्तरार्ध-युद्ध काण्ड प्रारम्भ हो रहा है जिसमें १९, उन्नीस पटल हैं। जिनमें रामचन्द्र के सीता लक्ष्मण के साथ अयोध्या पहुँचने पर राम राज्याभिषेक तक का वर्णन और साथ में आये हुए सुग्रीव आदि को अपने-अपने स्थान पर लौटने की आज्ञा का वर्णन एवं सीता तथा परिजनों के साथ फिर चिर-दिनों तक राम का सानन्द राज्य करने का वर्णन प्रधान है।

इस पटल में मेघनाद द्वारा ब्रह्मस्त्र संचालन से वानर सैनिकों का मूर्छित होने का वर्णन भी प्रमुख है।

पूर्वार्ध युद्ध काण्ड के अन्तिम पटल में 'खर' पुत्र मकराक्ष तथा अन्य वलशाली राक्षस सेनाओं के विनाश का समाचार सुनकर क्रुद्ध रावण ने अपने पुत्र इन्द्रजित्-मेघनाद को बुलाने का आदेश दिया। दूत द्वारा सम्बाद प्राप्त करते ही 'इन्द्रजित' तुरत ही पिता के समीप आया। इन्द्रजित ने कहा। हे पिता। आप शोक नहीं करें। सभी वानर सेनाओं के साथ सीता, राम, लक्ष्मण को मरा हुआ देखेंगे। और देवतागण भी देखेंगे।

यह कहकर मेघनाद पिता रावण की प्रदक्षिणा करके असंख्य रथ, हाथी, घोड़े, सिंह, एवं सेनाओं के साथ समर भूमि में पहुँच गया। तमिल भाषा में प्रसिद्ध निम्नांकित अस्त्र-शस्त्र मेघनाद के पास में थे उनके नाम ये हैं। ''कुम्बिकै, तिमिलै, शणडै, पम्बै, पाण्डिल, मारू, तवकै, करडिकै, शकडे'' इन अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित अपनी चतुरंगिणी सेना के साथ 'इन्द्रजित्' भयंकर युद्ध स्थल में आकर 'कौञ्च-व्यूह, नाम के घेरा में अपने सैनिकों को सुदृढ़ किया। तब उसने शंखनाद किया। उस शंखनाद को सुनकर देवगण डर कर काँपने लगे। सभी दिशायें अस्त व्यस्त हो गयीं। उस शंखनाद को सुनकर वानर सेनाओं के कान फटने लगे।

राम के सैनिकों के बीच सुग्रीव, अंगद, हनुमान्, अरुणाक्ष, विभीषण और लक्ष्मण थे। तथा स्वयं रामचन्द्र उपस्थित थे। दोनों राम लक्ष्मण क्रमशः हनुमान् और अंगद के कन्धे पर चढ़कर वैसे ही सुशोभित हो रहे थे जैसे गरुड़ पर 'विष्णु' और बैल पर 'शिव' शोभित होते हैं। रामचन्द्र ने कहा इन्द्रजित जब दिव्य अस्त्र चलायेगा तब तुमलोग वहाँ नहीं ठहर सकोगे। इसलिए मेरे पीछे तुम लोग रहो।

राम लक्ष्मण ने युद्ध प्रारम्भ किया। वहाँ इन्द्रजित् बिना हिले डुले पत्थर की तरह रथ पर बैठा हुआ था। और राम लक्ष्मण के भयंकर युद्ध कौशल को देखकर मेघनाद स्तब्ध हो गया। राम की बाण बर्षा से अपने सैनिकों के खून की धारा, छाती पीटती हुई, रोती हुई और जमीन पर लोटती हुई अपने मरे हुए सैनिकों की विधवाओं को मेघनाद ने देखा। मेघनाद अंगद और हनुमान के तेज को भी नहीं जान सका। मेघनाद की नजर में एक हनुमान और एक अंगद हजार हजार हो रहे थे। वे दोनों इस तरह तेज वेग से युद्ध कर रहे थे जिससे ऐसा दृश्य हो गया।

•इस तरह असंख्य राक्षस सैनिक मारे गये। हनुमान का उत्साह बढ़ा। इसके बाद मेघनाद ने उन लोगों की भर्त्सना की और उसके हजारों रथ पहुँच गये। एवं दोनों के सैनिकों के बीच में तुमुल-युद्ध होने लगा। राम ने लक्ष्मण को उत्साहित किया कि तुम्हारे सामने कोई नहीं ठहर सकता है। इस तरह राक्षसों के पुत्रों के मस्तक कट गये। और वे कटे हुए मस्तक उनके बाप की गोद में गिरते गये।

तब इन्द्रजित–मेघनाद ने राम लक्ष्मणो से कहा। क्या तुम दोनों युद्ध करोगे या एक एक आकर अपने सैन्य बल के साथ यमलोक जाओगे ? यह सुनकर लक्ष्मण ने कहा मैंने तुम्हारे बध की प्रतिज्ञा की है इसलिए मैं ही युद्ध करूँगा। यह सुनकर रावण का पुत्र मेघनाद बोला।

उत्कृष्ट कल्पना–आज मैं छोटे को बड़ा और बड़े को छोटा करूँगा। अर्थात तुम राम के अनुज मरने में उनका अग्रजं हो जाओगे और वे अग्रज 'राम' तुम्हारे अनुज हो जायेंगे। क्योंकि आगे जाने बाला 'अग्रज' कहाता है और पीछे जाने बला 'अनुज' कहता है। कवि कम्बन् ने अपना काव्य-चमत्कार इस अग्रज-अनुज के विवरण दिखाया है। मेघनाद ने कहा। तमिल भाषा में लक्ष्मण का अर्थ ''इलकूबड़'' कहते हैं। और 'इलकू' शब्द का संस्कृत में अर्थ होता है 'लक्ष्य'। आज हे लक्ष्मण तुमही मेरे लक्ष्य होगे ? **(यहाँ भी श्लेषालंकार देखने के योग्य है)** फिर मेघनाद ने कहा मैं रावण के अन्य पुत्रों से और कुम्भकर्ण से भिन्न हूँ। आज मैं तुम्हारे रक्त से अपने भाई और अपने चाचा का तर्पण करूँगा।

लक्ष्मण ने कहा मरे हुए राक्षसों के तर्पण के लिए तो मेरे शिविर में पहले से 'विभीषण' हैं ही। वही तुमलोगों का तर्पण करेंगे। तब दोनों में भीषण युद्ध होने लगा। राम भी लक्ष्मण के पीछे उपस्थित थे। लक्ष्मण ने मेघनाद के कवच आदि को काट दिये। तब लक्ष्मण ने राम से निवेदन किया कि मैं 'ब्रह्मास्त्र' चलाऊँ। राम ने कहा, नहीं। ब्रह्मास्त्र' चलाने से त्रिलोक का नाश होगा इसलिए इन्हीं अस्त्रों से युद्ध करो। लक्ष्मण ने ऐसा ही किया।

इसी बीच मेघनाद छिप गया और 'ब्रह्मास्त्र' चलाने का निश्चय किया। राम और

लक्ष्मण इन्द्रजित् की इस शक्ति को देखकर आश्चर्यित हुए। इसी बीच सहसा सूर्यास्त हो गया। यहाँ कवि कल्पना करते है कि सूर्य अपने वंशज लक्ष्मण के ऊपर 'ब्रह्मास्त्र प्रहार से पहले ही अस्त हो गये। तब राम ने कहा तुम लोग जाकर भोजन करो और मैं पूजा करके आता हूँ। इस बीच तुम 'व्यूह' की रक्षा करो। इधर मेघनाद ने अपने पिता के साथ ब्रह्मास्त्र फेंकने की मन्त्रणा की। बीच में अंगद हनुमान आदि युद्ध कर रहे थे। हनुमान लक्ष्मण के समीप आ गये।

मेघनाद ने सहसा 'ब्रह्मास्त्र' चलाया। जिससे सभी प्रमुख वानर मूर्च्छित हो गये। एक क्षण में यह अघटित घटना हो गयी। सभी मूर्च्छित हो गये। कोई किसी की जिज्ञासा करने वाला नहीं रहा। यह सूचना रावण को उनके सैनिकों ने दी। रावण ने पूछा क्या 'राम' मारा गया ? दूत बोला नहीं लेकिन युद्ध क्षेत्र में वानर के सेनापति पूर्च्छित हो गये हैं और 'लक्ष्मण' मरे हुए की तरह जमीन पर गिरे हुए हैं।

इति ब्रह्मास्त्र पटल

२. पिरट्टि कलङ्गण पडलम–''देवी युद्धस्थल दर्शन पटल''

इस पटल में मूर्च्छित लक्ष्मण और मूर्च्छित वानर सेनाओं को पुष्पक विमान पर 'सीता' को लाकर दिखाने मात्र का वर्णन है।

पूर्व पटल में लक्ष्मण आदि के मूर्च्छित स्थिति में सीता को दिखाने के लिए पुष्पक विमान पर सीता को रखकर ले आने आ आदेश रावण ने राक्षसियों को दिया। राक्षसियों ने वैसा ही किया। युद्ध स्थल में आकर वानर सेनाओं के सहित मूर्च्छित 'रामचन्द्र' तथा मरे हुए की तरह 'लक्ष्मण को देखकर सीता असहनीय वेदना से व्यथित हो गयी। और रोती हुई इस दृश्य को देखती रही।

यह दृश्य ऐसा था जैसे साक्षात पार्वती, महालक्ष्मी, गंगा, सरस्वती, और भगवती दुर्गा मिलकर रो रही हों। सीता अपनी छाती पीटती हुई विलाप कर रही थी और पागल की तरह मलिन हो गयी थी। ऐसी स्धिति में ही 'सीता' को विमान पर लेकर फिर अशोक वाटिका में लाकर रख दिया। इसी बीच सीता की सदा रक्षा करने वाली त्रिजटा ने कान में कहा यह राक्षसी माया है। तुम धैर्य रखो। सब कल्याण होगा। इस तरह सीता शोक सागर में आकर डूब गई और अशोक वाटिका में आकर स्थिर हो गयी।

'इति देवी युद्धस्थल दर्शन पटल''

"मारूत् तुमुलेप पडलम–औषधि पर्वतपटल

इस पटल में लक्ष्मण की मूर्छा से मुक्ति के लिए संजीवनी औषधि लाने का बहुत विस्तृत नवीन रूप में वर्णन प्रमुख है।

लक्ष्मण के मूर्च्छित हो जाने पर राम के शिविर में महान् कोलाहल होने लगा। राम अपनी सेनाओं की तथा लक्ष्मण की दशा देखकर विचित्र कारुणिक रूप से विलाप करने लगे। कोई सान्त्वना देने वाला नहीं था। शोक सागर में डूबे हुए राम को देखकर किसी तरह हनुमान वहाँ आकर बोले। महा **ज्ञानी जाम्बवान् कहाँ हैं ?** जाम्बवान मिल गये विभीषण इससे प्रसन्न हुए, जाम्बवान ने पूछा भगवान राम कहाँ हैं, विभीषण बोले वे तो दुःख के प्रवाह में मूर्च्छित हैं तब जाम्बवान् ने कहा। हे हनुमान समुद्र को लाँघकर **नौ हजार योजन जाने के बाद हिमालय नाम का पर्वत है।** उसको लांघकर **नौ हजार योजन के बाद "हेम-कूट"** नाम का पर्वत है। वहाँ से **नौ हजार योजन के बाद 'निषध' नाम के पर्वत** को पार करके फिर नौ हजार योजन के **बाद 'मेरु' पर्वत** है। उस पर्वत से नौ हजार योजन दूर **"नीलगिरि** है। नीलगिरि से चौवीस(२४) हजार योजन पर **'कृष्ण' पर्वत** है। वहाँ **'ब्रह्मास्त्र-निवारक' औषधियाँ हैं। उन्हें लेकर यदि सूर्योदय से पहले यहाँ आ सकोगे, तो लक्ष्मण की प्राण-रक्षा हो सकती है ।**

मानवीय संवेदना–इधर विलाप करते हुए राम बोले कि अनुज–लक्ष्मण के मरण के बाद मेरे जीवन का क्या प्रयोजन है। जब सब कुछ नष्ट हो गया। सबों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन करते हुए राम ने ही वेदना पूर्ण शब्दों में कहा। **'कृपया आप लोग मुझे क्षमा करें। मेरे शोक में पिता स्वर्गीय हो गये। भरत भी चौदह वर्षों तक मेरी प्रतीक्षा में तपस्वी का जीवन बिता रहा है। मैंने तो पत्नी के प्रेम में मग्न होकर प्राणप्रिय अनुज लक्ष्मण को खो दिया। यह महान् कष्ट है।** इसी बीच में उत्साह के साथ हनुमान समुद्र को लाँघ कर लाखों योजन के बाद स्थित 'कृष्ण' पर्वत पर लक्ष्मण के लिए संजीवनी–औषधि को लाने के लिए चल दिये। संजीवनी-औषधि लाने के लिए जिस प्रकार जाम्बवान् ने कहा और जिस प्रकार हनुमान गये, उस बीच में जो-जो अपूर्व-आश्चर्य जनक दृश्य थे उसका वर्णन कवि कम्बन् विशेष रूप से कर रहे हैं।

विशेष–ऐसा वर्णन सर्वथा नूतन एवं चमत्कार पूर्ण है, जो अन्य राम काव्यों में उपलब्ध नहीं है ?

जाम्बवान् बोले, मैंने पहले ही उत्तर दिशा में 'मेरू' पर्वत क्षेत्र के भीतर 'कृष्ण' पर्वत पर संजीवनी है यह कहाँ है। अब उसकी स्थिति को समझो। **वहाँ चार औषधियाँ हैं। १. एक है "मरे हुए को जीवन देने बाला' २. दूसरा है "कटे हुए शरीर को**

एक कर देने बाला'' ३. तीसरा है **''शरीर में घुसे हुए अस्त्र शस्त्रों को निकाल देने बाला''** और ४ चौथा है **–युद्ध में हुए विकृत रूप को पहले की तरह कर देना।** इस औषधि के ये चार फल हैं। यह औषधि तब निकली जब समुद्र का मन्थन हुआ। इसकी शक्ति को जानकर गोपनीयता रखी गई। इसके गुणों का प्राचीन ऋषि मुनियों ने वर्णन किया। इस औषधि की रक्षा के लिए वहाँ हजारों देवदूत तत्पर रहते हैं। लेकिन तुम्हें वे नहीं रोकेंगे।

यह सुनकर हनुमान् बोले। यदि ऐसा है तो लक्ष्मण के साथ सभी जीवित हो जायेंगे। ऐसा कहकर हनुमान अपने शरीर को विशाल आकार का बनाकर उत्तर दिशा की ओर चले। वहाँ मालूम पड़ता था कि आगे-आगे हनुमान् जा रहे हैं और पीछे-पीछे समुद्र जा रहा है। बड़े-बड़े ज्ञानी भी नहीं समझ सके कि यह क्या है। किसी ने समझा कि स्वयं सूर्य है, किसी ने समझा कि स्वयं ज्योति है, किसी ने समझा कि वायु है; और कुछ ने समझा कि यह निराकार ब्रह्माण्ड के निर्माता–सृष्टि के कारण स्वरूप निराकार 'ब्रह्म' हैं। इस तरह भिन्न-भिन्न लोगों ने विभिन्न रूप में आकाश मार्ग से जाते हुए हनुमान को निश्चित रूप में नहीं समझा।

विशेष :–यहाँ महा-कवि 'माघ' के एक पद्य का स्मरण हो रहा है, जब आकाश मार्ग से महर्षि नारद भगवान् श्री कृष्ण के पास आ रहे थे। श्लोक यह है।

''गतं तिरश्चीन मनूरुसारथे : प्रसिद्धमूर्ध्व ज्वलनंहविर्भुजः, पतत्यधो-धाम-विसारि सर्वतः किमेदित्याकुल मीक्षितं जनैः

अर्थात् सूर्य की गति अधमुख है, अग्नि की गति ऊर्ध्व है, लेकिन चारों तरफ प्रकाश फैलाते हुए पृथ्वी पर आते हुए क्या है, कौन है, इसे व्याकुल होकर लोगों ने देखा।

इस तरह हनुमान शीघ्र ही हिमालय पर पहुँच गये। जहाँ दयालु, क्षमा-शील महर्षिगणों ने हनुमान को शुभकामना प्रदान की। इसके बाद हनुमान उस कैलाश पर्वत पर पहुँचे जहाँ साक्षाता अर्धनारीश्वर ''गौरीशंकर'' विराजमान हैं। उस कैलाश पर्वत को दोनों हाथों से नत मस्तक होकर हनुमान् ने प्रणाम किया। वहाँ भगवान महेश्वर ने स्नेह की नजर से भगवती पार्वती को दिखाया कि 'राम दूत' यह हनुमान राम-कार्य के लिए जा रहा है। अब निश्चित है क्रि राक्षसों का नाश हो गया। कल हमलोग भयंकर युद्ध को देखेंगे।

तब हनुमान् क्षण मात्र में 'मेरु' पर्वत पर पहुँच गये। जहाँ महान एक जम्बू नाम का वृक्ष था। जिससे उसका नाम ''जम्बू द्वीप'' पड़ा। वहाँ सृष्टि-कर्त्ता चतुर्मुख ब्रह्मा को देखकर प्रणाम किया। तब भगवान् नारायण के दर्शन हुए। जहाँ वेदज्ञ वेद पाठ

कर रहे थे। उसके बाद उत्तर पूर्व की दिशा में अर्थात अग्नि कोण में आठ भुजा बाले भगवान 'रुद्र' का दर्शन किया! जहाँ से हजार किरणों का प्रकाश हो रहा था। वहाँ पूजा के फूलों से ढ़की हुई एवं स्वर्ण आभूषणों से विभूषिता पार्वती विराजमान थी।

हनुमान् ने सोचा कि क्या प्रातः काल हो गया ? तब तो सभी परिश्रम व्यर्थ हुआ, क्योंकि सूर्योदय से पहले ही औषधि लेकर लंका के युद्ध क्षेत्र में लौटना आवश्यक है। तब उन्हें स्मरण हुआ। सूर्य तो पूर्व दिशा में उदित होते हैं। यह तो उत्तर दिशा है। इसके बाद हनुमान 'नील पर्वत' पर पहुँच गये। जहाँ संजीवनी नाम की औषधि थी। हनुमान को देखकर देवता गण बोले। तुम शीघ्र अपने कामों को सम्पन्न करके इन औषधियों के साथ लौटो। हनुमान ने सोचा औषधियों के विषय में तर्क-वितर्क करना बेकार है। सबों को लेकर आकाश मार्ग से चल दिये।

यहाँ लंका में रामचन्द्र की दुर्दशा का वर्णन और विलाप महान कष्ट-जनक था। राम दोनों आँखें फाड़कर जाम्बवान् और विभीषण को देख रहे थे। **राम ने कहा क्या 'जाम्बवान' जीवित हैं। मैं तो सीता के कारण बुद्धिहीन हो गया।** मेरा मन विकारयुक्त हो गया। और **अनुज लक्ष्मण के द्वारा मना करने पर भी माया-मृग के पीछे दौड़ा। स्त्री के मोह से मैंने ऐसा किया।** यह तो मेरे पूर्व जन्म का फल है। मेरे सभी बन्धु-बान्धब मर गये। मेरा अनुज मर गया। अब मेरा किसके साथ सम्बन्ध रहा। वेद-विहित कार्य करने का और सत्य-निष्ठा का मुझे क्या फल हुआ ? मेरी दया बेकार है। मेरा भाई मर गया। अब राक्षस को मारने से क्या फल ? **भविष्य में संसार के लिए कहेंगे राम के कारण से दशरथ मर गये। 'जटायु' मर गये। मित्र नष्ट हो गये, और सहोदर भाई मर गया। तो भी स्त्री के कारण जीवित है। ऐसा नहीं होगा, में प्राणों को त्याग दूँगा।**

इस तरह सर्व जनसाधारण मानवीय विलाप सुनकर जाम्बवान राम के पैरों पर गिरकर बोले, भगवान, मैं एक बात कहता हूँ कृपया सुनें, **आप 'अज्ञेय' हैं किन्तु क्या अपने विषय में भी 'अज्ञेय' हो गये। इसलिए मैं स्मरण दिलाता हूँ।**

आप परात्पर-परब्रह्म हैं और आप के ब्रह्मास्त्र देवताओं, मनुष्यों और राक्षसों के नाश करने में समर्थ है, किन्तु आप के कुछ नहीं करने पर भी मरे हुए महावीर–हनुमान् चेतना प्राप्त कर गये। **संकट निवारण के लिए 'संजीवनी' लाने के लिए भेजा। जिसके विषय में मुझको छोड़कर यहाँ कोई भी कुछ भी नहीं जानता है। इस औषधि के विषय में पहले ही विस्तृत रूप में वर्णन करके बता दिया गया है।**

इसी बीच आकाश में बहुत जोरों से शब्द हुआ। जिससे सभी दिशायें व्याप्त हो गयीं। समुद्र के जल उछलने लगे। वह भयंकर नाद-ध्वनि ब्रह्माण्ड व्यापी था। उसे

सुनकर जाम्बवान बोले। आ गया, आ गया। हनुमान के शरीर के वायु के स्पर्श से ही सभी वानर सैनिक जीवित हो गये। केवल समुद्र में गिरे हुए राक्षस नहीं जी सके। यह तो विचित्र घटना हुई कि लक्ष्मण के शरीर से बाण स्वयं निकल गये। उनकी पीड़ा दूर हो गयी। सहसा लक्ष्मण ज्ञान पूर्वक उठ गये। जैसे कोई शयन से उठता है। सभी प्रसन्न हो गये देवगण स्तुति करने लगे। मुनिगण चारो वेदों का पाठ करने लगे। रामचन्द्र ने अपने अनुज को दोनों हाथों से छाती में लगा लिया। ये दृश्य अलौकिक एवं चमत्कार जनक थे।

अति विशेष :–यहाँ संजीवनी कथा का वर्णन कवि कम्बन ने सभी रामायणों और सभी राम काव्यों की कथा से सर्वथा भिन्न रूप में किया है। यह अभिनव कथा-शिल्प वस्तुतः मननीय है।

"इति औषधि पटल"

४. कलियाहुपा पडलम–विनोदोत्सव पटल

इस छोटे से पटल में लक्ष्मण के बध के समाचार से लंका में आनन्दोत्सब का अद्‌भुत रसमय वर्णन है।

लंका में लक्ष्मण-बध के समाचार से महान् उत्सव हुआ। जिस उत्सव का कोई पारावार नहीं है। रावण आनन्दोत्सव में नारियों और अप्सराओं के साथ नाना प्रकार की काम कीड़ाओं और सुरापान में लीन हो गया। रम्भा, मेनका, तिलोत्तमा, और उर्वशी प्रभृति सुन्दर तथा आकर्षक स्तन वाली अप्सरायें नाच रही थीं। उन नारियों के बहुत बड़े लम्बे केश-पाश पैर तक लटके हुए थे। जिससे वस्त्र रहित उन नारियों के नितम्ब भाग (पीछे के भाग) छिप गये थे। जिससे उनकी कुछ लज्जा अर्थात पीछे का भाग ढ़क जाने से संरक्षित हो रही थी (यहाँ नारियों के लम्बे केश पाश का वर्णन कवि ने अद्‌भुत रूप से किया है। ऊपर में उसका संकेत मात्र है।)

कुछ नारियाँ हँसते हुए नाच रही थीं। कुछ नारियाँ प्रचण्ड रतिक्रीड़ा कारण थक कर रोती हुई छोड़ देने के लिए प्रणाम कर रही थी। कुछ नारियाँ ग्राढ़ आलिंगण में बँधी हुई थीं। कुछ नारियाँ नंगी होकर अपने केशों का शृंगार करती हुई देखी जा रही थीं (यहाँ भी काम क्रीड़ा का विचित्र वर्णन है। इतना तो सूत्र रूप में यहाँ दिया गया है।

इस तरह रावण जब काम-क्रीड़ा में लीन था, तभी वानरों के गरजने की आवाज सुनकर समझ गया कि वे वानर सैनिक फिर जीवित हो गये। लक्ष्मण फिर जी गये। हनुमान् के द्वारा संजीवनी लाकर ऐसा चमत्कार किया गया शत्रु निरापद हो गये। रावण यह सब जानकर शीघ्र ही विलास मण्डप से उठकर मन्त्रणा गृह-विचार विर्मश कक्ष में पहुँच गये।

"इति विनोदोत्सब पटल"

५. माया शिदैप पडलम'' ''माया सीता पटल''

इस पटल में रावण और मेघनाद ने मिलकर मंत्रणा की। एक माया की 'सीता' बनाकर रण-भूमि में उसकी हत्या दिखाकर राम के शिविर में कोलाहल करने का वर्णन प्रमुख है।

मन्त्रणा गृह में पहुँचकर इन्द्रजित-मेघनाद ने पिता के साथ विचार कर गुप्त मन्त्रणा कर निश्चय किया कि एक माया की सीता बनाकर उसको रण-भूमि में मारेगा, और घोषणा करेगा कि अयोध्या जाकर भरत, शत्रुघ्न आदि को भी मारकर अयोध्या को ध्वस्त कर देगा।

यह सुनकर राम लक्ष्मण खुद ही लंका छोड़कर अयोध्या लौट जायंगे। मैं (मेघनाद) निकुंमिला-काली की पूजा करके यज्ञ करूँगा। लेकिन मेघनाद की यह योजन सफल नहीं हुई।

मन्त्रणा गृह में आकर रावण ने विचार करना प्रारम्भ किया कि अब क्या करना चाहिए। उसने विगत दुःखों का भी सविस्तार वर्णन किया। वहाँ एक बार पुनः रावण के नाना माल्यवान् ने कहा। हे राजन् आप एक बार पुनः सोचें। जिस हनुमान् ने लंका से अत्यन्त दूर मेरु पर्वत पर कुछ क्षणों में ही पहुँचकर औषधि बाले सम्पूर्ण पर्वत को उठाकर ले आये और फिर उसे वहीं लौटा आये। क्या वह सामान्य वानर है। जो उतने बड़े विशाल पर्वत को ला सकता है, क्या वह यदि सम्पूर्ण मेरु पर्वत को लाकर लंका के ऊपर गिरा दे तो क्या होगा ?

शास्त्र में और लोक में यह प्रसिद्ध है कि ब्रह्मा, विष्णु और महेश ये त्रिदेव त्रिगुणात्मक हैं। अर्थात 'सत्वरज, और तम ये तीनों गुण क्रमशः तीनों देवताओं में हैं। किन्तु मेरे विचार (माल्यवा के विचार से) यही तथ्य नहीं है। किन्तु आदि देव के समान हनुमान -चौथे देवता हैं। इसलिए आज तक जो शास्त्र में ''त्रयोदेवा'' कहा जाता है। अब उसके स्थान पर ''चत्वारो देवा'' कहा जाना चाहिए।

जो मर गये वे तो मर गये जो जीवित हैं उन्हें पुनर्जन्म मिला। यही समझें। इसलिए अब भी मेरा विचार है कि आदर के साथ **'जानकी'** राम को समर्पित की जाय और आप राम लक्ष्मण की शरण में जांय। फिर भविष्यवेत्त माल्यवाना ने कहा। सभी वीर मर गये केवल आप, मेघनाद तथा यह लंका नगरी विद्यमान है। इसलिए आगे विजय की क्या कामना है ? आप स्वथ्य और स्थिर हो जांय।

यह सुनकर रावण की आँखें क्रोध से लाल हो गयीं। रावण ने कहा अपनी कामना के पूर्ण हुए बिना मुझसे सीता नहीं छोड़ी जा सकती है। आप लोग भयभीत हो गये

हैं। मैं न भयभीत हूँ न कायर हूँ। यद्यपि विभीषण ने ठीक कहा था कि रामचन्द्र नर मुनि या नारायण नहीं हैं। ये तो ''परात्पर-परब्रह्म स्वरूप'' हैं। यह तो सत्य है। लेकिन वीरता का यही लक्ष्य है, जो गया सो गया। जो बचा है उसीसे काम करना चाहिए। जो होना होगा वही होगा। मैं निंकुम्भिला-काली के मन्दिर में जाकर यज्ञ करूँगा। यज्ञ सम्पन्न होने पर सभी दुःख नष्ट हो जायंगे। तब मेघनाद ने पूछा। क्या विभीषण के द्वारा रास्ता बता देने से मेरा यज्ञ पूर्ण होगा ? रावण ने कहा ठीक है दूसरा कोई उपाय भी नहीं है।

तब इन्द्रजित ने कहा-मैं **माया मयी सीता** बना रहा हूँ। उसको युद्ध-भूमि में ले जाकर तलवार से काट दूँगा। देखकर राम निश्चय करेगा कि अब यहाँ मेरा क्या प्रयोजन है ? यह जानकर अयोध्या में भी सभी पारिवारिक सदस्यों का नाश हो जायेगा, और अयोध्या नगरी ध्वस्त हो जायेगी। इसलिए राम लक्ष्मण निश्चित रूप से लौट जायँगे। इसी बीच में **निंकुम्भिला** के मन्दिर जाकर यज्ञ सम्पन्न करूँगा। यह सुनकर रावण ने कहा वत्स, साधुबाद, ऐसा ही करो। यही सबसें शोभन काम है। इस बीच सुग्रीव ने राम को परामर्श दिया कि हमलोगों के द्वारा फिर लंका जला दी जाय, और उसके स्वरूप को निर्मूल कर दिया जाय। जब तक ऐसा विचार विमर्श हो ही रहा था तब तक हनुमान् लाये हुए पर्वत को सुमेरु पर्वत के क्षेत्र में रखकर लौट गये। और बहुत जोरों से भयंकर नाद किया। जिससे लंका में भूकम्प होने लगा। हनुमान पश्चिम द्वार पर आ गये, जहाँ मेघनाद आकर मिला।

वह मायावी-मेघनाद जानकी के समान एक नारी का निर्माण करके एक हाथ से उसे केश पकड़े हुए दूसरे हाथ से रक्त-मय एक तलवार धारण करके हनुमान से बोला। सुनो रे वायु पुत्र, तुम्हारे सामने में सीता को मारूँगा। यह देखकर हनुमान विचलित हो गये। हनुमान ने सोचा यह तो वही 'सीता' है जिसे मैं ने अशोक वाटिका में देखी थी। हनुमान चिन्तित होकर बोले हे इन्द्रजित , ब्राह्मण कुल में उत्पन्न होकर स्त्री-बध के समान पाप क्यों कर रहे हो ?तुम्हारे प्रपितामह ब्रह्मा थे। मेघनाद ने उत्तर दिया। मैंने पाप और पुण्य का विचार छोड़ दिया है। अभी इसको मारकर लंका को शत्रु रहित सुरक्षित करूँगा। इसको तो (सीता को तो) मरी हुई ही समझो। अगर तुमसे सम्भव हो तो जाओ और अयोध्या की रक्षा करो। इसके बाद मैं अयोध्या जा रहा हूँ। वहाँ अयोध्या में कोई जीवित नहीं रहेगा।

यहाँ सीता विलाप कर रही थी। तभी उस माया-रूपिणी सीता को तलवार से काट दिया। सीता के मस्तक कट गये। ऐसा करके मेघनाद दूसरे रास्ते से निकुंभिला मन्दिर चला गया। यह सब देखकर हनुमान 'किं कर्त्तव्यविमूढ़'' हो गये, ये सोचते हैं। पापी मेघनाद ने लक्ष्मीस्वरूपा 'सीता' को मार दिया। मैं विवश होकर उसे देखता रहा और

अपने प्राणों को नहीं छोड़ सका। मैं क्या करूँ ? यह भी सोच रहे हैं कि इन्द्रजित अयोध्या जाकर उसे नाश करेगा। यदि मैं उसके पीछे अयोध्या जाऊँगा तो राम इस घटना को नहीं जानेंगे। इसलिए अन्ततः रोते हुए 'राम' के पास आकर हनुमान जमीन पर गिर गये।

जमीन पर गिरे हुए हनुमान् को सहसा रामचन्द्र ने उठाकर पूछा, क्या हुआ ? हनुमान ने सभी बातें कह दीं। राम स्तब्ध, निश्चल, चेतना शून्य हो गये। यह क्या हुआ ? यह किसी ने नहीं समझा। तब चिन्तित और व्यग्र 'विभीषण' ने शीतल-जल छिड़ककर राम की चेतना को लाया। वहाँ लक्ष्मण की स्थिति भी विचित्र थी। मेघनाद ने सब कुछ नाश कर दिया। अब तो इस लौह नगरी लंका में रावण हमलोगों को मार गिरायगा। इस तरह वहाँ सभी मौन थे।

तब हनुमान बोले। दोनों भाई मेरे कन्धे पर बैठकर चलें। शीघ्र ही अयोध्या पहुँचा दूँगा। वहाँ जाकर सभी राक्षसों को मारूँगा। इस समय तो सीता की हत्या देखकर मैं अचेत हो गया था। तभी इन्द्रजित् भाग गया। यह सब सुनकर विभीषण ने सविनय निवेदन किया। मेरा अनुमान् है यह **माया-मयी** घटना है। मैं स्वयं लंका जाकर सब कुछ देखकर शीघ्र आ रहा हूँ। तब आगे क्या करना चाहिए यह निश्चय करेंगे।

यह कहकर विभीषण लंका में प्रवेश कर गये। वहाँ सीता को पूर्ववत् देखा, वहाँ 'त्रिजटा' सीता को सान्त्वना दे रही थी। मेघनाद सभी सैनिकों के साथ 'निंकुम्भिला मन्दिर यज्ञ के लिए चला गया। यह देखकर आनन्द के साथ विभीषण ने राम के समीप लौटकर सब कुछ निवेदन किया। सभी स्थिर हो गये। इन्द्रजित-मेघनाद की 'माया' सफल नहीं हो सकी। **यह वर्णन अन्य राम काव्यों में नहीं है।**

"इति माया सीता पटल"

६. निदुम् विलै याहप् पडलम—निकुंम्भिलायाग पटल

इस पटल में मेघनाद लंका स्थित **निंकुम्भिला'** नाम **की भगवती काली के मन्दिर जाकर विजय के** लिए यज्ञ करने की घटना का वर्णन प्रधान है।

लंका में भगवती **निंकुम्भिला** के मंदिर पर इन्द्रजित–मेघनाद के द्वारा विजय के लिए यज्ञ का विधान प्रारम्भ किया गया। वहाँ फिर वानर और राक्षस सेनाओं के बीच और लक्ष्मण और मेधनाद के बीच कवि कम्बन ने अपनी शैली में पहले की तरह युद्ध का वर्णन किया है।

भगवान रामचन्द्र माया-सीता के बध प्रदर्शन सम्बन्धी कथा को सुनकर संतुष्ट हो गये। और विभीषण को हृदय से आलिंगन करके बोले। जहाँ तुम हो, मारुति है,

मेरी तपस्या है और ईश्वर है वहाँ दुःख का स्थान कहाँ है ? तब विभीषण ने कहा कि यदि आज्ञा हो तो लक्ष्मण को लेकर मेघनाद का निंकुम्भिला-यज्ञ ध्वंस कर दिया जाय। राम ने वैसा ही आदेश दिया। **पुनः राम ने लक्ष्मण को उपदेश** दिया तुझपर यदि मेघनाद ब्रह्मास्त्र चलाये तो तुम केवल उसको रोकना खुद ब्रह्मास्त्र नहीं चलाना। यदि तु ब्रह्मास्त्र चलाऐगे तो तीनों भुवन नष्ट हो जायेंगे। अगर वह मेघनाद पाशुपतास्त्र या नारायणास्त्र चलाले तो भी तुम उसको विफल करोगे। स्वयम् उन अस्त्रों को नहीं चलाना केवल शत्रु के साथ युद्ध करके उसे नाश कर लौट जाना। इस बात का ध्यान रखकर कि 'इन्द्रजित' बहुत बड़ा बलशाली और मायावी है। इसलिए जब वह थक जाय, तब तुम्हारे द्वारा अस्त्र चलाया जाय। इस तरह रामचन्द्र ने लक्षमण को अनेक प्रकार के **युद्ध का रहस्य बताया**। साथ ही यह कहकर लक्ष्मण को श्री विष्णु का **सत्य** नाम का धनुष दिया। इसके विषय में **''तमिल ऋषि अगस्त्य'' ने** पहले ही विवरण दिया है। इस तरह लक्ष्मण युद्ध के लिए प्रस्थान कर गयें। देवगण जय घोष और मांगलिक वचन कहते हुए आशीर्वाद देने लगे। अंगद, हनुमान्, नील, आदि सेनापति हाथों में **उल्का (लुकाठी)** लेकर लक्ष्मण के पीछे चले।

राक्षस सेना पक्ष में बहुत से सैनिक अनेक युद्ध वाद्यों से अस्त्र शस्त्र के साथ उपस्थित होकर यहाँ तैयार थे। इस काण्ड के २८-२९ पद्यों के द्वारा। ''**पडै निनर्दु पल्लरियाय पल्लार** पडै निनर्दु पल्लिपिरैवण'' इति। इस पद्य में **''यमक'' नामक अलंकार का चमत्कार देखने योग्य है।**

लक्ष्मण लंका की दक्षिण-दिशा में युद्ध करने के लिए चले जहाँ उनके बाण संचालन से झञ्झाबात के समान प्रचण्ड पवन से सभी दिशायें व्याप्त हो गयीं। लक्ष्मण के द्वारा शत्रु के कटे हुए मस्तक आकाश में जाकर पृथ्वी पर नक्षत्र की तरह गिरने लगे।

इन्द्रजित् ने अपने सैनिकों को छिन्न-भिन्न होते देखकर यथोचित उपाय करना चाहिए यह सोचने लगा। यज्ञ में लगा हुआ इन्द्रजित् ने देखा कि दो कुण्ड की अग्निज्वाला हवन के द्रव्य, और कुश आदि यज्ञ के साधन छिन्न-भिन्न हो गये। मन्त्रोच्चारण भूल गया। सब कुछ छोड़कर वह युद्ध स्थल पर आ गया। उसने यह भी निश्चय किया कि यज्ञ तो विध्वंस हो गया। इसलिए विजय की आशा क्षीण हो गयी। अब लक्ष्मण के साथ युद्ध करना ही उचित है। युद्ध क्षेत्र में आते ही हनुमान यह उद्विग्न करने बाला यह वाक्य कहा। क्या तुम्हारी माया कहाँ गयीं, क्या अयोध्या नगरी नष्ट हो गयी ? क्या भरत शुत्रुघ्न मारे गये, क्या राम पर नाग पाश, ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र और नारायणास्त्र चलाओगे ? तुम्हारी माया कहाँ चली गयी ? तुम्हारे यमराज उपस्थित हैं, अपने प्राणों की रक्षा करो।

यह सुनकर मेघनाद बोला। ''यज्ञ ध्वसं हो गया, हमलोग जीत गये।'' इस वीरता पूर्ण वचन को छोड़कर मेरे साथ युद्ध करते हुए वीरता दिखाओ इस तरह दोनों सेनाओं के बीच तुमुल युद्ध प्रारम्भ हो गया। जहाँ मेघनाद द्वारा चलाये गये अस्त्र से हनुमान् निर्वल हो गये। तब तक अंगद को देखकर 'मेघनाद' बोला। क्या हनुमान स्वर्ग चला गया ? यह सुनकर अंगद कुपित होकर युद्ध के लिए तैयार हो गया।

तब फिर मेघनाद ने कहा क्या तुम हनुमान से अधिक वलशाली हो जाओ जाओ। यह कहकर लक्ष्मण के साथ युद्ध करने के लिए मेघनाद आ गया। इसी बीच मूर्च्छित हनुमान पुनः चेतना प्राप्त कर पहले की तरह प्रसन्न होकर वहाँ पहुँच गये और लक्ष्मण को अपने कन्धों पर रखकर युद्ध के लिए निवेदन किया। लक्ष्मण और मेघनाद के बीच दोनों पक्ष से अनेक प्रकार के अलौकिक अस्त्र का संचालन हुआ। जिससे यह युद्ध भी महान् प्रलयकारी हुआ। कवि कम्बन ने इस युद्ध का भी वर्णन पहले की तरह किया है जिसका पुनः पुनः वर्णन करना **पिष्ट पेषण** (पीसे हुए को सीपना के समान) होगा।

''इति निंकुम्भिलायाग पटल''

७. ''इनदिरशितु वदैप पडलम''–इन्द्रजित् बध पटल

इस पटल में रावण मेधनाद के बीच कटु संम्बाद का तथा लक्ष्मण द्वारा मेधनाद बध का वर्णन मात्र मुख्य है।

यहाँ रावण और मेघनाद के बीच कटु सम्बाद के साथ लक्ष्मण और मेघनाद के बीच अत्यन्त तीक्ष्ण युद्ध तथा इन्द्रजित के मरण की कथा का सविस्तार वर्णन रोमाञ्चकारी है।

समर-भूमि में कुछ वानरों ने कहा 'इन्द्रजित' आकाश में विलीन हो गया। वह ठग और मायावी है। कुछ भी कर सकता है। इसी बीच वहाँ एका एक रावण पहुँच गया। पुत्र को देखकर रावण बोला। मालूम होता है कि तुम्हारा यज्ञ पूर्ण नहीं हुआ। इसलिए ऐसी स्थिति है। इन्द्रजित ने कहा लक्ष्मण ने यज्ञ स्थल को अपने घेरे में लेकर यज्ञ को ध्वंस कर दिया। मेरे द्वारा बह्मास्त्र, पाशुपत्तस्त्र और नारायणास्त्र ये तीन अलौकिक अस्त्र चलाये गये जिन्हें लक्ष्मण ने रोक दिये। वहाँ नारायणास्त्र लक्ष्मण की परिक्रमा करके निकल गया। यह तो हमलोगों के पाप का फल है। अब निश्चित है कि लक्ष्मण मुझे मार देगा।

वीर रस वर्णन–यह सुनकर रावण हँसकर बोला, पुत्र, चिन्ता मत करो। मैं आज ही तुम्हारे शत्रु को जीतूँगा। मैंने शत्रुता अपने बल पर की है न कि सैन्यबल पर और

मेरी तपस्या है और ईश्वर है वहाँ दुःख का स्थान कहाँ है ? तब विभीषण ने कहा कि यदि आज्ञा हो तो लक्ष्मण को लेकर मेघनाद का निंकुम्मिला-यज्ञ ध्वंस कर दिया जाय। राम ने वैसा ही आदेश दिया। **पुनः राम ने लक्ष्मण को उपदेश** दिया तुझपर यदि मेघनाद ब्रह्मास्त्र चलाये तो तुम केवल उसको रोकना खुद ब्रह्मास्त्र नहीं चलाना। यदि तु ब्रह्मास्त्र चलाअेगे तो तीनों भुवन नष्ट हो जायेंगे। अगर वह मेघनाद पाशुपतास्त्र या नारायणास्त्र चलाले तो भी तुम उसको विफल करोगे। स्वयम् उन अस्त्रों को नहीं चलाना केवल शत्रु के साथ युद्ध करके उसे नाश कर लौट जाना। इस बात का ध्यान रखकर कि 'इन्द्रजित' बहुत बड़ा बलशाली और मायावी है। इसलिए जब वह थक जाय, तब तुम्हारे द्वारा अस्त्र चलाया जाय। इस तरह रामचन्द्र ने लक्षमण को अनेक प्रकार के **युद्ध का रहस्य बताया।** साथ ही यह कहकर लक्ष्मण को श्री विष्णु का **सत्य** नाम का धनुष दिया। इसके विषय में ''**तमिल ऋषि अगस्त्य'' ने** पहले ही विवरण दिया है। इस तरह लक्ष्मण युद्ध के लिए प्रस्थान कर गयें। देवगण जय घोष और मांगलिक वचन कहते हुए आशीर्वाद देने लगे। अंगद, हनुमान्, नील, आदि सेनापति हाथों में **उल्का (लुकाठी)** लेकर लक्ष्मण के पीछे चले।

राक्षस सेना पक्ष में बहुत से सैनिक अनेक युद्ध वाद्यों से अस्त्र शस्त्र के साथ उपस्थित होकर यहाँ तैयार थे। इस काण्ड के २८-२९ पद्यों के द्वारा। ''**पडै निनर्दु पल्लरियाय पल्लार** पडै निर्नदु पल्लिपिरैवण'' इति। इस पद्य में ''**यमक'' नामक अलंकार का चमत्कार देखने योग्य है।**

लक्ष्मण लंका की दक्षिण-दिशा में युद्ध करने के लिए चले जहाँ उनके बाण संचालन से झञ्झाबात के समान प्रचण्ड पवन से सभी दिशायें व्याप्त हो गयीं। लक्ष्मण के द्वारा शत्रु के कटे हुए मस्तक आकाश में जाकर पृथ्वी पर नक्षत्र की तरह गिरने लगे।

इन्द्रजित् ने अपने सैनिकों को छिन्न-भिन्न होते देखकर यथोचित उपाय करना चाहिए यह सोचने लगा। यज्ञ में लगा हुआ इन्द्रजित् ने देखा कि दो कुण्ड की अग्निज्वाला हवन के द्रव्य, और कुश आदि यज्ञ के साधन छिन्न-भिन्न हो गये। मन्त्रोच्चारण भूल गया। सब कुछ छोड़कर वह युद्ध स्थल पर आ गया। उसने यह भी निश्चय किया कि यज्ञ तो विध्वंस हो गया। इसलिए विजय की आशा क्षीण हो गयी। अब लक्ष्मण के साथ युद्ध करना ही उचित है। युद्ध क्षेत्र में आते ही हनुमान यह उद्‌विग्न करने बाला यह वाक्य कहा। क्या तुम्हारी माया कहाँ गयीं, क्या अयोध्या नगरी नष्ट हो गयी ? क्या भरत शुत्रुघ्न मारे गये, क्या राम पर नाग पाश, ब्रह्मास्त्र, पाशुपतास्त्र और नारायणास्त्र चलाओगे ? तुम्हारी माया कहाँ चली गयी ? तुम्हारे यमराज उपस्थित हैं, अपने प्राणों की रक्षा करो।

यह सुनकर मेघनाद बोला। ''यज्ञ ध्वसं हो गया, हमलोग जीत गये।'' इस वीरता पूर्ण वचन को छोड़कर मेरे साथ युद्ध करते हुए वीरता दिखाओ इस तरह दोनों सेनाओं के बीच तुमुल युद्ध प्रारम्भ हो गया। जहाँ मेघनाद द्वारा चलाये गये अस्त्र से हनुमान् निर्वल हो गये। तव तक अंगद को देखकर 'मेघनाद' बोला। क्या हनुमान स्वर्ग चला गया ? यह सुनकर अंगद कुपित होकर युद्ध के लिए तैयार हो गया।

तब फिर मेघनाद ने कहा क्या तुम हनुमान से अधिक वलशाली हो जाओ जाओ। यह कहकर लक्ष्मण के साथ युद्ध करने के लिए मेघनाद आ गया। इसी बीच मूर्च्छित हनुमान पुनः चेतना प्राप्त कर पहले की तरह प्रसन्न होकर वहाँ पहुँच गये और लक्ष्मण को अपने कन्धों पर रखकर युद्ध के लिए निवेदन किया। लक्ष्मण और मेघनाद के बीच दोनों पक्ष से अनेक प्रकार के अलौकिक अस्त्र का संचालन हुआ। जिससे यह युद्ध भी महान् प्रलयकारी हुआ। कवि कम्बन ने इस युद्ध का भी वर्णन पहले की तरह किया है जिसका पुनः पुनः वर्णन करना **पिष्ट पेषण** (पीसे हुए को सीपना के समान) होगा।

''इति निंकुम्भिलायाग पटल''

७. ''इनदिरशितु वदैप पडलम''–इन्द्रजित् बध पटल

इस पटल में रावण मेधनाद के बीच कटु संम्बाद का तथा लक्ष्मण द्वारा मेधनाद बध का वर्णन मात्र मुख्य है।

यहाँ रावण और मेघनाद के बीच कटु सम्बाद के साथ लक्ष्मण और मेघनाद के बीच अत्यन्त तीक्ष्ण युद्ध तथा इन्द्रजित के मरण की कथा का सविस्तार वर्णन रोमाञ्चकारी है।

समर-भूमि में कुछ वानरों ने कहा 'इन्द्रजित' आकाश में विलीन हो गया। वह ठग और मायावी है। कुछ भी कर सकता है। इसी बीच वहाँ एका एक रावण पहुँच गया। पुत्र को देखकर रावण बोला। मालूम होता है कि तुम्हारा यज्ञ पूर्ण नहीं हुआ। इसलिए ऐसी स्थिति है। इन्द्रजित ने कहा लक्ष्मण ने यज्ञ स्थल को अपने घेरे में लेकर यज्ञ को ध्वंस कर दिया। मेरे द्वारा बह्मास्त्र, पाशुपत्तस्त्र और नारायणास्त्र ये तीन अलौकिक अस्त्र चलाये गये जिन्हें लक्ष्मण ने रोक दिये। वहाँ नारायणास्त्र लक्ष्मण की परिक्रमा करके निकल गया। यह तो हमलोगों के पाप का फल है। अब निश्चित है कि लक्ष्मण मुझे मार देगा।

वीर रस वर्णन–यह सुनकर रावण हँसकर बोला, पुत्र, चिन्ता मत करो। मैं आज ही तुम्हारे शत्रु को जीतूँगा। मैंने शत्रुता अपने बल पर की है न कि सैन्यबल पर और

न पुत्रबल पर। क्या बीस हाथों को रहते हुए सीता को छोड़ देना उचित है ? जब तक वेद रहेंगे और सूर्य चन्द्रमा रहेंगे, तब तक अगर **'राम नाम' रहेगा तो मेरा भी नाम रहेगा**। एक दिन मरना तो निश्चित है। कोई अमर नहीं है। यदि मेरे द्वारा जानकी राम को दी जाती है, तो देवगण आकर बन्धन में देंगे, मेरी निन्दा करेंगे। मेरा तिरस्कार करेंगे। इसलिए यथा सम्भव शत्रु को निर्मूल करके ही मरण का वरण करूँगा।

अधिक कहना बेकार है। तुम अपने महल लौट जाओ। अस्त्रों को शरीर से निकाल कर रात्रि-विश्राम करो। ऐसा कहकर रावण अपने रथ पर चढ़कर चलने लगा। तब 'इन्द्रजित' अपने पिता को प्रणाम कर बोला कृपया आप क्रोध को छोड़ दें। मुझसे जो कुछ सत्य एवं हित वचन कहा गया उसे क्षमा करें। मेरे पराजय के बाद ही आप युद्ध में जाँयें। यह कहकर मेघनाद अपने रथ पर बैठकर पुनः समर-भूमि में चला। राक्षस सैनिक गरजने लगे।

तब विभीषण ने कहा यदि इस समय आप इन्द्रजित को छोड़ देंगे या किसी भी तरह उसका मरण न हो तो, विजय संदिग्ध है। वह वीरों में अग्रगामी वीर है और अलौकिक धनुष धारण करने वाला है। उसके ऊपर देवताओं ने फूल की वर्षा की। इसलिए आप शीघ्रता करें। तब लक्ष्मण भूल गये, जिन अस्त्रों को चलाते थे उन्हें मेघनाद नाश कर देता था। तब विभीषण फिर बोले। यह वीर मेघनाद आकाश में जा सकता है। कोई भी धूर्तता कर सकता है। अन्धकार में नहीं मरेगा। दिन में ही उसका मारना सम्भब है। इस पर चिन्ता कीजिये। इस तरह दोनों के बीच कठोर और क्रूर युद्ध हुआ। दोनों के सैनिकों के बीच में ही भंयकर युद्ध हुआ। इस अद्‌भुत संग्राम में 'इन्द्रजित' का हाथ पहले कट गया। तब उसका मस्तक लक्ष्मण के द्वारा काट दिया गया। उसके कटे हुए मस्तक मुख विजली सहित काले-मेघ की तरह जमीन पर गिर गये वानर नाचने लगे। देवता गण फूल की वर्षा की। लक्ष्मण विजयश्री-प्राप्त कर रामचन्द्र के समीप आये। रामचन्द्र आनन्द से विह्वल हो गये। उनकी आँखों से आनन्द के आँसू बहने लगे। लक्ष्मण को छाती से लगाकर रामचन्द्र ने लक्ष्मण के युद्ध के कष्ट एवं युद्ध की पीड़ा को दूर कर दिया।

फिर राम ने कहा इस विजय का गौरब न तुम्हारा है, न हनुमान का है न देवताओं की विशेषता है। सत्य तो यह है कि यह गौरब विभीषण की निष्ठा और तत्परता का ही है। इसमें कोई संदेह नहीं, यह तो राम के शिविर का समाचार है। रावण शिविर का वृत्तान्त आगे के पटल में पढ़ें।

"इति मेधनाद बध पटल"

८. इरावणन शोहप पडलम—रावण शोक पटल

इस पटल में मेघनाद बध के बाद रावण का शोक वर्णन ही प्रमुख है। इन्द्रजित् बध के बाद रावण के सैनिक भागकर लंका पहुँच गये। मरे हुए राक्षस की नारियाँ युद्ध के प्रांगण में छाती पीटती हुई रो रही थी। इसी बीच किसी ने रावण से जाकर कहा तुम्हारा लड़का मारा गया। यह सुनते ही रावण ने क्रोध से काँपते हुए उस दूत का सर काट दिया। रावण के मन में पुत्र वियोग का दुःख और क्रोध दोनों साथ ही साथ हुए। इसलिए यह घटना हो गयी। रावण चीत्कार करने लगा। हा तात्, हा तात, हा पुत्र, हा प्राण प्रिय, तुम कहाँ गये ? क्या हो गया ? मैंने क्या किंया ? इन करुण विलापों से लंका की किला गूँजने लगीं।

रावण फिर बोला। राम के पक्ष में हर्ष और उल्लास है, वानर नाच रहें है, देव गण दुन्दुभि बजा रहे हैं। भस्मधारी शिव, चक्रधारी विष्णु जो मेरे भय से क्रमशः कैलाश पर और क्षीर सागर में छिपकर रहते थे, वे दोनों आनन्द के साथ बाहर आ गये हें। रावण अपने से कहता है। हे रावण, तुमसे डरकर आकाशचारी देवता गण फिर बाहर निकल आये। इस तरह बोलते हुए रावण कभी उठता है, कभी बैठता है, कभी दौड़ता है, कभी जमीन पर गिरता है, कभी जमीन पर लोटता है जिससे पृथ्वी काँप गयी। (शोकोन्माद के ये सभी लक्षण हैं।)

अतिविशेष :—यहाँ रावण क्रमशः अपने दसों मस्तकों से विभिन्न प्रकार के वचनों से दश प्रकार के शोक को व्यक्त कर रहा है। (१) एक मस्तक ने कहा हे तात आओ (२) दूसरे ने कहा मैं कैसे राज्य करूँगा, (३) तीसरे ने कहा हे पुत्र कहाँ हो, (४) चौथे ने कहा यहाँ आकर मेरा आलिंगन करो। (५) पाँचवें ने कहा क्या हरिण-बाध का प्राण हरते हौं, (६) छट्ठे ने कहा नीलकण्ठ महादेव का वह अस्त्र कहाँ गया, (७) साँतवां पूछता है, क्या तुम ठीक ही मर गये, (८) आठवां बोलता है इन्द्र के किरीट को जीतकर तुमने जिस मस्तक पर रखा था वह मस्तक कहाँ है, (९) नौवां बोलता है क्या नारियाँ अपने मंगल सूत्र को त्याग देगी, और अन्त में (१०) दसवां मस्तक बोलता है, हा तात, हा पुत्र, मुझको छोड़कर तुम किस लोक में चले गये। **(इस तरह रावण-विलाप का वर्णन किसी भी रामायण या रामकाव्य में नहीं है, कवि कम्बन् का यह महान चमत्कार है।)**

विशेष—इसके बाद समर-भूमि में आकर रावण पुत्र के सभी अंगों को छूते हुए विलाप करने लगा। सखियों के साथ माता 'मन्दोदरी; हृदय विदारक कारुणिक विलाप करने लगी वह सर्वथा अवर्णनीय है।

"इति रावण शोक पटल"

९. पडैक्काट चिप् पडलम–सेना सन्दर्शन पटल''

इस पटल में पुनः रावण का आगे युद्ध के लिए सेनाओं के संग्रह का वर्णन प्रमुख है।

सभी राक्षस गण वहाँ पहुँचकर रावण को यथा योग्य सान्त्वना देने लगे और बोले। विभिन्न देशों से विशाल बलशाली योद्धागण आप की सहायता में आये हुए हैं। कृपया उन्हें देखें तथा यथा-योग्य उन्हें आदेश देने की कृपा करें।

रावण ने पूछा, क्या सैन्य समूह आ गये हैं / दूत बोले, हाँ वे लोग कहाँ ठहरेंगे। उनके लिए प्रर्याप्त स्थान नहीं है। फिर भी सागर के समान विभिन्न देशों से आये हुए वीरों को क्रमशः उन सैनिकों से रावण को परिचय कराया गया।

(क) यह शाकद्वीप वासी महावालशाली मेघ को छूने बाला, मायावी है।

(ख) यह कुश-द्वीपवासी साक्षात विजय मूर्ति है।

(ग) यह शाल्मलीद्वीप वासी ''देव विजयी '' है।

(घ) यह क्रौञ्चद्वीप निवासी 'देवानाम् भयंकारक' है।

(ङ) यह प्रवाल पर्वत वासी शुक्राचार्य के राक्षसों के गुरु शुक्रचार्य के ''जारज पुत्र हैं। कवि कम्बन का यह कथा सर्वथा नवीन है। इस तरह का वर्णन वाल्मीकि रामायण आदि में नहीं है।

यहाँ किसी के हाथ में मुद्गर, किसी के हाथ में त्रिशूल' किसी के हाथ में मुशुण्डी (बन्दूक) और किसी के हाथ में धनुष थे। कोई पुस्कर द्वीप वासी था, कोई लक्षद्वीप वासी था। उनमें बहुत से पाताल-वासी यम के समान क्रूर एवं वासुकी नाग के समान विषधर थे।

उन्हें देखकर रावण सीता हरण से लेकर मेघनाद-वध पर्यन्त सभी घटना चक्रों का वर्णन कर गया। यह सुनकर वे सैनिक बोले महाराज, आप ठहरें हमलोग युद्ध क्षे में जा रहे हैं।

इति सेना सन्देश पटल

१०. मूल्पब् बदैप् पडलम–मूल बल बध पटल

इस पटल में 'मूल बल' नाम के सेनापति के बध का वर्णन प्रमुख है।

इसके बाद सभी सेनानायकों से रावण ने कहा। एक रास्ते से जाकर मेरे द्वारा

वानर सेनाओं का नाश कर दिया जा सकता है। तुमलोग दूसरे मार्ग से जाकर राम लक्ष्मण को मारोगे। ऐसा कहकर रावण चला और सोचने लगा मेरी बहुत बड़ी 'मूल बल' सेना पर्याप्त है। इसलिए मूल-बल को भेजकर स्वयं रथ पर चढ़कर वानर सेनाओं के ऊपर आक्रमण करने लिए चला।

इतनी बड़ी सेना लंका में ठहर गयी ही जैसे सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को अपने भीतर लेकर **वामनावतार विष्णु** प्रगट हुए थे। अर्थात मूल बल, सेना इतनी विशाल थी, जिसके ठहरने का स्थान लंका नगरी में असम्भव था। ये मूल-बल अपने विशाल हाथों से समुद्र को चीरकर अपनी इच्छानुसार मछलियों एवं मकर-ग्राहों को मुँह से निगंल गया। इन सैनिकों को देखकर देवता गण भयभीत हो गये। और भगवान नीलकण्ठ के पास जाकर कहने लगे। हम लोग कहाँ ठहरें वह स्थान नहीं दीखता है। ये सैन्य-बल हमलोगों के प्राणों के हरण कर लेंगे। हमलोगों की शक्ति क्षीण हो गयी है। यदि हजारों रामचन्द्र आवें और चौबीस वर्ष पर्यन्त युद्ध करें तो भी ये निशाचर नहीं मारे जा सकेंगे।

भगवान नीलकण्ठ महादेव ने कहा मत डरिये। ये सभी ईश्वर की इच्छा से ही एकत्र हुए हैं। विधि के विधान से ये एक बार ही नाश हो जायंगें। इन सैनिकों को देखकर वानर सैनिक उसी तरह भाग गये जैसे बिल्ली के डर से चूहे भागते हैं। केवल सुग्रीव अंगद सहित हनुमान् रामचन्द्र के पास थे। अन्य सभी डरकर इधर उधर भाग गये।

ऐसा देखकर रामचन्द्र ने विभीषण को कहा। ये सैनिक कहाँ थे ? विभीषण बोले सातो द्वीपों में स्थित सागर के समान ये राक्षस दशों दिशाओं से रावण के द्वारा लाये गये हैं। ये सभी एक बार में ही मरेंगे, यह मेरी अन्तरात्मा कहती है। इसके बाद राम ने अंगद को कहा। अपने सैनिकों को शीघ्र ही लौटाओ। कोई भय का कारण नहीं है। अंगद ने तुरत जाकर अपने सैनिकों को लौटा लिया। इस तरह सभी वानर सैनिक एकत्र हो गये। वे सैनिक बोले, पहले तो एक रावण था। जिसके दस मस्तक और बीस हाथ हैं। अभी असंख्य हाथ और असंख्य मस्तक दीख रहे हैं। क्या होगा। यह नहीं जान रहे हैं।

इसके बाद वानर सैनिक बोले इन सेनाओं के आगे हनुमान, सुग्रीव, अंगद के भुजबल कम दीख पड़ते हैं। यह सुनकर जाम्बवान बोले। हे बुद्धिमान वीर, जिस हनुमान ने साक्षात सूर्य से ही ''ऐन्द्रव्याकरण'' का अध्ययन किया तथा रामचन्द्र साक्षात क्षीर सागरशायी विष्णु ही हैं। तब आप लोगों के भय का क्या कारण है ? और क्यों हमलोग कातर हो रहे हैं।

राक्षसों की संख्या असंख्य हो, इससे क्या उनके पास पाप है, धर्म नहीं है। और

पाप के ऊपर धर्म की हमेशा जीत होती है। यह निश्चित है।

तब वानर बोले। हम लोगों ने माल्यवान माली, कालनेमि, हिरणय कशिपु, मधुकैटम, और हलाहल को देखा है। लेकिन वे भी उतने बलवान नहीं थे।

इसके अतिरिक्त ये मायावी बरदान से उन्मत्त है। इसलिए हमलोग उतने मूल बलो को देखकर चिन्तित हैं। फिर भी ऐसी स्थिति में भी हमलोग युद्ध करेंगे। लेकिन फिर रामचन्द्र के दर्शन होंगे या नहीं इसमें संन्देह है। तब अंगद ने कहा। शत्रु पर विजय हो या शत्रु से पराजय हो इसकी चिन्ता छोड़कर हमलोगों को तैयार हो जाना चाहिए। यही अच्छा है।

रामचन्द्र ने डरे हुए वानरों को देखकर लक्ष्मण को कहा। हे लक्ष्मण, असंख्य राक्षस रहें कोई चिंता नहीं। मेरे आगे वे नहीं ठहर सकेंगे। मेरे कितने सैनिक डरे हुए युद्ध रत देखे जा रहे हैं। इसलिए तुम हनुमान और सुग्रीव के साथ शीघ्र जाकर सेना का सरक्षण करें। लक्ष्मण ने वैसा ही किया। हनुमान लक्ष्मण को अपने कन्धों पर रखकर युद्ध में चले। यह देखकर राम बोले। हे भक्त हनुमान् तुमसे कुछ भी असाध्य नहीं है। जबतक तुम युद्ध भूमि में लक्ष्मण के साथ रहोगे। तब तक कोई कुछ नहीं कर सकता है। तुम्हारी सहायता से ही लक्ष्मण द्वारा इन्द्रजित मारा गया। तुम जाओ। रामचन्द्र पुनः विभीषण से बोले। तुम भी लक्ष्मण के साथ जाओ। क्रूर राक्षसों की माया से लक्ष्मण को सावधान करते रहना। विभीषण ने वैसा ही किया।

सूर्य पुत्र–सुग्रीव राम के साथ चले। भगवान रामचनद्र धनुष लेकर उसकी डोरी को खींचने लगे। लेकिन ऋर्षि गण, देव गण तथा धार्मिक वेदज्ञ राम को अकेले देखकर अधीर हो गये। उनकी आँखें आँसुओं से भर गयीं। उन लोगों ने प्रार्थना की। राम विजयी हों, अब दोनों सेनाओं के बीच विशाल युद्ध प्रारम्भ हो गया। जिसका विस्तृत वर्णन असम्भव और अनावश्यक है। क्योंकि कम्बन् कवि ने अपनी शैली में ही युद्ध का वर्णन किया है। राम के बाण से राक्षस के सैनिक क्रमशः नष्ट होते गये। लेकिन राक्षस के पक्ष में करोड़ों हाथी, घोड़े और रथ थे। राम तो अकेले थे। लेकिन राम कब किस क्षण में किस दिशा में कहाँ जाते हैं कहाँ आते हैं, और कैसे निकल जाते हैं, इस को उनके वेग में कोई नहीं जान सके। राक्षस-चकित हो गये। राम के बाण से वहाँ खून की धारा बहने लगी। शास्त्र में कहा हुआ है कि दही, मधु, दूध, ईंख, लवण, और शुद्ध जल युक्त सात समुद्र है। लेकिन वे सात समुद्र राम के एक धनुष के कारण साथ संख्याओं को छोड़कर एक-रक्त-समुद्र हो गया। इस तरह रावण के 'मूल बल सैनिक'' एक साथ विनष्ट हो गये। देवगण फूल की बर्षा करने लगे। इन्द्र ने जयमाला पहनाई। अब ''अपौरुषेय-वेद'' सुरक्षित हो गये। शेष-नाग ने अपने सर

उठाये। उनके दुःख दूर हो गये। वानर सैनिक निर्भय हो गये। सबों की थकावट दूर हो गयी। ये बातें विद्वान लोग समझें। इस घटना चक्र का यही गम्भीर रहस्य है।

इति मूल बल बध पटल

११. वेलेर्र पडलम्—शक्ति सहन (धारण) पटल

इस पटल में राम रावण के युद्ध में दोनों ओर के सैनिक एवं राम लक्ष्मण के शक्ति सहन का वर्णन प्रमुख है।

पूर्व पटल-'मूल बल बध' पटल में राम के भयंकर युद्ध को देखकर और सुनकर रावण ने असंख्य घोड़े, हाथी एवं संहार कारक धनुष-बाण तर्कश लेकर समर भूमि में प्रस्थान किया। असंख्य करोड़ सदल बल सेनाओं के साथ रावण युद्ध भूमि में सिंह के समान गरजते हुए तीनों भुवनों और चौदहों लोकों को केम्पित कर दिया। फिर वानर के सेना डर गये, और लक्ष्मण के पीछे-पीछे चले। जैसे-जैसे लक्ष्मण वाण चलाते थे वैसे-वैसे दानवों के रक्त की धार में ही तैरते हुए देखे गये, अर्थात **राक्षसों की सेनाओं के रक्त धार में मरें हुए सैनिक तैर रहे थे।**

अपने सैनिकों को नाश होते देखकर 'रावण' चिन्तित हुआ जहाँ वानर केवल वृक्ष और पर्वत के खण्डों से युद्ध कर रहे थे। वहाँ रावण के सैनिक असंख्य, फरसा, शूल, भूशुण्डी, तलवार आदि से युद्ध करते हुए भी गिर रहे हैं। तब रावण ने खुद अस्त्र शस्त्रों को फेंका जिससे वानर छिन्न-भिन्न होकर भागने लगे। तब लक्ष्मण ने कहा। हे वानर सैनिक भय छोड़ दें शीघ्र ही ये सैनिक और लक्ष्मण तैयार हो गये। क्योंकि रावण ने मन्त्र पूरित-अद्वितीय मोहनास्त्र फेंका जिसे देखकर विभीषण ने लक्ष्मण को मन्त्रणा दी। आप तुरत **नारायणास्त्र चला** कर 'रावण' के **'मोहनास्त्र'** को खण्डित करें। लक्ष्मण ने वैसा ही किया। इस पर रावण विभीषिण के ऊपर बहुत क्रुद्ध हुआ क्योंकि विभीषण के द्वारा संकेत दिये जानेपर लक्ष्मण ने रावण के 'मोहनास्त्र' को विखण्डित किया।

इस तरह रावण ने 'विभीषण' के ऊपर अमोघ अस्त्र का प्रहार किया, उसको देखकर लक्ष्मण विभीषण से बोले, भय मत कीजिये मैं ही इस अस्त्र को भी खण्डित कर दूँगा। इसी बीच रावण आकाश में विलीन हो गया। और आकाश से ही **विभीषण के ऊपर दश अमोध बाण चलाये,** हनुमान के ऊपर हजारों बाण फेंके। रावण ने समझा का युद्ध में मेरी जीत हो गयी।

इन सभी घटनाओं को देखकर **जाम्बवान ने 'हनुमान'** के शरीर से सभी बाणों को निकाल दिया। हनुमान तुरत उठकर उत्तर दिशा की ओर जाकर पुनः औषधि के

गन्ध से ही सभी सैनिक उठ गये। लक्ष्मण उठकर दोनों हाथों से हनुमान का आलिंगन किया। और पूछा कि विभीषण कहाँ हैं। हनुमान ने कहा विभीषण आप के पास में ही हैं। इस तरह रावण के सैनिक मारे गये ये सभी घटनायें रामचन्द्र से निवेदित की गयीं। **इस तरह लक्ष्मण, विभीषण, सुग्रीव, अगंद आदि के साथ रामचन्द्र एक पर्वत पर विश्राम के लिए चले गये।**

इति शक्ति सदन धारण पटल

१२ वानर कलंगाण पडलम–वानर समरांगण दर्शन पटल।

इस पटल में वानर की सेनाओं द्वारा समर भूमि दर्शन का वर्णन मात्र प्रमुख है।

श्री राम के विश्राम के बाद कपिराज सुग्रीव श्री राम के समीप आकर यथा योग्य प्रणाम आदि करके मरे हुए विपुल (बहुत) राक्षसों को देखकर आश्चर्यित हुए। सूर्य पुत्र सुग्रीव ने राम से पूछा, कैसे ये विशाल राक्षस मरे। रामचन्द्र सुग्रीव को लेकर युद्ध स्थल दिखाने चले। विभीषण भी समर भूमि पहुँचकर वहाँ भूत, प्रेत, गीध, सियार आदि को घुमते हुए देखकर डर गये। इस समय विभीषण की जो स्थिति हुई वह अवर्णनीय है। वानरों ने विभीषण को पूछा आप ही इस विशाल सेनाओं के बध के कारण का विवरण दीजिये।

विभीषण ने कहा ये पर्वत के समान मरे हुए रावण के गज है। जिन्हें पहाड़ समझकर मेघ उसपर गिर रहे हैं। ये मरे हुए, क्रूर राक्षस पहाड़ के ऊपर सोये हुए की तरह दीख रहे है। आहत होकर समुद्र में गिर गयें हैं। जो वहाँ नावों की तरह दीख रहे हैं। शव राक्षस के माँसों को खाकर ये भूत गण नाच रहे हैं। राक्षसों के खून से व्याप्त आकाश में चन्द्रमा भी सूर्य की तरह लाल दिखाई पड़ते हैं। इस **तरह-चौदह** करोड़ मरे हुए हाथी हैं। जिनके मद जल अभी भी नहीं सूखे हैं। यहाँ कवि ने **वीभत्स रस** का विचित्र वर्णन किया है।

इस तरह ये वानर विभीषण सहित रामचन्द्र के समीप आकर राम के युद्ध बल का कौशल तथा राम के परिश्रम विचार कर चिन्ता करने लगे कि धन्य हैं, राम की यह अलौकिक शक्ति है।

इति वानर समरागण दर्शन पटल

१३ इरावणन् कलंगाण पडलम्–रावण युद्धस्थल सन्दर्शन पढल

इस पटल में रावण के युद्ध स्थल का सन्दर्शन वर्णन प्रमुख है।

रावण तो लक्ष्मण को मरा हुआ जानकर अत्यधिक आनन्द में मग्न होकर प्रसन्न था। रावण के मन में प्रबल इच्छा हुई कि मेरे वास्ते जो कोई योद्धा आये और युद्ध में संकटों का सहन किया उन्हें कुछ खाद्यपदार्थ देना चाहिए। यह निश्चय कर देवलोक में रहने बालों को शीघ्र बुलाकर आज्ञा दी कि देव लोक में जैसे खाद्यपदार्थ बनाये जाते हैं। वैसे ही बनाओ। अन्यथा तुम लोग दण्ड के भागी होगे।

वे देवलोक वासी मद्य, माँस, आदि खाद्यपदार्थों को वस्त्र, चन्दन, फूल आदि, स्नान योग्य सुगन्धित जल एवं सुन्दर शटयायों को तुरत ले आये। साथ ही स्वर्ग की अप्सरायें सेवा के लिए आ गयीं। उनमें कोई गा रही है, कोई नाच रही है, और कुछ नारियाँ सुन्दर विछौने पर राक्षसों के साथ सम्भोग कर रही हैं। इस तरह रावण भोग विलास में लगा हुआ था।

इस बीच अंगरक्षक दूत रावण के समीप आकर उसके कान में बोले कि राम के द्वारा सभी 'मूल बल' नष्ट कर दिये गये। उन दूतों की जीभ रुक ग़यी, साँसे धीमी हो गयीं, आप उनके शरीर काँकने लगे। इस तरह वे काँपते हुए दूत फिर बोले, इस नगर में जो हैं। वे ही जीवित हैं। दूसरा कोई नहीं इसलिए आप मरे हुए के श्राद्ध का प्रबन्ध कीजिये, भोज्य का नहीं।

यह सुनकर रावण क्रोध से काँपने लगा। रावण मन में सोचता है कि 'मूल बल' और उसके वीर मुझसे भी अधिक बलवान् थे। वे कैसे मरे। उन में एक भी जीवित नहीं है। तब माल्यवान् ने कहा यह समाचार सत्य है। ये दूत झूठ नहीं बोल रहे हैं। जैसे प्रलय काल में **रुद्र-रूप महादेव** क्षण मात्र में चौदहों लोकों को नाश कर देते हैं, उसी तरह राम के द्वारा किया गया। क्योंकि क्षीर सागर में सोने बाले देवताओं के देवता राम साक्षात् परमात्मा है। जैसे आग सबको भस्म कर देता है, सबको खा जाता है, और जैसे प्रलय कालीन पवन (हवा) वृक्ष, पर्वत आदि को नाश कर देता है। उसी तरह राम ने सबका नाश कर दिया।

रावण ने पूछा। मैंने तो लक्ष्मण को मार दिया था वह कैसे जी गया ? माल्यवान् बोले हनुमान् के द्वारा लाई हुई **संजीवनी ने लक्ष्मण को जिला दिया**। उसमें देर नहीं हुई। तो भी रावण को विश्वास नहीं हुआ। अपने **'गोपुर'** पर चढ़कर देखा। मेरी सेनायें मरी हुई एवं छिन्न-भिन्न हैं। इस तरह क्रोध युक्त रावण मन्त्रणा मण्डप में आकर राज्य सिंहासन पर बैठ गया।

"इति रावण युद्धस्थल-सन्दर्शन पटल"

१४ इरावणन तेरेरुपड्रूलभ-रावण रथारोहण पढल

इस पटल में युद्ध के लिए प्रस्थान करते हुए रावण का **रथ** पर **चढ़ने का** वर्णन प्रमुख है।

रावण ने पर्वताकार **'महोदर' नाम** के राक्षस को आज्ञा दी कि सेनाओं को तैयार करो जो सैनिक बचे हुए हैं। वे युद्ध में चले हाथी पर दुन्दुभि रखकर 'दुन्दुभि' के नाद से समाचार फैलाओ कि **'रावण' स्वयम् अब युद्ध के लिए** प्रस्थान कर रहा है। यह सुनकर वहाँ असंख्य करोड़ों पैदल सेनायें एकत्र हो गयीं। फिर लंकापुरी सेनाओं से सुशोभित हो गयी। इसके बाद लोक कल्याण-कारी भगवान् 'शिव' की वेद मन्त्रों से पूजा की। और लम्बे युद्ध के लिए तैयार हो गये। अपने द्वारा किये हुए यज्ञ में ब्रह्मा से दिये गये कवच को धारण करके अस्त्र शस्त्र से युक्त **''किंपुरी''** नाम के आभरण को धारण किया, क्रम बद्ध रूप से-सिलसिलेवार ढंग से संचालन के लिए मन्दराचल पर्वत के समान रावण सुशोभित हुआ।

स्कन्द-पुराण में और **'वैल्लर पुराण''** में एक कथा है। एक मुनि की सुन्दरी पत्नी थी। एक समय में मुनि कहीं गये थे, उस समय इन्द्र और सूर्य दोनों एक साथ उस मुनि पत्नी के साथ सम्भोग करने के लिए आये, । वहाँ सूर्य ने पहले उसके साथ सम्भोग किया। इसी बीच मुनि आ गये और सूर्य को शाप दिया तुम तेज रहित हो जाओ। तब विश्वकर्मा ने सूर्य को अपने मन्त्र से फिर तेज देकर प्रकाशमान किया। इस तरह रावण त्रैलोक्य विजय कामना से रथ पर चढ़कर, युद्ध के लिए प्रस्थान किया। रावण ने शपथ की कि आज राम बध के बाद वह लम्बे चीकने, सुन्दर, केशबाली **'सीता'** राम के मरण को जानकर मुझे **स्वीकार करेंगी**। अथवा आज **''मन्दोदरी''** ही **विधवा हो जायेगी। दोनों में एक निश्चित है।**

इस तरह रावण ने युद्ध के लिए प्रस्थान किया। यह जानकर विभीषण ने राम से निवेदन किया। रावण विशाल सेनाओं के साथ युद्ध के लिए उपस्थित हैं। मेरे सैनिक निर्वल एवं भयभीत हो गये हैं। इसलिए यथा-योग्य शीघ्र युद्ध के लिए तैयार हो जाइये।

इति रावण युद्धस्थल सन्दर्शन पटल

१५ ''इरामपिरान तेररु पडलम्-श्री रामरथारोहण पटल''

इस पटल में रावण की युद्ध तैयारी के बाद राम भी युद्ध के लिए तैयार होकर रथ पर चढ़ रहे हैं–का वर्णन प्रमुख है।

रावण का युद्ध के लिए युद्ध क्षेत्र में आने का समाचार विभीषण द्वारा सुनकर

राम भी युद्ध के लिए तैयार हो गये। राम दुःखी वानर सेनाओं को देखकर वैसे ही बोले जैसे शेषनाग की शय्या से उठकर भगवान् विष्णु ने देवताओं को अभय दान दिया था। **राम साक्षात्-परात्पर परब्रह्म स्वरूप हैं, और संसार के कवच के समान अंग रक्षक हैं। उसी राम के द्वारा अपने शरीर पर कवच धारण किया जा रहा है। इससे प्रतीत हो रहा है कि वह कवच ईश्वर के समान है।** इस तरह राम को देखकर सिद्ध-मुनि एवं देवगणों ने निश्चय किया कि अब रावण के दशों मस्तक निश्चित रूप में विनष्ट होंगे।

तब चतुर्मुख ब्रह्मा बोले। यह युद्ध एक दिन में ही समाप्त हो जायेगा। राम विजयी होंगे। भय छोड़कर शीघ्र राम के पास स्वर्ण रथ भेजिए। यह सुनकर देवेन्द्र ने अपने सारथि मातलि को आज्ञा दी कि तीनों भुवनों में भ्रमण करने बाले सभी साधनों से युक्त रथ को शीघ्र ले आओं और राम के समीप जाओ।

''काडियगु'' **नाम** के उस रथ के एक भाग में सात-कुलगिरियों का बल था। तथा उस रथ के सभी लगाम आठ महानाग के समान था। (महा सर्प के समान था) उस पर कैलाश, हिमालय, मन्दराचल, विन्ध्य, निषद्, हेमकूट, नील, नाम के सात पर्वत और वासुकी, अनन्त, दक्ष, शंकपाल, गुलीक, पद्म और कर्कोटक नाम के आठ महानाग थे। **इस रथ में सबों के विनाश की विध्वसं की शक्ति थी।**

इस तरह यह विजयी रथ दिन, मास, वर्ष, भूत, भविष्य, काल, आदि 'अंगों' से युक्त नक्षत्रों सहित विजयी रथ था। यह रथ चारों वेद से पूर्ण यक्ष स्वरूप दूध, घी, ईख, मधु, मदिरा, और लवण नामक सात समुद्रों के समान ऊपर में कहे गये सात पर्वतों के समान, पञ्चभूत, तीन अग्नि, से युक्त चारों दिशाओं में, तीनों भुवनों में, दश प्रकार के पवनों में दिन रात भ्रमण करने बाला यह रथ **सर्वथा अलौकिक गति शील था।**

अतिविशेष–इस तरह रथ का वर्णन वाल्मीकि रामायण से लेकर किसी भी रामायण में एवं रामकाव्यों में नहीं देखा गया है। यह तो कम्बन्-कवि की नवीन गौरव-शाली महिमा एवं गरिमामयी परिकल्पना है। यह परिकल्पना यथार्थतः अलौकिक चमत्कार पूर्ण है।

इस तरह के **रथ** को आये हुए देखकर श्री रामचन्द्र ने सारथि मातलि को पूछा। किसके द्वारा क्यों यह स्वर्णमय रथ भेजा गया है। सारथि ने कहा। यह रथ सृष्टि के **आदि काल में ब्रह्मा और महादेव से निर्मित सहस्त्र सूर्य के समान प्रकाशमान रथ है। युग के परिवर्तन होने पर भी जिसका विनाश नहीं होता है।** इन्द्र की आज्ञा से मेरे द्वारा यह रथ यहाँ लाया गया है।

यह रथ **दृष्टि से, मन से, वायु से भी अधिक तेजस्वी है। यह रथ पृथ्वी पर, पाताल में, जल में और आकाश में समान रूप से** जाने में और भ्रमण करने में समर्थ है। यह कभी बदल नहीं सकता है। ब्रह्मा से आज्ञा प्राप्त कर इन्द्र ने आप की सेवा में इसे भेजा है। श्री रामचन्द्र लक्ष्मण के साथ परामर्श करके इस रथ को स्वीकार करते हुए इसपर चढ़ गये। रामचन्द्र के रथ पर चढ़ते ही **पाप पाताल चला गया और पुण्य गगन में चला गया**। वे सभी हाथ जोड़कर प्राणाम करने लगे ?

"इति रामरथारोहण पटल"

१६ इरावणन् वदैम पडलम्–रावण बध पटल"

इस विस्तृत पटल में राम रावण का युद्ध रावण बध तथा उसके बाद के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन प्रमुख है।

इस पटल में दो सौ उनचास २४९, पद्य हैं। इन पद्यों में "कवि कम्बन ने अपने वर्णन की अद्भुत छटा दिखाई है। जो वर्णन विद्वानों के कुवेर **'कम्बन्' की** शैली एवं उनके स्वभाव के अनुरूप है। राम ने रावण बध के बाद रावण के अन्तिम संस्कार के लिए विभीषण को आज्ञा प्रदान की घटना का वर्णन अत्यधिक, नीतिपूर्ण, ज्ञानप्रद तथा कारुणिक है।

इन सबों का पूर्ण वर्णन यहाँ सम्भव नहीं है और न अपेक्षित ही है। संक्षिप्त रूप से युद्ध का प्रमुख वर्णन दिया जा रहा है। प्राचीन काल से चली आयी हुई यह उक्ति सर्वथा सही है कि "राम-रावणयोर्युद्धं राम रावणयोरिव" अर्थत् राम और रावण का युद्ध राम रावण की तरह ही था। इसकी उपमा किसी से नहीं हो सकती है।

अतिविशेष– इस रामायण में विलाप करती हुई मन्दोदरी युद्ध भूमि में रावण के प्राण त्याग से पहले ही मर गयी। यह कथा सर्वथा नवीन है। क्योंकि वाल्मीकि रामायण से लेकर कम्ब रामायण के पहले तक के किसी राम काव्य में उपलब्ध नहीं है कम्ब रामायण बाद भी रचित किसी भी रामकाव्य में रावण के जीवित रहते हुए मन्दोदिरी के विधवा होने का वर्णन नहीं देखा गया है।

श्री रामचन्द्र इन्द्र द्वारा प्रेषित अलौकिक रथ पर चढ़कर युद्ध के लिए तैयार हो गये। ऋषि और देवतागण अत्यन्त प्रसन्न हुए। और उनलोगों ने मन में प्रार्थना की कि हमलोगों के सभी बल राम में प्रवेश कर जाँय। रावण ने इन्द्र के द्वारा भेजे गये रथ को देखकर बहुत कुपित दृष्टि से रामचन्द्र को देखते हुए अपने सारथि को आज्ञा दी कि मेरा रथ राम के समीप ले चलो।

रामचन्द्र अपने सारथि 'मातलि' से बोले। जब तक आनन्द से मुक्त होकर रावण सभी कुकर्मों को समाप्त नहीं कर ले, तब तक शीघ्रता की कोई आवश्यकता नहीं है। 'मातलि' ने कहा आप का सारथि वैसा नहीं है। वह तो जब तक घोड़ों की गति, शत्रुओं के मन की उद्दण्डता का कुपरिणाम और काल की कोमल एवं कुटिल गति, से अपने कार्य का निश्चय नहीं कर लेता है तब तक आगे नहीं बढ़ता है। राम ने कहा साधुवाद।

रावण के पक्ष में पर्वत तुल्य महोदर राक्षस बोला। देखिये महाराज, राम इन्द्र के रथ पर बैठ कर प्रगट हुआ है, आप दोनों के बीच भयंकर युद्ध होगा। इसलिए पहले युद्ध करने के लिए मुझे आज्ञा दीजिये। रावण ने कहा। मैं तो रामचन्द्र को ही मारूँगा। तुम 'राम' के पीछे से आते हुए उसके अनुज लक्ष्मणा को रोको। महोदर वैसा करने के लिए ही तैयार हुआ। महोदर ने अपने सारथि को कहा। मेरे रथ को उसी तरह चलाओ जिससे लक्ष्मण के रथ के साथ संघर्ष नहीं हो। सारथि बोला ! हे स्वामी, रामचन्द्र को देखिये असंख्य रावण भी उनके साथ युद्ध करने में समर्थ नहीं है। इसलिए दूसरे रास्ते से भाग जाएँ।

यह सुनकर बिगड़ते हुए महोदर ने कहा अरे दुष्ट यह क्या बक रहे हो। इसी बीच रामचन्द्र का रथ महोदर के समीप पहुँच गया, लड़ाई शुरू हो गयी। महोदर के सभी सैनिक छिन्न-भिन्न हो गये, केवल अकेले महोदर ही आगे आते हुए। सहसा राम को देखा। उसने सारथि से कहा जल्दी ही आगे चलो।

इधर राम मन में सोचते हैं कि जब तक बालू के कण के समान फैले हुए, रावण के सैनिक नहीं नष्ट होते हैं तब तक रावण का विनाश सम्भव नहीं है। इसलिए राम ने अपने तेज वाणों से रावण की सेनाओं को विनष्ट कर दिया। जिसे रावण देख भी नहीं सका। सब जगह रक्त की वर्षा होने लगी, कठोर बज्रपात हुए, पर्वत छिन्न-भिन्न हो गये। रावण के रथ के घोड़े मर गये और रावण के धुनष की डोरी कट गयी। रावण की जीभ सूख गयी। रावण की पताका पर गिद्ध और कौए बैठ गये। ये सभी इस तरह के अपशकुन हुए। ऐसी स्थिति में भी रावण सोचता है क्या मनुष्य मुझे जीत सकता है या जीतेगा ?

इसके बाद राम रावण युद्ध देखे गये। यह दृश्य वैसे ही थे **जैसे विद्या और अविद्या तथा पाप और पुण्य का सम्मिलन** हो। क्योंकि 'सहस्त्र शीर्षा पुरुष' परमेश्वर एवं भयंकर आकार बाले गरुड़ आमने-सामने हो गये हों। और मध्याह्न एवं रात आमने-सामने हो। **यहाँ कवि ने दार्शनिक दृष्टि से उपमा दी है। इसके** बाद ब्रह्माण्ड को कँपाने बाला शंख नाद रावण ने किया। इधर रामचन्द्र ने विष्णु का **पाञ्चजन्य शंख** फूँक दिया। यह सुनकर सभी देवगण विस्मित रह गये। इधर सारथि मातलि ने इन्द्र के शंख को

फूँका जिससे तीनों भुवन काँपने लगे। इस तरह भीषण युद्ध को देखकर हनुमान आदि सभी वीर स्तब्ध हो गये। उनके लिए ये दृश्य अभूतपूर्व और अकल्पित थे। उसके बाद सारथि **'मातलि'** ने इन्द्र का शंख फूँका जिससे त्रिभुवन कंपित हो गया। इस तरह भीषण युद्ध से **हनुमान् प्रभृति वीर निष्प्रभ (प्रभाहीन) हो गये।**

रावण सोचता है कि बलहीन अर्धवयस्क (अधेड़ अवस्था के) रामपर धनुर्वाण चलाना उचित नहीं होगा। इसमें तो मेरी हीनता होगी। इसलिए इन्द्र रथ के साथ ही राम को लेकर आकाश में ले जाकर जमीन पर पटक दूँगा। इसके सभी अस्त्र शस्त्र खण्डित कर दूँगा। रथ को चूर दूँगा, और धनुष के साथ उस नीच राम को बन्दी बना लूंगा। इस तरह सोचता हुआ रावण ने प्रलयकारी बाण चलाया। जिसे देखकर **'शिव' को** छोड़ कर सभी देवगण भय से व्याकुल होकर अपनी-अपनी आँखें मूंद लीं, जहाँ-तहाँ भाग गये, वानर सैनिक विखर गये।

यह देखकर रामचन्द्र ने अपने तेज शरों को इस तरह चलाया जिससे रावण के सभी अस्त्र-शस्त्र टूट गये–खण्डित हो गये, इसके बाद रावण अपने रथ को आकाश में ले जाकर बाण बरसाने लगा। तब राम ने **'मातलि'** से कहा। अब मैं किरीट सहित रावण के मस्तक को काटने के लिए बाण चला रहा हूँ। तुम रथ को सुरक्षित रूप में आकाश मार्ग ले चलो। तब मातलि ने रथ को **सूर्य मण्डल को भी लांघकर ऊपर चला गया**। इस तरह आकाश में ही दोनों में तुमुल युद्ध होने लगे। देवगण यह भी नहीं समझ सके कि वे ये दोनों रथ सूर्य मण्डल या चन्द्र मण्डल हैं।

इस तरह राम रावण में अनेकानेक प्रकार के अस्त्र शस्त्रों के प्रहार का प्रदर्शन हुआ जिनका वर्णन यहाँ अपेक्षित नहीं है। राम के तेज वाण से रावण के शरीर से रक्तधारयें वह चलीं। यह देखकर देवगण प्रसन्न हो गये। रावण के सारथि ने अपने रथ को पीछे कर लिया। राम का सारथि तब बोला। हे भगवन् जब रावण भाग जायगा तब कुछ भी करना कठिन हो जायगा। अतएव अभी तुरत उसका नाश करें। यह सुनकर राम ने कहा। अस्त्र या संज्ञा विहीन पर अस्त्र चलाना युद्ध नियम-विरुद्ध है। यह कार्य श्रेष्ठ नहीं है। जब रावण की मूर्च्छा टूटेगी तभी मैं शस्त्र उठाकर यथोचित प्रतीकार करुँगा.। **(यह उदात्त अंश है।)**

चेतना प्राप्त कर रावण अपने रथ को राम के सामने नहीं देखकर सारथि पर बिगड़ने लगा। अरे धूर्त, क्या तुम मुझे कायर समझते हो मैं तुम को इसी तलवार से काट दूँगा। सारथि पैर पकड़ कर बोला सारथि का यह धर्म है कि स्वामी की प्रत्येक दशा का ख्याल रखना अनिवार्य है। अतएव यह मेरा अपराध नहीं है। तब सारथि रावण की आज्ञा से रथ को पुनः राम के सामने ले आया।

रावण ने पुनः युद्ध प्रारम्भ किया। राम ने रावण के धनुष को दो खण्ड कर दिये और अपने तीक्ष्ण तीव्रवेग वाले बाण से रावण के शरीर को बेध दिया। रावण जमीन पर गिर गया। यह देखकर राम ने मातलि को कहा रथ को नीचे उतारो। रथ नीचे भूमि पर आ गया। राम ने रावण के क्षत्त विक्षत्त पूरे शरीर को देखा। तभी लक्ष्मण और अन्य सभी वानर सैनिक आ गये। सबों ने मरे हुए रावण को देखा–उस रावण को मृत देखा जिसने कभी किसी भी युद्ध में अपनी पीठ नहीं दिखायी। राम ने रावण की पीठ को देखा। जिस पर अनेकानेक अस्त्र के चिह्न थे। राम सोचते हैं कि रावण की पीठ पर जितने अस्त्र शस्त्र के चिह्न हैं वे सभी मेरे द्वारा ही किये गये हैं। **यह गौरव मेरे लिए कलंक तुल्य है। तब विभीषण बोले।**

एक बार **'कार्तवीर्य'** के साथ युद्ध के ये चिह्न रावण की पीठ में हैं। ये चिह्न आप के द्वारा नहीं किये गये हैं। **यह दुर्दशा तो सीता-हरण के कारण हुई है। अन्यथा कोई भी रावण को जीतने में समर्थ–सफल नहीं होता।** इस तरह विभीषण ने राम के सन्देह को दूर कर दिया।

इसके बाद लङ्कावासी वहाँ आकर हाहाकार करने लगे। **मन्दोदरी ने रावण की छाती पर गिरकर विलाप करती हुई रावण के अंगों का आलिंगन करके लम्बी साँसें लेती हुई अपने प्राणों को त्याग दिये।** यह देखकर देवांङ्गनायें किन्नरियाँ, यक्षिणियाँ, ऋषि पत्नियाँ और सामान्य स्त्रियाँ सभी मन्दोदरी की प्रशंसा तथा स्तुति करने लगीं।

इसके बाद रावण के प्राण वियोग हुए तब राम की आज्ञा से विभीषण ने वैदिक रीति से विधिवत् रावण का अन्तिम संस्कार करके अन्य मृत सम्बन्धियों का भी संस्कार करके जलांजलि दी। इसके बाद आकर विभीषण राम के पैंरो पर गिर गये। राम उन्हें अनेक प्रकार से सन्तोष देते हुए बोले यही विधि का विधान है, यही रीति है। इसमें शोक नहीं करना चाहिए। इस आश्वसन से विभीषण शान्त हुआ।

इस तरह राम रावण युद्ध का अन्त हुआ। **रावण स्वर्ग गया।** संसार का हाहाकार शान्त हुआ। देव, ऋषि गण आदि भय मुक्त हो गये।

विशेष– यहाँ मन्दोदरी का विधवा नहीं होने की कथा राम की विशाल उदारता, युद्ध नियम पालन आदि का वर्णन अत्यन्त ही महिमा–गरिमामय है।

इति रावण बध पटल

१७ मीट्‌ चिप्‌ पडलम्‌-प्रत्यागमन पढल

पृष्ठ-भूमि–रावण विनाश-लंका के सर्वनाश होने के बाद **यह अति विस्तृत पटल समग्र कम्ब रामायण का निचोड़–सत्व अंश है।** इसमें विभीषण का राज्याभिषेक, रावण के तथा अन्य सम्बन्धियों के एकमात्र जीवित विभीषण द्वारा श्रद्धादिका विवरण, अशोक वाटिका से सीता का राम के समीप लाने का वर्णन, राम के द्वारा सीता के स्वीकार के विचित्र वर्णनों से परिपूत-परिपूर्ण हैं। पृष्ठ-भूमि में दिये गये वर्णन प्रधान इस पढल में कुछ अन्य चमत्कार जनक वर्णन 'कम्बन्' ने करके राम काव्य-पाठकों-भक्तों को विस्मय विमुग्ध कर दिया है।

राम की आज्ञा से विभीषण बैदिक रीति से विधिवत् रावण का श्राद्ध तथा शेष सभी मृत भाई-भतीजे आदिका भी श्राद्ध सम्पन्न करके राम के पास पहुँचकर अत्यन्त शोक विह्वल हो गये। यह अति स्वाभाविक सामान्य मानवीय संवेदना थी। यद्यपि कुंभकर्ण, मेघनाद एवं रावण बध का एक मात्र सूत्रधार के रूप में संचालन विभीषण ने ही किया यह सत्य है तथापि संपूर्ण वंश-नाश को देखते हुए विभीषण का व्यथित होना सर्वथा उच्चस्तरीय मानवीय गुण युक्त था।

विभीषण **को विह्वल–पीड़त देखकर राम ने कहा** कि हे ज्ञानी विभीषण, संसार की यही गति है। जगत् का यही नियम है–नाम ही तो इसका है। **''संसरति-इति संसार''** जहाँ से लोग ससर जाते हैं, खिसक जाते हैं–इसका नाम ही संसार है, कोई स्थिर-शाश्वत नित्य-अविचल नहीं है। अतएव शोक छोड़कर आगे का कार्य करे। राम ने लक्ष्मण को आदेश दिया कि विभीषण का वैदिक विधि विधान पूर्वक लङ्का का राज्य भिषेक करें। ऋषि गण तथा वेदज्ञ विद्वानों ने वेदपाठ किये और **'विभीषण' को सिंहासनपर विठा दिये।** देवगणों ने पुष्प वर्षा की, मुनिगण आशीर्वचनों की अजस्त्र धारायें बहा दीं।

इसके बाद विभीषण राम के समीप आकर उनके चरणों पर गिर गये। राम ने उन्हें आलिंगन कर कुछ निम्नांकित **महत्त्वपूर्ण राजनीति का उपदेश दिया।**

(क) तुम इस तरह राज करो जिससे प्रजागण स्तुति करें।

(ख) तुम्हारे शासन में देवताओं के आदर, धर्माचरण, यश, और पुण्य अचल रहें।

(ग) सबों के साथ निकलकर राज्य-शासन एवं जीवन-यात्रा करें। इस तरह उपदेश देकर राम ने हनुमान से कहा। तुम लंका जाकर पूर्वोक्त समस्त घटनाओं की सूचना सीता को दो। हनुमान अशोकवाटिका जाकर सीता को सभी वृत्तान्तों **(समाचारो)** की विवेदन किया। सीता सहसा अवाक् होती हुई प्रसन्न हो गयी। कुछ क्षण के बाद सीता

बोली। हे तात हे पुत्र, तुमसे पहले ही कहा था कि मेरा उद्धार करो। उसे तुमने किया। अब बदले में मैं क्या तुम्हे दूँ यह समझ में नहीं आने के कारण मैं अवाक् (मौन) हो गयी। हनुमान् ने कहा, मेरा मन होता है–मेरी इच्छा है कि 'त्रिजटा' को छोड़कर सभी राक्षसियों का नाश करूँगा।

गज्जननी जानकी बोली। वे राक्षसियाँ रावण के आदेश से वैसा कर रही थी। इसमें उनका क्या दोष है। अत एव सभी वैसे ही बनीं रहें, खुश रहें। साथ ही सीता ने राक्षसियों से कहा, मत डरो। हनुमान कुछ नहीं करेंगे।

इसी बीच राम ने विभीषण को आज्ञा दी कि **'सीता' को श्रृंगार कराके यहाँ मंगवाओ।** विभीषण तुरत सीता के समीप जाकर बोले। हे माँ, आप अब दुःख दूर करें। श्रृंगार करें और भगवान रामचन्द्र के समीप मेरे साथ चलें। ऐसा ही मुझे आदेश हुआ है।

सीता कहती हैं, श्रृंगार करके जाना मेरे लिए न उचित है और न मेरी दृष्टि से शोभनीय है। विभीषण ने उत्तर दिया **''श्रृंगार कराके ही लाओ।'' यही मुझे आज्ञा है।** सीता ने कहा ठीक है। तुरत ही सीता का श्रृंगार करने के लिए **मेनका, रम्भा, उर्वशी,** और **तिलोत्तम** आदि स्वर्गीय अप्सरायें विविध प्रकार के श्रृंगार साधनों के साथ वहाँ उपस्थित हो गयीं। उन्होंने कस्तूरी और कुंकुम के जल से सीता को स्नान कराकर विशिष्ट प्रकार के केश **विन्यास** किये। वह **केश विन्यास अभूत पूर्व और विचित्र रूप में था।**

सभी अगों में उचित स्थानों पर उनके अनुरूप चन्दन, आभूषण आदि से सुसज्जित करके सीता को रामचन्द्र के समीप ले चली। सीता के चारों ओर अप्सरायें थीं। सीता को देखने के लिए लंका के सभी नर-नारी एकत्र हो गये। वहाँ विशाल जन-समूह को देखकर राक्षस-गण रास्ता को साफ करने के लिए छड़ियाँ घुमाने लगे। तात्पर्य यह कि सीता को देखने के लिए अपार जन समूहों के द्वारा अवरूद्ध मार्ग को थोड़ा सा छोड़ देने के लिए भूतगण छड़ियों **का डर दिखाकर (मारकर नही)** सीता को बड़े प्रयास से राम के समीप ले आये।

राम का महा वीभत्स नाटक–यहाँ सीता को पहुँचते ही राम ने ऐसा कठोर एवं अमानवीय दृश्य उपस्थित **किया कि सभी ऋषि, महर्षि गण,** देव गण, सुग्रीव, अगंद, विभीषण, आदि चकित हो गये–सन्न रह गये। राम ने विभीषण से कहा जो ऋषि गण और देव गण यहाँ नहीं हैं। और इस युद्ध भूमि को देखने के लिए उत्कण्ठित हैं उन्हें भी आने की आज्ञा दें। विभीषण वे वैसा ही किया।

वहाँ सीता ने हनुमान् के शील कर्त्तव्य और वीरता की बड़ी प्रशंसा की वह असाधारण, अलौकिक, अखण्ड पतिव्रता सीता ने राम को प्रणाम किया। राम उपेक्षा और कठोरता से बोले कि तुम राक्षस रावण की नगरी लंका में बहुत दिनों तक रहकर चरित्र-भ्रष्ट हो गयी। तुम यहाँ क्यों आयी। मैंने तो इतना बड़ा परिश्रम और कोलाहल इसलिए किया कि कोई यह नहीं कहे कि **राम अपनी पत्नी को हरण करने बाले को भी कुछ नहीं कर सके। तुमको मुक्त करने के लिए मैंने यह सब नहीं किया।** तुम तो पृथ्वी से वैसे ही उत्पन्न हुई हो जैसे कीड़े-मकोड़े उत्पन्न होते हैं। तुम ऐसे ही हो।

विचित्र दृश्य–सुनते ही सभी ऋषि गण देव गण, देवांगनायें, राक्षस, सुग्रीव, अगंद, माल्वान् और हनुमान आदि बहुत जोरों से रोने लगे–चिल्लाने लगे; छाती पीटने लगे। सीता तो नीचे मुख करके घाव में काँटे चुभने की तरह पीड़ित होकर चेतना शून्य हो गयी। कुछ देर के बाद चेतना प्राप्त करके सीता हनुमान् से कहती है कि क्या तुमने मेरी स्थिति का निवेदन राम से नहीं किया था। हनुमान् ने उत्तर दिया पहले भी कहा था और अभी भी निवेदन किया है। इधर **लक्ष्मण तो राम की बात को सुनकर हतप्रभ–संज्ञा शून्य** की तरह हो गये थे। इसी बीच राम ने लक्ष्मण को संकेत से आज्ञा दी–**लक्ष्मण आग ले आये।** भगवती सीता वहाँ आग की परिक्रमा करके बोली हे अग्नि देव! यदि मैं मन से भी कलंकिनी होऊँ तो मुझे भस्म कर दें। इस तरह राम की वन्दना करती हुई सीता धधकती **हुई आग में प्रवेश कर गयी।**

उस समय 'राम' को छोड़कर वहाँ के उपस्थित जन और स्वर्ग के देवी देवता गण विदीर्ण हो गये, कलपने लगे थरथर काँपने लगे। उसी समय तुरत अग्नि देव प्रगट होकर राम से बोले। मैंने क्या अपराध किया है कि आप मुझ पर इस तरह कुपित हैं। राम बिगड़ कर बोले। तुम कौन हो, यह स्त्री आग में क्यों नहीं जली। वे बोले। मैं अग्नि देव हूँ। इस देवी के पातिव्रत्य की अग्नि की ज्वाला से मे खुद जल गया। मैं तो **सभी वेद विहित कर्मों का साक्षी हूँ। क्यों आप से ऐसा किया गया।**

अब राम हँसकर बोले। तुम संसार के अक्षय, अविनाशी–शास्वत–साक्षी (गवाह) हो। यह सीता तुम्हारे द्वारा कलंक रहित की गयीं। यह मेरी **'धर्म-पत्नी'** है। **मेरी 'प्राण-प्रिया' है और अत्याज्य है। राम का क्रूर कठोरतम वीभत्स-अभिनय समाप्त हुआ।** यह सुनकर, देखकर सभी देव गण, ऋर्षि गण, एवं कपि गण, प्रसन्नता से नाचने लगे। देव गण बोले धन्य है भगवन् अपनी माया के जाल में संसार को नचात हैं। इसीलिए यह कठोर नाटक किया गया जिससे हमलोग भ्रमित हो गये। सुध-बुध खो बैठे। सीता तो जबतक सूर्य चन्द्रमा रहें तबतक पूजनीयाँ, महनीयाँ, शलाघनीयाँ प्रतिब्रता रहेगी। वेदान्त का चरम सिद्धान्त और वेदज्ञ ब्राह्मण बोले। **रामचन्द्र** केवल सूर्य वंश में उत्पन्न एक महामानव ही नहीं हैं, किन्तु **वेद वेदान्त के द्वारा प्रतिपादित परमतत्व भी हैं। ये**

पुरातन तत्व स्वरूप हैं, मूल प्रकृति स्वरूप हैं इस अखिल चराचर ब्रह्माण्ड के प्रपञ्च भी हैं। जो अविद्या-माया से निकलता है। वह इन्हें आदि कारण मानता है। ये ही 'राम मोक्ष के वीज हैं।

ये रामचन्द्र पचीस (२५) तत्त्वों से ऊपर एक अलग तत्त्व हैं। पचीस (२५) तत्त्वों में पञ्च तन्मात्रा, पंचभूत, पंच कर्मेनिद्रय, पञ्च ज्ञनिन्द्रिय, मन, चित, अहंकार, महत्त, तथा जीव, ये पचीस (२५) तत्त्व सत्य है। किन्तु **परम तत्त्व इन पचीस (२५) तत्त्वों से भी ऊपर हैं। ये** वही रामचन्द्र हैं।

यहाँ **न्याय, वेदान्त, मीमांसा आदि प्रमेय दर्शनों के प्रमाण प्रभेद** आदि **के तर्क-वितर्कों की आवश्यकता नहीं है।** इसलिए **दशरथ पुत्र 'रामचन्द्र' केवल माया रूप पुरुष हैं।** लेकिन **यथार्थतः वे अजन्मा है मूल-प्रकृति रूप हैं। जिससे सम्पूर्ण विश्व का विस्तार** हुआ है। यहाँ **(कम्बन् कवि ने रामचन्द्र को परब्रह्म के रूप में अति स्पष्ट शब्दों से प्रमाण द्वारा सिद्ध किया है।)**

इसके बाद लंका से प्रस्थान के समय परमेश्वर ने सोचा और मोक्ष प्राप्त किये हुए बैकुण्ठ में स्थित दशरथ को जाकर कहा कि आप अपने पुत्र रामचन्द्र के पास जाइये और **पुत्र वियोग जन्य दुःख को दूर कीजिये।** भगवान् शिव की आज्ञा से दशरथ रामचन्द्र के पास पहुँच गये। रामचन्द्र अचानक उन्हें देखकर उनके पैर पर गिरे। दशरथ ने उन्हें उठाकर आलिंगन किया और कहा मेरा जीवन सार्थक हो गया, मेरा उद्धार हो गया, मेरा दुःख दूर हो गया, और कैकेयी के दोनों वरदानों के कारण मरने के बाद भी जो मेरी मर्म-भेदन करने बाली पीड़ा थी–व्यथा थी, वह दूर हो गयी। हे महावाहु रामचन्द्र, मैंने अपार यश और दुलर्भ मोक्ष प्राप्त किया। इसके बाद 'सीता' का करुणा पूर्वक वात्सल्य स्नेह से आलिंगन करके यथा योग्य उपदेश दिया।

और यह भी कहा कि राम ने तुम्हारी महिमा को तथा श्रेष्ठ पातिव्रत्य को अग्नि परीक्षा से बढ़ा दिया।

इसके बाद दशरथ ने लक्ष्मण को अपने आँसुओं से नहा दिया। फिर राम के समीप आकर बोले। **तुमको क्या दिया जाय तुम तो स्वयं सबके दायक हो फिर भी कुछ मुझसे प्राप्त करो।** राम अपनी मनो-व्यथा को दूर करते हुए। बोले, मैंने विचार किया था कि स्वर्ग जाकर आपके दर्शन करुँगा वे यहीं हो गये। इसलिए यहाँ कुछ भी नहीं बचा रह गया जो मैं माँग सकूँ। फिर भी यदि आपकी आज्ञा है तो दो चीजें दें। झटपट बिना आगे पीछे **सोचे ''तथास्तु'' ऐसा ही हो–कह दिया।**

राम चरित्र का चरमोत्कर्ष–राम ने पहला वर माँगा (क) मेरी माता **'कैकेयी'** को दुष्टा मानकर आपने जो छोड़ दिया उसे पुनः शाप से मुक्त कर दीजिये तथा मेरी

पूजनीयाँ कैकेयी पहले ही की तरह मेरी माता के रूप में बनी रहें। (ख) मेरे अनुज भरत की जो आपने उपेक्षा की उसे पुनः स्वीकार कर मेरे अनुज के रूप में ग्रहण करके रहने दें।

दशरथ चौंके, भरत को तो मैं मुक्त कर सकता हूँ। किन्तु उस दुष्टा कैकेयी को मुक्त नहीं कर सकता। राम ने कहा यह तो आप की इच्छा और कृपा है। लेकिन आप ने सत्यपालन के लिए पहले ऐसा किया है। अभी मुझे दो वर दिये। जिसे माँगने के लिए आपने मुझे आदेश दिया। मैंने उस आदेश का पालन किया, आप ने दो वर दिये, मैंने दो वर माँगे। आप उनमें से एक दे रहे हैं। दूसरे में आपको आपत्ति है। इस पर तो मुझे कुछ कहना नहीं है। क्योंकि अपने दिये वचन का पालन करना या नहीं करना यह तो आपका काम है। यह सुनकर दशरथ ने कहा मैं मान गया। तुमने पूरी चतुरता से मुझे बाँध लिया। ये घटनायें देख और सुनकर सभी देवता गण प्रसन्न हो गयें। और प्रशंसा करने लगे। इसके बाद दशरथ बैकुण्ठ चले गये।

उत्कृष्ट कथा–यहाँ दशरथ का बैकुण्ठ से आने की कथा तो वाल्मीकि रामायण में भी तो है, किन्तु राम के द्वारा उक्त दोनों वरदान माँगने एवं प्राप्त करने की कथा सर्वथा नूतन है। यह कवि कम्बन् की अपनी महान् परिकल्पना है और साथ ही रामचन्द्र के चरित्र को यहाँ एक बार पुनः उच्चतम शिखर पर पहुँचाने वाला है।

आदर्श चरित्र–इसके बाद वहाँ उपस्थित देवताओं ने रामचन्द्र से निवेदन किया कि आप की कोई इच्छा हो तो कृपया कहने का कष्ट करें। राम ने कहा इस युद्ध में जितने वानर सैनिक मरे वे सभी पुनः जीवित हो जायँ। वे पुनः इस पर्वतीय क्षेत्र में, उद्यान में, अपनी इच्छा के अनुसार मधु, मधुफल और कन्द मूल फल खा सकें तथा स्वच्छ पेय जल निरन्तर प्राप्त करें। देवताओं ने उत्तर दिया आप की कृपा से ये सभी वानर तो पहले से ही जी उठे हैं। वे सदा मधुर भोजन एवं स्वच्छ पेय प्राप्त करते रहेंगे।

सभी जीवित वानर सैनिक आकर बोले, हे भगवन् आपने तो सब कुछ किया, उसे कोई कहने में समर्थ नहीं है। वे सभी घटनायें विचित्र और चमत्कारपूर्ण थीं। हमलोग केवल यहाँ आप को एक बात स्मरण दिलाने के लिए उपस्थित हैं।

आप कृपया स्मरण करें, आज आप के वन आने का चौदहवां वर्ष पूरा हो रहा है। आज पंचमी तिथि है यदि आज सायंकाल तक आप भरत से नहीं मिलेंगे तो वे आग में प्रवेश कर आत्मदाह कर लेंगे। अतएव भरत की प्राण-रक्षा के लिए आज ही अयोध्या प्रस्थान करें।

यह सुनते ही राम चिन्तित हो गये। यह तो मैं भूल ही गया था। यदि आज नहीं पहुँचता हूँ तो भरत निश्चय ही प्राण त्याग देगा। मेरा वंश नाश हो जायगा। यह विचार कर राम ने विभीषण से पूछा। आज ही अयोध्या पहुँचना कैसे सम्भव है। विभीषण ने कहा एक ऐसा विमान है जिससे आप आज ही अयोध्या पहुँच सकते हैं। राम ने तुरत आज्ञा दी, विभीषण के संकेत से वह विमान तुरत उपस्थित हो गया। यह विमान ब्रह्मा के द्वारा यक्ष-राज-कुबेर को दिया गया था। यह विमान निर्लिप्त ज्ञानी, मन के समान पवित्र, मन के वेग की तरह चलने बाला देवताओं को विस्मय में डालने बाला है। इसका नाम **'पुष्पक'** है।

विमान आ जाने पर राम ने स्नेह और दया से कहा, हे विभीषण आप लंका राज्य का कुशल पूर्वक शासन करें। जिस लंका के निर्माता आदि पुरुष चतुर्मुख वेद रूप **'ब्रह्मा'** हैं। इसके बाद सुग्रीव से कहा हे, सुग्रीव तुम्हारी सहायता से मैंने रावण का नाश किया। अब तुम अपनी राजधानी **'किष्किन्धा'** लौट जाओ। जाम्बवान, अंगद, पनस, नल, नील, आदि योद्धा गण भी अपने-अपने स्थान पर लौट जायँ और अपने पैर से समुद्र को लाँघने बाले **हनुमान भी आप** लोगों के साथ वापस हो जायँ। रामचन्द्र ने **बड़े करुणा पूर्ण स्नेह भरे ये शब्द बोले।**

यह सुनते ही सुग्रीव आदि काँपने और रोने लगे। **रोते हुए वे बोले** यदि आप हमलोगों को छोड़ देंगे तो हमलोग मर जायेंगे जब तक हमलोग अयोध्या जाकर आप का राज्याभिषेक नहीं देखेंगे तबतक हमलोगों की थकावट एवं कठिनता दूर नहीं होगी इसलिए अपने साथ हमलोगों को भी अयोध्या जाने की आज्ञा दीजिये। **लौटने की बात तो बाद में होगी।**

यह सुनकर राम बोले। मेरी चिन्ता मत करो, मेरे साथ चलो। मैंने तो केवल आप लोगों को अपनी अपनी व्यवस्था के लिए ऐसा कहा। यह सुनते ही सबके सब उस पुष्पक विमान पर बैठ गये। तो भी उसमें जगह बची ही रही। इस तरह वह विमान लंका से चला।

विमान पर जाते हुए राम ने मार्ग में उन उन विशेष स्थान को एवं महत्त्वपूर्ण वस्तु को दिखाते हुए **'सीता' से** कहते हैं। (क) हे सीते, देखो यह **'गन्ध मादन'** नाम का पर्वत है जिसकी कन्दरा (खोह) में इन्द्र से डरकर समुद्र छिपा हुआ था। मेरे द्वारा पुल बनाने से यह पर्वत पवित्र हो गया। (ख) ये गंगा, यमुना, गोदावरी, नर्मदा, कावेरी, नदियाँ हैं। ये पाप को नाश करती हैं। लेकिन मेरे द्वारा सेतु बन्धन से इस समुद्र को भी जो देखता है उसका पाप दूर हो जाता है। मैंने नाव चलाने को सुविधा के लिए अपने धनुष से रास्ता बना दिया है। इसकी पवित्रता को जानकर गंगा भी ईर्ष्या करती

है। (ग) सीते, देखो यह वही स्थान है जहाँ बरुण अग्नियास्त्र के डर से मेरी शरण में आये थे। (घ) हे बैदेही, वह यही पवित्र स्थान है, यह पवित्र पर्वत है जहाँ **तमिल भाषा के** वैयाकरण **अगस्त्य ऋषि** का पवित्र वासस्थान है। (ङ) यह रत्न मय **''तीरूपालि रूज लौलच मलय''** नाम का श्री **विष्णु का पर्वत** है। वहीं से विशाल, समुन्नत **'वेंकटाचल'** पर्वत दीख पड़ता है। तब सीता ने जिज्ञासा की कि हनुमान् के साथ आप को कहाँ भेंट हुई, राम बोले देखो प्रिये, इस सामने **ऋष्यमूक** पर्वत पर हनुमान् से भेंट हुई। यहीं महावलशाली बालि रहता था जिसे मैंने स्वर्ग भेज दिया। यहीं सूर्य पुत्र सुग्रीव रहते हैं। यह सुनकर सीता बोली क्या यहीं **'किष्किन्धा नगरी'** है। मैं तो इस पुष्पक विमान पर अकेली नारी हूँ। और सभी पुरूष हैं। इसलिए यदि **यहाँ से कुछ नारियाँ चलें तो मेरे लिए ठीक होगा।**

तुरत ही राम के संकेत से सुग्रीव ने हनुमान् को आज्ञा दी। **हनुमान् ने फूल की मालाओं से गुंथे हुए बड़े लम्बे-काले-केश-बाली, अनेक नारियों को विमान पर ले आये। वे सुगन्धित केश बाली वानर की नारियों ने** सीता राम की बन्दना की। पुनः राम ने सीता से कहा। यही **'गोदावरी'** नदी है। इसी के तटपर अन्नत शिखर बाले पर्वत के समीप **पंञ्चवटी** आश्रम से तुम मुझे से वियुक्त हुई थी। यही दण्डक वन है, और आगे वहीं **'चित्रकूट'** पर्वत है जो सदा वन्दनीय और स्मरणीय है। आगे चलते हुए यहीं **'भरद्वाज ऋषि'** का आश्रम हैं। जहाँ वन आने के समय हमलोगों ने विश्राम किया था। राम ने आज्ञा दी कि कुछ काल के लिए **'पुष्पक-विमान'** को यहाँ उतारा जाय। विमान तुरत उत्तर गया। राम विमान से उत्तरकर भरद्वाज ऋषि के चरणों पर गिर गये। ऋषि राम को उठाकर आशीर्वचनों से आलिंगन करके राम के मस्तक को वात्सल्य से सूंघने लगे। इसके **बाद लम्बे काले केश बाली सीता ऋषि के पास गयी।** हाथ जोड़ें हुए लक्ष्मण भी गये। ऋषि ने उन दोनों को भी आशीर्वाद दिया। साथ ही सुग्रीव, जाम्बवान्, अंगद एवं हनुमान् आदि को भी आशीर्वचन दिये।

इसके बाद ऋषि **भरद्वाज** ने राम से अनुरोध किया कि आप अपने दल के साथ आज यहीं मेरे आश्रम में ठहरें। राम ने भरत की प्रतिज्ञा सुनादी। लेकिन ऋषि के वचन उपेक्षणीय नहीं हैं। **यह सोचकर हनुमान् से कहा।** तुम शीघ्र अयोध्या जाकर भरत को सूचित करो कि हमलोग **आज भरद्वाज के आश्रम में ठहर** गये है। कल प्रातःकाल हमलोग अयोध्या पहुँचेंगे। हनुमान् ने मार्ग में निषाद राज **'गुह'** को राम के आगमन की सूचना देते हुए अयोध्या चले गये।

अब कवि **कम्बन्-अयोध्या पहुँचते हैं।** अब जरा वहाँ का दृश्य देखें। भरत तो पहले से ही दुःख मग्न होकर दग्ध हो रहे थे। आज राम के आने का अन्तिम दिन

है। आज उनके वन जाने के चौदह १४ वर्ष बीत गये। राम ने आज ही यहाँ आने की प्रतिज्ञा की थी। तथापि भरत ने ज्योतिष शास्त्र के विशेषज्ञ गणितज्ञों को बुला कर पूछा। वे गणित शास्त्र के विशेषज्ञ गणना करके बोले। राम के आने का आज ही अन्तिम दिन है।

वहाँ **नन्दि-ग्राम** में राम की **चरणपादुका की पूजा करते हुए** भरत याद करते हैं कि आज ही राम के लौटने का समय है। ऐसा करते हुए भरत ने शत्रुघ्न को बुलाया। शत्रुघ्न तुरत आ गये। भरत ने कहा हे तात मैंने राम से एक बरदान माँगा था कि चौदहवें वर्ष के अन्तिम दिन में निश्चित रूप से अयोध्या पहुँचें, जिसका आज अन्तिम दिन है। इसलिए यदि आज राम नहीं आये तो अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार आज मैं आग में प्रवेश कर प्राण त्याग दूँगा। तुम अब इस राज्य को ग्रहण करो ?

यह सुनते ही **शत्रुघ्न** दोनों हाथों से अपने दोनों कानों को मूंद कर **जमीन पर गिर गये।** उनकी आँखों से आँसू की धारा बहने लगी, और उनके कण्ठ अवरुद्ध हो गये। अर्थात् वे बोल नहीं सके। कुछ देर के बाद जैसे तैसे शत्रुघ्न घिघियाते हुए बोले। मैंने क्या अपराध किया है ? जिससे ऐसा कठोर वचन आपके द्वारा कहा गया। आप तो अयोध्या छोड़कर तपस्या करते थे। मेरे सम्बन्ध में क्या आपने यही निश्चय किया ? भरत बोले, तुम शीघ्र आग जलाओ। यह समाचार वायु वेग से अयोध्या पहुँच गया। सहसा माता कौशल्या छाती पीठती हुई वहाँ पहुँच गयी और क्रमशः मन्त्री गण, सेनापति, अयोध्या की नारियो और वहाँ के ब्राह्मण समूह सहसा वहाँ पहुँचकर भरत को घेर लिए। कौशल्या भरत के समीप आ गयी जो भरत कौशल्या को प्रणाम कर अग्नि में प्रवेश करने के लिए तैयार थे। माता बोली, यह क्या कर रहें हो। यदि तुमने ऐसा किया तो यह देश नष्ट हो जायेगा। तब तीनों मातायें भी आग में प्रवेश कर प्राण छोड़ देगी। यदि तुम नहीं जीयोगे तो समस्त जीव मर जायेंगे। मेरा मन कहता है कि आज नहीं तो कल राम अवश्य आयेंगे।

विशेष—यहाँ के परस्पर वार्त्तालाप में **करुणा की वह अजस्त्र धारा वहा दी जो छठी शताब्दी में महा कवि भवभूति भी अपने विश्वविख्यात उत्तर राम चरित्र में नहीं कर सके थे।** चरित्र की इतनी बड़ी उदात्तता के वर्णन में कवि कम्बन् अपने से बहुत बाद के भक्त कवि गोस्वामी तुलसीदास को भी पीछे होने के कारण पहले ही पीछे छोड़ चुके थे।

तब भरत कहते हैं। मैं उनका पुत्र हूँ जो सत्य की रक्षा के लिए अपने प्राणों को छोड़ दिया। मैं तो अपनी प्रतिज्ञा का अवश्य पालन करुँगा। **इसी बीच में ही वहाँ पर्वताकार हनुमान् पधार गये। और जोरों से बोले।** भगवान रामचन्द्र आ गये। क्यों

आप प्राण त्याग रहे हैं। यह कहकर अपने दोनों हाथों से हनुमान् ने आग को बुझा दिया। इसके बाद भरत के पैरों पर गिर कर हनुमान् बोले कि रामचन्द्र के आने के समय बीतने में अभी **चालीस ४० घन्टे बचे हुए हैं**। अगर मेरा कहना असत्य हो तो मैं खुद आग में प्रवेश कर प्राणों को छोड़ दूँगा। कृपया यह प्रभु रामचन्द्र से दी हुई **अगूँठी को ग्रहण करें।**

प्रभु रामचन्द्र भरद्वाज की प्रर्थाना से वहीं ठहर गये हैं। कल प्रातःकाल आयेंगे। भरत उस **अगूँठी** को बार-बार प्रणाम कर आनन्द से उछलते हैं, कभी हँसते हैं, कभी रोते हैं, कभी अगूँठी को फिर प्रणाम करते हैं, कभी ऊपर कूदते हैं कभी नीचे और इस तरह पसीने-पसीने हो जाते हैं। सभी मंत्री-गण और प्रजा-गण यह देखकर स्तब्ध होकर खड़े थे। स्नेह की तो यही प्रकृति हैं। **(स्नेह का इतना सुन्दर और स्वाभाविक विशद वर्णन प्रायः ही देखने को मिलता है।)**

भरत ने हनुमान् से परिचय पूछा। और हनुमान् ने अपना परिचय दिया भरत की आज्ञा से शत्रुघ्न ने हनुमान् का स्वागत सत्कार किया। साथ ही भरत की आज्ञा से सम्पूर्ण अयोध्या नगरी को पुष्प पल्लव युक्त तोरण द्वारों से सजा दी गयी।

सब जगह ढ़ोल बजाकर सूचना दी गयी कि भगवान् रामचन्द्र आ रहे हैं। यह जानकर ही सर्म्पूण अयोध्या नगरी **'वेद' ध्वनियों** और जन कोलाहल से पूर्ण हो गयी। तीनों माताएँ राम के स्वागत् के लिए देवी की स्तुति करती हुई, सोने की पालकी पर आगे चली। **भरत मुनि** गण, परिजन, पुरजन और **हनुमान् के साथ** पैदल ही चले। **भरत अपने मस्तक पर राम की दोनों पादुकायें रख ली थीं और दोनों हाथों से चामर डुलाते हुए स्वागत में आगे बढ़ रहे थे। (भरत की भक्ति के प्रदर्शन को यहाँ भी कवि ने पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया है।)**

मार्ग में भरत ने हनुमान् से जिज्ञासा की। श्री पति–लक्ष्मी पति आर्य रामचन्द्र वन में कब कहाँ-कहाँ कैसे ठहरे। सविस्तार कहिये। हनुमान् ने संक्षिप्त रूप से **चित्रकूट के समाचारों से लेकर रावण बध पर्यन्त के सभी समाचारों का वर्णन किया**। इसी क्रम में चित्रकूट छोड़ने के बाद दश वर्षों तक दण्डकारण्य में रहे। तब समुद्र को पी जाने बाले अगस्त्य के आश्रम गये। जहाँ अगस्त्य ने रामचन्द्र को तेज धनुष, बाण, तरकस, कवच और तेज छूरी दी थी। इसके बाद शूर्षणखा वृन्तान्त, सीता हरण वृन्तान्त, जटायु मरण वृन्तान्त 'जटायु' का दाह संस्कार वर्णन, शवरी के आतिथ्य सत्कार का वर्णन, बरुण की क्षमा याचना का वर्णनं, और समुद्र में सेतु निर्माण का **वर्णन सब कुछ संक्षिप्त में कह दिया।**

इसके बाद भरत ने पूछा, राम के सैनिकों के शब्द नहीं सुन रहे हैं। **भरद्वाज का** आश्रम तो यहाँ से दो ही योजन पर है। हनुमान् बोले। भरद्वाज ने वर दिया कि अभी

जो फल, फूल, मधु आदि आपलोगों को मिलते हैं उन्हें खा-पीकर कुछ देर विश्राम करें। वहाँ निषादराज 'गुह' पहुँचकर राम के चरणों पर गिरे। इस तरह भरद्वाज के आश्रम में सपरिजन राम ने विश्राम किया।

प्रातःकाल पुष्पक विमान पर चढ़कर पूर्ववत राम सीता-लक्ष्मण सहित विभीषण जाम्बवान्, सुग्रीव, आदि के साथ प्रस्थान किया। आकाश मार्ग में आते हुए पुष्पक विमान को दिखाते हुए हनुमान् बोले हे रघुकुल भूषण महा महिमाशाली, कृपया देखें। सीता-लक्ष्मण सहित प्रभु राम आ रहें हे। यह सुनकर सभी सावधान हो गये। रामचन्द्र कुछ दूर पहले ही विमान से उत्तर कर पैदल ही अपनी नगरी अयोध्या में प्रवेश किये। वहाँ तीनों मातायें और गुरु वसिष्ठ उपस्थित थे।

राम सबसे पहले गुरु वसिष्ठ को प्रणाम करके माताओं के पैरों पर गिर गये। क्रमशः सीता लक्ष्मण ने भी राम का अनुसरण किया। भरत ने राम की पादुका को उन्हें समिर्पित कर उनके पैरों पर साष्ठांग दण्डवत्-प्रणाम किया, राम ने उन्हें उठाकर छाती से लगा लिया। इधर माताओं की दशामें विचित्र थी जैसे बछड़े से वियुक्त गायों का बछड़े मिलने पर होती है।

इधर सुमन्त के आनन्दाश्रु का वर्णन, राम का आलिङ्गन आदि सभी दृश्य अवर्णनीय थे। किसी कवि की वाणी उस दृश्य का वर्णन नहीं कर सकती है। तब आकाश से फूलों की वर्षा होने लगी। पुष्पक विमान नन्दिग्राम चला आया।

इस तरह सीता लक्ष्मण युक्त सभी वानरादि के साथ राम का अयोध्या लौटना अत्यन्त सुखद एवं आनन्दप्रद हुआ।

इति प्रत्यागमन पटल

१८ तिरूमुडिशुट्टू पड्लम—श्री किरीट धारण पटल

इस पटल में राम का सर्वत्र निरीक्षण और राज्य मुकुट धारण करने का मधुमय वर्णन प्रधान है।

अखण्ड विश्वास, भक्ति, श्रद्धा को करने एवं कराने वाले भरत एवं लक्ष्मण, शत्रुघ्न के साथ प्रभु रामचन्द्र नन्दि-ग्राम आये। वहाँ सर्व प्रथम वन-गमन के समय श्रृङ्गवेर पुर में निर्मित जटा को हटा कर बाल कटबाये और पवित्र सरयू नदी में स्नान करके यथा योग्य चन्दनादि लगाया। जिन्हें देखकर देवगण हर्षित हुए।

तब रामचन्द्र रथपर बैठ गये। लक्ष्मण श्वेत-छत्र धारण करवाये, शत्रुघ्न चामर डुला रहे थे और भरत स्वयं "सारथि" का काम कर रहे थे। वहाँ विभीषण, सूर्य पुत्र सुग्रीव, हाथी पर चढ़े हुए अंगद, हनुमान् आदि सभी पीछे-पीछे चल रहे थे। जो राजागण विभिन्न राज्यों से आये थे वे राम के पीछे-पीछे चल रहे थे। किष्किन्धा से आयी हुई

वानरों की पत्नियाँ अप्सरायें पालकी पर चढ़कर चल रही थीं। बीच में सोने के रथ पर स्वर्ण सदृश **'मैथिली'** विराजमान थीं। इधर अयोध्या फूलों से ऐसी सजी हुई थी, सर्वत्र फूल ही फूल दीख रहे थे। अयोध्या पहुँचकर राम सबसे पहले माताओं की पूजा-अर्चना की। तब विष्णु-मन्दिर पहुँचकर अपने **इष्ट देव ''श्री रङ्गनाथ''** की पूजा की। तब गुरु वसिष्ठ का अभिनन्दन किया। उस समय अयोध्या के नर-नारी आनन्द में उल्लसित थे, इसके कारण वे वस्त्र रहित भी हो गये थे।

आनन्द मग्न कुछ राजागण तो भूल से **वेश्याओं की साड़ी पहन रखी थी। कुछ ब्राह्मण गण अपनी धोती छोड़कर नारी की साड़ी पहन ली। कुछ ब्रह्मचारी संन्यासी गण चन्दनादि बिना किये हुए ही पहुँच गये। कुछ नारियाँ तो सीता के वियोग में १४, चौदह वर्षो तक श्रृङ्गार ही नहीं की थीं। यह सब देखकर किसका मन विचलित नहीं हुआ या हो रहा है।**

रामचन्द्र ने कहा, हे **भरत ! विभीषण, सुग्रीव, अङ्गद, निषादराज प्रभृति को अयोध्या राजभवन के अन्तःपुर की विशेषता एवं शोभा दिखाओ।** भरत ने क्रमशः सभी यथा योग्य दिखा दिये। वे लोग बोले राम के रक्षाबन्धन का समय–मुहूर्त कब है ? भरत ने कहा, **सातो समुद्रों का तीर्थ जल लाना केवल शेष है।** उसी के प्रसंग में सोच रहा हूँ। तुरत सुग्रीव हनुमान् की ओर देखे। **हनुमान् तुरत उसी क्षण सातो समुद्रों के जल लाने चल दिये।**

भरत ने सुमन्त को आज्ञा दी। मुनिवर वसिष्ठ एवं मन्त्रपूत वेदज्ञ ब्राह्मणों को बुलाइये। सुमन्त्र ने शीघ्र वैसा ही किया। **वसिष्ठ आये और बोले मुकुट धारण की शुभ घड़ी (शुभ मुहूर्त) कल होगा। सबों ने 'तथास्तु'–ऐसा ही हो-करें।** इसके बाद वह शुभ बेला आ गयी। सभी ऋषि, ब्राह्मण, वेदज्ञ, मन्त्रिगण, ज्ञानी गण ने मिलकर पवित्र **तीर्थ जल से** राम को स्नान कराया। तब गुरू ऋषि बसिष्ठ ने राम के मस्तक पर **'राजमुकुट' रखा।** उस समय सबों को अनुभव हुआ कि त्रैलोक्य के दुःख दूर हो गये, आनन्द आ गये। तीनों लोक उल्लसित हो उठे। तब हनुमान् सिंहासन पकड़े, अङ्गद ने खड्ग धारण किया और भरत ने श्वेत राज-छत्र हाथ में लिया। लक्ष्मण-शत्रुघ्न चंवर (चामर) डुला रहे थे। इस तरह रामचन्द्र भूमिपति भूपति हो गये। भूमि सुता सीता सद्यः पत्नी हो गयी **(राज्याभिषेक यज्ञ में साथ होने के कारण 'पत्नी'** शब्द सार्थक हुआ। यज्ञ में साथ-साथ देने वाली का ही नाम ''पत्नी'' (पत्युर्नो यज्ञ संयोगेपाणिनिसूत्र) है। इसके बाद रामचन्द्र पति-पत्नी के सुखाभोग, विलास आदि में संलग्न हो गये। इसके बाद **बसिष्ठ** की आज्ञा से राम ने क्रमशः विधि विधान से भरत, लक्ष्मण एवं शत्रुघ्न के मस्तकों पर किरीट मुकुट पहना दिया। स्वयं सुख भोग विलास में रत हो गये।

इति श्री किरीट धारण पटल

१९ विडैकौ डुतनू पडलम्—अनुमति प्रदान पटल

कम्ब रामायण के इस लघु रूप के अन्तिम पटल में अयोध्या से विभीषण, जाम्बवान्, सुग्रीव आदि का अपने-अपने स्थान पर लौटने का कारुणिक वर्णन प्रमुख है।

राज्यसिंहासन पर बैठने के बाद सीतासहित रामचन्द्र ने अयोध्या-वासियों को उस रूप में दर्शन दिया, वहाँ भूलोक वासी, नाग लोक वासी और आकाश वासी अर्थात् स्वर्ग, मर्त्य, एवं पाताल वासी सबों ने यथा योग्य, स्तुति की। मंगल गीतों के साथ ब्राह्मणों ने आशीर्वाद दिया। मृदंग, शंख आदि की ध्वनि, विविध वाद्यों के मधुर स्वर एवं रमणियों के मयूर नृत्य देखने योग्य थे। अपार सुन्दर स्त्रियाँ गा रही थीं कि युग युगान्त पर्यन्त ये चिरंजीवी हों। मैन्द, द्विविद, अंगद आदि सरसठ (६७) कड़ोर योद्धा गण और विभीषण आदि सभी वहाँ पहुँचकर 'सीता-राम' को प्रणाम किये।

दशरथ के पुत्र के रूप में साक्षात् परात्पर-परब्रह्मस्वरूप राजा रामचन्द्र सबों के साथ आनन्द से मिले। उन्होंने विभीषण, सुग्रीव, अंगद आदि को अनेक प्रकार के उपहार दिये। हनुमान पर बहुत बड़ी कृपादृष्टि देकर स्वर्ण आदि दिये। भगवती सीता ने सरस्वती के द्वारा दी गयी मुक्ता माला हनुमान् को दे दी। श्री रामचन्द्र ने मुक्ता माला सहित हाथी, घोड़े, और विविध आभरण जाम्बवान् को दिये। और अग्नि-पुत्र नल को शीघ्रगामी घोड़ा और सुन्दर गजराज दिया। इस प्रकार यथायोग्य उपहार सबों को देकर आशीर्वाद दिया कि आप सभी लोग सुख से रहें। निषाद राज 'गुह' को बहुत कोमल वचनों से संतोष देकर अनेक प्रकार के आभूषण दिये।

तब रामचन्द्र ने हनुमान्, अगंद, जाम्बवान्, सुग्रीव, और निषाद राज को कहा कि आप लोग अपने-अपने स्थान पर लौटकर अपना काम करें। यद्यपि यह कथन अत्यन्त ही अप्रिय कठिन करुणा पूर्ण दुःख था। लेकिन कर्त्तव्य पालन को ध्यान में रखकर आज्ञा के अनुसार सबों ने राम की परिक्रमा कर 'पुष्पक-विमान' द्वारा अयोध्या से प्रस्थान कर गये। उस समय का दृश्य अत्यन्त ही मार्मिक—करुणा-पूर्ण था।

रामचन्द्र सीता के साथ एवं भाइयों के साथ मनुष्य की लीला करते हुए राज्य-शासन चलाने लगे। सभी लौकिक रीतियों का पालन किया। एवं चौदहों भुवनों की रक्षा की। इस तरह का राम-राज्य था। न उसकी कोई तुलना थी, न है, न होगी। इस महा महिमाशाली आदि पुरुष-सह-दशरथ-पुत्र राम की कथा को जो सुनता है, वर्णन करता है, वह नराधिपतिराजा होता है और उनको यमराज का भय नहीं होता है।

इति अनुमति प्रदान पटल

इति कम्बरामायणम

ॐ

श्रीः

''पाठकों के सुविधार्थ महाकवि 'कम्बन्' की कुछ विशिष्ट अद्‌भुत वर्णनों की संक्षिप्त सूची ''

पृष्ठभूमि–वैसे तो 'कम्बन्' ने सर्वत्र अपनी काव्य कला शैली का अभूतपूर्व परिचय दिया है। जिनका कुछ उल्लेख निम्नांकित है। उनमें भी **''कामिनी-केश-पाश'' के वर्णन में** संस्कृत के विभिन्न काव्यों एवं भारतीय वाङ्मय के राम काव्यों में वर्णित **''कामिनी-केश-पाश'' वर्णनों एवं नारी शृङ्गार** वर्णनों को बहुत पीछे छोड़ दिया है।

प्रत्येक काण्डानुसार--उन उन पटलों की संक्षिप्त सूची दी जा रही है जहाँ 'केशपाश' का सरस वर्णन है।

इसके बाद **नवीन घटना क्रमों** के वर्णनों की भी एक सूची दी गयी है।

इस तरह कवि सम्राट-'कम्बन' ने यत्र तत्र सर्वत्र नूतन शैली में अद्‌भुत घटना चक्र से इस **''रामायण''** को अद्वितीय–बना दिया है। इनका सभी प्रमुख वर्णन-संकेत उन-उन स्थानों पर मोटे अक्षरों में मुद्रित है।

कामिनी केशपाश वर्णन के प्रमुख पटल

१. **बालकाण्ड**–(क) देशपटल, (ख) कार्मुक पटल, (ग) प्रस्थान पटल, (घ) वीथी भ्रमण पटल, (ड) शृङ्गार सज्जा पटल।

२. **अयोध्या काण्ड**–(क) मन्त्रणा पटल, (ख) गङ्गा पटल।

३. **अरण्य काण्ड**–(क) शूर्पणखा पटल (ख) शूर्पणखा योजना पटल।

४. **किष्किन्धा काण्ड**–(क) वर्षा काल पटल, (ख) किष्किन्धा पटल, (ग) अन्वेषण पटल।

सुन्दर काण्ड–(क) सीता दर्शन पटल, (ख) उद्यान विध्वंस पटल।

६. **युद्ध काण्ड–(उत्तराधं)** (क) विनोदोत्सव पटल, (ख) प्रत्यागमन पटल।

विशेष–रावण के मरने से पूर्व मन्दोदरी-मरण वर्णन युद्धकाण्ड-उत्तरार्ध-'रावण वध पटल'।

७. इसके अतिरिक्त प्रत्येक पटल के किसी भी वर्णन में सर्वत्र नारी केशपाश सौन्दर्य का वर्णन पठनीय-दर्शनीय है।

नवीन घटना वर्णन

१. चारों 'गोपुर सहित चारो तरफ जल स्रोत से घिरी हुई अयोध्या नगरी उपनिषद् सहित **चारो वेद** के समान पवित्र है ।

२. दशरथ को तीन पत्नियों के अतिरिक्त **साठ हजार पत्नियाँ थीं**, जो दशरथ के संस्कार के समय चिता में प्रवेश कर गयीं ।

३. मरण समय में दशरथ ने बसिष्ठ से कहा कि मैं **'कैकेयी'** को अपने **पत्नीत्त्व** से तथा **भरत को पुत्रत्व** से वञ्चित करता हूँ। **भरत मेरा श्राद्ध नहीं करेंगे। ऐसा ही हुआ ।**

४. गंगा पार होने पर निषादराज **'गुह'** को अपना मध्यम अनुज–लक्ष्मण के अग्रज एवं भरत के अनुज रूप में, तथा 'सीता' को **'भ्रातृजाया'** के रूप में स्वीकार करने की घोषणा अभूतपूर्व है । इस तरह 'राम' पाँच भाई हो गये ।

५. **'चित्रकूट'** का वर्णन सभी उपलब्ध राम काव्यों से विशिष्ट उत्कृष्ट एवं विशद है ।

६. **'पञ्चवटी'** से रावण ने सीता को **''पर्णशाला''** सहित **पृथ्वी को ही उखाड़ कर पुष्पक विमान पर लंका ले जाने की अभूतपूर्व कथा है** । रावण ने कभी सीता का स्पर्श नहीं किया–यह भी उदात्त घटना है ।

७. **'जटायु'** का अपने हाथ से राम ने स्वयं संस्कारादि किया । यह भी नूतन घटना वर्णन है ।

८. **'लक्ष्मण'** की मूर्छा के बाद **संजीवनी लाने** का वर्णन तो सर्वथा-**अभूतपूर्व–अज्ञात-पूर्व** रूप में कवि ने वर्णन कर **''राम काव्य कथा''** में चमत्कार जनक अध्याय जोड़ दिया है ।

९. **'रावण'** के प्राण वियोग से पहले ही **'मन्दोदरी'** रावण की छाती पर रोती हुई मर गयी अर्थात् **मन्दोदरी विधवा नहीं हुई** । **यह भी सर्वथा नूतन कथा है ।**

१०. लंका से अयोध्या प्रस्थान के समय वहाँ स्वर्ग से **'दशरथ'** के आने पर अनेक वार्तालाप के साथ दशरथ ने 'राम' को **दो वरदान** दिये । राम ने पहला वरदान (१) माता **''कैकेयी''** को पुनः **पत्नी के रूप** में स्वीकार करना । (२) दूसरा **'भरत' को** पुनः पुत्र के रूप में स्वीकार करने का वर माँगा । अन्ततः दशरथ ने दोनों बातें स्वीकार कर लीं । यहाँ राम का चरित्र उच्चतम शिखर पर पहुँच गया !

११. सीता की अग्नि परीक्षा का वर्णन प्रायः सभी रामायण कारों ने किया है। किन्तु **'कम्बन्'** ने जिस रूप में अयोध्या प्रस्थान से पूर्व **'सीता' की अग्नि परीक्षा** का वर्णन किया है–**वह विचित्र, विस्मय कारी एवं कारुणिक है।**

''भारतीय बाङ्मयेषु रामकथा वर्णनम्-

'कम्ब रामायण' में द्वितीय भाग''

पृष्ठभूमिः-''कम्बरामायणम्–के संक्षिप्त संस्कृत गद्यानुवाद पुस्तक के ''द्वितीय भाग'' के रूप में संस्कृत के पाँच ''रामकाव्य'' नाटकों के भी संक्षिप्त सरल संस्कृत गद्यानुवाद यथा स्थान उद्धरणों के साथ अलग-अलग दिये गये हैं। **'कम्ब रामायण'** के इस हिन्दी-रूपान्तरण में उन पाँचो काव्यों का भी हिन्दी अनुवाद देना उचित था। किन्तु यह पुस्तक केवल **''विशाल-तमिल कम्बरामायणम्** का ही अनुवाद प्रधान है अतएव विस्तारभय से उन्हें यहाँ नहीं दिया जा रहा है।

विषय-वस्तु :- संस्कृत नाटक के महाकवि **'भवभूति'** के दो नाटकों (१) **महावीर चरितम्** (२) **उत्तर राम चरितम्** के भी संस्कृतानुवाद उक्त पुस्तक में हैं। यहाँ केवल इन दोनों-नाटकों में परस्पर सर्वथा भिन्न प्रकार के वर्णन से ''भवभूति'' जैसे कवि सम्राट के भ्रम ने समीक्षकों को चकित विस्मित कर दिया है। उन्हीं का अति संक्षेप रूप में यहाँ दिग्दर्शनमात्र कराया जा रहा है। इसपर विद्वान् गंभीर समीक्षक अवश्य अपना मत व्यक्त करना चाहेंगे। जिसपर आज तक के सभी संस्कृत हिन्दी टीकाकार समीक्षक के साथ विदेशीय महान् समीक्षक 'कीथ' मैगडोनेल एवं 'विन्टरनिज' भी मौन हैं।

विस्मयकारी वर्णन :- महाकवि भवभूति के ''महावीरचरितम'' तथा ''उत्तररामचरितम्'' नाटकों के अति संक्षिप्त विषय-वस्तु विवरण।

१. **''महावीरचरितम्''**–नाटक में राम के पूर्व चरित का वर्णन है। इस में राम जन्म से लेकर रामवनगमन, दशरथ मरण, सीता हरण, राक्षस बध, रामरावणयुद्ध, रावण बध, अयोध्याप्रत्यागम तथा रामराज्याभिषेक तक का वर्णन है।

२. सर्व प्रथम इस राम काव्य के राम के पूर्वचरित में 'राम' को **'महावीर'** शब्द से वर्णन करना संगत नहीं लगता है। यह नाटक छठी सातवीं शताब्दी में रचित है। जब महावलशाली **''हनुमान''** महावीर' शब्द से रामायणों, रामकाव्यों में सर्वत्र सम्बोधित हैं। राक्षसों एवं रावण बध के कारण **''मर्यादापुरुषोत्तम'' को ''महावीर'' कहना** हलका लगता है। जबकि इसी ''महाकवि ने अपने ''उत्तररामचरितम्'' में राम को **''रामभद्र'', पुरुषोत्तम** प्रभृति भव्य शब्दों से सम्बोधित किया है। अस्तु, यह तो एक साधारण बात रही।

३. दूसरा यह कि **"महावीरचरितम्"** पूर्व चरित में विवाह के तुरत बाद **मिथिला–जनकपुरी–से** दशरथ, वसिष्ठ, विश्वामित्र एवं विदेह जनक प्रभृति के सामने ही **"राम-सीता-लक्ष्मण"** को कवि **ने वन भेज दिया**। वे तीनों विवाहोपरान्त एक क्षण के लिए भी अयोध्या नहीं आयें।

४. पता नहीं ऐसी कथा की सृष्टि भवभूति ने किस आधार पर की ? यह घटना तो नितान्त निन्दनीय–अविश्वसनीय–क्षोभजनक है। खैर, यह भी रहे।

५. महाकवि **भवभूति** ने अपने विश्वप्रसिद्ध **"उत्तरामचरितम्"** नाटक लिखने के समय "महावीरचरितम्" की घटना वर्णन को एकदम भूल गये। "उत्तरामचतिम्" की एक एक पंक्ति स्वर्णाक्षरों में अंकित करने योग्य है। संस्कृत के विशाल नाटकजाल में महाकवि **कालिदास का "अभिज्ञान शाकुन्तलम्" एवं भवभूति का "उत्तररामचरितम्" ये दो नाटक ही उपर्युपरि हैं।**

६. यहाँ आकर भवभूति–भूल गये कि मैंने तो 'राम' को जनकपुर से ही वन भेज दिया। वे अयोध्या आए भी नहीं। पिता स्वर्गीय हो गये। तब लक्ष्मण से कहते हैं कि –

"जीवत्सु तात पादेषु नवेदारपरिग्रहे।

मातृभिर्श्चिन्त्यमानानां तेहिनो दिवसाः गताः ॥

अर्थात- जब तात चरण-पिताजी जीवित थे, और हमलोगों के नवीन सद्याः पाणिग्रहण (विवाह) के बाद, तथा तीनों माताओं से ललित हमलोगों के वे दिन बीत गये।

कहिये, कोई भी उन्मत्त ही–ऐसा कह सकता है जब कि ऐसी स्थिति उनके ही पूर्व चरित से आयी ही नहीं।

प्रथम अंक के ही २० वें पद्य में माताओं द्वारा पुत्र बधुओं के शृङ्गारवर्णन कहाँ से संम्भव हुआ।

जब लक्ष्मण चित्रांकन राम को दिखा रहे थे राम नें **"मध्यमाम्वाचरित चित्रपत्रं परिवर्तितम्"** अर्थात् मध्यम माता कैकेयी के चरित्र वाले चित्र को राम ने उलटा दिया। सोचिये तो जरा, यह अवसर तो भवभूति ने दिया ही नहीं।

यही उपर्युक्त भूल भ्रम–या कोई गंभीर गवेषण भवभूति के सामने थे। इसपर विद्वज्जन पूर्वाग्रह रहित होकर सुलझे हुए दृष्टिकोण से समीक्षा करके अपना-अपना विचार संसार के समक्ष लाने का कष्ट करें।

चूँकि ''महावीरचरितम् किसी परीक्षा के पाठ्यक्रम में नहीं है । और ''उत्तररामचरितम्'' भारत एवं विदेश के सभी विश्वविद्यालयों के संस्कृत पाठ्यक्रम में हैं। यह एक कारण हो सकता है कि विद्धानो का ध्यान पूर्वचरित्र–'महावीरचरित' पर नहीं गया हो । लेकिन यह कारण ठोस नहीं है–यह मैं भी समझता हूँ ।

विस्तार–भय से केवल दिग्‌दर्शन मात्र करा दिया गया है ।

आद्याचरण झा

सीता-परित्याग-समीक्षा

इस लेखक ने बहुचर्चित **सीता परित्याग सम्बन्धी करुण घटना की समीक्षा 20 रामकाव्यों के परिप्रेक्ष्य में की है,** तथा कुछ अपनी मनोभावना भी व्यक्त की है। परिशिष्ट के विशिष्ट अंश ये हैं।

भिन्न-भिन्न रामायणों में सीतापरित्याग की कथा विभिन्न रूपों में है। बहुत सी रामायणों में इसकी चर्चा भी नहीं है। वाल्मीकि काल से लेकर आज तक लगातार सीता के परित्याग की चर्चा–समीक्षा एवं मतभिन्नता देखने सुनने में आ रही है। यहाँ कुछ रामायणों–रामकाव्यों का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है।

(1) आदिकवि वाल्मीकि ने अपने वाल्मीकि रामायण में सीता परित्याग का वर्णन किया है। उसके अनुयायी रामकाव्यों के कवियों ने भी विभिन्न शैली में चर्चा की है।

महाराजा रामचन्द्र ने गुप्तचर द्वारा सीता के प्रसंग में सामान्य आलोचना सुनकर सर्वथा पापरहिता अग्नि परीक्षा से विशुद्ध पतिपरायणा धर्म पत्नी सीता का परित्याग कर दिया। वह यह जानते हुए कि सीता पूर्णगर्भा है, वन घूमने के छल से सीता को उन्होंने निर्वासित किया।

राजतंत्र में भी जनतंत्र की तरह राज्यशासन करते हुए संसार को पवित्र करने वाली सबों को कल्याण देनेवाली सीता को महाराज रामचन्द्र ने निर्वासित किया।

वन में वह वाल्मीकि द्वारा अपने आश्रम पर लायी गयी। वहाँ दो युगल पुत्रों को जन्म दिया। वे दोनों कुमार वाल्मीकि द्वारा शिक्षित हुए। ऋषि ने ही उनका संस्कार किया। रामचन्द्र के यज्ञ में ऋषि वाल्मीकि के साथ वे दोनों कुमार आये। सीता भी वाल्मीकि के साथ आयी। वहीं सीता को वाल्मीकि ने सर्वथा परिशुद्ध–निष्पाप प्रमाणित किया। सीता वहीं सबके सामने पाताल में प्रवेश कर गयीं। यह विस्तृत घटना वाल्मीकि रामायण में है।

वाल्मीकि रामायण के उत्तरखण्ड में 96-97 सर्गों में यह कथा सविस्तार वर्णित है। अन्त में राम ने ऋषि से क्षमा याचना की।

देखें :

इंय दाशरथे सीता सुव्रता धर्म चारिणी
अपवाद परित्यक्ता ममाश्रम समीपतः।
वहु वर्ष सहस्रणि तपश्चर्या मया कृता
नोपाश्नीयों फलंतस्य दुष्टेयं यदि मैथिली।

उ. का. 96/16-20

वाल्मीकि कहते हैं : हे दशरथ के पुत्र राम, यह धर्मचारिणी पतिव्रता अपवाद के कारण मेरे आश्रम के समीप छोड़ दी गयी । मैंने कितने हजार वर्षों तक तपस्या की है । यदि यह सीता पापिनी हो तो मुझे उस महान् तपस्या का फल नहीं मिले, हाँ महर्षि वाल्मीकि ने अपनी तपस्या की शपथ लेकर सीता को कलंक रहित प्रमाणित किया है ।

राम कहते हैं : हे ब्रह्मर्षे, सीता निष्पाप है यह जानते हुए लोकापवाद के भय से मैंने सीता का परित्याग किया है । उसे आप क्षमा करें ।

वाल्मीकि निर्मित ही **आनन्द रामायण** में सीता परित्याग की कथा भिन्न रूप में है । लोकापवाद को सुनकर राम ने जनक के साथ परामर्श करके सीता को वाल्मीकि आश्रम में लक्ष्मण के द्वारा भिजवा दिया । लक्ष्मण वहाँ छोड़कर लौट गये । वहीं सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया । ऋषि से शिक्षित वे दोनों राम के यज्ञ में वाल्मीकि के साथ आये । सीता भी साथ आयी । उन्हें देखकर राम आश्चर्यित हुए । वहाँ वाल्मीकि ने सीता की पवित्रता का वर्णन किया । सहसा वहीं सब के सामने सीता पृथ्वी में प्रवेश कर गयी । राम ने पृथ्वी के प्रति क्रुद्ध होकर सीता को लौटाने का आदेश दिया । पृथ्वी ने वैसा ही किया । सीता को वापस कर दिया । तब राम ने सीता के साथ अश्वमेध यज्ञ किया तथा चिर दिनों तक पुत्री-पौत्रादि सहित सीता के साथ राज्य किया ।

अतएव यह आनन्द रामायण की कथा सीता संयोग-पूर्ण है ।

(2) वाल्मीकि निर्मित ही अद्भुत रामायण में सीता परित्याग की चर्चा नहीं है ।

(3) राजशेखराकृत **बाल रामायण** में इसकी चर्चा भी नहीं है ।

(4) हनुमान द्वारा रचित हनुमन्नाटक में एक पद्य मात्र में सीता परित्याग की चर्चा है।

(5) वेदव्यास रचित अध्यात्म रामायण में भिन्न रीति से यह कथा है । लोकापवाद के भय से राम ने सीता के साथ एकान्त में गुप्त विचार करके लक्ष्मण द्वारा वाल्मीकि आश्रम में भेज दिया । वहीं सीता को प्रसव (सन्तान) होगा, यह संकेत मात्र है ।

पुनः वाल्मीकि के साथ सीता राम सभा में आयीं । वहाँ सभी देवताओं, ऋषियों के सामने दिव्य अलौकिक संकल्प वचन से अपनी माता पृथ्वी की प्रार्थना की । पृथ्वी को चीरते हुए एक दिव्य सिंहासन वहाँ उद्भूत हुआ । सीता उस पर बैठकर पृथ्वी में अलर्लीत हो गयीं ।

(6) महाकवि कालिदास ने रघुवंश में 14-15 सर्ग में वाल्मीकि की तरह ही सीता परित्याग का वर्णन किया है ।

(7) महाकवि भवभूति ने अपने उत्तररामचरित में सीता निर्वासन का कारुणिक चित्रण किया है । जहाँ करुण रस धार प्रवाहित है । किन्तु वहाँ छाया रूप में राम-सीता मिलन का दृश्य वर्णन करते हुए अन्त में गर्भांक में सीताराम का मिलन दिखाया है । इस तरह यह संयोगान्त ही नाट्य काव्य है ।

(8) महाकवि दिङ्नागाचार्य रचित **कुन्दमाला नाटक** में सीता परित्याग की करुणापूर्ण कथा है, किन्तु पुनः सीता मिलन पूर्वक रामयज्ञ संपन्न होने की सुखान्त संयोगान्त वर्णन इसमें हैं ।

(9) तमिल भाषा का प्रसिद्ध विशाल काव्य रामायण में सीता परित्याग की कथा है ही नहीं । उसमें युद्ध कांड के पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध दो भागों में ही लंका से राम के अयोध्या परावर्तन मात्र तक की कथा है ।

(10) **गुजराती भाषा की गिरिधर रामायण** में वाल्मीकि रामायण की तरह ही सीत्यापरित्याग कथा–लव कुश जन्म सीता सहित लव-कुश के साथ रामयज्ञ में वाल्मीकि का अगमन का वर्णन है । किन्तु उसी यज्ञ में सीता का ग्रहण तथा उनके साथ अयोध्या आकर राज्य करना कुश लव को यथास्थान राज्य देने की कथा संयोगान्त वर्णित है । अन्त में कैकेयी के षड्यन्त्र के सीता के पाताल में प्रवेश की चर्चा है । यहाँ सर्वथा नवीन घटना की कल्पना है । यह रामायण प्रदेश की चर्चा है । यहाँ सर्वथा नवीन घटना की कल्पना है । यह रामायण आनन्द रामायण की अनुगामी प्रतीत होती है ।

(11) **कश्मीरी भाषा की रामायण–रामावतार** चरित में सीतापरित्याग की कथा नहीं है। केवल अपनी ननद के द्वारा उद्वेलित उद्विग्न होकर सीता अन्तर्धान हो जाती है । राम भी तुरत देहत्याग कर देते हैं । **यहाँ भी कथा वर्णन सर्वथा नूतन है ।**

(12) **ओड़िया भाषा में छन्द गीतात्मक वैदेही विलास** नाम की रामायण में सीता परित्याग की चर्चा नहीं है । ग्रन्थ के अन्तिम भाग के 46 पद्यों में ऐसी करुण कथा का लेखन निषिद्ध वर्जित है —ऐसा उल्लिखित है ।

(13) **असमिया भाषा के माधवकन्दली रामायण** में सीता परित्याग आदि की कथा आनन्द रामायण की तरह ही संयोगान्त है ।

(14) **मराठी भाषा की श्रीराम विजय**—रामायण में सीता परित्याग का वर्णन तो है, लेकिन पुनः उन्हें लौटाकर राम शान्ति लाभ करते हैं । फलतः यहाँ भी संयोगान्त की कथा है ।

(15) **बंगला भाषा के प्रसिद्ध कृत्तिवास** रामायण में वाल्मीकि रामायण की तरह ही सीता परित्याग का संपूर्ण वर्णन है ।

(16) **कन्नड़ भाषा के विस्तृत तोरबे रामायण में** सीतापरित्याग की कथा नहीं है । राम राज्याभिषेक के वाद ही यह महाकाव्य संपन्न होता है ।

(17) **मलयालम् भाषा के अध्यात्म रामायण** में सीता परित्याग की कथा है । इसमें लवकुश की चर्चा नहीं है ।

(18) **मैथिली भाषा के चन्दा झा कृत मिथिला रामायण** में सीतापरित्याग की कथा वाल्मीकि रामायण की तरह ही है ।

(19) **गोस्वामी तुलसी कृत रामचरित मानस** में सीतापरित्याग की चर्चा भी नहीं है । रामराज्याभिषेक तक ही कथा है ।

वाल्मीकि कहते हैं : हे दशरथ के पुत्र राम, यह धर्मचारिणी पतिव्रता अपवाद के कारण मेरे आश्रम के समीप छोड़ दी गयी। मैंने कितने हजार वर्षों तक तपस्या की है। यदि यह सीता पापिनी हो तो मुझे उस महान् तपस्या का फल नहीं मिले, हाँ महर्षि वाल्मीकि ने अपनी तपस्या की शपथ लेकर सीता को कलंक रहित प्रमाणित किया है।

राम कहते हैं : हे ब्रह्मर्षे, सीता निष्पाप है यह जानते हुए लोकापवाद के भय से मैंने सीता का परित्याग किया है। उसे आप क्षमा करें।

वाल्मीकि निर्मित ही **आनन्द रामायण** में सीता परित्याग की कथा भिन्न रूप में है। लोकापवाद को सुनकर राम ने जनक के साथ परामर्श करके सीता को वाल्मीकि आश्रम में लक्ष्मण के द्वारा भिजवा दिया। लक्ष्मण वहाँ छोड़कर लौट गये। वहीं सीता ने दो पुत्रों को जन्म दिया। ऋषि से शिक्षित वे दोनों राम के यज्ञ में वाल्मीकि के साथ आये। सीता भी साथ आयी। उन्हें देखकर राम आश्चर्यित हुए। वहाँ वाल्मीकि ने सीता की पवित्रता का वर्णन किया। सहसा वहीं सब के सामने सीता पृथ्वी में प्रवेश कर गयी। राम ने पृथ्वी के प्रति क्रुद्ध होकर सीता को लौटाने का आदेश दिया। पृथ्वी ने वैसा ही किया। सीता को वापस कर दिया। तब राम ने सीता के साथ अश्वमेध यज्ञ किया तथा चिर दिनों तक पुत्री-पौत्रादि सहित सीता के साथ राज्य किया।

अतएव यह आनन्द रामायण की कथा सीता संयोग-पूर्ण है।

(2) वाल्मीकि निर्मित ही अद्‌भुत रामायण में सीता परित्याग की चर्चा नहीं है।

(3) राजशेखराकृत **बाल रामायण** में इसकी चर्चा भी नहीं है।

(4) हनुमान द्वारा रचित हनुमन्नाटक में एक पद्य मात्र में सीता परित्याग की चर्चा है।

(5) वेदव्यास रचित अध्यात्म रामायण में भिन्न रीति से यह कथा है। लोकापवाद के भय से राम ने सीता के साथ एकान्त में गुप्त विचार करके लक्ष्मण द्वारा वाल्मीकि आश्रम में भेज दिया। वहीं सीता को प्रसव (सन्तान) होगा, यह संकेत मात्र है।

पुनः वाल्मीकि के साथ सीता राम सभा में आयीं। वहाँ सभी देवताओं, ऋषियों के सामने दिव्य अलौकिक संकल्प वचन से अपनी माता पृथ्वी की प्रार्थना की। पृथ्वी को चीरते हुए एक दिव्य सिंहासन वहाँ उद्‌भूत हुआ। सीता उस पर बैठकर पृथ्वी में अलर्लीत हो गयीं।

(6) महाकवि कालिदास ने रघुवंश में 14-15 सर्ग में वाल्मीकि की तरह ही सीता परित्याग का वर्णन किया है।

(7) महाकवि भवभूति ने अपने उत्तररामचरित में सीता निर्वासन का कारुणिक चित्रण किया है। जहाँ करुण रस धार प्रवाहित है। किन्तु वहाँ छाया रूप में राम-सीता मिलन का दृश्य वर्णन करते हुए अन्त में गर्भांक में सीताराम का मिलन दिखाया है। इस तरह यह संयोगान्त ही नाट्य काव्य है।

(8) महाकवि दिङ्नागाचार्य रचित **कुन्दमाला नाटक** में सीता परित्याग की करुणापूर्ण कथा है, किन्तु पुनः सीता मिलन पूर्वक रामयज्ञ संपन्न होने की सुखान्त संयोगान्त वर्णन इसमें हैं।

(9) तमिल भाषा का प्रसिद्ध विशाल काव्य रामायण में सीता परित्याग की कथा है ही नहीं। उसमें युद्ध कांड के पूर्वार्द्ध-उत्तरार्द्ध दो भागों में ही लंका से राम के अयोध्या परावर्तन मात्र तक की कथा है।

(10) **गुजराती भाषा की गिरिधर रामायण** में वाल्मीकि रामायण की तरह ही सीत्यापरित्याग कथा–लव कुश जन्म सीता सहित लव-कुश के साथ रामयज्ञ में वाल्मीकि का अगमन का वर्णन है। किन्तु उसी यज्ञ में सीता का ग्रहण तथा उनके साथ अयोध्या आकर राज्य करना कुश लव को यथास्थान राज्य देने की कथा संयोगान्त वर्णित है। अन्त में कैकेयी के षड्यन्त्र के सीता के पाताल में प्रवेश की चर्चा है। यहाँ सर्वथा नवीन घटना की कल्पना है। यह रामायण प्रदेश की चर्चा है। यहाँ सर्वथा नवीन घटना की कल्पना है। यह रामायण आनन्द रामायण की अनुगामी प्रतीत होती है।

(11) **कश्मीरी भाषा की रामायण–रामावतार** चरित में सीतापरित्याग की कथा नहीं है। केवल अपनी ननद के द्वारा उद्वेलित उद्विग्न होकर सीता अन्तर्धान हो जाती है। राम भी तुरत देहत्याग कर देते हैं। **यहाँ भी कथा वर्णन सर्वथा नूतन है।**

(12) **ओड़िया भाषा में छन्द गीतात्मक वैदेही विलास** नाम की रामायण में सीता परित्याग की चर्चा नहीं है। ग्रन्थ के अन्तिम भाग के 46 पद्यों में ऐसी करुण कथा का लेखन निषिद्ध वर्जित है—ऐसा उल्लिखित है।

(13) **असमिया भाषा के माधवकन्दली रामायण** में सीता परित्याग आदि की कथा आनन्द रामायण की तरह ही संयोगान्त है।

(14) **मराठी भाषा की श्रीराम विजय**—रामायण में सीता परित्याग का वर्णन तो है, लेकिन पुनः उन्हें लौटाकर राम शान्ति लाभ करते हैं। फलतः यहाँ भी संयोगान्त की कथा है।

(15) **बंगला भाषा के प्रसिद्ध कृत्तिवास** रामायण में वाल्मीकि रामायण की तरह ही सीता परित्याग का संपूर्ण वर्णन है।

(16) **कन्नड़ भाषा के विस्तृत तोरबे रामायण में** सीतापरित्याग की कथा नहीं है। राम राज्याभिषेक के बाद ही यह महाकाव्य संपन्न होता है।

(17) **मलयालम् भाषा के अध्यात्म रामायण** में सीता परित्याग की कथा है। इसमें लवकुश की चर्चा नहीं है।

(18) **मैथिली भाषा के चन्दा झा कृत मिथिला रामायण** में सीतापरित्याग की कथा वाल्मीकि रामायण की तरह ही है।

(19) **गोस्वामी तुलसी कृत रामचरित मानस** में सीतापरित्याग की चर्चा भी नहीं है। रामराज्याभिषेक तक ही कथा है।

उपर्युक्त बीस रामायण रामकव्य के संक्षिप्त विवरण के बाद कुछ जिज्ञासाएँ मन में उठती हैं। इस प्रसंग में मेरी समीक्षा धारणा निम्नांकित है—

(क) चक्रवर्ती सम्राट् के रूप में महाराज रामचन्द्र के कठोर शासन क्रम में वाल्मीकि काल से लेकर अद्य पर्यन्त सीतापरित्याग की घटना बहुत बड़ी चर्चा का विषय रहा है जिस महान वाल्मीकि रामायण में यह मूलघटना का वर्णन है, वहीं वाल्मीकि ने अपने महान् तपोबल से स्पष्ट शब्दों में राम को समझाया है और इस अविचारित कार्य के लिये अपना आक्रोश भी व्यक्त किया है। राम ने इस कार्य के लिये क्षमा याचना की है।

(ख) मेरा व्यक्तिगत मत है कि लोकापवाद की बात सुनकर महाराज राम को उचित था कि भरत को राज्य देकर स्वयं परम पवित्र सीता के साथ वन चले जाते इससे इनका 'लोक वेद' दोनों सुरक्षित रहते। लोकाराधन के लिये राज्य त्याग तथा वेद रक्षा के लिये सीता के साथ वन गमन जिस सीता से वैदिक रीति से विवाह किया था।

यह समीक्षा दशरथ पुत्र महाराज रामचन्द्र के प्रसंग है न कि भगवान् राम के प्रसंग।

(ग) इन बातों से यह स्पष्ट है कि भारतीय काव्य परम्परा की भव्य भावना के अनुरूप वियोगान्त वर्णन न कल्याण कारक और न ही प्रियकारक कहा गया है।

(घ) वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह घटना बहुत बड़ी चर्चा का विषय है। यहाँ अनेक प्रकार से बड़े-बड़े चिन्तक समीक्षक अपने-अपने विचार व्यक्त करते आये हैं। यह जागरूक प्रश्न है। प्रश्न का उत्तर सहज नहीं है। कोई समाधान भी सरल नहीं है। निश्चित रूप से कुछ भी कहना संभव नहीं है। फिर भी समीक्षा के क्रम में अपनी भावना को व्यक्त करना उचित है।

(च) यह तो अत्यन्त स्पष्ट है कि "राजतन्त्रात्मक" शासन में महाराज रामचन्द्र ने "लोकतन्त्रात्मक पद्धति" से शासन किया। केवल एकमात्र किसी नागरिक के कथन को–प्रतिकूल आलोचना को गुप्तचर से ज्ञातकर सीता का परित्याग किया।

महाकवि भवभूति ने कहा है कि :

स्नेह, दया, सुख-सुविधा और यदि जानकी को भी लोकाराधन–प्रजारंजन के लिए छोड़ना पड़े तो मुझे कोई व्यथा-पीड़ा नहीं होगी।

(छ) यद्यपि राम ने तो ऐसा कहा किन्तु सीतापरित्याग के बाद सभी रामकाव्यों में पीड़ा का जैसी मर्माहत करने वाली कारुणिक व्यथा कथा की चर्चा है। उसका वर्णन करना दुष्कर कार्य है। महाकवि भवभूति ने ही कहा राम का करुण रस पुटपाक के समान है अर्थात दो ढक्कनों में औषधि विशेष को उनको मूंदकर ऊपर से मिट्टी से पूरा लेप करके उसके भीतर की दवा को आग में पकाया जाता है। जब तक बाहर पूरा लाल नहीं हो जाये। कुम्हार के द्वारा घड़ा आदि को पकाने के लिए जो आवा लगाया जाता है उस आवा के भीतर प्रज्ज्वलित आग जैसे वर्तन को पकाती है। उसी तरह राम की अन्तर्वेदना उन्हें भीतर ही भीतर तप्त कर रही है।

ऐसे दारुण कर्म करने पर राम का परिताप असह्य हो गया। इससे यह ज्ञात होता है कि राम ने यह कार्य सुविचारित रूप से नहीं किया जो उचित नहीं था। कालिदास के किसी अन्य प्रसंग में कथित यह उक्ति यहाँ भी ठीक लगती है, कि अल्पलाभ के लिये बहुत को छोड़ना समुचित विचार नहीं है।

(ज) प्रजा का रंजन ही केवल राजधर्म नहीं है पूर्वापर की समीक्षा करके ही कार्य करना उचित है। जिस आचरण से सूर्य चन्द्रमा के अस्तित्व पर्यन्त भूमण्डल पर तर्क विर्तक अवसर हो तथा आजीवन जिस कठोर कर्म से कथित होते रहे यह काम तो मन में नहीं भाता है।

(झ) लोक रंजन चरित्र की उज्ज्वलता रहे इसमें कोई दो मत नहीं है। किन्तु मानव सुलभ कर्त्तव्य भी तो है। लंका विजय के बाद सभी देवता ऋषियों के समक्ष अग्नि परीक्षा ली गयी सीता को सहसा जिस वेग में अध्यादेश द्वारा लक्ष्मण को छल से सीतापरित्याग का राम ने जो आदेश दिया वह मन में नहीं बैठता है।

(ट) रामचन्द्र के समाने अपने पितामह **''अज''** का उदाहरण सामने था। अज की पत्नी एवं दशरथ की माता **''इन्दुमती''** के सह स्वर्गीया होने पर अज दशरथ को राज्य देकर स्वयं वन चले गये। (पत्नी वियोग में राज्य का परित्याग कर दिया।)

(ठ) यदि रामचन्द्र भीतर बाहर दोनों तरह निश्चित रूप में जानते थे कि सीता पापरहित निर्दोष पतिव्रता है तब किसी के कहने से कैसे ऐसा कठोर कर्म किया यह चिन्तनीय प्रश्न है।

(ड) राम विष्णु के अवतार हैं। इस रूप में तो रामकाव्य का परिशीलन नहीं हो रहा है। यह तो मर्यादा पुरुषोत्तम कर्त्तव्यपरायण सर्वगुण संपन्न महामहिमाशाली दशरथपुत्र राम के रूप में काव्यमर्मज्ञ राम की समीक्षा या विचार करते हैं।

(ढ़) आधुनिक समीक्षक तो नारी को पीड़ा देना उनकी उपेक्षा के परिप्रेक्ष्य में इस घटना को देखते हैं। किन्तु मेरे विचार में यह उचित नहीं हैं। क्योंकि संपूर्ण संसार में उपलब्ध रामकाव्यों में राम के द्वारा नारी की आराधना की चर्चा है।

मेरा अनुभव और अनुमान है कि राजा राम ने अपनी उत्कृष्टता श्रेष्ठता प्रदर्शन के लिए ही हठात् बिना विचारे ही यह कार्य किया।

(ड) धोबी की आलोचना सुनने के बाद राम के सामने स्पष्ट विकल्प था। वह यह कि— यदि राम भरत को राज्य सौंप कर स्वयं सीता के साथ वन चले जाते तो सभी तरह से लोक वेद दोनों की रक्षा होती। अर्थात् लोकानुरंजन भी नहीं होता। न नारी प्रताड़न की न उपेक्षा की कोई नया वितर्क का मौका मिलता। साथ ही राम के चरित्र की बहुत बड़ी वर्धिष्णु महत्ता होती।

(ढ) इस तरह इस घटना को सामान्यजन एवं समीक्षक के स्तुत्य रूप में ग्रहण करने से रामचरित्र में कोई लांछन नहीं होता।

आद्या चरण

SUBMISSION

(I) Bhartiya vangmayeshu Ramkatha Vamanam-The Project's preception and the views of some scholars on the very project are given below in short.

(II) Endlers liker sky and calm like sea, the project may achieve success only by the grace of Rama. There is no other way, no other helper.

(III) I haave observed in the preface that Ramkatha as found in srimad Valmiki Ramayana is the main basis and in respect to that the analysis and criticism of other Ramayan's kathas will be presented, this was also approched by other scholars.

(IV) Any dissimilarity with Valmiki will be indicated with necessary references and reasonable explanations.

(V) In this way in the first phase desriptive account of the Valmiki Ramayana, Anand Ramayana, Adhyatma Ramayana, Adbhut Ramayana, Bal Ramayana and Hanumantak given will be in volume-I in simple Sanshkrit propse. This volume will also include a list of books related to Ramakatha.

(VI) This work is too vast, timetaking and expensive. Even then with my own iimitations, I have began this project depending on his help alone.

(VII) Appeals to scholars, general citizens, educational institutions, University grant commission etc. to help the project have been sent, their respons is awaited.

(VIII) I start this great sacrifices (mahayaina) in the name of Karunenidhana, Adarsh Charitanayaka Lord Ramchandra.

(IX) Suggestions are most welcome.

Adya Charan Jha.
Chief Editor
&
Project Chairman

BHARTIYA VANGMAYESHU RAMAKATHA VARNANAM PROJECT INTRODUTION-NOTE

by

Adya Charan Jha

I am expressing my views regarding the Bhartiya Vangmayeshu Ramakatha Varnraiam project.

In my early youth I got the opportunitmy of regarding the sundarakanda of Tulsi Ramayana, which was in the syllabus of Madhyama examination, The dohas and Chaupais impressed me and a curiosing arose to read the whole Ramayana, and gradually read it.

After this, hearing form some respectable and virtuous persons that all the whises are fulfilled by the recitation of sundara kanda of valmiki Ramayana, I began the chaning of the sundara Kanda of Valmiki, begining with only on chapter a day which was increased later to three every day. Later I could chant the where sundarakanda in a day and then I did about 25 times in my student days. The recitation of three chapters every day is continuining even now. This is how I was attracted to the Ramakatha, In the protrauted journey of life. I have had the opportunity of hearing and reading hundreds of Ramkathas in different languages, and my interest in Ramakatha this grow intensely.

I can't but refer to the interest which may take wise Indrakala. He had towards the Ramakatha for this work. This project there is also an attempt to give a permanent shape to her memory and to pay an affectionate reverence to her.

I have found that in different Indian languages Ramkathas are told in different ways while some are very extensive. Some are too concise, One has only to refer to different sanskrit epics, plays, stories begining from the Ramkatha, of valmiki to Ananda, Adbhut, Adhyama and bal Ramayanas. Apart from these in Hindi since Tulsi's Ram Charitamanasa, it has been mentined in hundreds of Kavyas, Khanda-Kavyas and stories. Along with these the Ramayanas and Ramkathas cover large part of literature in Bengali, maithili, Narathi, Gujran, Telgu, Kannada, Malya lama, Kashmir and Tamil, The huge Kamba Ramyana in Tamil is full of qualities to Charm the world like Valmiki and Tulsi Ramayanas. In Urdu and persian also many Ramkatha books are

available. A number of writings are present in southeast Asian countries too.

An idea aroused in my mind that a critical and analytical Ramkatha, which extends like ocean be written in simple and understandable sanskrit. That will be good for myself and whole nation as well. Accordingly I decided to do this great and tiresome work which is challenging but not impossible. As first an article entitled 'Bhartiya Vangmayeshu Ramkatha Varnanam Pariyojana' was published in vishwamanisha magazine of KSDSV and Sanskrit Cammelanam magazine published from Patna city.

Side by side I contacted persons interested in Ramakatha. My old friend, verteran critic and Director of A.I.R. Darbhanga, shri chaturbhuja told me that the Bhuvan Publications, Lucknow had published all types of available Ramakatha-materious in Indian and some of the foreign languages in thier original form with a translation there of in Hindi. Immediately I contacted them and recieved the reply within ten days, and purchased some important publications. In collection of these books, the sympathy of my childhood friend Dr. Jaymanta lishra who if the co-ordiator of this project, was with me and I am sure, will Continue with me. I also purchased certain books according to my financial suitability besides this.

I am the life-long subscriber of Mandas a Bharati, Basically a Ramakatha journal published from Bhopal. The aforesaid magazine was started with the help of my respectable friend Dr. Prabhudayal Agnihotri. After reading some sensitive articles related to Ramakath, amy deceased wise requested me for life-long subscription, and I did so.

I also contaued some of the authors whose articles were published in Manasa Bharti.

In this way I, without consulting anyone, mentally decided to do this big work (mahayjna). Now it depends upon my brother, sons, daughters and children besides these if also depends upon the help and advice of my vast friend circle extending not only in this state but in the different parts of this country.

In brief, my conception is following—

(i) Valmiki Ramayana is the basis of all Ramakathas of Gita developing in different branches.

(ii) Among the Ramayanas Valmiki R; and Bal Ramayana are important. In addition to these more than fifty Ramayanas are avilable in Sanskrit. The scattered Vast Ramakathas of these

Ramayanas will be collected, Mentioning their dissimilarities. Minute Study will be given in prose form of sanskrit (With references of verese it needed) in Volume-I.

After this the collection of the Ramakathas from dramas, ecics, Khandkavyas and stories which are the legacy of Indian entiments will be presented. The second Volume should cover about 1500 pages.

(iii) Next, from Tulsi's Ramcharita Vanasa and Vinayapatrika to present day's Hindi Ramakathas, written in sanskrit will be the third volume. This too will be of about 2500 pages.

Afterwards in volume IV a clarrified discription, in sanskrit, or Maithili, Bengali, Bhojpuri, Marathi, Gujrathi, Telgu, Malyalam, Kannad, Tannada, Tamil and Kashmiri Ramayanas will be presented. The limitations of page-numbers of this volume has not been ascertained. This might be in several parts.

(v) And Volume V will contain the concised sanskrit version of the urdu and persian Ramakathas. It will also include the concluding version of the project and tenets to serve guideline of the journey of life. This if, in short, the Key-note of the project.

Finally, I may mention that by the grace of God and with the help and advice of you all this work will be like the symbol of-jani Vidhi Rakha Ramas."

Now remains the question of finance. Has anything to be done of state level? I leave is to my friends and relatives to advise.

PROCEEDINGS OF THE MEETING OF THE EXECUTIVE AND ADVISORY COMMITTEE

An important meeting of the 'Bhartiya Vangmayeshu Ramakathas' project's executive committee and also advisory committee along with specially invited scholars was held today, 9-10-85, at 4 P.M. at the Darbhanga residence of pt. Adya Charan Jha, the Pro-vice Chancellor, Kameshwar singh Darbhanga sanskrit university. On this occasion weaths were offered to the photograph of pt. Jha's deceased wife, Mrs. Indrakala Jha from whose inspiration this project began.

The meeting started with the recitation of Vedic psalms by dr. upendra Jha, Assistant professor of presented a short description of the Vast project and requested the present scholars for further guidence.

Dr. Prabhy Dayal Lgninotri former Vice-chancellor of Jabalpore universing the Vast project like this needs large amount of money, energy and time. There are so many literatures (prose, poetry, champu) related to Rama. In Hindi alone more than hundred Kavyas are written beginging from Hariaudha including Rambriksha Benipuri's 'Sita Ki Katha.' If we publish only ten thousand pages, it will cost Rs. 5 lack. Besides, authors will be given renumerations and the scattered Ramakatha materials should be prepared. Only anxiety will not fulfill the work. He further said that sanskrit lacks such type of critical approch which the readers want today. Furthrmore, Ramakathas have many Variations and the co-ordinations of all views is no less difficult. Patiala has Mata Kausalya's temple, in Amritsar a Valmiki fair takes place. The people of Punjab regard Kausalya and Valmiki as Punjabies. The Buddhist of Sri Lanka beat Tamils and say the upper Villages Lanka in M. P. Dr. Agnihotri advised the collection of fund from different sources for this huge project and exprersed his lifelong help to his project.

Dr. Vidhata Mishra, professor and Head of the P.G. deptt. of Vyakarana & Philology describing certain sources of Ramakatha said stress on the necessity of the collection of these materials. Informed that 28 Ramayanas were compiled before Tulsi. Recently Dr. V.C. Pathak of Gorakhpur University has worked on the different places depicted in the Ramayana. He said that help should be taken from the Indian literature, published by National Book Trust, New Delhi. He

further advised to give stress on the illustrations of the merits of the character of Ramayana's personalities. Thousands of Kavyas had come into existence from different Ramayana's—three in Pali, in Prakrita and setubandha Ramayana in Appabhransha are available. In Bengal we have 6-7 Ramayanas excluding that of Krittavas Ojha. In Assam we have found Smkardeva's Ramayana. Dr. Kailash Chandra Bhatia, under th3e U.G.C. Scheme of Meerut University, has recently surveyed the Ramakavya in 8 years. Dr. Vidya Niwas Mishra (Agra) has surveyed the Ramakavya of Thailand and other countries.

Sri Chaturbhuja, Director AIR, Darbhanga, after describing different Ramakathas said that the literature related to Rama is an ocean and stressed that we should take a row within which period we should complete the project. Whether it will be for the general reader or for scholars must also be decided prior to the publication of the first volume and accordingly a list of contents be published. He also advised that a summary of Ramkathas of different languages should be given in Sanskrit in the first volume. He said that the people want to know what is there in kannada or Malyalam Ramayana? In Kashmiri Ramayana, the description of more than 300 wives of Lakshmana is given. According to this ramayana, Ayodhya, Lanka etc. were in Kashmir. Sita is believed to be Rama's daughter in their Ramayana, Mandodari says to Rama that sita is her daughter and asks him to take her away from Lanka soon. Sri Chaturbhuja advice was for the curtailment of the project and for publication of first volume. He suggested that further planning to be done after the publication of first volume.

Dr. Nagendra Prasad, the Regional Deputy Director of education, Darbhanga division said that this work should be done for the benefit of general readers. Now, this is not that age when any book should be written only for the scholars. People of different communities have adopted Rama and other character of Ramakatha according to their system. Jain Kavi Svyambhu and mahakavi Vimalsuri have mentioned sports (libas) of Rama. Svyambhu has depicted Rama in the lane of whores. Rama and Sita are described brother and sister in one of the Buddhist Jatakas viz. Dashratha Jatak. A riot had occured in Jabalpore when the raist Acharya Tulsi wrote some new things about Rama. He advised such type of books should be written which can entertain the people and increase the knowledge as well. He thanked the Pro-Vice Chancellor who has dedicately decided to jump high at the young age of 66. He informed that the image of Hanumana at Patna museum in somewhat different from that of general conception and in Thai Ramayana, viz. Ramakiyan Hanumana means a strong man. One

part of Ramayana i.e. Sundarakanda is after the name of Sundara, one of the names of Hunumana.

Describing the importance of Ramayana in the Indian Astadasavidya, Prof. Ram Sevak Jha, head of the deptt. of philosophy, requested for the greater evaluation of Rama stories. Which is Sadvritti that is duty, he added, Jaimini has accepted tatpary artha as Vakyartha. The goal of Vidyas is to erase as advritti, and this type of work will be for the public welfare, he commented. At the time of writing Raghuvansha, Kalidasa had some doubts that the characters whom he was mentioning were the descendants of Surya (sun). He had also doubts about-the success of Raghuvansha. Dr. Jha suggested for the removal of prejudices (kusamskaraś) among the people through the large scale practicing of Ramakatha.

Dr. Udayakanta Jha, Head of the Sahitya deptt. said that the atmosphere had become religious due to the talk of Ramakatha. Rama was the Upasaka (devotee) the Upasya was Shiva. Describing the legends about Rama, he said that still there is an island whose people call themselves the descendants of bears. Appaya Dikshit has said that Rama had this power due to the devotion towards the shiva. He hoped that this Ramakatha Project would be fruitful.

The former principal of Shokhara (Barauni) Sanskrit college, pt. Diwakar Shastri said about the importance of Ramakatha in Indian literature and culture and pointed out the difficulties which will come in the way of the completion of this project. He indicated that this project would be for the general people. We should present the summaries of all Ramayanas in simple and understandable sanskrit. We should not mean it to be a research work. Immediately if we take up 5-7 works and publish a summary of 800 pages of each of them, it will become a magnum opus. We take the original story of Rama in Indian language as central theme. Expressing his views about the expenditure, Shastriji said that we can take the advance money from the buyers if possible.

Agreeing about the utility of Project Vidyavachaspati Pt. Ramachandra Mishra expressed his views that list must be given in the first volume about all the Ramakathas of different languages.

Renowned grammarian Pt. Arjun Jha stated that Ramayana is above the logic. Describing the difference between birth and incarnation, he said that the depiction of Ramakatha is a difficult task. Tulsi has himself said that there are hundreds of crores of Ramayanas.

The retired principal of Govt. Sanskrit College (Bhagalpur) Pt. Phulkumar Jha mentioned some vital incidents of Ramayana—

like Rama's banishment and Hanuman-Stuti as the incarnation of sankara. We should know all the sports (lila) of Rama and a collection thereof should be there in Sanskrit. When Krishna lifted the Govardhana mountain, the cowherds also lent support through their sticks. So should we all contribute in this mighty project.

Pt. Upendra Jha, Upacharya of Veda-Dharmashastra said that Ramayana is in various languages. A comparative study in Sanskrit in short be presented, because people do not want to read books. His opininon was that the portions of Ramakatha be published in small books so that the story of Rama can be popularized and characters of Ramayana can be highly lighted.

Dr. Sachchidanand Choudhry, the Registrar of KSDSU, who earlier welcoming the guests invited their opinions again expressed his own views that this project has become very huge. He also doubted about the finishing of the project. He opined that this type of project can take 50 years or reffering to a series of 13 volumes published by Nagari Pracharini Sabha, he said that this type of work is possible only by institution. Showing the instance of Belgium-origin Father Camile Bulke, he said even after his life long attachment to the study of Ramakatha something remained incomplete. He further said that at first a bibliography of the scattered Rama literature should be prepared with a short description of each book. After that any comparative study can be taken up. He said when Terner compiled the dictionary and Girierson surveyed the part dealing with Indian laguages and dilects, then everything can be done if there is dedication.

Summing up, the Vice-Chancellor KSDSU, Dr. Jayamant Mishra, presented a list of rare books of Rama literature and said that Rama and Krishna were such type of incarnations who were always respectable. Both were adorned with splender and sweetness. Querying how we shall show Rama in our project, he answered that Rama of Valmiki should be or ideal. We shall go with the speciality of Valmiki's Rama, the representative of tenfacets of Dharma. If we accomodate the available materials in the first volume that will be a magnum opus. Commenting on the monetary problems Mr. Vice-Chancellor announced that at present we have managed 30 to 40 thousand rupees and when the work will start futher amount will be managed. He informed about the donations of Rs. 5000/- given at the meeting place by Sri Shweta Nath Ojha, the Principal of Sanskrit College Dhauri (Bhojpur). Mr. Vice-Chancellor gave the assurance of the constitution of a five man body to give the project a concrete shape.

The meeting ended with a vote of thands proposed by Pt. Adya Charan Jha.